कानूने तरक्की

क्यू. एस. ख़ान
B.E (Mech)

प्रकाशक
तनवीर पब्लिकेशन मुम्बई-78

कॉपी राईट

इस किताब की कॉपी राईट क्यू.एस.खान के पास है। लेकिन उनकी तरफ से इस बात की आम इजाज़त है कि इस किताब का किसी भी भाषा में अनुवाद किया जा सकता है, इस शर्त के साथ कि इस की मूल विषय सामग्री में कोई बदलाव न किया जाए। किताब बेचने या मुफ्त तक्सीम करने के उद्देश्य से छपवाने की भी आम इजाज़त है। हम इस के बदले में किसी माली मुआविज़ा या रायल्टी नहीं चाहते। बेहतरीन क्वालिटी की छपाई के लिए आप हम से इस किताब की असल टाइप की गई सॉफ्ट कॉपी हासिल कर सकते हैं। किताब की छपी हुई कॉपियाँ हमें अपने रिकार्ड के लिए ज़रूर भेजे।

कानूने तरक्की

ISBN No. 978-93-80778-19-8

लेखकः क्यू. एस. खान
(B.E. Mech)

पहला एडिशन – 2013

कीमतः 50/– रूपये

प्रकाशक

तन्वीर पब्लिकेशन

हायड्रो इलेक्ट्रिक मशीनरी प्रिमाइसेस, ए-13, राम-रहीम उद्योग नगर, बस स्टॉप लेन,
एल.बी.एस. मार्ग, सोनापूर, भांडुप (पश्चिम), मुंबई 400078
फोनः 022-2596 5930, मोबाइलः 9320064026. ई-मेलः hydelect@vsnl.com, hydelect@mtnl.net.in

Bank details of Tanveer Publication

Name of A/C.	:	Tanveer Publication
A/C. No.	:	30172318047
Bank Name	:	State Bank of India
Branch Name	:	Bhandup (w), Mumbai 400078
RTGS/IFSC Code.	:	SBIN0000562

मुद्रक

अल कलम पब्लिकेशन प्रा. लि.

344. Gali Garhaiyya, Bazar Matiya Mahal, Jama Masjid, Delhi-6
फोनः 011-23241481, 23261481 फॅक्सः 011-23241481 (On Demand).
ई-मेलः alqalambooks@gmail.com

लेखक की बहुत सारी पुस्तकें इंटरनेट पर पढ़ने तथा डाउनलोड करने के लिए निम्नलिखित वेबसाइटस् पर मुफ्त उपलब्ध हैं।
www.freeeducation.co.in और www. tanveerpublication.com

इस पुस्तक को आप इंटरनेट पर निम्नलिखित लिंक से भी मुफ्त डाउनलोड कर सकते हैं।
http://www.scribd.com/doc/118927827/Qaanoone-Taraqqi-Hindi

अनुक्रमाणिका

भाग-१
माल और दौलत का परिचय

१. क्या इस पुस्तक से आपको लाभ होगा?..... १०
२. माल और दौलत क्या हैं?..... ११
३. हम माल व दौलत क्यूं कमाएं?..... १२
४. हमें किस तरह माल और दौलत कमाना चाहिए?..... १६
५. हमारे व्यापार के नियम क्या होने चाहिएं?..... १६
६. अपनी सोच को किस तरह बेहतर बनाया जाए?..... २७
७. कामयाबी की शुरूआत कैसे करें?..... ३३
८. कामयाबी की शुरूआत ऐसे करें।..... ३६

भाग-२
बड़ी कम्पनी या संघटन के नियम

९. सफल कारोबार के नियम..... ४०
१०. कम्पनी के कारोबारी उसूल क्या होने चाहिएं?..... ४१
११. इस्लामी शिक्षाओं की रौशनी में कम्पनी के उसूल क्या होने चाहिएं?..... ४२
१२. कर्मचारिओं (Workers) के लिए इस्लामी कानून।..... ४५
१३. पैरवी (अनुसरण) करने वालों के क्या कर्तव्य और ज़िम्मेदारियां हैं?..... ४७

भाग-३
कर्मचारी, सहयोगी या मातहत काम करने वालों से कैसा बरताव करें?

१४. मानव स्वभाव की मुख्य खामियाँ।..... ४९
१५. सफल नेतृत्व का एक सुनहरा उदाहरण।..... ५३
१६. कर्मचारिओं (Workers) की कार्यक्षमता कैसे बढ़ाऐं?..... ५५
१७. कभी मलामत (निंदा/Criticize) ना करें।..... ५७
१८. तन्कीद (आलोचना/Criticize) का सही तरीका?..... ५८
१९. नाराज़गी कैसे ज़ाहिर करें?..... ५९
२०. गलतीयों के सुधार के लिए किसी को कैसे आमादा (प्रेरित) करें?..... ६०
२१. अच्छे काम की सराहना करें और आभार मानें।..... ६३
२२. लोगों को उनके सही नामों से पुकारें।..... ६५
२३. दरमियानी (Moderate) रास्ता इख्तियार करें।..... ६६
२४. अस्सलाम अलैकुम को बढ़ावा दें।..... ६८

भाग-४
अपने कारोबारी हुनर को कैसे संवारे?

२५. बेहतरीन अख्लाक़ (Character) का महत्त्व।..... ७०
२६. विनम्र स्वभाव (Soft Nature) का महत्त्व।..... ७१
२७. अपने सुधार (Self-Improvement) की कोशिश करें।..... ७२

२८. सर्वश्रेष्ठ बनने की भावना का सफलता पर प्रभाव।..... ७४
२९. मुस्कुराहट का महत्त्व।..... ७६
३०. हज़रत मुहम्मद (स.) के जीवन के कुछ मधुर क्षण।..... ७८
३१. लगातार परिश्रम या दृढ़ता (Persistence) का महत्त्व।..... ८१
३२. धीरज का महत्त्व।..... ८३
३३. सुनहरे अवसर मत खोइये।..... ८५
३४. ताकतवर मोमिन कमज़ोर मोमिन से बेहतर है।..... ८६
३५. सफाई और पवित्रता का महत्त्व।..... ८९
३६. माल व दौलत बढ़ाने वाली इबादत (Prayer of Prosperty)।..... ९२
३७. सदका (दान) का महत्त्व।..... ९९
३८. अल्लाह तआ़ला पर कब तवक्कल (भरोसा) करना चाहिए?..... १०३
३९. मुसलमान की जिंदगी में सुबह का क्या महत्त्व है?..... १०५
४०. तरक्की के लिए नेक लोगों की संगत ज़रूरी है।..... १०६
४१. कुछ आश्चर्यजनक वास्तविक्ताएं।..... १०९
४२. एक ही वक़्त में मुत्तकी (Pious) और दौलतमंद बनना क्या मुमकिन है?..... ११३

भाग-५
मुसलमान कैसे तरक्की करें?

४३. गरीबी और भूखमरी के कारण।..... ११७
४४. मुसलमान गरीब क्यों हैं?..... १२२
४५. विज्ञान और तंत्रज्ञान का ज्ञान हासिल करने हम ६०० ई. में कहाँ जाते?..... १२७
४६. कर्ज़ के जाल से कैसे मुक्ति पाएं?..... १२८
४७. दौलत की रूहानी (अध्यात्मिक) खराबियां।..... १३४
४८. अल्लाह तआ़ला के लिए बंदे माल दौलत से ज़्यादा महत्त्व रखते हैं।..... १३८
४९. अल्लाह तआ़ला के प्रिय बंदे कैसे बनें?..... १४१
५०. कुछ कुरआ़नी आयतें जो आपकी परेशानी दूर कर सकती हैं।..... १४४
५१. जिंदगी में कैसे खुश रहें?..... १४६
५२. अपनी आत्मा की बैटरी कैसे चार्ज करें?..... १५०
५३. दंगों से बचने का एक ही रास्ता १५४
५४. क्यू. एस. खान का परिचय।..... १५८
५५. क्यू. एस. खान और उन की कुछ महत्त्वपूर्ण किताबों का परिचय।..... १५९

टिप्पणी (तब्सेरा)

त्रिमासिक ''उर्दू बुक रिविव'' नई दिल्ली की एक रिपोर्ट

इंजिनीयर क्यू. एस. खान की शख्सियत अब अप्रसिद्ध नहीं है। इस्लाम और सच्चाई की तलाश के संदर्भ से उन की कई किताबें अंगेंज़ी और हिंदी में प्रकाशित हो चुकी हैं। वह इंसानियत के शुभचिंतक, और दर्दमंद दिल रखने वाले इंसान हैं। अपने तिजारती मामूलात के साथ दीन-ए-हक की सेवा और उसका प्रचार प्रसार उन की पहचान बनता जा रहा है। उर्दू बुक रिविव में इस से पहले भी उन की कुछ किताबों पर टिप्पणियाँ की जा चुकी हैं।

प्रस्तुत पुस्तक ''कानूने तरक्की'' एक ऐसी मार्गदर्शक पुस्तक है जिस में इस्लामी कार्य-प्रणाली पर कायम रहते हुए जीवन में कामयाबी के मार्ग की निशानदही की गई है। आम तौर पर अच्छे खासे धार्मिक और धार्मिक सोच रखने वाले लोग अज्ञानता अथवा ज्ञान की कमी के कारण अपने जीवन के विषेश भाग में रोज़ा नमाज़ के कायल ज़रूर होते हैं लैकिन अमली जीवन में उन का दृष्टिकोण आम इंसानी समाज से अलग नहीं होता। अगर वे नौकरी पेशा हैं तो रिश्वत लेना भी ''माल ए गनीमत'' समझते हैं, और व्यपारी हैं तो झूट बोलने से ले कर हर उस काम को अपना ''व्यवसायिक अधिकार'' समझते है जिस के अनुसार वह धोखा दे कर ज़्यादा से ज़्यादा दौलत इकट्ठी कर सकें। यह बीमारी अब इतनी आम हो गई है कि समाज का हर भाग सिर्फ दुनिया के हासिल करने की कोशिश में बुनियादी अखलाकियात तक को नज़रअंदाज़ करता जा रहा है। ज़ाहिर है समाज की यह दिशा बद किस्मती ही ला सकती है। ऐसी स्थिती में इंसान और समाज के लिए सुनहरे उसूलों की बहुत ज़्यादा ज़रूरत है। लेखक के अनुसार इस्लाम के मानने वालों के साथ सारी इंसानियत के लिए इस्लाती उसूलों से बढ़ कर कोई दौलत नहीं हो सकती, जिस पर चल कर इंसान दुनिया के साथ आखिरत में भी सफलता प्राप्त कर सकता है।

प्रस्तुत पुस्तक में ६ भाग हैं। हर भाग में उप-शिर्षक के अनुसार इंसानी जीवन के उसूल, दौलत कमाने का उद्देश्य, दौलत की प्राप्ती, इंसानी और अखलाकी उसूलों को बरतना, सब्र का प्रदर्शन, गरीबों की समस्याऐं, भीख मांगना जैसे विषयों पर बड़ी दलीलों के साथ रौशनी डाली गई है। इस पुस्तक में दौलत और दौलत कमाने को स्पष्ट करने के साथ व्यापार के इस्लामी उसूल भी बताए गए हैं।

इस पुस्तक के आखिर में लेखक ने अध्यात्मिक तौर से क़ुरआन और रसूल अल्लाह के कथनों की रौश्नी में ला ज़वाल सुनहरे उसूल भी बताए गए हैं। इसी प्रकार आखरी भाग में लेखक ने गरीबी के कारण, मुसलमानों का पिछड़ापन, और कर्ज़ के हथकंडो से बचने के उपाय बताए हैं। इस के साथ ही उन्हों ने अल्लाह से निकटता और उसके परिणाम स्वरूप प्राप्त होने वाली अनंत और सच्ची खुशी की निशानदही की है।

यह पुस्तक हर मुसलमान व्यापारी, विद्यार्थी तथा युवको के लिए महत्वपूर्ण गाइड बुक की हैसियत रखती है। आशा है कि दुनिया और आखिरत की सफलता के खोजकर्ता हर इंसान के लिए यह पुस्तक इन्शा अल्लाह लाभदायक सिद्ध होगी।

टिप्पणीकार- मो. आरिफ इकबाल

(त्रिमासिक 'उर्दू बुक रिविव' नई दिल्ली, जनवरी फरवरी मार्च २०१२ का अंक, पेज नं ६६)

मुकदमा

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मौलाना कारी मुफ्ती मुहम्मद मसऊद अज़ीज़ी,

रईस मर्कज़ अहयाउल फिक्रुल इस्लामी, मुज़फ्फराबाद, सहारनपूर(यू.पी.)

नह्-म-दुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम, अम्मा बाद!

माल और दौलत अल्लाह की नेअमत और इसानी जिंदगी की अहम ज़रूरत है। रोज़ाना की ज़िंदगी के लिए इंसान को माल व दौलत और रूपये पैसे की ज़रूरत पड़ती है। गोया के इंसानी मईश्त का पूरा दारोमदार दौलत पर है, जिस की हर वक्त और हर जगह जरूरत पड़ती है। इसके हुसूल के लिए तो हर इंसान कोशिश करता है, और कोशिश करनी भी चाहिए। मगर इंसानी मेहनत के बाद भी अल्लाह अपने इख्तियार से जिस बंदे के लिए जितनी जरूरत समझता है उस के मुताबिक उस को दौलत देता है। जो के यह एक तरफ अल्लाह की रहमत भी है और कुरआने करीम में इस के लिए 'खैर' का लफ्ज आया है। जब यह खैर अपने मअ्ना और अंजाम के ऐतबार से आमाले खैर का ज़रिया बन जाए। फिर यह खुदाई इनाम भी है, और वूंके कुरआन ही की रौश्नी में यह दुनिया की जीनत, अल्लाह तआला की आजमाईश और सजा देने का ज़रिया भी है, इस लिए बक्द्रे ज़रूरत माले मतलूब भी है और ज़रूरी भी। और इस के फितनो से बचना इस से भी ज़्यादा ज़रूरी है, गैर ज़रूरी जगहों पर खर्च करना यह भी पकड़ का बाईस है। अल्लाह तआला हिफाज़त फरमाए।

पेशे नज़र किताब ''कानूने तरक्की'' में इस पहलू को कुरआन व हदीस की रोश्नी में उजागर करने की कोशिश की गई है। इस में इस मौजू को पांच हिस्सों में तकसीम कर के समेटने की इम्कानी कोशिश की गई है। पहले हिस्से में माल व दौलत का तआरूफ, दूसरे हिस्से में बड़ी कम्पनी या तनज़ीम के उसूल, तीसरे हिस्से में वर्कर मुआविन या मातेहती में काम करने वालों से कैसा बरताव करें? चौथे हिस्से में अपने कारोबारी हुनर को कैसे संवारें? और पांचवे हिस्से में उम्मते मुस्लिमा कैसे तरक्की करें? जैसे अहम मौजूआत से बहस की गई है। यह एक अच्छी कोशिश है जो कारईन की खिदमत में पेश की जा रही है। सही फेसला तो कारईन पढ़ कर खुद ही फरमाएंगे के उन को एक ही जगह इस मौजू पर इतना इस्लामी मवाद मिल गया। काबिले मुबारक बाद हैं हमारे दोस्त अल्हाज कमरूद्दीन एस. खान साहब के उन्होंने बहुत मेहनत और जद्दोजहद से उर्दू दाँ हजरात के लिए ऐसे वसी मौजू को इन्तेखाब किया और उस पर तफसील से रौश्नी डाली। अल्लाह तआला कुबूल फरमाए।

वस्सलाम

मुहम्मद मसऊद अज़ीज़ी

१६ जमादियुल अव्वल १४३३ हिजरी, ब-मुताबिक २१ अप्रेल २०१२ ई.

मौलाना मुहम्मद असजद,

मोहतमिम व शेखुल हदीस जामेआ इम्दादिया, मुरादाबाद

अल्हमदु लिल्लाही रब्बिल आलमिन, वस्सलातों वस्सलामों अला सय्यदिल मुरसलीन व अला अलिही व अस्हाबिही अज्मईन।

इक्तेसादी खुश्हाली और मआशी फारिगुल बाली, खुदावंदे कुद्दूस की नेअमतों में इन्तेहाई अज़ीम नेअ्मत है। अहादीसे मुबारका में मआशी खुश्हाली के दौर को गनीमत समझने, उस की कद्र करने और सही मसरफ में दौलत इस्तेमाल करने की ताकीद और तलकीन जा बजा मुख्तलिफ पैरायों में की गई है।

मौजूदा आलमी मन्ज़रनामा यह है के उम्मते मुस्लिमा तालीमी, फिक्री सियासी महाज़ों की तरह मआशी और इक्तसादी महाज़ पर भी इन्तेहाई पस्मान्दगी और खस्ता हाली का शिकार है। इस सूरते हाल ने उम्मत की ज़बू हाली और पस्ती में इज़ाफा किया है। इसलिए दीगर महाज़ों की तरह इस महाज़ पर भी खास तवज्जो की जरूरत है।

इस का लाएहा ए अमल क्या हो? और इस के खदो खाल क्या हों? उम्मत इक्तेसादी खुश्हाली के रास्ते पर कैसे आए? शरीअत इस सिलसिले में क्या हिदायत देती है? इन तमाम मौजूआत पर खास तवज्जो के साथ जेरे नज़र किताब ''कानूने तरक्की'' में बहस की गई है।

किताब के मुअल्लिफ जनाब कमरूद्दीन खान दर्दमंद दिल, अर्जुमंद फिक्र, वसी मुतालआ, गहरी नज़र और मुअस्सर कलम रखते हैं। मुख्तलिफ अहम और इल्मी मौजूआत पर इन के कलम से काबिले कद्र और वकीअ् काविशें मन्ज़रे आम पर आ कर दादे तहसीन हासिल कर चुकी हैं। मौसूफ ने अज़ राहे करमफरमाई इस हकीर से अपनी इस ताज़ा तसनीफ पर निगाह ड़ालने की फरमाइश की। तामीले हुक्म में मैंने इस किताब का मुताअला किया, और इस नतीजे पर पहुंचा के मौसूफ ने इन्तेहाई दिक्कते नज़र के साथ मौजू के तमाम गोशों का अहाता करने की मुबारक कोशिश की है, और बहुत मुफीद और जामे चीज़ उम्मत के सामने पेश की है।

मैं मुअल्लिफ मौसूफ को मुबारकबाद पेश करने के साथ दिल की गहराईयों से दुआगो हूँ के रब्बे करीम इस दर्दमंदाना कोशिश को हसने कुबूल अता फरमाए और इसे मुअस्सर तब्दीली का ज़रीया बनाए, आमीन।

वस्सलाम

मुहम्मद असजद

२५ रबीउल अव्वल १४३३ हिजरी, ब-मुताबिक १८ फरवरी २०१२ ई.

प्रस्तावना

इस किताब को लिखने का मक्सद यह है कि, दुनिया का हर मुसलमान आमदनी के तौर पर खुशहाल हो। उसे अपनी जिंदगी की ज़रूरतें पूरी करने के लिए ना ईमान बेचना पड़े और ना ही दूसरों की गुलामी करनी पड़े।

इस मक़्सद को पूरा करने के लिए भारी मात्रा में दौलत का कमाना ज़रूरी है। इसलिए हम पैसा और संपत्ति के बारे में विस्तारीत रूप से ज्ञान हासिल करें, ताकि पैसा कमाने और उसको खर्च करने के हर तरीके की हमें सही जानकारी हो और हमारा हर कदम सिर्फ सही तरीके से पैसा कमाने की तरफ उठे, न कि गवांने और बरबाद करने की तरफ। इसलिए आइये हम पैसा कमाने और उसे बचाके रखने के लिए उसके बारे में विस्तारित रूप से चर्चा करें।

इस किताब में अल्लाह तआ़ला के आदेशों और पवित्र हदीसों का खज़ाना है, जिसे मैंने बहुत सी किताबों से ढूंढकर आप के सामने रख दिया है। मगर दिल में एक तड़प थी कि, वह इ़ज्जतदार कौम जो 'सच्चर कमिटी' की रिर्पोट के अनुसार बहुत निचले स्तर से भी गई गुजरी ज़िंदगी गुज़ार रही है, वह फिर से अपनी खोई हुई इज्ज़त और अज़मत (प्रतिष्ठा) हासिल कर ले। यह किताब इस अनुरोध के साथ आपके सामने रख दी है कि आप सब अपनी दुआ़ओं में मुझे याद रखेंगे और दुआ़ करेंगे कि मेरा अंत ईमान के रास्ते पर हो।

अल्लाह तआला मुझे और दुनिया के सभी मुसलमानों को दुनिया और आख़िरत में अपने फज़ल व कर्म से कामयाब फरमाए, हज़रत मुहम्मद (स.) पर और उनकी ऑल, सहाबा कराम (रजी.) और आप (स.) की तमाम उम्मत पर अपनी रहमत और बरकत नाज़िल फरमाए। आमीन।

क्यू. एस. खान
hydelect@vsnl.com

पहला भाग

माल और दौलत का परिचय
Introduction of Wealth

१. क्या इस पुस्तक से आपको लाभ होगा?

- मनुष्य ३ साल की उम्र से ७० साल की उम्र तक जीवन में तरक्की के लिए लगातार कोशिश करता रहता है। मगर जीवन के आखीर में सिर्फ तीन से पांच प्रतिशत लोग ही खुद को सफल महसूस करते हैं। बाकी ९५ प्रतिशत लोग असफल और हात मलते हुए इस दुनिया से विदा होते हैं। इतनी बड़ी संख्या में लोगों के असफल होने के क्या कारण हैं?

  इस के दो कारण हैं। पहला यह कि सफलता क्या है लोगों को उसका सही ज्ञान नहीं है। और दूसरा कारण यह है कि सफलता कैसे प्राप्त की जाए लोगों को उसका भी सही ज्ञान नहीं है। लोग सिर्फ सफल लोगों की नकल करने में और बहुत ज़्यादा रूपया-पैसा कमाने की चिंता में ज़िंदगी गुज़ार देते हैं।

  इस पुस्तक में हम इसी विषय के बारे में और अधिक ज्ञान प्राप्त करने की कोशिश करेंगे।

  लोग चूंकि बहुत अधिक माल और दौलत के प्राप्त करने को ही सफलता समझते हैं, इसलिए हम भी पहले माल और दौलत कमाने के बारे में मालूमात प्राप्त करेंगे, उसके बाद दुनिया और आख़िरत (परलोक) में पूरी सफलता कैसे प्राप्त की जाए हम उस के बारे में भी ज्ञान प्राप्त करेंगे।

- इस पुस्तक में बताए गए नियमों पर अमल करते हुए कुछ लोग जो कामयाब हुए हैं, उन के कुछ उदाहरण मैं आप के सामने बयान कर दुँ ताकि आप इस पुस्तक को पूरे विश्वास और शौक के साथ पढ़ें।

- ***शेख बहीदुर रहमान (मुंबई)***: सन १९९५ से सन २००० के बीच में मेरी आर्थिक स्थिति बहुत खराब रहती थी। कई तरह के कारोबार किए, मगर हर बार नुकसान हुआ। क्यु.एस.खान से मेरी पहचान तो पहले से ही थी, मगर उन्होंने तरक्की वाले वजाइफ मुझे बहुत बाद में बताए। मगर अल्लाह का करम है जबसे पढ़ना शुरू किया है मैं लखपती तो नहीं बन गया, मगर आर्थिक परेशानी और तंगी बिल्कुल खत्म हो गयी। आज अल्लाह का करम हैं कि घर है, बच्चे अच्छी तरह पढ़ रहे हैं। मैं ने (अल्लहमदुलिल्लाह) हज भी कर लिया है। और जीवन में एक तरह का सुकून है।

- ***साबिर खान (मुंबई)***: मेरा एक छोटासा वर्कशॉप था, जिसमें दो कारीगर काम करते थे। मगर हालत यह थी कि वक़्त पर ना वर्कशॉप का किराया अदा कर पाता था, ना कारीगरों को तनख्वाह दे पाता, ना बिजली का बिल भर पाता था। क्यु.एस.खान के लिए मशीनों के कल पुर्जे (Spare Parts) भी मैं अपने वर्कशॉप में बनाता था। एक बार मेरी खराब हालत को देखकर उन्होंने मुझे हर नमाज़ के बाद दस बार सूरह-ए-कद्र और कुछ तसबिहात पढ़ने की सलाह दी। उस दिन से आज तक मैं उन तसबिहात को लगातार पढ़ रहा हूँ। तसबिहात को नियमित रूप से पढ़ने के बाद छह महीने के अंदर अल्लाह तआला के करम से मैं ने अपना एक कारखाना और छह लेथ मशीनें ख़रीदीं। और सन २०११ में मेरे पास नई मुंबई में एक और बड़ा कारखाना और बहुत सी मशीनें और मुनाफा बख़्श (लाभदायक) कारोबार हैं।

  अल्लाह तआला ने बरकत इस तरह दी के मुझे कुछ स्टेनलेस स्टिल के पार्टस बनाने का काम मिला। जिसमें कच्चे माल में से ७५ प्रतिशत भंगार (स्क्रैप) निकलता है। जो कि बहुत महंगा बिकता है। इस तरह मज़दूरी से ज़्यादा तो मुझे उसके स्क्रैप से कमाई होती थी। और इतने ऑर्डर थे कि दिन रात काम करूं तब भी ऑर्डर पूरे ना होते थे।

  "अल्लाह तआ़ाला उस जगह से रोज़ी देता हैं जहाँ किसी का गुमान भी ना हो।" (कुरआन करीम; सूरह तलाक आयतः २-३)

  तसबिहात पढ़ने के बाद बेशक अल्लाह ने मुझे ऐसी जगह से रिज़्क (रोज़ी) दी जहाँ मेरा गुमान भी ना था, और बेहिसाब दिया।

- ***फरज़ाना खान (उत्तर प्रदेश)***: क्यु. एस. खान हमारे रिश्तेदार है। और मैं एक टीचर हूँ। सन १९९९ में मुझे उन्होने बरकत के लिए कुछ तसबिहात बताऐ थे। जो मैं लगातार पढ़ रही हूँ। अल्लाह के करम से अपनी नौकरी में लगातार तरक्की कर रही हूँ। आज में प्रिन्सिपल हूँ। तसबिहात पढ़ने के बाद जिंदगी के परेशानियां बहुत कम हो गई हैं। इसलिए हर महीने अच्छी खासी रकम की बचत होती रही। और उस बचत से मैंने अपना घर भी खरीदा। आज अल्लाह के करम से जिंदगी एकदम पुरसुकून है।

  (यह तीनों लोग आम जनता की नज़र में नहीं आना चाहते हैं इसलिए हम इनका पता और फोन नंबर नहीं दे रहे हैं।)

- ऊपर बयान कि गई तीनों मिसालें उन लोगों की थीं जो अपनी आधी जिंदगी गुज़ार चुके थे, और उन के लिए जिंदगी के उस मोड़ पर सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण धनदौलत ही थी। इसलिए मैं ने उन्हें तसबिहात बता दिए थे। जिससे उन की समस्याऐं हल हुईं (यह तसबिहात इस किताब में मौजूद हैं)। मगर एक नौजवान के लिए अपनी ज़रूरत भर की दौलत कमाना ही कामयाबी नहीं है। उसे अपने काफिले का सरदार बनना है। उसे खुद भी मंजिले मक्सूद तक पहुंचना है और अपने साथ और भी बहुत सारे लोगों को साथ लेकर चलना है, जिन्हे तरक्की के राज़ जानने का और अच्छी शिक्षा प्राप्त करने का मौका नहीं मिला। उसे खुद दौलतमंद बनना है और अपने साथियों को भी दौलतमंद बनने में मदद् करना है। यह पुस्तक इसी मक्सद से लिखी गई है कि हर नौजवान कौम का रहनुमा (लीडर) बने। वह निजी जिंदगी में भी कामयाब हो और समाजी ज़िंदगी में भी कामयाब हो। वह खुद अपना कारोबार करे और दूसरे बेरोजगार भाईयों को या तो अपने यहाँ नौकरी दे या उन्हें अपने पैरों पर खड़ा होने में मदद् करे। और सारे नौजवान ज़िंदगी में मुक्कमल कामयाबी प्राप्त करें। यानी उन्हें तन का आराम और मन की शांती, अच्छी सेहत, अच्छी फॅमिली, इज्ज़त और बहुत सारी दौलत प्राप्त हो।

- मैं एक किसान परीवार से हूँ। इसलिए कारोबार में मुझे कोई राह दिखानेवाला नहीं था। २२ साल की उम्र से आज पचास साल की उम्र तक मैंने जो ज़माने की ठोकरें खा-खाकर तरक्की की है, उन २८ वर्षों के तर्जुबात का निचोड़ आप के हाथ में इस पुस्तक के रूप में है।

(बाकी पेज १२ पर)

२. माल और दौलत क्या हैं?

माल और दौलत क्या हैं?

- माल और दौलत क्या है? आइये हम इस सवाल का जवाब पवित्र कुरआ़न में तलाश करते हैं। कुरआ़न शरीफ के अध्ययन से हमें दौलत के बारे में निम्नलिखित ज्ञान प्राप्त होता है।

१. दौलत अल्लाह तआला की एक रहमत (कृपा) है।

अल्लाह तआला ने कुरआ़न करीम में दौलत को 'खैर' के नाम से याद किया है। 'खैर' एक अरबी शब्द हैं जिसका अर्थ है भलाई, नेकी, श्रेष्ठता, इज़्ज़त, शर्फ, करम। यानी संक्षिप्त में यह खुदा की एक रहमत है।

- कुरआ़न की वह आयातें जिनमें माल और दौलत को 'खैर' कहा गया है निम्नलिखित हैं:

- वमा तुनफिकू मिन खैरीन फइन्नल्लाहा बीही अलीम।

"और जो कुछ भी तुम खैर (माल) में से खर्च करो तो अल्लाह तआला उसको खूब जानता है।" (सूरह बकरा, आयत २७३)

- "ऐ मोहम्मद (स.)! लोग तुमसे पूछते हैं कि खुदा की राह में किस तरह का माल खर्च करें। कह दो कि जो चाहो खर्च करो। लैकिन जो माल खर्च करना चाहो वह माल सब से पहले अपने अधिक निकट के रिश्तेदार को दो फिर कुछ दूर वालों को। यानी माँ-बाप और करीब के रिश्तेदारों को और यतीमों को और मुसाफिरों को, सबको दो और जो भलाई तुम करोगे अल्लाह तआला उसको जानता है।" (सूरह बकरा, आयत २१५)

(इसी तरह की कुरआ़न में और बहुत सारी आयातें हैं जैसे कीः सूरह आराफ १८८, सूरह हूद ८४, सूरह बक़रा २७२,१८०)

- माल और दौलत अल्लाह तआला की रहमत है-इस लिए कई मौकों पर नबी करीम (स.) ने इसमें बरकत के लिए दुआ फरमाया था- अलजामा अलसहीह ईमाम बुखारी में एक बाब का उनवान है। अरबी (बुखारीः २/६४४) यानी बरकत के साथ माल में बरकत की दुआ का बाब- उस बाब में जिक्र है की आप (स.) ने अपने खादम हजरत अनस (रजि.) के लिए माल की कसरत के साथ माल में बरकत की दुआ की : अरबी (बुखारी २:६४४)

- मश्हुर मालदार सहाबी हजरत अब्दुल रहमान बिन औफ की मालदारी हुजूरे अकरम (स.) कि दुआ का श ुमार थी। (सूरह मन हयातु सहाबा : २/५४)

- आप (स.) ने मदीना के साः और मद में बरकत की दुआ फरमायीः अरबी (बुखारीः २/६६७)

- जब नबी करीम (स.) की खिदमत में दर्ख्त का पहला फल लाया जाता तो आप (स.) फलों की बरकत की दुआ फरमाते। अरबी (तिरमीजी १/१८३)

- हज़रत अब्दुल रहमान बिन औफ (रजि.) ने एक खास मौके पर अन्सारी सहाबी (रजि.) हजरत सय्यद बिन अलरबी को यह दुआ दि थी। अरबी अल्लाह आपके माल और अहले वआयल में बरकत दें मुझे तो बस बाजार का पता बता दीजिए। (बुखारीः १ /५६१)

- नबी करीम (स.) का इरशाद है दो शख्स सबसे ज्यादा काबिले रिश्क है। एक वह शख्स जिसको अल्लाह ने कुरआन दे दिया हो और वह रात दिन उसपर अमल करता हो और दुसरा वह शख्स जो अल्लाह ने माल दे दिया हो और वह चुपके चुपके और आलियल ऐलान इस माल को खर्च करता हो। (मिश्कातः १८)

- नबी करीम (स.) ने फरमाया माल फासिक और फाजिर के लिए वबाले जान है मुत्तकी और परहेजगार के लिए नहीं। (मिश्कात ४५१)

- नबी करीम (स.) ने फरमाया नेक आदमी का माले हलाल बहुत खुब है। (शहाबुल इमान '२ /६१)

- एक हदीस शरीफ का मफहुम है की अगर एक शख्स से उसका माल छिना जाए और माल का मालिक अपने माल के दफा और बचाव में अपनी जान पर खेल जाएं यानी इसको कत्ल कर दिया जाए तो वह शख्स शहीद माना जाएगा। (तिरमिजी '१/२६१)

- नबी करीम (स.) ने माल और दौलत को जिस हदीस में अल्लाह तआला का फ़ज़्ल फरमाया वह हदीस इस तरह है, 'अरबी' अल्लाह जिसपर चाहे अपना फजल कर दे (यानी अमीर बना दे)। किसीको क्या मजाल है के एतराज करें। (अहयाए अलोमुद़दीनः ४'१७६) (यह हदीस एक तव्वील हदीस का हिस्सा है जिसमें नबी करीम (स.) ने गरीब सहाबा को नमाज के बाद पढ़ने के लिए कुछ तस्बिहात बताए थे ताकी वह भी अमिर सहाबा की तरह सवाब हासिल करें।)

२. माल और दौलत सिर्फ अल्लाह तआ़ला के कब्ज़े में है।

निम्नलिखित कुरआ़न की आयतों से ज़ाहिर होता है कि दौलत पर सिर्फ अल्लाह तआ़ला का नियंत्रण है और वही उसे बांटता है।

- "और यह कि वही (अल्लाह तआ़ला) दौलतमंद बनाता है और गरीब (निर्धन) करता है।" (सूरह नज्म, आयत ४८)

- "और जब अल्लाह तआ़ला अपने बंदो के लिए रिज़्क, में धन दौलत में बढोतरी कर देता है तो वह ज़मीन में फसाद (दंगा) करने लगते हैं। इसलिए वह जिस कदर चाहता है अंदाज के साथ नाज़िल करता है (देता है)। बेशक वह अपने बंदो को जानता है और देखता है।"

(सूरह शूरा, आयत २७)

- "और अगर अल्लाह तआ़ला तुमको कोई तकलीफ पहुंचाए, तो उसके सिवा उसको कोई दूर करने वाला नहीं। और अगर अल्लाह तुम्हारे लिए भलाई करनी चाहे तो उसकी कृपा को कोई रोकने वाला नहीं। वह अपने बंदो में से जिसे चाहता है फायदा पहुंचाता है।" (सूरह यूनुस, आयत १०७)

- "क्या जिस चीज़ कि इन्सान आरज़ू करता है वह उसे ज़रूर ही मिलती है?" (सूरह नज्म, आयत २४)

(नहीं, अल्लाह तआला जितना चाहता है उतना ही मिलता है।)

- "जो कोई आखिरत की खेती चाहता है उसकी खेती को हम बढ़ाते हैं, और जो दुनिया की खेती चाहता है उसे दुनिया ही में से देते हैं मगर आखिरत में उसका कोई हिस्सा नहीं है।" (सूरे शूरा, आयत २०)

३. दौलत अल्लाह की तरफ से नेक कर्मों का इनाम है।

निम्नलिखित आयतों से यह साबित होता है कि अल्लाह तआ़ला नेक आमाल के बदले में रिज़्क में बरकत फरमाता है।

- अगर (इस गुनाह और सरकशी के बदले) ये किताबवाले (इसाई और यहुदी) ईमान ले आते और ईशभक्ति व विनम्रता की नीति अपनाते तो हम इनकी बुराइयाँ इनसे दूर कर देते, और इनको नेमत भरी जन्नतों में पहुँचाते। क्या ही अच्छा होता कि इन्होंने तौरात और इंजील और दूसरी किताबों को क़ायम किया होता जो इनके रब की ओर से इनके पास भेजी गई थीं। ऐसा करते तो इनके लिए ऊपर से रोज़ी बरसती और नीचे से उबलती। (सूरह मायदा, आयत ६५-६६)

- अगर बस्तियों के लोग ईमान लाते और 'तक़वा' धार्मिक पवित्रता की नीति अपनाते तो हम उनपर आसमान और ज़मीन से बरकतों के द्वार खोल देते, मगर उन्होंने तो (ईश्वर के आदेश को) झुठलाया, अतः हमने उस बुरी कमाई के हिसाब में उन्हें पकड़ लिया जो वे समेट रहे थे। (सूरह आराफ, आयत ९६)

४. दौलत अल्लाह के परिक्षा लेने का एक साधन है।

- और जान रखो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद वास्तव में परीक्षा-सामग्री हैं और अल्लाह के पास बदला देने के लिए बहुत कुछ है। (सूरह अनफाल, आयत २८)

- तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तो एक आज़माइश हैं, और अल्लाह ही है जिसके पास बड़ा बदला है। (सूरह तगाबुन, आयत १५)

- और हम ज़रूर तुम्हें डर, भूख, जान-माल की हानियों और आमदनियों के घाटे में डालकर तुम्हारी आज़माइश करेंगे। इन हालात में जो लोग सब्र से काम लें और जब कोई मुसीबत पड़े, तो कहें कि ''हम अल्लाह ही के हैं और अल्लाह ही की ओर हमें पलटकर जाना है''उन्हें (बडी कामयाबी की) खुशख़बरी दे दो। (सूरह बकरा, आयत १५५)

५. दौलत अल्लाह तआ़ला के अज़ाब (दंड) देने का साधन भी है।

- निम्नलिखीत आयत से यह सिद्ध होता है की अल्लाह तआला माल और दौलत से इनसानों को सज़ा भी देते है।

- इनके माल और दौलत और इनकी औलाद की बहुलता को देखकर धोखा न खाओ, अल्लाह तो यह चाहता है कि इन्हीं चीज़ों के द्वारा इनको दुनिया की ज़िन्दगी में भी अज़ाब में ग्रस्त करे और ये जान भी दें तो सत्य के इनकार ही की हालत में दें। (सूरह तौबा, आयत ५५)

इस आयत में ईश्वर को ना मानने वालों के लिए 'इनके' 'इनको' यह शब्द इस्तेमाल हुए हैं।

खुलासा:

ऊपर दी गई कुरआ़नी आयतों से हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि:

- दौलत अल्लाह तआ़ला के अधिकार में है, वह अपने बंदों को अपनी इच्छा के अनुसार जितना चाहता है देता है।
- दौलत अल्लाह तआ़ला की रहमत (कृपा) है।
- दौलत नेक आमाल का खुदाई ईनाम है।
- माल और दौलत अल्लाह तआला की ओर से परिक्षण और दंड देने का एक साधन भी हैं।

▼▼▼▼▼▼▼

(पेज १० से आगे... क्या इस पुस्तक से आपको लाभ होगा?)

कामयाबी और नाकामी की भूलभुलय्यों में बहुत सा वक़्त बरबाद करने के बाद आज जिस सफलता के द्वार पर मैं खड़ा हूँ, अगर आपने इस पुस्तक की पढ़ाई गंभीरता से की, और इसके उसूलों पर अमल करने कि कोशिश की तो (इन्शा अल्लाह) आप ३० साल की उम्र में ही मुझसे कई गुना अधिक तरक्की कर चुके होंगे।

Success is for those who dares.
God helps to those who help themselves.

अल्लाह तआ़ला भी उस बंदे को पसंद करते हैं जो काम का मज़बूती से इरादा करता है और कामयाबी के लिए अल्लाह तआ़ला पर पूरा भरोसा करता है। (सूरह आले इमरान, आयत १५९ का खुलासा)

इसलिए सही ज्ञान प्राप्त कीजिए। आप जीवन में क्या करना चाहते हैं उसे निश्चित कीजिए और अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए मज़बूत इरादा और अल्लाह तआ़ला की मदद् के सहारे मेहनत शुरू कर दीजिए। इन्शा अल्लाह आप ज़रूर कामयाब होंगे।

▼▼▼▼▼▼▼

३. हम माल व दौलत क्यूं कमाएं?

१. हलाल (जायज़) रोज़ी कमाना हर व्यक्ति पर फर्ज़ (अनिवार्य) है।

- हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया "मज़्हब के ज़रूरी (फर्ज़) कानून पर अमल करने के बाद (अर्थात नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज अदा करने के बाद) ज़ायज (वैध) तरीके से रूपया कमाना हर व्यक्ति के लिए फर्ज़ (ज़रूरी) है।"
(तिबरानी, कबीर ९७५१, बैहकी, बा हवाला मुआरिफुल हदीस, खंड ७, पृ. ६५)

इसलिए हर व्यक्ति को अपनी और अपने परिवार की प्राथमिक आवश्यक्ताओं को पूरा करने के लिए ज़ायज तरीके से माल व दौलत कमाना फर्ज़ (अनिवार्य) है।

- कुरआन करीम की मुत्तद आयत से रिज्क कमाने की अहमियत का पता चलता है, कुरआन के मुताबिक जमिन को अल्लाह ने रिज्क हासिल करने का जरिया बनाया है तारिख और पूरसुकून इसलिए बना दिया गया है की लोग इसमें आराम कर सके और दिन को रोशन इसलिए किया गया कि इसमें लोग माश हासिल करे। (अरबी) सूरह मुज्जमील में हुसूल रिज्क के लिए सफर करने को ना सिर्फ दर्शहात कहा गया है बल्कि ऐसे लोगों की हिंमत अफजाई की गई।

- अल्लाह तआ़ला कुरआन शरीफ में फरमाता हैं: "फिर जब नमाज़ हो चुके तो अपनी राह लो और खुदा का फ़ज़्ल (यानी अपनी रोज़ी-रोटी) तलाश करो और खुदा को बहुत याद करते रहो ताकि मुक्ति पाओ।"
(सूरह जुमुआ, आयत १०)

अर्थात इबादत तो फर्ज़ हैं ही, मगर इबादत के बाद अल्लाह तआ़ला चाहता हैं और उसका निज़ाम (प्राकृतिक व्यवस्था/नियम) भी है कि बंदा अपनी रोज़ी रोटी के लिए परिश्रम करता रहे।

- हज़रत मुहम्मद (स.) की महफिल में बैठने से बढ़कर और क्या सौभाग्य हो सकता है। फिर भी कुछ असहाब सुफ्फा (गरीब सहाबा) को छोडकर सारे सहाबा कराम (रज़ि.) खेती बाड़ी या कारोबार वगैरा करते थे। और अधिकतर सहाबा (रज़ि.) आम दिनों में अपने समय का आधा हिस्सा व्यापार को और आधा हिस्सा मस्ज़िदे नबवी के लिए वक़्फ (समर्पित) करते थे (जिहाद या मुश्किल वक़्त में उनका तन मन धन सब कुछ इस्लाम के लिए समर्पित था) इसलिए हर मुसलमान के लिए अपनी और अपने घर वालों की आवश्यक्ताओं को पूरा करने के लिए ज़ायज तरीके से परिश्रम करना बहुत ज़रूरी है।

२. मौजूदा ज़माने में माल और दौलत का क्या महत्व है?

एक ताबई हज़रत अबू बक्र बिन अबी मरीयम (रज़ि.) कहते हैं, "हज़रत मुहम्मद (स.) के सहाबी हज़रत मुक्दाम बिन मअ़दी कअब (रज़ि.) के पास कई मवेशी (गाऐं उंट वगैरा) थे। उनकी नौकरानी मवेशियों का दूध दूहती थी और उसे बाज़ार में बेचा करती थी और हज़रत मुक्दाम (रज़ि.) वह रूपया वसूल करते थे। बहुत से लोगों ने उसे बुरा समझा और उनके व्यवहार पर आश्चर्य प्रकट किया। (उन्हें उम्मीद थी कि हज़रत मुक्दाम (रज़ि.) को चाहिए के वह दुध तोहफा (उपहार) में रिश्तेदारों को दें दे या वह आमदनी नौकरानी को दे दें।) हज़रत मुक्दाम (रज़ि.) ने अपने रूपया कमाने की वकालत की और फरमाया, "मेरे लिए अपना माल बेचकर रूपया कमाने में कोई बुराई (गलती) नहीं हैं, क्योंकि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "एक ज़माना आऐगा जिस में सिर्फ माल (रूपया) से आपका मक़्सद पूरा होगा।" (मसनद अहमद, मुआरिफुल हदीस, खंड ७, पृ. ६६)

ऊपर दी गई हदीस को हज़रत सुफियान सूरी (रज़ि.) के निम्नलिखित बयान से अधिक बेहतर तौर पर समझा जा सकता है:

- हज़रत सुफियान सूरी (रज़ि.) ने फरमाया: "अब से पहले, हज़रत मुहम्मद (स.) के दौर में और खिलाफत के दौर में माल एक नापसंदीदा (अप्रिय) चीज़ों में गिना जाता था। लैकिन हमारे ज़माने में माल मोमिन की ढाल है," फरमाया: "अगर यह दिरहम और दीनार (रूपये और पैसे) आज हमारे पास न होते, तो राजा और मालदार लोग हमको अपना रूमाल बना लेते। (अर्थात हमें जैसा चाहे इस्तेमाल करते) आज जिस व्यक्ति के पास दिरहम और दीनार (रूपया और पैसा) हो उसको किसी काम में लगाए (ताकि लाभ हो, माल बढ़े) क्योंकि यह ऐसा दौर है कि अगर आदमी मोहताज हो जाए, तो सबसे पहले वह अपना दीन (धर्म) बेच देगा। हलाल (जायज़) कमाई खर्च करना फिज़ुल खर्ची नहीं है।" (ज़ादे राह सफहा ८६)

- हज़रत अबू कल्बा (रज़ि.) ने फरमाया, "व्यापार पूरी ईमानदारी और मेहनत से करो, क्योंकि अगर तुम ऐसा करोगे तो सिराते मुस्तकीम (सीधे सच्चे रास्ते) पर पूरी ईमानदारी और बिल्कुल सही तरीके से चलोगे। इस तरह माल तुम्हें सीधे सच्चे रास्ते से नहीं हटाएगा।"
(ज़ादे राह सफहा ८६)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया: "अल्लाह से ड़रने वाले लोगों के लिए मालदार होने में कोई खतरा नहीं है और तंदुरूस्ती (स्वास्थ्य) अल्लाह से डरनेवाले लोगों के लिए मालदारी से बेहतर चीज़ है और दिल कि खुशी व इतमीनान (संतुष्टता) अल्लाह तआला की नेअ़मत (वरदान) है।" (मिश्कात, बा-हवाला ज़ादे राह, पृ. १७६)

- हज़रत उमर बिन आस (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया: "किसी नेक आदमी के लिए ईमानदारी से कमाया हुआ माल (हलाल माल) एक बढ़िया चीज़ (काबिले कद्र नेअ़मते इलाही/सम्मानित ईश्वरीय वरदान) है।"
(मसनद अहमद, बा-हवाला मुआरिफुल हदीस जिल्द ७ पृ. ७)

- हज़रत मुहम्मद (स.) इन शब्दों में दुआ़ मांगते थे:

"ऐ अल्लाह मैं कुफ्र (आप को एक ईश्वर ना मानने से) और मोहताजगी से आप की पनाह मांगता हूँ। और कब्र के अज़ाब से मैं

आपकी पनाह मांगता हूँ। आपके सिवा कोई इबादत के लायक नहीं है।" (अबू दाऊद, अंजर सही इब्ने माजा १४२/३)

जैसे कुफ्र और गुनाह से जहन्नुम (नर्क) और कब्र का अज़ाब होता है जिसमें बहुत तकलीफ होती है। उसी तरह मुफलिसी और गरीबी से भी इंसान कठोर दिमागी और शारीरिक कष्टों से जूझता है। इसलिए हज़रत मुहम्मद (स.) ने मुफलिसी और गरीबी से अल्लाह की शरण मांगी थी और हमें भी मांगनी चाहिए। और अपनी पूरी कोशिश करनी चाहिए कि हमारी आमदनी बहुत अच्छी हो।

३. ज़ायज मक्सद के लिए दौलत कमाना इबादत है।

- हज़रत कअ्ब बिन अजर (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) के पास से एक आदमी गुज़रा। सहाबा कराम (रज़ि.) ने देखा कि वह रिज़्क की प्राप्ति में बहुत सक्रिय है और पूरी दिलचस्पी (रूचि) इस काम में ले रहा है तो सहाबा कराम (रज़ि.) ने हज़रत मुहम्मद (स.) से निवेदन किया, "ऐ अल्लाह के रसूल (स.) अगर उसकी दौड़ धुप और दिलचस्पी अल्लाह के रास्ते में होती तो कितना अच्छा होता।" इस पर हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमायाः "अगर वह अपने छोटे बच्चों की परवरिश (पालन पोषण) के लिए दौड़ धूप कर रहा है तो उसकी यह जिद्दोजहद (परिश्रम) अल्लाह के रास्ते ही में गिनी जाएगी। और अगर बूढे माँ-बाप की देखभाल के लिए कोशिश कर रहा है तो यह भी फी-सबीलिल्लाह (अल्लाह के रास्ते) ही में गिनी जाएगी। और अगर खुद अपने लिए कोशिश कर रहा है और उद्देश्य यह हैं कि लोगों के आगे हाथ फैलाने से बचा रहे तो यह कोशिश भी फी-सबीलिल्लाह (अल्लाह के रास्ते) ही में गिनी जाएगी। अलबत्ता अगर उसकी यह मेहनत अधिक माल प्राप्त करके लोगों पर बरतरी (वर्चस्व) जताने और लोगों को दिखाने के लिए है तो उसकी यह सारी मेहनत शैतान की राह में गिनी जाएगी।"
(तरग़ीब बा-हवाला तिबरानी, ज़ादे राह, हदीस नं.८८)

अर्थात अपने और परिवार के लिए माल कमाना भी एक प्रकार की इबादत है।

४. इस्लाम में भीख़ मांगने की सख़्त मनाई है।

- हज़रत अनस (रज़ि.) ने फरमाया, "एक बार मदीना के एक व्यक्ति ने हज़रत मुहम्मद (स.) से सवाल किया (भीख मांगी)। आप (स.) ने उससे पूछा, क्या तुम्हारे घर में कोई चीज़ हैं?" उसने कहा, "मेरे पास दो चीज़े हैं, पहला एक ग्लास जिससे मैं पानी पीता हूँ, और दूसरा कम्बल जिसपर मैं सोता हूँ।" हज़रत मुहम्मद (स.) ने उससे फरमाया कि वह दोनों चीज़े ले आओ फिर आप (स.) ने उन दो चीज़ों को दो दिरहम में नीलाम किया। एक दिरहम आप (स.) ने उस गरीब आदमी को दिया ताकि वह अपने परिवार के लिए खाने का सामान खरीदे, और दूसरा दिरहम कुल्हाड़ी खरीदने के लिए दिया।

  जब वह व्यक्ति कुल्हाड़ी ले आया तो हज़रत मुहम्मद (स.) ने अपने मुबारक हाथों से उसमें दस्ता (हँडल) लगाया और उसको देकर फरमाया कि जंगल में जाए और लकड़िया काटकर बाज़ार में लाकर बेचे और उस से पैसा कमाए और उसे निर्देश दिया कि १५ दिन बाद हज़रत मुहम्मद (स.) से मिले। उस गरीब आदमी ने आप (स.) के निर्देश का पालन किया। १५ दिन बाद हुजूर (स.) को खबर दी कि उसने १० दिरहम बचाए हैं। हज़रत मुहम्मद (स.) यह सुनकर बेहद खुश हुए और फरमाया, "कड़ी मेहनत करके रूपया कमाना तुम्हारे लिए भीख़ मांगने से बहुत ज़्यादा बेहतर है, ताकि कयामत के दिन (मरने के बाद हिसाब किताब का दिन) तुम्हारे माथे पर भिखारी न लिखा हो।" (इब्ने माजा २२७५)

- अल्लाह तआ़ला कुरआ़न शरीफ में फरमाता हैः "ऐ अहले किताब! अपने दीन (धर्म) की बात में हद से आगे ना बढो।"
(सूरह निसा आयत १७१)

  अर्थात अल्लाह तआ़ला ने अपनी किसी भी किताब में रहबानीयत (सन्यास) की शिक्षा नहीं दी है। और ईसाई जो रहबानीयत (सन्यास) अख्तियार करते हैं यह दीन में सीमा से बढ़ना है। इसी तरह इस्लाम में भी कोई व्यक्ति शादी-ब्याह और कारोबार छोड़ कर "बाबा" बन जाए तो यह भी दीन में सीमा से बढ़ना है जो अल्लाह तआला को नापसंद है।

- हज़रत सोबान (रज़ि.) बयान करते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमायाः "जो व्यक्ति मुझसे वादा करले कि वह लोगों से सवाल नहीं करेगा तो मैं (अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी से कुछ नहीं मांगेगा) ऐसे व्यक्ति के लिए स्वर्ग का ज़मानतदार होने को तैयार हूँ।"
(निसाई, अहमद, इब्ने माजा, बा-हवाला जन्नत की कुंजी, पृ. ६५)

- हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) बयान करते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमायाः "जिस व्यक्ति को कभी फाका (भूखमरी) पेश आया और उसने लोगों से सवाल करना शुरू कर दिया तो उस का फाका (भूखमरी) कभी दूर ना होगा। और जिस ने खुदा से सवाल किया तो अल्लाह तआ़ला उसको जल्दी या देर से ज़रूर रिज़्क देगा।" (उस के खाने पीने का इन्तेज़ाम करेगा।)
(अबू दाऊद, बा-हवाला जन्नत की कुंजी, पृ. ६६)

- इस्लाम में किसी को यह इजाज़त नहीं हैं कि वह रूपया कमाना बंद करके पूरे तौर पर सिर्फ अल्लाह की इबादत करे और अपना गुज़ारा लोगों के सदकात (दान) पर करे। (तिबरानी, बैहकी)

- नबी करीम (स.) ने फरमाया : अरबी यानी देनेवाला हाथ लेनेवाले हाथ से बेहतर होता है।

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "सदका (दान) लेना ना किसी स्वस्थ और शारीरिक तौर पर चाक व चौबंद व्यक्ति के लिए जायज़ हैं और ना ही किसी मालदार व्यक्ति के लिए।" (तिरमिज़ी)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जो लोग अपना माल बढ़ाने के लिए भिख़ मांगते हैं वह अपना चेहरा ज़ख्मी (दागदार) कर लेते हैं (और बतौर सज़ा) वह दोज़ख में गरम पत्थर खाएंगे।" (तिरमिज़ी)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जिन्हें भिख़ मांगने की आदत है वह कयामत के दिन अल्लाह तआला के हुजूर में इस तरह आऐंगे कि उन के चेहरों पर चमड़ी नहीं होंगी, गोश्त नहीं होगा। सिर्फ चेहरे की हड्डीयां नज़र आऐंगी।" (मुस्लिम, बुखारी)

- हज़रत अबू कब्सा अन्सारी (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया "मैं कसम खाकर तीन चीज़े बयान करता हूँ:

१. किसी बंदे का माल सदका (दान) करने से कम नहीं होता।

२. जिस व्यक्ति पर जुल्म किया जाए और वह सब्र करे तो अल्लाह तआ़ला इसी सब्र की वजह से उसकी इ़ज़्ज़त बढ़ाते हैं।

३. जो व्यक्ति लोगों से मांगने का दरवाज़ा खोलता है अल्लाह तआ़ला उसपर ग़रीबी का दरवाज़ा खोल देते हैं।"

(तिरमिज़ी, इब्ने माज़ा बा-हवाला मुन्तखिब अहादीस, पृ. ५८७)

- हज़रत मुहम्मद (स.) के एक गुलाम थे उन्होंने हज़रत मुहम्मद (स.) से सवाल किया कि "ऐ अल्लाह के रसूल (स.) (मैं आपका गुलाम हूँ इसलिए) क्या मैं भी आपके घर वालों में गिना जाऊंगा।" आपने फरमाया "हाँ मगर एक शर्त पर कि तुम किसी के सामने हाथ ना फैलाओ। फिर उन्होंने हज़रत मुहम्मद (स.) के निधन के बाद भी किसी के सामने हाथ ना फैलाया।"

- डॉ. इकबाल का शेअ़र है।

  खुदी को कर बुलंद इतना के हर तकदीर से पहले।
  खुदा बंदे से खुद पूछे बता तेरी रज़ा क्या है।।

  तो एक मोमिन बंदे को खुद्दार (स्वाभिमानी) होना चाहिए। और परिवार, समाज या शासन की आर्थिक सहायता पर निर्भर नहीं होना चाहीए।

५. ईमानदारी से रिज़्क (रोज़ी) कमाने की बरकत

- हमारा अल्लाह के आदेशों और हज़रत मुहम्मद (स.) के निर्देशों पर अमल करना और उन के मुताबिक व्यापार करना नमाज़, रोज़ा और हज वगैरा के बराबर है। (यानी यह भी इबादत है) क्योंकि अल्लाह के आदेशों पर पाबंदी से (नियमित रूप से) अमल करना ही इबादत है। अगर हम अपने जीवन और अपने व्यापार में अल्लाह के आदेशों पर नियमित रूप से अमल करते हैं तब हमारा जीवन और व्यापार का हर काम अल्लाह तआ़ला के यहाँ इबादत के तौर पर दर्ज किया जाएगा।

(मुआरिफुल हदीस, खंड ७, पृ. ६४)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "ईमानदार व्यापारी कयामत के दिन पैगम्बरों, नेक और शहीद लोगों के समूह में होगा।"

(बुखारी, मुस्लिम)

- हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अगर कोई बंदा भीख़ मांगने से बचने के लिए रोज़ी हासिल करता है, अपने परिवार के पालन पोषण के लिए कमाता है, अपने पड़ोसी की मदद् के लिए रूपया जमा करता है, तो कयामत के दिन उसका चेहरा चौदहवीं के चांद की तरह रौशन (उज्जवल) होगा।"

(मज़हरूल हक, बा-हवाला आसान रिज़्क, पृ.१२)

६. क्या होगा अगर हम ईमानदारी से माल न कमाऐं?

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जो शख्स हराम तरीका (सूद, रिश्वत वगैरा) से माल जमा करके सदका करे इसको इस सदके का कोई सवाब नहीं मिलेगा बल्कि इसे हराम कमाई का वबाल होगा। (मुस्तदरिक १४४० अनअबी हुरैरा (रजि.))

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "इन्सान के कदम कयामत के दिन अल्लाह के सामने से इस वक्त तक नहीं हटेंगे जब तक इससे इसके माल के बारे में सवाल न कर लिया जाएगा कि इसको कहा से कमाया और कहा खर्च किया। (तिरमिजी : २४१६, अन अब्दुल्ल बिन मसउद(रजि.))

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "इसमें कोई शक नहीं की अल्लाह तआला महान और पवित्र है। (यानी हर कमज़ोरी से पाक, हर कोताही (अभाव) से दूर और हर माद्दी ज़रूरत (भौतिक आवश्यक्ताओं) से आज़ाद है। इसलिए वह कोई ऐसी चीज़ कुबूल नहीं फरमाता जो पाक न हो।" (पाक का यह मतलब है कि नेक काम सिर्फ ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए किए जाऐं, न कि उसकी नुमाईश के लिए।) और दान किया जानेवाला माल भी जायज़ तरीके से कमाया हुआ हो। (इसका मतलब यह है कि हलाल माल हो, हराम माल ना हो।) हज़रत मुहम्मद (स.) ने फिर फरमाया, "अल्लाह तआ़ला ने संसार के सारे लोगों को वही आदेश दिए जो तमाम पैगंबरों को दिए गए।" अल्लाह तआला ने पैगंबरों को आदेश दिया कि:

  "ऐ पैगंबर! पाकिज़ा चीज़े खाओं और नेक कर्म करो। जो कर्म तुम करते हो मैं उन्हें जानता हूँ।" (सूरह मुअ़मिनून, आयत ५१)

  "लोगों! जो चीज़े ज़मीन में हलाल और पाकिज़ा हैं वह खाओं।"

(सूरह बकरा, आयत १६८)

(पाक चीज़े यानी हलाल और ज़ायज गिज़ा/आहार)

इसके बाद हज़रत मुहम्मद (स.) ने जिक्र फरमाया एक ऐसे आदमी का जो लम्बा सफर कर रहा है और ऐसी हालत में है कि उसके बाल बिखरे हुए हैं और शरीर और कपड़ों पर धूल-मिट्टी है, और वह आकाश की तरफ हाथ उठा उठाकर दुआ़ करता है, "ऐ मेरे रब! ऐ मेरे पालनहार!" (मगर उस की कोई दुआ़ कुबूल नहीं होती क्योंकि) उस का खाना हराम (अवैध) है। उसका पीना हराम है। उसके कपड़े हराम हैं, और हराम गिज़ा (आहार) से उसका पालन पोषण हुआ है, तो उस मनुष्य की दुआ़ कैसे स्वीकार होगी?

(मस्नद अहमद, बा-हवाला मुआरिफुल हदीस, पृ. ७६)

ऊपर दी गई हदीस के अनुसार अगर गिज़ा (आहार) हराम (अवैध) माल से खरीदी गई हो तो मुसीबत के समय हम कितनी ही आजिज़ी (नम्रता) से दुआ़ करें, अल्लाह तआ़ला हमारी दुआ़ स्वीकार नहीं करेगा। अल्लाह तआ़ला की रहमत (कृपा) और मदद् के लिए हमें ईमानदारी से ज़ायज रोज़ी कमानी ज़रूरी है।

- हज़रत अनस (रज़ि.) ने हज़रत मुहम्मद (स.) से निवेदन किया कि वह उनके लिए (यानी आप (स.) हज़रत अनस (रज़ि.) के लिए) दुआ़ करें ताकी वह "मुस्तजाबुद्दअ़्वात" हो जाऐं। "मुस्तजाबुद्दअ़्वात" का अर्थ है कि वह बंदा जिस कि दुआ़ अल्लाह तआ़ला ज़रूर कुबूल फरमाता है। हज़रत मुहम्मद (स.) ने जवाब दिया, "ए अनस (रज़ि.) हलाल माल कमाओ और हलाल गिज़ा खाओ। अल्लाह तआ़ला तुम्हें "मुस्तजाबुद्दअ़्वात" बना देगा। हराम से खुद को दूर रखो क्यूंकि हराम का एक निवाला, बंदे की दुआ़ को ४० दिन तक नाकाबिले कुबूल

(अस्वीकारीय) बना देता है।" (तरगीब)

अर्थातः हराम आहार से कई रूहानी (आध्यात्मिक) और शारीरिक खराबियां पैदा होते हैं। हराम आहार ईमान का चिराग बुझा देता है और दिल अंधकारमय हो जाता है। उस आहार से बंदा सुस्त, आल्सी और निकम्मा हो जाता है। हराम आहार की वजह से बंदा हराम काम करने लगता है और ना-ज़ायज विचारों और बुरे कामों का शिकार हो जाता है। उससे ज़मीर (अंतरात्मा) मर जाता है। बंदे और नेकी (सत्कर्म) के बीच दीवार खड़ी हो जाती है। संक्षिप्त में यह कि हराम माल बंदे और दीन के बीच दूरी पैदा कर देता है। उसकी आखिरत (मरने के बाद का जिवन) बरबाद हो जाती है। उसपर नेकी (सत्कर्म) का दरवाज़ा बंद हो जाता है, और गुनाहों की हवस का दरवाज़ा उसके लिए पूरी तरह खुल जाता है।

आज के समाज में हराम पर अमल कई तरह से हो रहा है और अधिकांश को तो इसका ज्ञान भी नहीं है। रिश्वत, कारोबारी मामलों में धोका, झुठ, अपनी ज़िम्मेदारी से मुंह मोड़ लेना, ब्याज का कारोबार, दूसरों के हक़ पर डाका डालना, चोरी और लूट, और अन्य हराम कामों पर खुले आम अमल हो रहा है। हमारे धार्मिक ज्ञान में कोई कमी नहीं (यानी हम हराम और हलाल को समझते हैं) लैकिन अमल नहीं करते। इसका खास कारण यह है कि हमारी कमाई में ईमानदारी नहीं, हमारा खाना और पानी हलाल नहीं। इसका नतीजा यह हैं कि हम नेक कामों से दूर हो गए हैं और सीधे सच्चे रास्ते से भटक गए हैं।

- हज़रत मुहम्मद (स.) की एक हदीस के अनुसार कयामत के दिन कुछ बंदे ऐसे होंगे जिनके नेक काम बुलंदी में "तहामा पहाड़" के बराबर होंगे। इसका अर्थ यह है कि उन्होंने बहुत ज़्यादा नेक काम किए होंगे। लैकिन जब वह अल्लाह के सामने हाज़िर होंगे उस समय उनके नेक काम का महत्व नहीं होगा। (अर्थात नेक काम बरबाद हो जाऐंगे और उन्हें नर्क की आग में फेंक दिया जाएगा।) सहाबा कराम (रज़ि.) ने पूछा, "ऐसा क्यूं होगा ऐ अल्लाह के रसूल (स.)?" हज़रत मुहम्मद (स.) ने जवाब में फरमाया कि "उन्होंने नमाज़, रोज़ा, ज़कात अदा की और हज़ भी किया लैकिन खुद को हराम (माल) से कभी नहीं बचाया जिसकी वजह से उन की तमाम नेकियां बरबाद हो गईं।"
  (किताबुल कबाइर)
- अल्लाह के हुक्म से गफलत का वबाल
  कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है जो शख्स रहमान (यानी अल्लाह) की नसीहत से आखें बद कर दो तो हम इसपर शैतान मुसलत कर देता है जो (हर वक्त) इसके साथ रहता है और वह शैतान ऐसे लोगों को सीधे रास्ते से रोकते रहता है और वह समझता है की हम सीधे रास्ते से रोकता रहता है और यह समझता है की हम सीधे रास्ते पर है। (सूरह जख्रफ : ३६ ता ३७)
- दुनीया में लगे रहने का अंजाम
  रसूल अल्लाह (स.) ने फरमाया ''जो शख्स (दुनीया की जेब व जिनत को देखकर और अपने अंजाम को सोचे बगैर) दुनीया में घुसता है तो वह अपने आप को जहन्नुम में डालता है। (शहाबल इमान : १०१२४ अन बिन हुरैरा (रज़ि.))
- दुनीया में बरकत
  रसूल अल्लाह (स.) ने फरमाया ''अल्लाह तआला जिसके साथ भलाई का इरादा फरमाता है तो उसको दुनीया की समज अता फरमाता है और बेशक दुनीया बड़ी मिठी और सरसब्ज और सादाब चिज है जो इसको इसके हक के साथ (यानी हलाल) तरीके से लेगा तो अल्लाह अजाए वजाल इसके लिए इसमें बरकत देगा। (मस्नद अहमद : १६४०४ अन मआवे बिन अबि सुफियान (रजि.))

आप जिंदा हैं या मुर्दा?

हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमायाः दिल को भी ज़ंग लगता है जिस तरह लोहे को ज़ंग लगता है जब भीग जाता है। अर्ज़ किया गया "ऐ अल्लाह के रसूल (स.)! दिल का ज़ंग किस चीज़ से दूर होगा?" आप (स.) ने फरमाया, "मौत को अधिकता से याद करने से और कुरआन की तिलावत से।" (मिश्कात, सफिना ए निजात हदीस नं.३३०)

हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "उस व्यक्ति की मिसाल जो अपने रब को याद करता है जिंदा आदमी जैसी है, और जो अपने रब को याद नहीं करता वह मुर्दे की तरह है।"
(बुखारी व मुस्लिम, सफीना ए निजात हदीस नं.३६०)

सदका करना हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है?

हज़रत मुहम्मद (स.) हर मुसलमान के लिए सदका करना ज़रूरी करार देते हैं, चाहे मुफ्लिसी (गरीबी) क्यूं ना हो, उसकी वज़ाहत (व्याख्या) में हदीस हैः

हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "हर मुसलमान पर सदका (दान) करना लाज़िम है।" लोगों ने कहा, "जिसे कुछ उपलब्ध ही ना हो वह क्या करे?" आप(स.) ने फरमाया, "अपने हाथों से काम करे और फिर खुद को भी फायदा पहूँचाए और सदका(दान) भी करे।" लोगों ने अर्ज़ किया, "अगर उस पर भी कुछ हासिल ना हो सके।" आप(स.) ने फरमाया, "किसी मुसीबत के मारे ज़रूरतमंद की मदद करें। सहाबा कराम (रज़ि.) ने पूछा कि अगर उस से न हो सके तो आप (स.) ने फरमाया, इस स्थिति में उसे चाहिए की खुद अपना तर्जे अमल दुरूस्त रखे और बुराई से बचता रहे कि यही उसके हक में सदका (दान) करार पाएगा।(सही बुखारी व मुस्लिम)

हज़रत मुहम्मद (स.) का दुनिया में आने का उद्देश्य क्या था?

- हज़रत इमाम मालिक अपनी किताब मोअत्ता में नक्ल करते हैं की हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अल्लाह तआ़ाला ने मेरी नियुक्ति पैगंबर की हैसियत से कि है, ताकी में दुनिया को बेहतरीन अख्लाक़ (चरित्र) की शिक्षा दुं।" (मोअत्ता)

४. हमें किस तरह माल-व-दौलत कमाना चाहिए?

हम माल और दौलत कमाने के लिए कौनसा व्यवसाय अख्तियार करें?

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "ईमानदार व्यापारी कयामत के दिन पैगम्बरों, नेक और शहीद लोगों के समूह में होगा।"(बुखारी, मुस्लिम)
- अर्थात इमानदारी से व्यापार करने का बहुत महत्त्व है।
- हज़रत मुहम्मद (स.) ने सऊदी अरब और शाम (Syria) के दरम्यान व्यापार आयात, निर्यात का कारोबार किया था।
- हज़रत आदम (अ.स.) खेती बाड़ी करते थे। हज़रत मुहम्मद (स.) की मदीना और खैबर में कुछ खेतीयां थीं जिनमें खेती बाड़ी होती थी।
- हज़रत ज़करिया (अ.स.) और हज़रत दाऊद (अ.स.) ने उत्पादन (Manufacturing) का कारोबार किया। हज़रत ज़करिया (अ.स.) बढ़ई थे और हज़रत दाऊद (अ.स.) ज़राह बक्तर (युद्ध मे पहने जाने वाले लोहे के वस्त्र) बनाते थे।(मुस्लिम, बुखारी)
- हज़रत मूसा (अ.स.) ने मिस्र (Egypt) से निकलने के बाद हज़रत शोएब (अ.स.) के यहाँ नौकरी की।
- हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमायाः "अल्लाह तआला उस मुसलमान से मुहब्बत करता है जो मेहनत करके रोज़ी कमाता है।"(तरगीब बहवाला तिबरानी, ज़ादे राहः ८६)
- एक बार हज़रत मुहम्मद (स.) के एक सहाबी (साथी) ने हज़रत मुहम्मद (स.) से हाथ मिलाया। आप (स.) ने महसूस किया के सहाबी (रज़ि.) की हथेली सख़्त है। इसलिए आप (स.) ने सहाबी (रज़ि.) से पूछा कि ऐसा क्यूं? सहाबी (रज़ि.) ने जवाब दिया कि अपने परिवार के पालन पोषण के लिए हाथ से सख़्त मेहनत करके रोज़ी प्राप्त करता हूँ। इसलिए हाथ सख़्त हैं। हज़रत मुहम्मद (स.) ने सहाबी (रज़ि.) के हाथ को बोसा चुम लिया और उनकी तारीफ की। (अबू दाऊद)

  अल्लाह तआ़ला के पैगम्बरों ने व्यापार, खेती बाड़ी, उत्पादन (Manufacturing) और नौकरी यह तमाम पेशे (व्यवसाय) अख्तियार किए हैं। इसलिए इनमें से कोई भी पेशा छोटा या हल्का नहीं, सारे पेशे सम्मानजनक हैं। और अल्लाह तआ़ला सख़्त मेहनत करने वालों को पसंद करता है इसलिए हम जो भी काम करें उसे पूरी मेहनत और ईमानदारी से करें।

व्यापार सबसे ज़्यादा पसंदीदा व्यवसाय हैः

- हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमायाः "अल्लाह तआ़ला ने बरकत (ईश्वरीय वरदान) के २० हिस्से किए हैं। उनमें से १६ हिस्से व्यापार में रखे हैं और एक हिस्सा चरवाहों के लिए (नौकरी में)।" (कन्जुल ईमान १६/४, रकमुल हदीस ६३५४)
- मुहाजरीन (शरणार्थी) जो मक्का से मदीना हिजरत कर गऐ थे उनका तमाम माल और जायदाद नष्ट हो गयी थी या लुट गई थी। परंतु कम समय में वह मदीना के नागरिकों से ज़्यादा मालदार हो गऐ। मुहाजरीन की इस महान तरक्की का राज़ उनका व्यापार और दुरदराज के देशों से दरआमद (आयात) का कारोबार था। जबकि मदीना के नागरिकों अर्थात अन्सार की कम तरक्की, आर्थिक खुशहाली में कमी और कारोबार में मंदी कि वजह खेतीबाड़ी और स्थानिक व्यापार था।
- हज़रत सुमय्या बिन अमीर (रज़ि.) कहते हैं कि एक बार लोगों ने हज़रत मुहम्मद (स.) से सवाल किया, "कौनसी रोज़ी बेहतरीन रोज़ी है?" हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "वह रोज़ी जो तुम अपने हाथों से कमाते हो और वह व्यापार जिसमें अल्लाह तआ़ला की नाफरमानी नहीं होती।" (मसनद अहमद, बहवाला जादे राह, हदिस ८७)
- इसलिए अपनी रोज़ी रोटी कमाने के लिए व्यापार का पेशा ही अपनाना चाहिए।

धरती में छिपे खज़ानों से रोज़ी कमाइयेः

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "धरती में छिपे माल (खज़ानों) में अपनी रोज़ी तलाश करों।" (कन्जुल आमाल, जल्द २, सफहा १९७)
- धरती में छिपे माल क्या हैं?

  धरती में छिपे माल (या खज़ानों) की एक लम्बी सूची है। अगर हम उनसे रोज़ी कमाएं तो निश्चित रूप से हम खुशहाल होंगे, क्योंकि हज़रत मुहम्मद (स.) के निर्देश कभी ग़लत नहीं हो सकते। धरती में छिपे माल से रोज़ी कमाने का मतलब है कि ऐसी चीज़ों का कारोबार करना जिनका संबध धरती से हो। उदाहरण के तौर पर कान कनी (खनन) Mining, मअदूनियात (खनीजों), किमयायी (रसायनिक) चीज़ों का कारोबार। मअदूनियात (खनीजों) से संबंधित कारोबार में धातु की सफाई, धातु को ढालना, मादनी (खनीज) तेल निकालना, पेट्रोल का उत्पादन करना। खेतीबाड़ी भी कारोबार की तरह करना जैसे इत्र बनाना, खुरदूनी (खादय) चीज़ें जैसे मीठा तेल और मसाले वगैरा बनाना। यदि आप दैनिक जीवन का निरक्षण करें तो पता चलेगा कि जो व्यापारी धरती में छिपे माल का व्यापार करते हैं वह लखपती या करोड़पती हैं। इसलिए अगर संभव हो तो आप भी उसी दिशा में कारोबार करें।

व्यापार में दौड़ धुप और व्यापारिक सफर का महत्वः

- अल्लाह तआ़ला पवित्र कुरआ़न में इरशाद फरमाता हैः "तुम में कुछ बिमार भी होते हैं और कुछ खुदा के फ़ज़्ल अर्थात रोज़ी की खोज में देश में सफर करते हैं। और कुछ खुदा की राह में लढ़ते हैं। तो जितना आसानी से हो सके उतना कुरआ़न पढ़ लिया करो। और नमाज़ पढ़ते रहो और ज़कात अदा करते रहो। और खुदा को नेक और अच्छी नियत से कर्ज़ देते रहों (यानी दान देते रहो) और जो अमल तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसको खुदा के यहाँ बेहतर पाओगे और खुदा से बख्शिश मांगते रहो। बेशक खुदा बख्शने वाला मेहरबान हैं।"

  (सूरह मुज़म्मिल आयत २०)

  इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने ज़िहाद के साथ व्यापारिक सफर का जिक्र किया है। इससे हम व्यापारिक सफर के महत्व को समझ सकते हैं।

- अल्लाह तआ़ला कुरआने करीम में इरशाद फरमाता है: "फिर जब नमाज़ हो चुके तो अपनी राह लो और खुदा का फ़ज़्ल (रोजी) तलाश करो और खुदा को बहुत याद करते रहो ताकि मुक्ति पाओ।"
(सूरह जुमुआ आयत १०)

- इस आयत में नमाज़ के बाद ज़मीन में चल फिर कर (दौड़ धुप करके) अपनी रोज़ी रोटी तलाश करने का आदेश है।

- "इसका तुम्हें कुछ गुनाह नहीं की हज के दिनों में व्यापार के द्वारा अपने पालनहार से रोज़ी मांगो और जब अरफात से वापस होने लगो तो 'मश्अरे हराम' यानी 'मुजदल्फा' में खुदा का जिक्र करो, उस तरह जिस तरह उसने तुमको सिखाया और उससे पहले तुम लोग उन तरीकों से ना वाकिफ थे।" (सूरह बक़रा आयत १९८)

- इस आयत में हज जैसे पवित्र सफर में भी व्यापार करने की इजाज़त दी गई है।

- "अल्लाह तआला ने व्यापार को हलाल (जायज़) किया हैं और सूद (ब्याज) को हराम (मना)।" (सूरह बक़रा आयत २७५)

- "मोमिनों! एक दूसरे का माल ना-हक ना खाओं। अगर आपस की रज़ामंदी से व्यापार का लेनदेन हो और उससे आर्थिक फायदा प्राप्त हो जाए तो वह जायज़ हैं। और (दूसरे का माल ना-हक खाकर) अपने आप को मृत्यू न दो। कुछ शक़ नहीं कि अल्लाह तआ़ला तुमपर मेहरबान है।"
(सूरह निसा आयत २९)

- ऊपर बयान की गई आयात में जायदाद (संपत्ति) पर नाजायज़ तरीके से कब्ज़ा करने और दुसरों का माल नाजायज़ तरीके से हड़पने और ब्याज के कारोबार की मनाई की गई है। और आपसी कारोबार के द्वारा लाभ कमाने की अनुमति दी गई है।

- "और तुम दरया में कश्तियों को देखते हो कि पानी को फाड़ती चली आती हैं ताकि तुम अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल (कृपा) से रोज़ी तलाश करो और ताकि शुक्र करो।" (सूरह फातिर आयत १२)

- इस आयत में दुर-दराज़ इलाकों की तरफ व्यापारिक सफर करने का इशारा है।

- "जो लोग अपनी जानों पर जुल्म करते हैं जब फरिश्ते (ईश्वरदूत) उन के प्राण कब्ज़ करने लगते हैं तो उनसे पूछते हैं कि तुम किस हाल में थे। वह कहते हैं कि हम देश में मजबूर और कमज़ोर थे। फरिश्ते कहते हैं क्या खुदा की धरती विशाल ना थी कि तुम उसमें हिजरत (स्थानांतरण) कर जाते। ऐसे लोगों का ठिकाना नर्क हैं और वह बुरी जगह है।"
(सूरह निसा आयत ९७)

- (इसका मतलब यह है कि अच्छी तरह कोशिश करने के बाद भी, अगर तुमको अपने मज़हब पर चलने की आज़ादी नहीं है और ना ही रोज़ी प्राप्त करने का मौका है, इस हालत में किसी सुरक्षित इलाके या देश में हिजरत करना ज़रूरी है।)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने १४ साल की उम्र में अपने चाचा अबू तालिब के साथ व्यापार के लिए 'शाम' देश का सफर किया।

- २५ साल की उम्र में हज़रत मुहम्मद (स.) हज़रत खदीज़ा (रज़ि.) के (वर्किंग पार्टनर) बन गए और कारोबार के लिए 'शाम' देश का सफर किया। और ४० साल की उम्र तक उस कारोबार को अंजाम दिया। उस समय आप (स.) मक्का के बहुत ही मालदार व्यक्ति थे। आप के पास २५ हजार दीनार की जमा पूंजी थी जो कि आज के दौर में ५५ किलो सोने के बराबर है।

- हज़रत अनस (रज़ि.), हज़रत मुहम्मद (स.) से रिवायत करते है कि आप (स.) ने फरमाया: اعقل و توكل "अअ्किल व तवक्कल" यानी पहले ऊंट के गले में घंटी बांधो और फिर अल्लाह पर भरोसा करो।" (मुस्लिम)

  (हज़रत मुहम्मद (स.) ने यह एक मुहावरा कहा है, वरना हज़रत मुहम्मद (स.) ने उंटो के गले में घंटी बांधने को मनाई फरमायी है।)

  पहले ज़माने में सफर के दौरान उंटो के गले में घंटी बांधने का रिवाज (प्रथा) था। इसलिए इस कहावत का अर्थ यह है कि पहले व्यापारिक सफर करो और फिर अल्लाह तआ़ला पर भरोसा रखो कि वह अपने कृपा से तुम्हारे कारोबार में बरकत देगा और बहुत मालदार बनाएगा।

  लंबे सफर का कष्ट उठाए बगैर और सख़्त मेहनत किए बगैर अगर किसी को भरोसा है कि अल्लाह उस पर दौलत की बारिश करेगा तो ऐसा व्यक्ति मुर्ख है।

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जो लोग शहर के बाहर से शहर में माल बेचने लाते हैं उनके माल में बहुत बरकत होगी। और जो लोग (महंगाई बढ़ाने के लिए) माल रोकते हैं उनपर लानत (प्रकोप) है।"
(इब्ने माजाः २२२९)

  इस हदीस में भी दरआमद (Import) और सफर से माल में बरकत की तरफ इशारा है।

- हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) कहत हैं कि, हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अगर तुम अल्लाह तआ़ला का कानून धरती पर फैलाने के लिए संघर्ष करो तो तुम्हें माल-ए-गनीमत मिलेगा। अगर तुम रोज़े रखो तो तुम्हारी सेहत बेहतर होगी और सफर करो ताकि तुम्हें दूसरों के आगे हाथ ना फैलाना पड़े" (तरगीब बहावाला तिबरानी, ज़ादे राह)

  इस हदीस में गरीबी व फाका (भुकमरी) से बचने के लिए व्यापारिक सफर करने की हिदायत की गई है।

- "शहाब बिन इबाद कहते हैं, कबीला अब्दुल कैस का जो वफद (प्रतिनिधिमंडल) हज़रत मुहम्मद (स.) की सेवा में मदीना (इस्लाम लाने के मक्सद से ९ हिजरी में) गया था, उसके कुछ सदस्यों ने बयान किया कि जब हम लोग मदीना पहूँचे तो मुसलमान बहुत खुश हुए। उन्होंने हमें अच्छी ज़गह दी, खुब आवभगत की। हज़रत मुहम्मद (स.) ने भी हमें खुशआमदीद (सुस्वागतम) कहा, हमारे लिए दुआ़ फरमायी और मोहब्बत भरें अंदाज़ में बातचीत की और हमारे इलाके के एक-एक गांव का नाम लेकर हाल पूछा जैसे सिफा, मुशक्कर और दूसरी बस्तीयां। मुंजरा बिन आयद (रज़ि.) ने कहा, "मेरे माँ-बाप आप (स.) पर कुरबान ऐ अल्लाह के रसूल (स.), आप तो हमारे इलाके से हमसे ज़्यादा वाकिफ हैं।" आप (स.) ने फरमायाः "हां, में तुम्हारे मुल्क में व्यापार के लिए गया हूँ। वहाँ के लोगों ने मेरी बड़ी खातिर (आवभगत) की। " (तरगीब व तरहीब, बहावाला मस्नद अहमद, ज़ादे राह हदीस ४००)

इस हदीस शरीफ से ज़ाहिर होता है कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने भी व्यापार के उद्देश्य से बहुत ज़्यादा सफर किये हैं।

- ऊपर बयान की गई कुरआनी आयात और अहादीस शरीफा से ज़ाहिर होता है कि माली खुशहाली (आर्थिक समृद्धि) के लिए व्यापारिक सफर करना बहुत ज़रूरी है। हज़रत मुहम्मद (स.) ने भी व्यापारिक सफर किए हैं। कारोबारी दृष्टीकोण से आप (स.) एक बहुत ही कामयाब व्यापारी (Businessman) और सर्वाधिक मालदार व्यक्ति थे। इसलिए हमें हज़रत मुहम्मद (स.) के इस तरीके से सबक सीखना चाहिए।
- इसलिए जो व्यक्ति खूब माल कमाना चाहता है उसे ऊपर लिखी गई कुरआनी आयात और हदीसों पर गौर करना चाहिए। अपने पैदाईशी स्थान पर हमेशा रहना, खेती बाड़ी करना या स्थानीय (Local) उत्पादनों का व्यापार करना या हमेशा नौकरी अख्तियार करना आपको उम्र भर सीमित कमाई पर रखेगा। यानी आप गरीब ही रह सकते हैं। इसलिए रूकावटों को तोड़िए, सक्रिय होकर दूरदराज का सफर करें ताकि अच्छा कारोबार कर सकें और खुब नफा प्राप्त कर सकें।
- मौजुदा दौर में इंटरनेट, व्यापारिक डायरेक्टरीज़ और व्यापारिक पत्रिकाओं वगैरा में विज्ञापनों के द्वारा भी दूरदराज इलाकों से व्यापार किया जा सकता है या अगर आप इंटरनेट पर दुरदराज इलाकों के लोगों से व्यापारिक सम्पर्क बनाते हैं तो यह भी दुरदराज इलाको में सफर करने जैसा ही हैं और इन्शा अल्लाह इससे लाभ होगा इसलिए हमें इस दिशा में भी सकारात्मक तरीके से सोचना चाहिए।

व्यापार के लिए आधुनिक और बेहतरीन तरीके अपनाइये:

- खंदक की लड़ाई के समय हज़रत सलमान फारसी (रज़ि.) ने सुझाव दिया की शहर के आसपास खंदक (गहरी खाई) खुदवाई जाए ताकि हमलावरों को रोका जा सके। हज़रत मुहम्मद (स.) ने आपका सुझाव और नया दृष्टीकोण स्वीकार फरमाया, खंदक (गहरी खाई) खोदने का हुक्म दिया और उस नए तरीके की टेक्निक की वजह से सिर्फ ३००० मुस्लिम फौजीयों ने २५००० हमलावरों का कामयाबी से मुकाबला किया और अपने शहर का बचाव किया। इस तरह नई टेक्निक के इस्तेमाल से बहुत फायदा उठाया।
- हजरत अबू हुरेरा (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "ज्ञान और बुद्धि (हिक्मत या दानाई), मोमिन की गुमशुदा मिल्कियत है, इसलिए उसे यह जहाँ मिले, इसपर उसका ज़्यादा अधिकार है।"
  (तिरमिज़ी, इब्ने माजा, हाकिम, मुस्लिम, बा-हवाला मुन्तखीब अहादीस, हदीस नं. २०५)
- हज़रत उमरौ बिन आस (रज़ि.) ने ८ हिजरी में ज़ातुस्सलासल नामक लड़ाई में अखुल व जिज्म के खिलाफ ब्लेक आऊट का तरीका अख्तियार किया। आपने अपने फौजीयों को हुक़्म दिया की तीन रातों तक युद्ध के मैदान में कोई रौशनी न की जाए ना आग जलाई जाए। आपने अपने सैनिकों की संख्या खुफिया रखने के लिए ऐसा किया। जब हज़रत मुहम्मद (स.) को इस नई टेक्निक की सूचना मिली तो आप (स) ने उसकी तारीफ की। (जमउल फवाइद, खंड २, पृ. २७)
- हज़रत शद्दाद बिन औस (रज़ि.) के अनुसार हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अल्लाह तआ़ला ने बंदो पर हर काम बेहतरीन (सर्वोत्तम) तरीके से करना ज़रूरी घोषित किया है।"
  (मुस्लिम, बा-हवाला ज़ादे राह, पृ. ३४०)

ऊपर बयान की गई हदीसों से हम इस बात को समझ सकते हैं कि नई टेक्निक (Modernisation) या वैज्ञानिक खोज और उनपर अमल करना एक इस्लामी तरीका है और बेहतरीन क्वालिटी (सर्वोत्तम गुणवत्ता वाले) काम इस्लामी उसूलों में से एक है। जो भी इसपर अमल करेगा ज़रूर कामयाब होगा। अगर हमें कामयाब होना है तो उन दोनों पर ज़रूर अमल करना होगा।

खुलासा:

ऊपर उल्लेख की गई बातों से हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि:

१.हमें माल और दौलत कमाने के लिए कठोर परिश्रम करना चाहिए, यह मेहनत शारीरिक या दिमागी भी हो सकती है। क्योंकि शारीरिक परिश्रम, कर्ज मांगने या गैरों से मदद् मांगने से बेहतर हैं।

२. अपनी रोज़ी के लिए हमें व्यापार को प्राथमिकता देनी चाहिए।

३. यदि संभव हो तो वह व्यापार करें जिसका संबंध धरती से हो।

४.हमें अपने व्यापार को फैलाने के लिए (दूरदराज क्षेत्रों तक) या तो खुद सफर करना चाहिए या इंटरनेट और विज्ञापनों इत्यादि की मदद् लेनी चाहिए।

५. हमें अत्याधुनिक टेक्नीक अख्तियार करनी चाहिए।

६.जो भी काम करें वो कामील (आदर्श) या सर्वोत्तम गुणवत्ता वाला (Best Quality) हो और बढ़िया हो।

५. हमारे व्यापार के नियम क्या होने चाहिएं?

- हज़ार मील का सफर पहले कदम से शुरू होता है। लैकिन जब पहला कदम ही गलत दिशा में उठे तो क्या होगा? उस समय दो हज़ार मील का सफर भी आप को मंजिले मक्सूद (लक्ष्य) तक नहीं पहुंचाएगा। मंजिले मक्सूद का जानना ही अहम नहीं है बल्कि सही रास्ते का जानना भी ज़रूरी है, ताकि इससे पहले कि बहुत देर हो जाए आप अपनी मंजिले मक्सूद तक पहुंच सकें। इस तरह व्यक्ति कोई महान राज्य या महान व्यापारिक संघटन नहीं बना सकता जब तक कि वह सही उसूलों (नियमों) या सही इंतेजामी पॉलिसी (प्रशासनिक नीतियों) को ना अपनाएं।

क्या सही और क्या गलत है इसकी शिक्षा हमें कौन दे सकता हैं?

- इस कायनात (ब्रह्मांड) का निर्माता व मालिक अर्थात अल्लाह तआ़ला जिस ने यह ब्रह्माडं बनाया और मानव समाज बनाया है सिर्फ वही बता सकता हैं कि मानव समाज के लिए क्या सही और क्या गलत है। इसलिए हमें अल्लाह तआ़ला के आदेशों पर ही ध्यान देना चाहिए।

हमें अल्लाह के आदेशों का ज्ञान कैसे हो सकता है?

- अल्लाह तआ़ला की शिक्षाओं और आदेशों का ज्ञान हमें अंतिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (स.) के माध्यम से प्राप्त होता है। इसलिए हमें पवित्र क़ुरआन और हज़रत मोहम्मद (स.) के निर्देशों का अध्ययन करना चाहिए ताकि हमें पता चले कि हमारे व्यापारिक नियम क्या होने चाहिएं। फिर हमें उन नियमों को अपने जीवन में अपनाना चाहिए ताकि हम निश्चित तौर से कामयाब हो सकें। व्यापार के कुछ इस्लामी उसूल या नियम निम्नलिखित हैं:

ईश्वरीय वरदान की कद्र करो (कीमत जानो):

- हज़रत जुबैर बिन अबिदा नाफा (रज़ि.) कहते हैं, "मैं व्यापार के लिए मिस्र (Egypt) और शाम (Syria) का सफर किया करता था (उस सफर के द्वारा मैं अच्छी खासी कमाई कर लेता था) एक बार मैंने अपने पुराने व्यापार को बंद करने और ईराक जाकर नया व्यापार करने का फैसला किया। जब मैं ने हज़रत आएशा (रज़ि.) से इस योजना का जिक्र किया तो हज़रत आएशा (रज़ि) ने ऐसा करने से मना फरमाया और कहा "अपना पुराना व्यापार जारी रखो और मिस्र और शाम में अपना कारोबार करते रहो क्यूंकि हज़रत मोहम्मद (स.) ने फरमाया अगर अल्लाह तआ़ला तुम्हें एक कारोबार से दौलत देता है तो उसे मत छोड़ो, जब तक कि रोज़ी का वह माध्यम (स्त्रोत) ना बदल जाए या उसमें खराबी होने लगे।" (इब्ने माजाः कन्जुल ईमान, ६२६६)

  खुलासाः हम इस किताब में पढ़ेंगे कि दूरदराज़ इलाकों का सफर व्यापार की तरक्की के लिए बहुत ज़रूरी है। इसलिए ईराक का सफर गलत नहीं है, बल्कि गलत यह है कि एक चलते हुए लाभदायक कारोबार को बंद किया जाए। अर्थात मिस्र और शाम से मुकरर (निर्धारित) आमदनी को बिना कारण बंद किया जाए, और कोई नया व्यापार स्थापित करने का प्रयास किया जाए। पुराना कारोबार जारी रखते हुए नया कारोबार और नया बाज़ार तलाश करना विकास के लिए बहुत ज़रूरी है। इसलिए आर्थिक विकास के लिए अगर हम कुछ नया कारोबार करना चाहते हैं तो यह बहुत अच्छी इच्छा है। मगर पुराना व्यापार या कारोबार या नौकरी को छोड़े बगैर नया कारोबार शुरू करें। हाँ जब नया कारोबार चल पड़े और पुराने कारोबार में मुनाफा ना हो या कोई खराबी पैदा हो जाए तो उसे बंद करें वरना दोनों साथ चलाएं।

- हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जिसके पास कोई महत्वपूर्ण वस्तु हो वह उस की रक्षा करे।"(इब्ने माजा २२२३)

- महत्त्वपूर्ण वस्तु, जायदाद या माल और दौलत है। इसलिए अगर किसी बंदे की मिल्कीयत में माल व दौलत या सम्पत्ति हो या उसे विरासत में मिले तो उसे चाहिए कि वह उसे न गंवाए न बरबाद करे।

- हज़रत हारिस (रज़ि.) कहते हैं कि, हम में एक साहब थे जो घोड़ी पालते थे। जब घोडी नया बच्चा देती तो उसको ज़बह कर डालते, और कहते कि क्या मैं इतने दिन जिंदा रहूंगा कि (यह घोड़ी बड़ी हो जाए और) मैं उस पर सवारी करूं? इसपर हज़रत उमर (रज़ि.) का हुक्मनामा (आदेश पत्र) मिला कि जो अल्लाह ने तुमको दिया है उसको ठिक से काम में लगाओ। क्यूंकि अल्लाह के हुक्म में बड़ी उदारता (महानता) होती है। (अल अदबुल मुफ़रिद उर्दू, खंड १, पृ. ३२०)

- इसका मतलब यह है कि हो सकता है कि अल्लाह तआ़ला उस बंदे को लम्बी उम्र प्रदान कर दे। या अगर वह घोड़ी का बच्चा जीवित रहता है और बालिग (वयस्क) हो जाता तो वह उस बंदे की आने वाली पीढ़ी के काम आता। (इस निर्देश से पता चलता है कि हमें हमेशा आशावादी रहना चाहिए, और अपनी आमदनी का स्त्रोत (माध्यम) नष्ट नहीं करना चाहिए। बल्कि उसे उन्नती देनी चाहिए।)

व्यापार के सामान्य नियम

हलाल रोज़ी कमाओ:

- रसूल (स.) ने फरमाया रोजी को दूर ना समझो क्योंकी कोई आदमी उस वक्त नहीं मर सकता जब तक जो रोजी उसके मुक़द्दर में लिख दी गई है वह उसको ना मिल जाए। लिहाजा रोजी हासिल करने में बेहतर तरीका इख्तीयार करो। हलाल रोजी कमाओ और हराम को छोड दो। (मुश्तदरीक हाकीमः २१३४ अनजाबिर बिन अब्दुल्ला)

- नबी करीम (स.) ने फरमाया ए लोगो अल्लाह तआला से ड़रते रहो और कमाई में हलाल तरीका इख्तीयार करो। (इब्ने माजा २१४४ इब्ने जाबिर बिन अब्दुल्ला)

गुंडागर्दी मना है:

- अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआ़न शरीफ में फरमाया है:

  "ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, आपस में एक दूसरे का माल ग़लत ढंग से न खाओ। लेन-देन होना चाहिए आपस की रज़ामन्दी (सहमति) से। और (दूसरों के साथ अन्याय करके) खुद अपनी हत्या न करो। विश्वास करो कि अल्लाह तुम पर मेहरबान है। जो व्यक्ति जुल्म और ज़्यादती के साथ ऐसा करेगा (दूसरों का माल गलत ढंग से लेगा) उसको हम ज़रूर ही आग में झोकेंगे और यह अल्लाह के लिए कोई कठिन काम नहीं है। अगर तुम उन बड़े बड़े गुनाहों से बचते रहो जिनसे तुम्हें रोका जा रहा है तो हम तुम्हारे (छोटे-छोटे) गुनाह माफ कर देंगे और तुमको इ़ज़्ज़त की जगह में दाख़िल करेंगे।"

  (सूरह निसा, आयत २९-३१)

  इस्लामी शिक्षाऐं इस बात की अनुमति नहीं देतीं कि आप ज़बरदस्ती किसी का माल छीन लें या ज़बरदस्ती खरीद लें, या अपना सामान किसीको खरीदने पर मजबूर करें, या किसीको ज़बरदस्ती नौकरी पर रखें या किसीको मजबूर करें कि वह आप की मर्ज़ी के अनुसार अपना पेशा (Profession) अपनाए।

  इस्लाम हर मनुष्य को अपनी मर्ज़ी से खरीदी और बिक्री की अनुमति देता है। इस्लाम मनुष्य को अपनी पसंद का पेशा (Profession) अपनाने और अपनी निवास का सीान अख्तियार करने की आज़ादी देता है।

लैंगिक (Sex) मामलात से जुड़े सारे कारोबार हराम (अवैध) हैं।

- ''और (ज़िना) व्याभिचार के करीब न फटको। वह बहुत बुरा कर्म है और बड़ा ही बुरा रास्ता।'' (सूरह बनी इस्राईल आयत ३२)

- हज़रत आऐशा (रज़ि.) के मुताबिक नबी करीम (स.) ने फरमाया मैं किसी की नकल उतारना पसंद नहीं करता चाहे उसके औज मुझे ढ़ेरों दौलत मिले। (तिरमीजी बाहवाला सफीना निजात हदीस २३७)

  इस्लामी क्षिक्षाओं के अनुसार आपका कारोबार किसी तरह भी लैंगिक (Sex) मामलात से जुड़ा ना हो। फिल्म और उससे जुड़े सारे कारोबार किसी न किसी तरह लैंगिक मामलात से जुड़े होते हैं, इसलिए वह हराम (अवैध) हैं।

धोखा मत दो!

- हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "बई-नजश" की इज़ाजत नहीं"। "बई-नजश" एक अरबी शब्द है जिसका अर्थ है 'धोखा देना'। मतलब यह कि घटिया सामान और खराब व्यापारिक वस्तुऐं बेचना इस्लाम में मना है।

  (इब्ने माजा २२५०)

- एक बार हज़रत मुहम्मद (स.) एक बाज़ार से गुज़रे। आप (स.) ने सूखा और बढ़िया अनाज़ का एक ढेर देखा। आप (स.) ने अपनी उंगली उस ढेर में डाली और अंदर अनाज को गिला महसुस किया। आप (स.) ने दुकानदार से पूछा की ऐसा क्यों? उसने अर्ज किया, "कल की बारिश से अनाज भीग गया।"

  हज़रत मुहम्मद (स.) ने कठोर लहजे में उससे फरमाया, "तुमने गिला अनाज, सूखे अनाज के नीचे छूपाकर धोखा दिया और धोखा देनेवाला मुस्लिम नहीं हो सकता।" (इब्ने माजा २३०३)

- इमामे आज़म हज़रत अबू हनीफा (रज़ि.) (हनफी मसलक की बुनियाद रखने वाले) एक मालदार व्यापारी थे और शहर में उनकी कई दुकानें थीं। एक बार उन्होंने दुकान का निरिक्षण करते हुए देखा कि अलमारी में एक खराब कपड़ा है। आपने अपने कारोबारी साझीदार हाफिज़ बिन गयास को हुक्म दिया कि जब तुम यह कपड़ा बेचना तो ग्राहक को यह खराबी दिखा देना।

  दूसरे दिन आपने उसी दुकान का निरिक्षण किया और हाफिज़ बिन गयास से पूछा कि खराब कपड़े को कैसे बेचा? उन्होंने जवाब दिया, "अफसोस! मैं वह खराबी दिखाना भूल गया।" इमाम अबू हनीफा (रज़ि.) हाफिज़ बिन गयास की इस धोखा देने वाली भूल से बहुत दुखी हुऐ और उन्होंने उस दिन की सारी कमाई गरीबों में बांट दी, और हाफिज़ बिन गयास को कारोबार से अलग कर दिया।

- हज़रत सईद बिन अबी सईब (रज़ि.) ने किसी मौके पर हज़रत मुहम्मद (स.) से कहा, "हम और आप (स.) जाहिलियत के ज़माने में (इस्लाम में आने से पहले) साझेदारी में कारोबार करते थे, लैकिन आप (स.) ने ना तो कभी धोखाबाजी की और ना झगड़ा किया। (जैसा कि कारोबार में साझी लोग करते हैं।)" (अबू दाऊद, बा-हवाला ज़ादे राह, हदीस ३४८)

- हज़रत अबू हूरैरा (रज़ि.) हैं कि, हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अल्लाह तआ़ला फरमाता है जब तक किसी कारोबार के दो साझीदार आपस में धोखाबाजी और बेईमानी ना करें मैं उनके साथ रहता हूँ (कारोबार में बरकत और उन्नती होती है)। लैकिन जब उनमें से एक साझी अपने साथी से धोखाबाजी करता है, तो मैं उनसे अलग हो जाता हूँ और शैतान आ जाता है। (मैं अपनी रहमत (कृपा) और मदद का हाथ उन पर से हटा लेता हूँ और शैतान आकर उनके कारोबार को बरबादी की राह पर डाल देता है)।"

  (अबू दाऊद, बा-हवाला सफिना ए निजात, हदीस नं.२१२)

  ऊपर दी गई हदीसों से हम समझ सकते हैं कि धोखे बाजी इस्लाम में सख्ती से मना है। और जो भी उन्हें अपनाएगा इस्लाम से खारिज (बाहर) होगा और बरबाद होगा।

धोखा मत खाओ:

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "ईमान वाला एक छेद (सांप के बिल) से दुबारा नहीं डसा जाता" (बुखारी, मुस्लिम, बा-हवाला मुन्तखब अबवाब)

  इसका मतलब यह है कि एक सच्चा ईमानवाला एक व्यक्ति या एक संस्था से दोबारा धोखा नहीं खाता। पहली बार किसी व्यक्ति या संस्था से धोखा खाने के बाद उसे सबक (शिक्षा) मिल जाता है और वह फिर दोबारा कभी ऐसे धोखा देने वाले से सौदा नहीं करता। इसलिए जब हमें पता चल जाए कि कोई व्यक्ति या संस्था धोकादायक है तो उनसे दोबारा कोई कारोबार नहीं करना चाहिए।

झूठ पर पाबंदी:

- एक बार हज़रत मुहम्मद (स.) अपने साथियों (रज़ि.) के साथ कहीं जा रहे थे। रास्ते में आप (स.) ने ऊँट बेचनेवाले व्यापारियों को देखकर फरमाया, "ऐ व्यापारियों! कयामत के दिन व्यापारी गुन्हेगार और खताकार की तरह उठाए जाऐंगे। सिवाय उनके जिन्होंने खुदा का भय किया, सच कहा और नेक काम किए।" (इब्ने माजा २२२२)

- हज़रत अबू कताबा (रज़ि.) कहते हैं, "हज़रत मुहम्मद (स.) ने हमें व्यापार में कसम (सौगंध) खाने से मना फरमाया है। क्योंकि कसम खाने से माल बिक जाता है लैकिन अल्लाह की बरकत (कृपा) खत्म हो जाती है।" (इब्ने माजा २२८६)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "कयामत के दिन (मरने के बाद हिसाब के दिन) अल्लाह तआ़ला उस बंदे से ना बात करेगा और ना ही उसको रहम (कृपा) की नज़र से देखेगा जो धोखा देने के लिए सौगंध खाकर अपना माल बेचता है। उस बंदे का ना गुनाह माफ किया जाएगा ना ही वह स्वर्ग में दाखिल होगा।" (मुस्लिम)

- हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "मुनाफिक (कपटाचारी) की चार निशानियां हैं:

१. वह हमेशा झूठ बोलता है।

२. वह अपना वादा (वचन) कभी पूरा नहीं करता।

३. जब उसपर भरोसा करके किसी चीज़ की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी दी जाए, तो वह धोखा देता है।

४. जब वह झगड़ा करता है, तो गाली गलोज करता है। (बुखारी, मुस्लिम)

नोट: मुनाफिक, बेदीन (धर्महीन) से अधिक बुरा होता है। कयामत के दिन उन्हें दुसरों से ज़्यादा कष्टदायक अज़ाब (दंड) दिया जाएगा। इसलिए व्यापार में इन चार बुराइयों से बचना चाहिए।

अपने सामान की गैरंटी दो:

- नबी करीम (स.) ने फरमाया तुम ऐसा माल बेचकर मुनाफा नहीं कमा सकते जिस माल की तुम जमानत (Guarantee) नहीं दे सकते। (इब्ने माजा २२६५)

- हज़रत अबी शरीअ रिवायत करते है की नबी करीम ने फरमाया जो शख्स अपने भाई बेची हुई चीज़ को (वापस करने पर) वापस ले ले तो कयामत के दिन अल्लाह तआला उसके गुनाह माफ कर देगा। (तिबरानी औसतः ८८६)

- यानी आपने अपना सामान बहुत से खुबिया बयान करके किसी को बेचा और खरीददार ने उसे इस्तेमाल करने के बाद आपके बताए हुए खुबियों कि तरह न पाया और वह आपको वापस करना चाहता है तो उसे आपको वापस ले लेना चाहिए। और आप अपना वादा पुरा करते हो तो उस इमानदारी पर आपको सवाब मिलेगा।

वादे (वचन) के पाबंद रहो:

- एक व्यापारीक सौदे में हज़रत मुहम्मद (स.) और एक यहूदी अब्दुल्लाह बिन अबील हामा ने वादा किया कि एक जगह मिलेंगे। निर्धारित समय पर हज़रत मुहम्मद (स.) उस जगह पहुंच गए, लैकिन यहूदी उस मुलाकात के वादे को भूल गया। हज़रत मुहम्मद (स.) तीन दिन तक वादे के अनुसार उस जगह पर जाते रहे। तीसरे दिन यहूदी को अपनी मुलाकात का वादा याद आया और वह उस जगह दौड़ता हुआ पहुंचा और देखा कि हज़रत मुहम्मद (स.) उस जगह पर यहूदी की प्रतिक्षा कर रहे हैं। उसने अपनी गलती की माफी मांगी। हज़रत मुहम्मद (स.) ने अपनी नाराज़गी प्रकट करते हुए बस इतना फरमाया, "तुमने मुझे बहुत कष्ट पहूंचाया क्यूंकि पिछले ३ दिनों से मैं तुम्हारा इंतेजार कर रहा हूँ।"
(शिफा, पृ. ५६)

- अल्लाह तआ़ला कुरआ़न में फरमाता है: "अपने अहद (वचन) का अनुपालन करो, बेशक वचन के विषय में तुम्हें (कयामत के दिन) जवाब देना होगा।" (सूरह बनी इस्राईल आयत ३४)

- और खुदा को जो वचन दो तो उसको पूरा करो, और जब पक्की कसमें (सौगंध) खाओ तो उनको मत तोड़ो, कि तुम खुदा को अपना ज़ामीन मुकर्रर कर चुके हो, और जो कुछ तुम करते हो खुदा उसको जानता है।
(सूरह नहल, आयत ९१)

- "ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, प्रतिबन्धनों (वादों) का पूर्ण रूप से पालन करो।" (सूरह मायदा आयत १)

- नबी करीम (स.) ने फरमाया जिस शख्स में अहद (वादे) की पाबंदी नहीं उसमें दीन नहीं। (शहाबुल अलइमान : ४३५४ अन अनस)

- हज़रत जैद बिन अरकम (रज़ि.) कहते हैं कि, हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अगर कोई बंदा अपने भाई से कोई वादा करता है और उसकि नियत है कि वह वादा पूरा करे, लैकिन किसी मुश्किल हालत की वजह से अगर वह अपना वादा पूरा न कर सका और वादे के समय के अनुसार न आ सका, तो उसे दोषी नहीं कहेंगे।" (अबू दाऊद, तिरमज़ी)

नेक कामों की मज़दूरी ना लें:

- हज़रत अबी बिन कअब (रज़ि.) फरमाते हैं कि मैंने एक बंदे को कुरआ़न पढ़ाया। उसके मुआ़वज़े में (फीस के तौर पर) उसने मुझे कमान दी। जब हज़रत अबी बिन कअब (रज़ि.) ने हज़रत मुहम्मद (स) को इसकी सूचना दी तो आप (स.) ने फरमाया, "अगर तुम यह कमान कबूल करोगे तो कयामत के दिन तुम्हें एक आग की कमान दी जाएगी।" हज़रत अबी बिन कअब (रज़ि.) ने फौरन वह कमान उसके मालिक को लौटा दी। (इब्ने माजाः २२३५)

उचित कीमत (Fair price) *लिया करो:*

हज़रत मुहम्मद (स.) ने हिदायत फरमायी कि व्यापार से वाजबी मुनाफा (Fair Profit) कमाओ और "गबन फाहश" पर पाबंदी लगाई। इसका मतलब यह है कि बहुत ज़्यादा मुनाफा न कमाओ (और अपना माल मुनासिब कीमत पर बेचो) ताकि ग्राहक को आर्थिक नुकसान न हो।

कभी दूसरों को नुकसान न पहूँचाओ:

- हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) कहते हैं कि, जब व्यापारी और खरीददार कोई सौदा कर रहे हों तब हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया कि "उन के सौदे में दखलअंदाजी (हस्तक्षेप) ना करो, और उसी माल के लिए पहले ग्राहक से ज़्यादा कीमत की पेशकश न करो।"

(इब्ने माजाः २२४८)

(क्योंकि ऐसा करने से माल की कीमत निलामी की तरह बढ़ने लगती है। इसकि वजह से व्यापारी को ज़्यादा कीमत मिलती है और खरीददार का नुकसान होता है। यदि व्यापारी और पहले खरीदार का सौदा टुट जाए तो बाद में कोई भी ग्राहक वही माल किसी भी कीमत पर खरीद सकता है।)

अपने ग्राहक को उसकी आशा से ज़्यादा संतुष्ट करो:

- हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्ला (रज़ि.) कहते हैं कि "हज़रत मुहम्मद (स) ने हमें हिदायत फरमायी कि जब माल तोलें या नापें तो असल वज़न या नाप से थोड़ासा ज़्यादा दें।" (इब्ने माजाः २३००)

(यह एक आम और बुनियादी कानून है, इसका मतलब यह है कि अपना माल बेचते समय या अपनी सेवा पेश करते हुए अपने माल या सेवा की सही और स्पष्ट कीमत बतानी चाहिए। लैकिन कीमत वसूल करने के बाद या उजरत मिलने के बाद आपने अपनी बताई हुई (वादा की हुई) मात्रा और विशेषता के अनुसार नहीं बल्कि उस से कुछ ज़्यादा माल या सेवा देनी चाहिए।)

एक संभावित व्याख्याः मान लीजिए आपको एक मशीन बनाने का ऑर्डर मिला। मशीन बनाते हुए आपने अत्यंत कोशिश करके बढ़िया कच्चा माल मशीन बनाने के लिए खरीदा। लैकिन कच्चा माल की उत्तमता के लिए आपकी निर्भरता कच्चे माल के व्यापारी पर है। उस व्यापारी ने आपको दूसरी श्रेणी का माल, प्रथम श्रेणी का कहकर दिया। आपने अत्यंत कोशिश से उत्तम क्वालीटी वाली मशीन बनाई। लैकिन कच्चे माल में खराबी के कारण (जो आप नहीं जानते) आपने कम क्वालीटी वाली मशीन ग्राहक के हवाले कर दी।

हज़रत इमाम गज़ाली (र.अ.) की किताब 'किमया-ए-सआदत' के अनुसार कयामत के दिन अल्लाह तआला आपके तमाम दुनियावी सौदों की जांच करेगा, अगर यह पाया गया कि एक बार आपने एक दूसरी श्रेणी की मशीन ग्राहक को दी थी। और अगर उस समय आपने यह कहा कि आप नहीं जानते थे कि वह घटिया माल या दूसरी श्रेणी की क्वालीटी के माल से बनी है, तो आपसे कहा जाएगा कि अपने निर्दोष होने का सुबूत पेश करें, और अपने माल की क्वालिटी जांचने या परखने का तरीका बताईये। अगर आपका तरीका नाकिस निकला, तो आपको लापरवाही के लिए सज़ा मिलेगी। और यह जांच हर प्रकार के सौदे पर लागू होगी। इसलिए उस सज़ा से बचने के लिए हमेशा वादे से कुछ ज़्यादा दें, ताकि अगर आपने अंजाने में कोई घटिया माल या घटिया सेवा दी है तो ज़्यादा देने से उनका समाधान हो जाए और आप सज़ा से बच जाएं और कयामत में आपको शरमिंदगी ना हो।

शोषण पर पाबंदी (Exploitation is Prohibited):

- हज़रत जबीर (रज़ि.) के अनुसार हज़रत मुहम्मद (स.) ने शहर के दलालों को देहातियों का माल बेचने से मना फरमाया है, आप (स.) चाहते थे कि किसान या देहाती अपना माल शहरों में खुले तौर पर बेचें और कोई रूकावट ना हो। आप (स.) ने फरमाया कि आपसी सहमति के कारण (आपस के कारोबार से) अल्लाह तआ़ला हर बंदे को रोज़ी प्रदान करता है। (इब्ने माजाः २२५३)

व्याख्याः किसान और गांव के फेरीवाले भोलेभाले और सादा दिल होते हैं। उन्हें अपने माल की सही कीमत मालूम नहीं होती। शहरी दलाल चालाक, होशियार और कभी धोखेबाज़ भी होते हैं। वह देहातियों का माल बहुत ही कम कीमत पर खरीद कर बहुत ज़्यादा कीमत पर शहर में बेचते हैं। इस तरह देहातियों को जो उनके कठोर परिश्रम का ज़ाइज हक है, वह नहीं मिलता। और दलाल बगैर मेहनत के बहुत ज़्यादा मुनाफा कमाते हैं। चूंकि यह भोलेभाले देहातियों का शोषण है इसलिए हज़रत मुहम्मद (स.) ने इस तरह के कारोबार पर पाबंदी लगाई है।

- हज़रत अब्दुल्ला इब्ने उमर (रज़ि.) कहते हैं कि, हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमायाः "मज़दूर की मज़दूरी उसका पसीना सूखने से पहले दे दो।"

(इब्ने माजा, बा-हवाला सफिना ए निजात)

व्याख्याः मज़दूर का कोई बँक बैलन्स नहीं होता। जो कुछ वह दिन भर कमाता है उस रात उन्हीं पैसों से वह अपने बीवी बच्चों का पेट भरता है। अगर किसी ने किसी मज़दूर की एक दिन की मज़दूरी रोक ली तो उस रात उस मज़दूर के बीवी बच्चे भुखे सो सकते हैं। इसलिए हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया कि मज़दूर की मज़दूरी देने में ज़रा भी देर न की जाए।

ज़ख़ीरा अन्दोजी पर पाबंदी (Black Marketing):

- हज़रत उमर (रज़ि.) के मुताबिक हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जो लोग शहर के बाहर से माल बेचने के लिए लाते हैं उनहें कह दौलत में बरकत होगी। और जो जख़ीरा अन्दोज़ी करते हैं वह मलउन (अभिशापित) हैं। (उनपर लानत है)। आप (स.) ने यह भी फरमायाः "जो जखीरा अन्दोजी करते हैं ताकि मुसलमानों को तकलीफ हो तो अल्लाह तआला की उन पर लानत है, और अल्लाह तआला उन्हें कोढ़ की बीमारी और गरीबी में मुब्तला करेगा।"(इब्ने माजाः २२२६)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जो लोग कीमतें बढ़ाने के लिए ज़खीरा अन्दोज़ी करते हैं वह दोषी हैं।" आप (स.) ने यह भी फरमायाः "वह लोग कितने बुरे हैं कि जब अल्लाह तआ़ला मंहगाई में कमी करता है तो वह दुखी हो जाते हैं और जब महंगाई बढ़ती है तो खुश हो जाते हैं।" (मिश्कात)

कारोबार में कोई ब्याज वाला लेन देन ना करें :

- ईश्वर ब्याज को नाबूद (बेबरकत) करता है।(सूरह बक़रा आयत २७६)

यानी किसी भी तरह के ब्याज वाले लेन देन से कारोबार बरबाद ही होगा।

- हज़रत अब्दुल्ला बिन मसूद (रज़ि.) बयान करते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया "अगर ब्याज कि कमाई से बेहद माल और दौलत जमा कर भी ली जाए, लैकिन आखिरकार वह माल के नुकसान और पैसे की तंगी (कमी) में मुब्तला करेगी।" (तरगीब व तरहीब, इब्ने माजा व हकिम)

- नबी करीम (स.) ने फरमाया आदमी का जानबुझकर सुद का एक दरहम भी खाना '३६ मरतबा जीना करने से ज्यादा सख्त गुनाह है।(मुस्नद अहमद : २१६५७ अन बिन अब्दुल्ला हन्जला)

ब्याज की कमाई के बाद आर्थिक संकट में मुब्तला होने वालों के कुछ उदाहरणः

१. सन २००३ से सन २००६ के दरम्यान, (और आज २०१२ तक) १५०० से ज़्यादा किसानों ने महाराष्ट्र में हर साल कर्ज पर बढ़ते हुए ब्याज के कारण आत्महत्या की। (क्योंकि कर्ज की रकम हर साल ब्याज जमा होने से बढ़ रही थी और वह कर्ज चुकाने में असमर्थ थे।)
(बशुक्रियाः टाईम्स ऑफ इंडीया, तारीख १३ अप्रेल २००६)

२.सन २००८ में इग्लैंड में क्रेडीट कार्ड (Credit card) पर कर्ज़ की रकम एक खरब (Trillion) पौंड हो गई, इसका मतलब यह है कि इग्लैंड का हर नागरिक औसतन २४ हज़ार पौंड़ का कर्ज़दार है। और इसका कारण यह है कि लोग सूदी कर्ज़ की रकम लौटा नहीं पाते और एक कर्ज़ चुकाने के लिए दूसरा कर्ज़ लेते हैं।
(बशुक्रियाः टाईम्स ऑफ इंडिया, तारीख २४ जनवरी २००६)

३.सन २००८ में अमेरिका बहुत अधिक मंदी (Recession) का शिकार हुआ और इसका कारण जनता को दिया हुआ कर्ज़ (Home Loan) था। लोग ब्याजी कर्ज़ की रकम चुका ना पाए इसलिए बँको का दिवालिया निकल गया। जब बँकें बंद हुईं तो देश की सारी आर्थिक व्यवस्था खराब हो गयी (ब्याजी कर्ज़ के कारण)। आज तक विश्व के तमाम देशों में अमेरिका पर सबसे ज़्यादा कर्ज़ है।

ब्याज लेना और देना दोनों हराम (अवैध) हैं इसलिए ब्याज लेने और देने वाले दोनों बरबाद होते हैं। ऊपर बयान किए गए उदाहरण ब्याज देने वालों के हैं।

हज़रत मुहम्मद (स.) ने उन तमाम लोगों पर लानत भेजी है जो ब्याजी कारोबार करते हैं, उदाहरणतः

१. जो ब्याज लेते हैं।
२. जो ब्याज देते हैं।
३. जो दलाल ब्याज पर कर्ज़ का (इंतेज़ाम) प्रबंधन करते हैं।
४. जो बंदा ब्याज वाले कर्ज़ का हिसाब लिखता है।
(मिश्कातुल मसाबीह, २४४)

इसलिए हमें अपने कारोबार में कोई ब्याजी लेन देन नहीं रखना चाहिए इसी तरह हमें बँक, ब्याज पर चलने वाले आर्थिक संस्थाओं और इन्शुरन्स कंपनी की नौकरी से भी बचना चाहिए।

कानूनी दस्तावेज़ की अहमियत :

- अल्लाह तआ़ला पवित्र क़ुरआ़न में फरमाता हैः

१. जब तुम किसी निश्चित मुद्दत के लिए कर्ज़ लो तो उसे लिखवालो। (दस्तावेज़ बना लो।)

२.रूपयों के लेन देन में दस्तावेज़ हर तरह मुक्कमल (परिपूर्ण) हो और दोनों पक्षों (पार्टीयों) को उसका ज्ञान होना चाहिए।

३.अपनी दस्तावेज़ के दो ग़वाह बना लो।

४.कर्ज़ कम हो या ज़्यादा उसके महत्व को कम मत समझो और ना दस्तावेज़ बनाने में देर करो या ढील दो। लिखित दस्तावेज़ के मौजूद होने से तुम्हारे लिए शक व संदेह की कोई संभावना नहीं होगी।

५.अगर तुम्हारा सौदा एक जगह पर ही हो जाता है, या हातो हात होता है, ऐसी स्थिति में तुम दस्तावेज़ तैयार ना करों तो कुछ गुनाह नहीं।

६.व्यापारिक सौदों में भी दस्तावेज़ बनाना ज़रूरी है और गवाह भी रखना चाहिए। और कभी दूसरे को नुकसान नहीं पहूँचाना चाहिए।
(सूरह बक़रा आयत २८२ का खुलासा)

- अद्दा इब्ने खालीद औज़ (रज़ी) बयान करते हैं कि एक बार हज़रत मुहम्मद (स.) ने मेरे लिए एक दस्तावेज़ लिखवाई। जिसमें दर्ज था कि अद्दा इब्ने खालिद औज़ (रज़ी) ने अल्लाह के पैग़म्बर मुहम्मद (स.) से एक गुलाम (दास) खरीदा जिसे कोई बीमारी नहीं है, और ना ही उसमें कोई बुराई है। यह सौदा एक मुस्लिम से दुसरे के दरम्यान है। (तिरमीज़ी)

इस हदीस शरीफ से यह भी साबित (सिद्ध) होता है की हज़रत मुहम्मद (स.) जो क्षिक्षा दूसरों को दे रहे थे, आप (स.) खुद भी उस पर अमल करते थे। और आप (स.) अपनी व्यापारिक दस्तावेज़ खुद लिखवाते थे।

- मौजूदा दौर में, डिलीवरी चलान, रकम वसूली और अदाएगी की रसीद, कॅश मेमो, इन्वाइस, कोटेशन, चेक द्वारा अदाएगी (भुगतान), लिखित ऑर्डर स्वीकार करना, मीटिंग की कारवाई लिखना, मेमोरडंम ऑफ अंडरस्टँडींग, साझेदारी के कारोबोर के दस्तावेज़, माल बेचने की दस्तावेज़, किराया की दस्तावेज़ और इसी तरह की कई दस्तावेज़ात बनाई जाती हैं ताकि किसी गलतफहमी (भ्रम) और धोखाबाज़ी की आशंका ना हो और कारोबार और सौदेबाजी साफ सुथरी रहे। यह आम व्यापारी उसूल और कार्यवाही है लैकिन इनका इस्तेमाल सख्ती और पाबंदी से करना चाहिए। हर मनुष्य को अपना कारोबार पूरी ईमानदारी और कामिल तरिके (उत्कृष्टता) से करना चाहिए और यह वही पाठ है जो हमारा दीन और हमारे पैगम्बर हज़रत मुहम्मद (स.) ने हमें सिखाया।

मना किए गए (प्रतिबंधित) व्यापार:

हज़रत अबू हुरेरा (रज़ी) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने "बई मुलामसा" और "बई मुनाबज़ा" से मना फरमाया है।" (यह दोनों पुरानी व्यापार शैलियाँ हैं)।

"बई मुलामसा" इस व्यापार शैली में दो व्यापारी, व्यापार के माल की जाँच या निरिक्षण किए बिना अपने तमाम माल की अदला-बदली कर लेते थे। चूंकि माल की जाँच या निरिक्षण नहीं होता था। इसलिए किसी एक व्यापारी को नुकसान उठाने का खतरा हमेशा रहता था।

"बई मुनाबज़ा" इस व्यापार शैली में खरीददार जिस चीज़ को छू ले, वह

उसे खरीदनी ही पड़ती थी। खरीददार उस सौदे को रद नहीं कर सकता था (दोनो हालातों में खरीददार को धोखा दिया जा सकता था इसलिए हज़रत मुहम्मद (स.) ने ऐसी व्यापार पर पाबंदी लगा दी)
(इब्ने माजा २२४६)

- "बैउल हिसात" इस व्यापार शैली पर भी पाबंदी लगाई गयी है। इस व्यापार शैली में दुकानदार अपनी ज़्यादा और कम कीमत का माल (यानी दोनो तरह का माल) औसत कीमत (Average Price) पर खरीददार को पेश करता है और उसे मौका देता है कि छोटे पत्थर से माल पर निशाना लगाए। जिस माल पर पत्थर लगे उसे खरीददार को खरीदना ज़रूरी होगा। अगर खरीददार ने किसी कम कीमत माल को पत्थर मारा तो उसे ज़्यादा कीमत देकर कम कीमती माल खरीदना होगा जिससे उसे कुछ माली नुकसान होगा। लैकिन जब उसने ज़्यादा कीमत वाले माल को पत्थर मारा तो दुकानदार को औसत कीमत से बेचने पर माली नुकसान होगा। इस तरह हर सौदे में दुकानदार या खरीददार को कुछ ना कुछ माली नुकसान होता ही था। इसलिए हज़रत मुहम्मद (स.) ने ऐसे व्यापार पर पाबंदी लगाई है।(इब्ने माजा)

- अल्लाह तआ़ला कुरआ़न करीम में फरमाता हैः "

- ''ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, ये शराब और जुआ और ये मूर्ती और पाँसे, ये सब शैतीनी काम हैं, इनसे बचो, उम्मीद है कि तुम्हें सफलता प्राप्त होगी।" (सुरह मायदा आयत ६०)

  अर्थात ऊपर बयान की गई तमाम वस्तूओं का व्यापार हराम (मना) है।

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने व्यापारियों को निर्देश दिए, "ए व्यापारियों! तुमपर दो ज़िम्मेदारीयां है (पहली ज़िम्मेदारी माल वसूल करते हुए सही नाप तोलना और दुसरी ज़िम्मेदारी माल देते हुए सही तोलना)। सही नाप तोल में गैर ज़िम्मेदारी बरतने से पिछली कौमे नष्ट हुई हैं।"
(इब्ने माजा २३१०)

- अल्लाह तआ़ला कुरआ़न करीम मे फरमाता हैः "तबाही है डंडी मारनेवालों के लिए जिनका हाल यह है कि जब लोगों से लेते हैं तो पूरा-पूरा लेते हैं,और जब उनको नापकर या तौलकर देते हैं तो उन्हें घाटा देते हैं। क्या ये लोग नहीं समझते कि एक बड़े दिन (कयामत के दिन)ये उठाकर लाए जानेवाले हैं?।"(सूरह मुतफ्फिफीन आयत १-५)

  व्याख्याः व्यापार में अगर आप अच्छी सेवा और बेहतरीन माल देने के बदले रूपया लेते हैं। लैकिन सेवा या माल देते समय बेहतरीन सेवा या माल नहीं देते हैं (जिसका रूपया लेते समय वादा किया गया था) तब यह धाखेबाज़ी और गुनाह है।

  इस प्रकार की गैर ज़िम्मेदारी, धोखेबाज़ी और गुनाह को "ततफीफ" कहा जाता है। सऊदी अरब और शाम (सीरिया) के दरम्यान स्थित मदायन के निवासियों को उसी गुनाह के कारण आग की बारिश से सज़ा (दण्ड) दी गई थी। "ततफीफ" के बारे में और ज़्यादा मालूमात के लिए जनाब क्यू. एस.खान की दूसरी पुस्तक "Law of Success for both the Worlds" के पाठ नंबर २६ का अध्ययन करें।

फस्ल (अपज) आने से पहले फल बेचना मना है।

- हज़रत अब्दुलाह बिन उमर (रज़ी) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "ऐसी किसी चीज़ के बेचने पर पाबंदी है जो वास्तविक तौर पर हमारी मिल्कीयत में नहीं है।" (इब्ने माजा)

  यानी जो चीज़ हमारे क़ब्ज़े में नहीं है उसे हम नहीं बेच सकते हैं।

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "तुम कोई ऐसी चीज़ बेचकर नफा नहीं कमा सकते जिसकी तुम ज़मानत (Guarantee) नहीं ले सकते।"
(इब्ने माजाः २२६५)

  इसलिए कम क्वालिटी की चीज़ें और चीन और ऐसे ही दूसरे देशों और कंपनियों के सामान जिनकी कोई गॅरंटी नहीं होती मुसलमानों ने नहीं बेचना चाहिए।

- हज़रत अबू हुरैरा (रज़ी) ने कहा कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने हमें "बै-गरर" की व्यापार शैली से मना फरमाया है। "बै-गरर" में दुकानदार वह वस्तू बेचता है जिसको देने या पहूँचाने (Delivery) की कोई ज़मानत (Guarantee) नहीं। उदाहरण के तौर पर कोई व्यापारी किसी तालाब की एक टन मछली बेचता है। मगर हो सकता है कि उस तालाब से एक टन मछली शायद न मिले। इसलिए व्यापारी को इतनी मछली नहीं बेचनी चाहिए, जिसकी वह ज़मानत (Guarantee) नहीं दे सकता। (इब्ने माजा)

- हज़रत जाबिर (रज़ी) ने फरमाया कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने हमें कच्चे फल (फार्म के) बेचने से मना फरमाया, जब तक कि वह पक ना जाएं। (इसका मतलब यह है कि जब बाग के फलों की गुणवत्ता (Quality) और मात्रा (Quantity) स्पष्ट नज़र आए उसके बाद ही उन्हें बेचा जाए।) (इब्ने माजा २२६४)

मुम्किना तश्रीह (संभावित व्याख्या): आपने फल आने से पहले अपने बाग के सारे फलों का सौदा कर लिया और औसत फस्ल के लिए रकम वसूल की। लैकिन किसी वजह से पेड़ों से बढ़िया फल नहीं मिले। इस प्रकार आपने जिस कीमत पर माल बेचा वह आप की फसल की कीमत से ज़्यादा थी। इस प्रकार खरीदार का नुकसान हुआ। अगर इसके उलट हुआ तो आपका नुकसान हुआ खरीदार का फायदा हुआ। हर सौदे में व्यापारी और खरीदार दोनों का फायदा होना चाहिए और किसी का नुकसान नहीं होना चाहिए। चूंकि फसल की अग्रिम बिक्री में यह शर्तें पूरी नहीं होतीं इसलिए ऐसे व्यापार पर पाबंदी है।

व्यापार में जुआ ना खेलो:

- हज़रत जाबिर बिन अब्दूल्ला (रज़ी) कहत हैं कि, "हज़रत मुहम्मद (स) ने हिदायत फरमायी है की अनाज उस समय तक न बेचो जब तक व्यापारी और ग्राहक उसे सही ना तौल लें।" (इब्ने माजाः २३०६)

  इसका मतलब यह है कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने ऐसे सौदे पर पाबंदी लगाई है जहाँ न्याय (Fair Dealing) न हो, या सारी मालूमात या वस्तूएं स्पष्ट ना हों और किसी के नुकसान का खतरा हो। उदाहरण के तौर पर अगर कोई किसान गाड़ी भर अनाज बेचने के लिए शहर में लाता है तो ग्राहक और दुकानदार ने सिर्फ अंदाजे या अनुमान से पूरी

गाड़ी भर अनाज का सौदा नहीं करना चाहिए बल्कि किसान और ग्राहक दोनों को अनाज को तोलना चाहिए। फिर सौदा करना चाहिए। क्योंकि अनाज का वज़न अनुमान से कम हुआ तो अनाज खरीदने वाले का नुकसान होगा और अगर वज़न अनुमान से ज़्यादा हुआ तो किसान का नुकसान होगा। कारोबार में किसी का भी नुकसान नहीं होना चाहिए। इसलिए हज़रत मुहम्मद (स.) ने ऐसे सौदे पर पाबंदी लगाई है।

- हज़रत अबू अय्यूब (रज़ी) ने कहा कि, "हज़रत मुहम्मद (स.) ने हिदायत फरमायी है कि बेचते समय अनाज का वज़न कर लो, आगे फिर फरमाया कि इस कारोबारी उसूल और इस प्रणाली से हमें बरकत होगी।" (इब्ने माजाः २३१०)

- हज़रत अब्दुल्ला बिन मसऊद (रज़ी) कहते हैं कि, "हज़रत मुहम्मद (स) ने फरमाया अगर किसी कारोबारी सौदे में कुछ विवाद हो जाए और अगर उस सौदे का गवाह ना हो, तो व्यापारी की मांग (Demand) को पूरा किया जाए या सौदा रद्द कर दिया जाए।" (इब्ने माजाः २२६३)

निश्चित कीमत (Fixed Rate) *का तरीका ज़्यादा बेहतर है। (भाव ताव वाली कीमत मत रखो)*

- हज़रत कौला उम्मे बनी अनमार (रज़ी) ने फरमाया कि मैं हज़रत मुहम्मद (स.) की सेवा में हाजिर हुई। मैंने अर्ज़ किया, "ऐ अल्लाह के पैगम्बर (स.) में खरीददारी और बिक्री किया करती हूँ। जब मुझे कोई वस्तू खरीदनी होती है तो में कम कीमत लगाती हूँ फिर थोड़ी थोड़ी ज़्यादती करती हूँ। यहाँ तक कि जितने में मेरा लेने का इरादा होता है उस कीमत तक पहूँच जाती हूँ। और जब कोई वस्तू बेचती हूँ तो ज़्यादा कीमत बताती हूँ फिर थोड़ी थोड़ी कम करके सही कीमत पर बेचती हूँ।" आप (स.) ने फरमाया ऐसा ना किया करो बल्कि कोई वस्तू खरीदो तो उसकी एक कीमत बता दो फिर उसकी मर्ज़ी है चाहे दे या ना दे। इसी तरह कोई वस्तू बेचो तो उसकी एक कीमत बता दो फिर उसकी मर्ज़ी है चाहे खरीददार खरीदे या ना खरीदे। (इब्ने माजा हदीस २२८१)

एक संभावित व्याख्याः सौदा करते हुए एक माहिर (कुशल) ग्राहक ही माल उचित कीमत पर खरीद सकता है। वरना जो सौदा करने में माहिर नहीं है वह ज़्यादा दाम देकर माल खरीदेगा और इस तरह नुकसान उठाएगा। व्यापार-सौदे में व्यापारी और खरीदार दोनों को फायदा होना चाहिए। इसलिए निश्चित कीमत (Fixed rate) पर कारोबार करने से व्यापारी और खरीदार दोनों फायदे में रहते हैं।

किसी की मज़बूरी का फायदा ना उठाओ।

हज़रत अब्दुल्ला बिन उमरौ बिन आस (रज़ी) ने कहा कि "हज़रत मुहम्मद (स.) ने "बइ उरबान" पर पाबंदी लगाई है।"

(इब्ने माजाः २२६६)

"बइ उरबान" का अर्थ है "खरीदार"। खरीदार दुकानदार को एक पेशगी (अग्रिम) रकम (Token amount) अदा करता है और कहता है, "अगर मैने निश्चित मुद्दत में तुम्हें पूरी रकम की अदाएगी नहीं की, तो तुम मेरी पेशगी रकम ज़ब्त कर सकते हो।"

खरीदार किसी जायज़ कारण से अपना वादा पूरा ना कर सके या हालात से मज़बुर हो जाए और रकम का इंतेजाम ना कर सके तो ऐसे व्यक्ति को उसके ना-करदा (अंजाने) जुर्म की सज़ा ना दी जाए। इसलिए पेशगी रकम जब्त ना की जाए।

कोई कम्युनिस्ट कानून नहीं:

- हज़रत अनस (रज़ी) कहते हैं, कि हज़रत मुहम्मद (स.) के ज़माने में एक बार महंगाई (Inflation) के कारण अनाज और सब्ज़ियां वगैरा बहुत महंगी हो गई थीं। लोगों ने हज़रत मुहम्मद (स.) से अनाज वगैरा की कीमतें निश्चित करने की दरख्वास्त की। हज़रत मुहम्मद (स.) ने इन्कार किया और फरमाया, "अल्लाह तआला ही कीमत निश्चित करता है, वही खुशहाली (समृद्धता) प्रदान करता है और गरीबी का दण्ड देता है और वही है जो हर एक को खाना खिलाता है। मैं चाहता हूँ कि जब मैं अल्लाह तआ़ला से मिलूं तो उस समय कोई मुझपर उसकी जान और माल बरबाद करने का आरोप न लगाए।" (इब्ने माजाः २२७६)

व्यापार में पूरी तरह डूब न जाओ:

- हज़रत अब्दुल्ला बिन मसऊद (रज़ी) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया "दौलत इस तरह ना कमाओ कि उसमें तुम पूरी तरह गर्क हो जाओ (डूब जाओ)।" (तिरमिज़ी, बा-हावाला तर्जूमाने हदीस, खंड ६, पृ. ५५)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया "बंदा कहता है मेरा माल इतना है ऐसा है। हालाँकि वह अपने माल से सिर्फ तीन फायदे हासिल करता है (१) उसे खाकर खत्म कर दिया। (२) पहनकर पुराना कर दिया। (३) अल्लाह की राह में देकर आगे भेज दिया। उसके सिवा जो कुछ भी है, वह (मरने के बाद) उसे वारिसों के लिए छोड़ कर चला जाएगा।"

(मुस्लिम, बा-हावाला तरजुर्माने हदीस, पेज ६५)

मनुष्य अपनी आकिबत (आखिरत) खराब करके बहुत ज़्यादा दौलत कमा लेता है और आम तौर पर वह उसका पूरा इस्तेमाल नहीं करता। और अपने पीछे उस दौलत का बड़ा हिस्सा अपने वारिसों के लिए छोड़ जाता है जो उसकी कद्र कभी करते हैं या कभी नहीं करते हैं। इसलिए दौलत कमाने के लिए हमे सिराते मुस्तकीम (सीधे सच्चे रास्ते) पर चलना चाहिए। रूपया कमाते हुए हमे एतेदाल (मध्यम) और संतुलन की कोशिश करनी चाहिए। और कभी रूहानी (अध्यात्मिक) और मज़हबी (धार्मिक) जिंदगी को भूलना और नज़रअंदाज नहीं करना चाहिए।

दौलत के पीछे पागल की तरह मत दौड़ो:

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया "जो लोग दुन्यावी खुशहाली (भौतिक समृद्धि) के लिए परिश्रम करते हैं उन्हें बीच का रास्ता अख्तियार करना चाहिए, क्योंकि जिस उद्देश्य के लिए बंदे को पैदा किया गया है वह उद्देश्य प्राप्त करना अल्लाह तआ़ला उसके लिए आसान कर देते हैं।"

(इब्ने माजाः २२१८)

ऊपर बयान की गई हदीस शरीफ की मुमकिना तश्रीह (संभावित व्याख्या) निम्नलिखित उदाहरण से की जा सकती हैः

- अगर अल्लाह तआ़ला ने किसी बंदे को प्रोफेसर बनने के लिए पैदा किया है ताकि वह दूसरे बंदो को शिक्षा दे। अगर वह बंदा अपनी योग्यता को पहचाने बगैर फिल्म या उद्योग की तरफ आकर्षित हो, और फिल्म स्टार या करोड़पती बनने के लिए अत्याधिक परिश्रम करे, फिर भी वह अपने उद्देश्य में कामयाब ना होगा। क्योंकि प्राकृतिक तौर पर उसमें वह

योग्यता मौजूद नहीं है। मगर उस परिश्रम में उसका बहुमुल्य समय और ताकत बेकार जाएगी और दूसरों को भी नुकसान होगा। इस के बजाए अगर वह अपने व्यक्तित्व और योग्यता को सही तौर पर जांचे और किसी उचित पेशे (व्यवसाय) में लगाए तो जिस उद्देश्य के लिए उसे पैदा किया गया है उसे प्राप्त करना उसके लिए आसान हो जाएगा। या वह अपने पेशे में ज़्यादा परिश्रम के बगैर बड़ी कामयाबी प्राप्त करेगा।

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया "अल्लाह तआ़ला से ड़रो और दौलत प्राप्त करने का दरम्यानी रास्ता अख्तियार करो, क्योंकि कोई बंदा अपनी निश्चित रोज़ी (गिजा) को इस्तेमाल किए बगैर नहीं मरेगा (अल्लाह तआ़ला ने हर बंदे की उम्र भर कि रोज़ी की मात्रा लिख दी है) हाँ, उसके मिलने में देरी हो सकती है इसलिए अल्लाह तआ़ला से ड़रो और माल और दौलत जायज़ (वैध) तरीके से कमाओ। हलाल (वैध) कुबूल करो और हराम (अवैध) से बचो।" (इब्ने माजा, बा-हवाला ज़ादे राह, हदीस ८६)

- नबी करीम (स.) ने फरमाया अल्लाह तआला ने कुछ बंदो को लोगों की जरूरत पुरी करने के लिए पैदा किया है। लोग उनके पास अपनी जरूरत लेकर जाते है लोगों की जरूरत पुरी करने वाले यह लोग अल्लाह के अजाब से महफूज रहेंगे। (तिबरानी कबीर : १३३३४ अन अब्दुल्ला बिन उमर (रजि.)) दौलत के पिछे पागल की तरह मत दौड़ो बल्कि उस बात पर गौर करो की अल्लाह तआला ने आपको किसी खास मक्सद के लिए पैदा किया है।

निषिद्ध व्यापार और व्यवसाय

इन पेशों पर पाबंदी है:

१. हज़रत उत्बा बिन उमरा (रज़ी) कहते हैं कि, "हज़रत मुहम्मद (स.) ने नाई (Barbar) का व्यवसाय अपनाने से मना किया है।"
(इब्ने माजा: २२४२)

- हज़रत आएशा (रज़ी) के मुताबिक हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा, "मैं किसी की नक्ल उतारना पसंद नहीं करता चाहे उसके बदले मुझे ढेरों दौलत मिले।" (तिरमिज़ी, बा-हवाला सफिना निजात, हदीस २३७)

२. हज़रत मुहम्मद (स.) ने नाच गाने और ऐसे मनोरंजन से जिससे लैंगिक आनंद प्राप्त हो, अदाकारी वगैरा के व्यवसाय से मना फरमाया है। और उन व्यवसाय धारकों पर भी पाबंदी लगाई है, जो उन तमाम निषिद्ध व्यवसायों की मदद करते हैं और उन्हें कायम रखते हैं, उनका प्रचार करते हैं और उन्हें जनता में फैलाते हैं। इसलिए हमें ऐसे कारोबार से दूर रहना चाहिए जिनका सम्बंध नाच गाने, अदाकारी और लैंगिक आनंद और मनोरंजन से है। (मुत्तफिक अलैह)

३. ऊपर बयान की गई हदीस के अनुसार हमें सिनेमा, शराबखाना (पब और बार), फिल्मों से जुड़े कारोबार, टि.वी, गाने, नाच और लैंगिक आनंद से दूषित कारोबार से दूर रहना चाहिए।

४. अल्लाह तआ़ला कुरआ़न में फरमाता है: "ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, ये शराब और जुआ और ये देव-स्थान और पाँसे, ये सब शैतानी काम हैं, इनसे बचो, उम्मीद है कि तुम्हें सफलता प्राप्त होगी।"
(सूरह मायदा आयत ९०)

- नबी करीम (स.) ने फरमाया, "शराब पीने वाले, पीलाने वाले और बनाने वाले अल्लाह ने लानत फरमायी है।" (तिरमीजी: १२९५ अन अनस)

५. हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अगर कोई किसान अवाम को अंगूर नहीं बेचता ताकि वह शराब बनाने वालों को बेच सके तो उसने जानते हुए नर्क की आग अपने लिए जमा की।" (तिबरानी)

यानी अगर आप खुद हराम (अवैध) काम न करें मगर हराम काम में सिर्फ मदद करें तब भी आप हराम करने वालों कि तरह ही होंगे और उन्ही की तरह आपको भी सज़ा मिलेगी।

६. हज़रत मुहम्मद (स.) ने कुत्ते और बिल्ली की बिक्री पर, वैश्याओं की कमाई खाने पर, ज्योतिषी के व्यवसाय पर, जानवरों के द्वारा (Husbandry) की कमाई पर। गाने वालियों के कारोबार और उनकी कमाई खाने पर पाबंदी लगाई है।
(इब्ने माजा: २२३६,२२३७,२२३८, २२४५)

७. हज़रत जाबिर (रज़ि.) ने कहा की, मक्का पर विजय के दिन हज़रत मुहम्मद (स.) ने एलान फरमाया की शराब, ब्याज, मुर्दा जानवर का गोश्त और मूर्तियों के द्वारा कमाई हराम है। यहाँ तक की मुर्दा जानवर की चरबी के व्यापार पर भी पाबंदी है। (इब्ने माजा: २२४५)

८. हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं की हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जौहरी और रंगारे (कपड़े रंगने वाले) दूसरों की तुलना में ज़्यादा झूठ बोलते हैं (इसलिए ऐसे व्यवसायों से दूर रहना चाहिए)।"
(इब्ने माजा: २२२८)

- उम्मूल मोमिनिन हज़रत आऐशा (रज़ि.) बयान करती है की नबी करीम (स.) ने फरमाया ''रोजों हश्र मस्सवरों को सज़ा दी जाएगी और उनसे कहा जाएगा की जो कुछ तुमने बनाया (तस्वीर) उसमें रूह भरो। (इब्ने माजा : २२२७)

व्यापार में तक़्वा (अल्लाह का डर)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अगर तुम नाज़ायज (अवैध) कामों से दूर रहोगे तो बड़े तपस्वी (इबादत करने वाले) बन जाओगे।"
(तिरमिज़ी: २३०५)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अगर सरमाया कारी (पूंजी निवेश) तकवा (अल्लाह के डर) के साथ की जाए, तो उस की अनुमति है।"
(इब्ने माजा, अबवाब व्यापार: २२१७)

(तक़्वा के मायने है की गुनाह से बचने में अत्याधिक सावधानी बरती जाए और ग़लत काम न किया जाए।)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जो बंदे हलाल रोज़ी पर गुज़ारा करते हैं और मेरी जीवन प्रणाली की पैरवी (अनुसरण) करते हैं और दूसरों को तकलिफ नहीं पहूँचाते, वह स्वर्ग के हकदार हैं।" सहाबा कराम (रज़ि.) को आश्चर्य हुआ (क्यूंकि यह स्वर्ग में जाने का बहुत आसान रास्ता था।) और उन्होंने कहा, " ऐ अल्लाह के पैगम्बर (स.)! इस जमाने में ऐसे लोग बड़ी संख्या में हैं।" हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "मेरे बाद भी इस तरह के बंदे होंगे।" (तिरमिज़ी)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अल्लाह तआ़ला उस बंदे को बरकत

प्रदान करेगा जिसके चरित्र अच्छे होंगे और वह माल खरीदते या बेचते समय और अपने कर्ज़ की मांग करते समय विनम्र भाषी हो।" (बुखारी)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "ऐ व्यापारियों! झूठी कसम (सौगंध) और गलत बात व्यापार सौदे में शामिल हो जाती है, उसे खैरात (दान) देकर साफ करो।" (इब्ने माजाः २२२१)

- अगर कोई व्यापार संदिग्ध है, तो उससे दूर रहना ज़रूरी है। हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "कोई बंदा नेक नहीं हो सकता जब तक की वह उन चिज़ोंसे ना बचे जो सिर्फ संदिग्ध हैं (और जिन पर खुले तौर पर पाबंदी नहीं)।" (तिरमिज़ी)

  (इसलिए जब आपको किसी व्यापार और कारोबार के बारे मे विश्वास ना हो की वह जायज़ (वैध) है या नाजायज़ (अवैध) तो उससे दूर रहना बेहतर है।)

- अगर एक बंदा १० दरहम में कोई कपड़ा खरीदता है और १० दरहम में एक दरहम भी माल हराम (अवैध) हो तो अल्लाह तआ़ला उसकी इबादत स्वीकार नहीं फरमाएगा जब तक वह यह कपड़ा पहनता रहेगा।
  (मस्नद अहमद)

- हज़रत अबू हुरेरा (रज़ी) कहते हैं की हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, " कयामत के दिन हर बंदे को ४ सवालों के जवाब देना हैः

१. अपनी उम्र (जिंदगी) कैसे गुज़ारी?

२. तुम्हारे कर्म कैसे थे?

३. तुमने रूपया किस तरह कमाया और कैसे खर्च किया?

४. तुमने अपने शरीर और प्राण का इस्तेमाल कैसे किया? "
(तिरमिजी, जादे सफर हदीस ३७८, बा-हवाला मारूफूल हदीस जल्द २ हदीस ६२)

- हर बंदा उन सवालों का जवाब देने के लिए तैयार रहे इसलिए हमें अपनी कमाई (आमदनी का स्त्रोत) के चयन में अत्याधिक सावधानी बरतनी चाहिए।

- हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ी) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने उन तमाम लोगों को बद्दुआ फरमायी है जो रिश्वत देते हैं और जो रिश्वत लेते हैं।" (अबू दाऊद, बा-हवाला तरजुमान हदीस २६६)

खुशहाली के बाद याद रखने वाली हकीकतः

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "बंदा अपने ईमान और नेक कर्मों के बारे में जो जीवन प्रणाली अख्तियार करेगा, वह उसी हालत और हैसियत में दुनिया से उठाया जाएगा।" (मुस्लिम)

तश्रीह (व्याख्या): इसका मतलब यह है कि अगर कोई बंदा एक मॉडर्न और गैर इस्लामी जिंदगी गुज़ारते हुए यह सोचता है की वह बुढ़ापे में शुद्ध धार्मिक जीवन अपना लेगा तो उसकी यह सोच ग़लत है। क्योंकि बुढापे में अपनी इच्छा शक्ति से, अपनी मौत से पहले कोई सच्चा मुसलमान नहीं बन सकता। वह बंदा उसी हालत में मरेगा जिस पर उसने जान बुझकर जिंदगी गुज़ारी है।

- अल्लाह तआ़ला का इरशाद है कीः "ऐ नबी, तुम जिस हाल में भी होते हो और क़ुरआन में से जो कुछ भी सुनाते हो, और लोगो, तुम भी जो कुछ करते हो हम तुम्हारे सामने होते हैं। कोई रत्ती-भर चीज़ आसमान और ज़मीन में ऐसी नहीं है, न छोटी न बड़ी, जो तेरे रब की नज़र से छिपी हो और एक स्पष्ट चिट्ठे (पुस्तक) में अंकित न हो।
  (सुरह यूनुस आयत ६१)

- "वह अल्लाह ही है जो तुम्हें जल और थल की सैर कराता है। अतएव जब तुम नौकाओं में सवार होकर अनुकूल हवा पर प्रसन्न और ख़ुशी के साथ सफ़र कर रहे होते हो और फिर अचानक प्रतिकूल हवा का ज़ोर होता है और हर ओर से मौजों के थपेड़े लगते हैं और मुसाफ़िर समझ लेते हैं कि तुफ़ान में घिर गए, उस समय सब अपने दीन-धर्म को अल्लाह ही के लिए ख़ालिस करके उससे दुआएँ माँगते है कि ''अगर तूने हमको इस बला से निकाल दिया तो हम शुक्रगुज़ार बन्दे बनेंगे। मगर जब वह उनको बचा लेता है तो फिर वही लोग सत्य से हटकर ज़मीन में विद्रोह करने लगते हैं। लोगो, तुम्हारा यह विद्रोह तुम्हारे ही विरुद्ध पड़ रहा है। दुनिया की ज़िन्दगी के थोड़े दिनों के मज़े हैं (लूट लो), फिर हमारी ओर तुम्हें पलटकर आना है, उस समय हम तुम्हें बता देंगे कि तुम क्या कुछ करते रहे हो "(सूरह यूनुस आयत २२-२३)

- ''और यह दुनिया की ज़िन्दगी कुछ नहीं है मगर एक खेल और दिल का बहलावा। वास्तविक ज़िन्दगी का घर तो आख़िरत का घर है, काश! ये लोग जानते। (सूरह अन्कबूत ६४)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमायाः दुनिया ईमान वाले के लिए कैद खाना है और एक अल्लाह को न मानने वालों के लिए स्वर्ग है।
  (तिरमिज़ी, बा-हवाला तर्जूमान हदीस जिल्द १ सफहा २०)

- उपरोक्त कुरआ़नी आयातें और एक हदीस ज़रूर याद रखें।

- हम हमेशा अल्लाह तआ़ला के सामने होते हैं अगर हम कश्ती (जहाज) वालों की तरह नाशुक्रे बंदे बनेंगे तो याद रहे की हमारी ज़िंदगी बहुत छोटी है। आखिरकार हमें अल्लाह तआ़ला के रूबरू पेश होना है। तब मुम्किन है हमें अपनी नाशुक्री और लापरवाही की सज़ा मिले। इसलिए हमें हमेशा अल्लाह तआ़ला का फरमां बरदार (आज्ञाकारी) रहना चाहिए और उसकी कानुनी सीमा को पार नहीं करना चाहिए क्योंकि हम खुदाई कैदी है। हमें असली आज़ादी और खुशी स्वर्ग ही में प्राप्त होगी।

(पेज ६२ से आगे... अपनी सोच को किस तरह बेहतर...)

५. दिमाग और दिल की वह हालत जो सखावत से भरी हो। (State of mind and heart, which is filled with generosity.)

- अगर कोई बंदा बीमार है और वह अपने बच्चों को देखकर निराश हो जाता है, अपनी बीवी और खानदान के और लागों से उम्मीद नहीं रखता है। उसे दिमागी व रूहानी (आध्यात्मिक) सुकून हासिल नहीं है। और ना उसे अपना माल खुदा की राह में खर्च करने की तौफिक है। तो ऐसा बंदा खुशहाल नहीं होता, चाहे वह करोड़पती ही क्यों न हो।

  इसलिए माल व दौलत के बारे में हमारा बरताव और नज़रिया (दृष्टिकोण) यह होना चाहिए की खुशहाली सिर्फ दौलत और जायदाद का नाम नहीं है बल्कि इससे बढ़कर उपर बयान की गई चीज़ें हैं।

६. अपनी सोच को किस तरह बेहतर बनाया जाए?

मनुष्य कि जैसी सोच होगी वैसा उसका कर्म, प्रयास और परिश्रम होगा। मनुष्य के जैसे प्रयास होंगे नतीजे भी वैसे ही निकलेंगे।

अगर मनुष्य कि सोच और विचारधारा ग़लत होगी तो वह कभी कामयाब नहीं हो सकता। इसलिए खुशहाली पाने के लिए हमारी विचारधारा क्या होनी चाहिए इसका ज्ञान हमारे लिए ज़रूरी है।

आईये कुरआ़न और हदीस की रौशनी में हम अपनी सोच और विचारधारा को सही करने की कोशिश करते हैं।

- अपनी सोच को बेहतर बनाने के लिए निम्नलिखित ईमान (विश्वास) और श्रद्धा बिल्कुल स्पष्ट और साफ होना चाहिए।

बेहतर सोच और विचार क्या है?

१. अमीरी और गरीबी का देना सिर्फ अल्लाह तआ़ला के हाथ में है।

खुशहाली और गरीबी का देना सिर्फ अल्लाह तआ़ला के ही अधिकार में है। हम अल्लाह तआ़ला की बरकत (वरदान) और कृपा से ही खुशहाल होते हैं ना की अपनी कोशिश से या किसी और की मदद से।

२. हर बंदे की एक किस्मत (भाग्य) है।

अल्लाह तआ़ला ने हर बंदे को एक खास उद्देश्य के लिए पैदा किया है और उसका एक विशेष भाग्य बनाया है। जिंदगी में हर चीज़ किस्मत (भाग्य) के अनुसार होती है।

३. सकारात्मक सोच रखनी चाहिए।

हमारे विचारों का हमारी सफलता और असफलता पर गहरा प्रभाव होता है। इसलिए हमें अपनी सोच हमेशा सकारात्मक रखनी चाहिए।

४. 'खुशहाली' दौलत और अल्लाह की रहमत (कृपा) का संग्रह है।

खुशहाली सिर्फ बहुत सारी दौलत का नाम नहीं है। बल्कि खुशहाली दौलत और रहमत का संग्रह है। अल्लाह तआ़ला की रहमत खुशहाली की आत्मा है। बिना रहमत के कभी कभी दौलत सज़ा का माध्यम बन जाती है। इसलिए रूपया कमाते समय हमें अल्लाह तआ़ला की रेहमत हासिल करने की ज्यादा कोशिश करना चाहिए।

ऊपर बताए गए ईमान (विश्वास) और श्रद्धा की व्याख्याः

अब हम पढ़ेंगे कि ऊपर बताए गए ईमान व श्रद्धा के अनुसार सोच रखना खुशहाली के लिए क्यों जरूरी है।

पहली विचारधारा

अमीरी और गरिबी का देना सिर्फ अल्लाह तआ़ला के हाथ में है।

- अल्लाह तआ़ला कुरआ़न शरीफ में फरमाता है, "और यह की वही दौलतमंद बनाता है और मुफलिस (गरीब) करता है।"

(सूरह नज्म आयत४८)

- कहो, ऐ अल्लाह, राज्य के स्वामी, तू जिसे चाहे राज्य दे और जिससे चाहे छीन ले। जिसे चाहे सम्मान प्रदान करे और जिसको चाहे अपमानित कर दे। भलाई तेरे अधिकार में है। यक़ीनन तुझे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है। (सूरह आले इमरान, आयत २६)

- एक जगह पवित्र कुरआ़न में अल्लाह तआ़ला फरमाता है, "अगर अल्लाह अपने सब बन्दों को ज्यादा रोज़ी दे देता तो वे ज़मीन में बगावत का तूफ़ान खड़ा कर देते, मगर वह एक हिसाब से जितनी चाहता है उतना ही देता है। यक़ीनन वह अपने बन्दों की ख़बर रखनेवाला है और उनपर निगाह रखता है।" (सूरह शूरा आयत २७)

मदर्जाबाला दोनों आयत से साफ जाहिर होता है की सिर्फ अल्लाह तआला ही हमारी खुशहाली का फेसला करता है। और उस कायनात के कारखाने को अल्लाह तआला ही चलाता है उस कारखाने में उसने हर इन्सान को एक काम पर लगा रखा है, उस कारखाने में अगर आपको उंचा अहदा चाहिए यानी अमिर बनकर दूसरों से खिदमत लेना है तो आपके इख्लाक और सोच ऐसी होनी चाहिए की दूसरों को आपकी जात से तकलीफ न हो। कोई भी बंदा अपनी मर्जी के मुताबिक हद से ज्यादा दौलत हासिल नहीं कर सकता जब तक उसमें अल्लाह की रजा शामिल न हो अगर ऐसा न हो तो इन्सानी समाज का पूरा निजाम दरहम बरहम हो जाएगा।

ऊपर दी गई तीनों आयतों से साफ ज़ाहिर होता है की सिर्फ अल्लाह तआ़ला ही हमारी खुशहाली का फैसला करता है।

खुशहाली के लिए रहमत (कृपा) की आवश्यक्ता समझने के लिए निम्नलिखित उदाहरण पर गौर करें:

रेगिस्तान में एक मछली का उदाहरण:

रेगिस्तान में एक गढ़ा खोदें। उसमें में एक बालटी पानी ड़ालें और एक मछली ड़ाल दें। आप जितना भी पानी उसमें डालेंगे वह रेत में सारा जज़्ब हो जाएगा और मछली पानी की कुछ बूंदों के लिए हमेशा तरसती रहेगी।

अब मान लें कि धरती के नीचे से पानी का स्तर ऊपर की तरफ बढ़ने लगता है। पानी का स्तर गढ़े की तह से एक इंच उपर उठता है तो मछली को आराम महसूस होगा। ड़ाला हुआ पानी भी ज्यादा देर तक जमा रहेगा और देर से गढ़े की दिवार में जज़्ब होगा। धरती के नीचे पानी का स्तर जैसे जैसे बढ़ेगा तो उसी के मुताबिक मछली के आराम में बढ़ोतरी होगी। और पानी भी देर में जज़्ब होगा।

अगर पानी की स्तर गढ़े के दहाने तक उंची होता हैं तो बाद में पानी डालने की ज़रूरत भी नहीं रहेगी। और अगर गढ़े की तह से चश्मा फूट पड़े तो मछली के साथ दूसरे प्राणियों को भी फायदा होगा।

मनुष्य उस मछली की तरह है, डाला हुआ पानी हमारी आमदनी जैसा है और सूखी रेत हमारे खर्चे की तरह है। हमारी आमदनी कितनी ही ज्यादा क्यों ना हो हमारे खर्चे आमदनी से हमेशा ज्यादा होते हैं और हम

तंगदस्त ही रहते हैं। धरती के नीचे पानी की स्तर अल्लाह तआ़ला की रहमत की तरह है। जब यह रहमत हमारी जिंदगी में आती है तो हम थोड़ी राहत (आराम) महसूस करते हैं।

जैसे जैसे अल्लाह की रहमत हम पर ज्यादा से ज्यादा होती है हमारी जिंदगी में खुशहाली बढ़ती जाती है, हमारे गैर जरूरी खर्च कम हो जाते

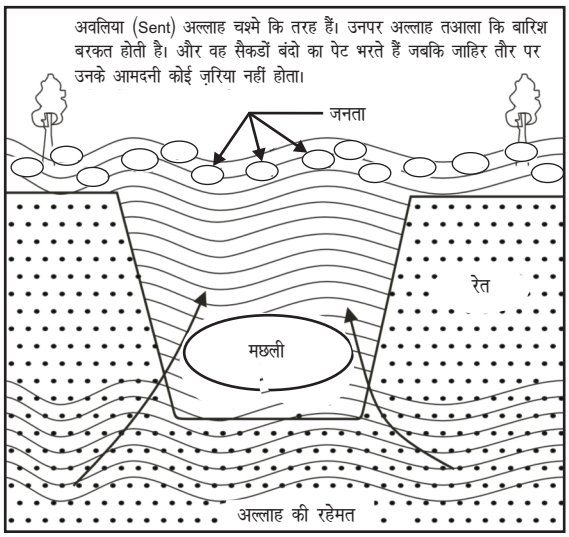

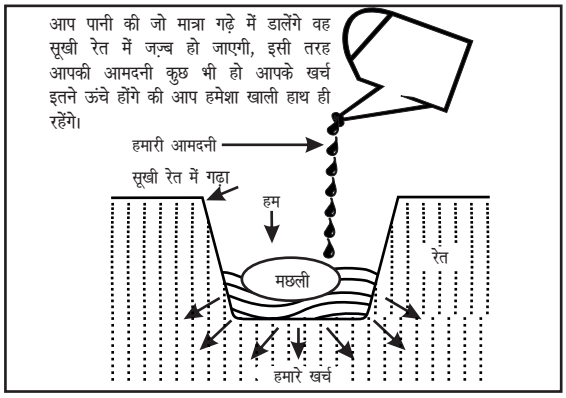

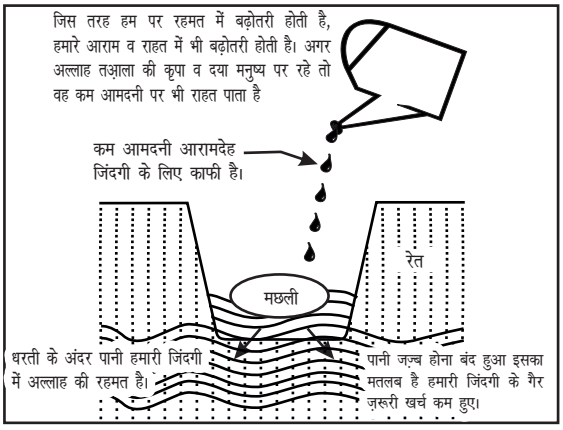

हैं, हमारी दौलत या बँक बैलन्स में बढ़ोतरी होता है। इसलिए दिमागी आराम व सुकून, जिंदगी में इत्मिनान, अपनी ख्वाहिशों की पूर्तता, खुश्हाली और समाज में इज़्ज़त का दारोमदार अल्लाह तआ़ला की रहमत पर ही होता है न की हमारी आमदनी पर।

कोई भी बंदा अपनी मर्ज़ी के मुताबिक हद से ज्यादा दौलत हासिल नहीं कर सकता जब तक उसमें अल्लाह की मर्ज़ी शामिल ना हो। अगर ऐसा ना हो तो इन्सानी समाज का पूरा निज़ाम (व्यवस्था) दरहम बरहम हो जाएगा।

इस सृष्टी के कारखाने को अल्लाह तआ़ला ही चलाते हैं। इस कारखाने में उसने हर इंसान को एक काम पर लगा रखा है।

अल्लाह तआ़ला कुरआन में फरमाता है, "क्या यह लोग (मुश्रिकीन) तुम्हारे पालनहार की रहमत (कृपा) को बांटते हैं? (नहीं) बल्कि हमने उनमें उनकी रोज़ी को दुनिया की जिंदगी में तकसीम (विभाजित) कर दिया और एक दूसरे पर दर्जे बुलंद किए ताकी एक दूसरे से खिदमत लें।" (यानी इस दुनिया में जो मालिक है या जो नौकर है यह दोनों हालतें अल्लाह तआ़ला की बनाई हैं। कोई व्यक्ति खुद अपने से मालिक या नौकर नहीं होता है।) (सूरह अल ज़ुखरफ, आयात ३१ और ३२)

इस कारखाने में अगर आपको ऊंचा ओहदा चाहिए अर्थात अमीर बनकर दुसरों से सेवा लेना है तो आपका चरित्र और सोच ऐसी होनी चाहिए की दूसरों को आप की जात से तकलिफ ना हो।

दूसरा नज़रिया

तकदीर (भाग्य) अटल है:

- हज़रत उबादा बिन सामत (रज़ि) फरमाते हैं की हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया, "अल्लाह तआ़ला ने सबसे पहले जो चीज़ पैदा फरमाई वह कलम (Pen) है, फिर उसको हुक्म दिया की लिख! क़लम ने अर्ज किया: क्या लिखुं? इरशाद फरमाया: तकदीर (भाग्य) लिख, चुनांचा कलम ने हर वह चीज़ लिख दी जो (अब तक) हो चुकी और जो कयामत तक होने वाली है।"
(तिरमिजी, बा-हवाला मुन्तखब अबवाब, खंड १, पृ. ८८)

- हज़रत अबू खिजामा (रज़ि) अपने पिता से नकल करते है कि उनके पिता ने हज़रत मुहम्मद (स.) से सवाल किया कि: ऐ अल्लाह के पैगम्बर (स.)! वह झाड़फूक जो हम कराते हैं, वह दवा जिसके द्वारा हम इलाज करते हैं और वह हिफाजती चीज़ (अर्थात ढाल, तलवार और ज़िरह वगैरा) जिसके द्वारा हम बचाव करते हैं, मुझे बताईयें क्या यह चीज़ें अल्लाह द्वारा निर्धारित किस्मत को बदल देती हैं? हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया, "यह चीज़ें भी अल्लाह द्वारा निर्धारित किस्मत में शामिल हैं।"
(अहमद, तिरमिज़ी, इब्ने माजा, बा-हवाला मुन्तखब अबवाब, खंड १, पृ. ६१)

इसका मतलब यह हुआ कि अगर हमारे भाग्य में स्वस्थ रहना लिखा है सिर्फ उसी हाल में हम अपना इलाज करते हैं। अगर हमारे भाग्य में सुरक्षित रहना लिखा है सिर्फ उसी हाल में हम अपनी सुरक्षा के लिए हथियार इस्तेमाल करते हैं।

और अगर अपनी भाग्य के मुताबिक आपको बीमार रहना है तो उस

वक्त आप अपना इलाज नहीं करेंगे और भाग्य के मुताबिक अगर आपको तकलीफ पहुँचना लिखा है फिर आप खुद की हिफाजत हथियारों से नहीं करेंगे।

- हज़रत अबू दरदा (रज़ि) फरमाते हैं की हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया, "अल्लाह अपनी मख्लुक में से हर बंदे के बारे में पांच बातों से फारिग हो चुका है (अर्थात तय कर चुका है।) वह पांच बातें यह हैंः (१) उसकी मौत का वक़्त (२) उसका अमल (कर्म) (अर्थात वह नेक होगा या बुरा) (३) उसका ठिकाना (अर्थात उसे मौत कहां आएगी?) (४) उसकी जौलान गाह (अर्थात धरती के किस हिस्से पर वह ज़िंदगी गुज़ारेगा?) (५) और उसका रिज़्क (रोज़ी)।"

(अहमद, बा-हवाला मुन्तखब अबवाब जिल्द १ हदीस १०६)

- हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि) से रिवायत है कि उन्होंने एक दिन कहाः "ऐ अल्लाह के पैगम्बर (स.)! हर साल आपको कोई ना कोई तकलीफ पहुंचती रहती है उस ज़हरीली बकरी की वजह से (जिस का गोष्त खैबर की जंग के मौके पर) आपने खा लीया था।" हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया, "जो भी तकलीफ मुझको पहुँचती है, वह उसी वक़्त मेरी तकदीर में लिखी जा चुकी थी, जब आदम (अ.स.) अपनी मुठ्ठी के अंदर थे।" (यानी हज़रत आदम के पैदा होने से पहले मेरी तकदीर में लिखि जा चुकी थी)

(इब्ने माजा, बा-हवाला मुन्तखब अबवाब, जिल्द १, हदीस ११७)

- हज़रत अली (रज़ि) फरमाते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया, "कोई बंदा उस वक़्त तक मोमिन (सच्चा मुसलमान) नहीं हो सकता जब तक वह ४ बातों पर ईमान न लाए। (१) इस बात की गवाही दे कि अल्लाह के सिवा कोई मअ्बूद (पुज्य) नहीं और मैं अल्लाह का रसूल हूँ और मुझको अल्लाह ने हक (अर्थात इस्लाम धर्म) के साथ भेजा है। (२) मरने पर ईमान लाए। (३) इस बात पर ईमान लाए कि मरने के बाद फिर जी उठना है। (४) और तकदीर (भाग्य) पर ईमान लाए।"

(तिरमिज़ी, इब्ने मा़ज़ा, बा-हवाला मुन्तखब अबवाब, जिल्द १, हदीस ९७)

- हज़रत मुतीर बिन उकामीस (रज़ि) फरमाते हैं कीः हज़रत मुहम्मद (स) ने इरशाद फरमायाः "जब अल्लाह तआ़ला किसी बंदे की मौत किसी जगह उस के भाग्य में लिख देता है तो उस जगह की तरफ उसकी हाजत (आवश्यक्ताएं) को भी पैदा कर देता है।"

(अहमद, तिरमिज़ी, बा-हवाला मुन्तखब अबवाब, जिल्द १, हदीस १०३)

इसका मतलब यह है की तकदीर के मुताबिक अगर किसी बंदे की मौत किसी दुरदराज़ इलाके में होनी है तो वहाँ वह किसी ज़रूरत से ज़रूर पहुंचेगा और वहां उसे मौत आएगी।

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमायाः "जो बंदे भौतिक (Materialistic) खुशहाली के लिए परिश्रम कर रहे हैं उन्हें चाहिए कि दरम्यानी रास्ता इख्तियार करें, क्योंकि बंदा जिस उद्देश्य के लिए पैदा किया गया है वह उद्देश्य हासिल करना उस बंदे के लिए दुनिया में आसान हो जाएगा।" (इब्ने माजा : २२१८)

- हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि) के अनुसार हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया "अगर किसी बंदे को तमाम दुनिया एकजुट होकर नुकसान पहुँचाना चाहे तो उसे सिर्फ इतना ही नुकसान पहुँचेगा जितना उसकी तकदीर में लिखा हुआ है।" (जामे तिरमीज़ी, हदीस २५१६)

- पैदाईश, मौत, सेहत, बीमारी, गरीबी, खुशहाली। हादसात, दौलत वगैरा का दारोमदार सिर्फ तकदीर पर है। अच्छाई के लिए कोशिश करो लेकिन उम्मीद के खिलाफ नतीजे से कभी मायूस ना हो जाओ क्योकी तुम्हारा तकदीर पर इख्तीयार नहीं है। और तकदीर सिर्फ नेकियों से और अल्लाह तआ़ला को खुश करके ही बदली जा सकती है।

तीसरा नज़रिया

सकारात्मक सोच के बिना कामयाबी असंभव है।

- विद्वानों (Research scholars) ने २० साल से ज़्यादा समय तक संशोधन करने के बाद यह नतीजा निकाला की हमारी कामयाबी और नाकामी पर हमारे विचारों का गहरा प्रभाव होता है। अधिकतर हम अपने नकारात्मक विचारों की वजह से असफल होते हैं।

- विद्वानों और वैज्ञानिकों के मुताबिक मनुष्य का अवचेतन दिमाग़ (Sub-concious mind) उसकी सफलता में बहुत महत्वपूर्ण किरदार अदा करता है।

- अवचेतन मन (Sub-concious mind) हमारी चेतना का एक हिस्सा है जहाँ तमाम मालूमात जमा हो जाती हैं। लैकीन आंकड़े (Data) जमा करने के साथ वह इंटरनेट से जुड़े कम्प्युटर की तरह काम भी करता है। जब एक व्यक्ति पूरे विश्वास और भावना के साथ कुछ सोचता है तब उसका अवचेतन मन हरकत में आता है और उस सोच को वास्तविकता मे बदलने की कोशिश करता है। इस उद्देष्य के लिए वह पहले उन मालूमात की मदद लेता है जो उस व्यक्ति की याददाश्त में मौजूद है। और अगर उसे हल (समाधान) न मिले तो अल्लाह तआ़ला के उस व्यवस्था का सहारा लेता है जो अल्लाह ने बंदो से संपर्क के लिए स्थापित कीया है। अल्लाह तआ़ला के बनाए हुए निजाम (व्यवस्था) से वह जरूरी मालूमात हासिल करता और उसे विचारों (Ideas) के रूप में चेतन मन (Concious mind/जागरूक दिमाग़) को मालूमात देता है ताकि इंसान अपने लक्ष्य तक पहुंचे।

- विद्वान और वैज्ञानिक कहते हैं कि हमेशा सकारात्मक सोच रखो, हमेशा सपना देखो कि तुम १०० प्रतिशत सफल होकर अपने लक्ष्य को पाओगे। इस तरह अवचेतन दिमाग़ पर दबाव पड़ेगा कि वह ऐसी मालूमात आप को दे जो १०० प्रतिशत सफलता का आश्वासन देती हों।

  इसके विपरित अगर किसी की नकारात्मक सोच हो तो अवचेतन दिमाग़ भी ऐसी गलत मालूमात और (Ideas) देगा जिसके कारण नाकामी निश्चित होगी।

- अपनी बात को और अच्छी तरह से समझाने के लिए प्रसिद्ध लेखक नेपोलियन हिल के बयान का हवाला दूंगा जो कि इस प्रकार हैः

  मन में मौजूद सब से गहरा और मज़बूत विचार, चुंबक की तरह काम करता है। वह इसी तरह के अन्य विचारों, नज़रियात और हालात अपनी तरफ खींचते हैं और उन्हें वास्तविकता में ढालने की कोशिश करते हैं। इसलिए हमारी सोच हमेशा सकारात्मक होनी चाहिए।"

("Think and Grow Rich")

- विद्वानों ने सकारात्मक और नकारात्मक विचारों और भावनाओं की सूची बनाई है और उनका बयान है की सिर्फ एक नकारात्मक सोच

तमाम सकारात्मक विचारा को नष्ट कर देती है इसलिए हमारे दिमाग़ में कोई नकारात्मक विचार नहीं होना चाहिए।

सकारात्मक विचार या भावनाएं:

१. किसी चीज़ की तीव्र इच्छा।
२. उम्मीद और श्रद्धा की भावना।
३. प्यार मोहब्बत की भावना।
४. जोश और हिम्मत की भावना।

नकारात्मक विचार या भावनाएं:

१. निराशा की भावना।
२. गरीबी का ड़र, आलोचना, बीमारी और मौत का ड़र
३. अपने प्यारों से जुदाई का ड़र।
४. इन्तेकाम (बदले) की भावना।
५. हसद (जलन) की भावना।
६. क्रोध, नफरत और लालच की भावना।
७. अंधविश्वास, ज्योतिष, भविष्य वाणी, Numerology, Palmistry, पर विश्वास वगैरा की भावनाएं (नकारात्मक भविष्य वाणी दिमाग़ में विश्वास की तरह बैठ जाते है।)

अब हमें अध्ययन करना है कि सकारात्मक और नकारात्मक भावनाएं और विचारों का फ़लसफा इस्लामी दृष्टीकोण से कहाँ तक दुरूस्त है।

इस्लाम में विचारों और नज़रियात का महत्व:

- अल्लाह तआला कुरआन करीम में फरमाता है कि, "आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है सब अल्लाह का है। तुम अपने दिल की बातें चाहे खोल दो, या छिपाओ अल्लाह हर हाल में उनका हिसाब तुमसे ले लेगा। फिर उसे अधिकार है, जिसे चाहे माफ़ कर दे और जिसे चाहे, सज़ा दे। उसे हर चीज़ पर क़ुदरत हासिल है।" (सूरह बक़रा, आयत २८४)

- "ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, बहुत गुमान करने से बचो कि कुछ गुमान गुनाह होते हैं। टोह में मत पड़ो। और तुममें से कोई किसी की पीठ पीछे निन्दा (ग़ीबत) न करे। क्या तुममें कोई ऐसा है जो अपने मरे हुए भाई का मांस खाना पसन्द करेगा? देखो, तुम ख़ुद इससे घिन खाते हो। अल्लाह से डरो, अल्लाह बड़ा तौबा क़बूल करनेवाला और दयावान् है।" (सूरह हुजुरात आयत १२)

- कयामत के दिन हमारे कर्मों का हिसाब लिया जाएगा। इसी तरह हमारे विचारों का भी हिसाब लिया जाएगा।

- कुछ लोग कहते हैं कि गलत सोच गुनाह नहीं है, जिसकी दलील वह निम्नलिखित उदाहरण से देते हैं:

  "अगर आप एक रूपया खैरात (दान) करने का सोचते हैं तो एक रूपया दान का सवाब आपके हिसाब में लिखा जाएगा" (हालांकि अभी आपने वह दान नहीं दिया।)

  अगर आपने वास्तव में वह रूपया दान कर दिया तो दस रूपये का सवाब आपके हिसाब में लिखा जाएगा।

  अगर आप एक रूपया चुराने की सोचें तो कोई गुनाह आपके हिसाब में नहीं लिखा जाएगा।

  अगर आप एक रूपया चुराने का विचार तर्क कर देते हैं तो एक सवाब आपके नामा-ए-आमाल में लिखा जाएगा।

  अगर आप वास्तव में एक रूपया चुराते हैं तो सिर्फ एक रूपया चुराने का गुनाह आपके हिसाब में लिखा जाएगा। इसलिए गुनाह के बारे में सोचना गुनाह नहीं है।

  यह व्याख्या, श्रद्धा, और विचार १०० फीसद सही है।

- अब आप दुसरे उदाहरण पर गौर करें:

  बगैर मौसम की बारिश के बारे में अगर कोई व्यक्ति यह श्रद्धा रखें कि यह बारिश एक खास राशि-चक्र (Zodiac) के एक खास सितारे के बुलंद होने से हुई है तो आपका इस "विचार" के बारे में क्या खयाल है?

  अगर वह व्यक्ति उस बारिश के बारे में अपनी श्रद्धा के अनुसार कुछ विचार व्यक्त ना भी करें तो क्या आप समझते हैं वह अजाब से बच जाएगा?.... नहीं!

  अगर वह अपने विचार और आस्था के बारे में कुछ नहीं कहता, तब भी यह विचार गुनाह समझा जाएगा। और अगर वह इस "विचार" से तौबा ना करे तो उसे नर्क में 'शिर्क' करने का आजाब (प्रकोप) दिया जाएगा। (क्योंकि उसने सितारों को खुदा का दर्जा दिया)

  (अल-अदबुल मुफर्रद, इरशादे नबवी (स.) की रौशनी में निजामें मआशिरत ६०७, जिल्द २, पृ.२२६)

- अल्लाह तआला पवित्र क़ुरआन में फरमाता है: "और जो (भेद) दिलों में हैं वह जाहिर कर दिए जाऐंगे।" (सूरह आदियात आयत १०)

  अर्थात जो गलत ईमान या विचार आपके दिल में हैं वह कयामत के दिन ज़ाहीर कर दिए जाऐंगे और उनका हिसाब होगा। इसलिए खयालात भी कर्मों की तरह महत्वपूर्ण हैं। और आखिरत (परलोक) की जिंदगी का दारोमदार आपके ईमान, आस्था और विचारों पर ही है।

  अल्लाह तआ़ला हमें उन बातों का जिम्मेदार करार नहीं देता जिनपर हमारा काबू नहीं है। अलबत्ता विचारों पर हमारा काबू होता है इसलिए अगर हम उन्हें ज़ाहिर ना भी करे तो कयामत के दिन अल्लाह हमसे उनका हिसाब लेगा।

- मेरी किताब जिसका Title है, "Law of Success for both the Worlds, इसमें मैंने १० प्रकार के विचारों का उल्लेख किया है और नकारात्मक विचारों से बचने के तरीके बयान किये गए हैं। अधिक जानकारी के लिए कृपया उस पुस्तक का अध्ययन करें।

  अब हमें यह देखना है की हमें किस प्रकार के विचार अपने दिमाग में बसाने की हिदायत की गई है।

इस्लाम ने सकारात्मक विचारों पर ही ज़ोर दिया है।:

सकारात्मक विचारों के कुछ उपदेश निम्न लिखित हैं:

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया: "आप अल्लाह तआ़ला से इस श्रद्धा के साथ दुआ मांगो की वह आप की दुआ ज़रूर स्वीकार करेगा।" (बुखारी: ६६६५, तिरमिज़ी: ३४७६)

श्रद्धा एक सकारात्मक भावना है, निराशा या अविश्वास एक नकारात्मक

भावना है। सकारात्मक भावनो के साथ दुआ़ अगर पूरे भरोसे के साथ की जाए, तो सकारात्मक नतीजा निकलता है।

- हज़रत अबु हुरैरा (रज़ि) के अनुसार हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमायाः "खैर (अच्छाई) की उम्मीद रखना भी अल्लाह तआ़ला की इबादत में शामिल है।" (तिरमिज़ी, हाकिम)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमायाः "अगर तुम को विश्वास हो कि कयामत अभी आने वाली है लैकिन अगर तुम्हारे पास इतना वक़्त है कि एक पौधा लगा सको तो जरूर लगाओ।"
(इरशादे नब्वी (स.) की रौशनी में निज़ामे मआशिरत हदीस ४७६, अल-अदबुल मुफर्रद)

(इस हदीस से हमें यह सीख मिलती है कि हमें हमेशा मुक्कमल सकारात्मक विचार ही रखने चाहिएं।)

- कुरआ़ने करीम की एक आयत का मतलब है कि, अल्लाह की रहमत से निराश न हों, उसकी रहमत से तो बस अधर्मी ही निराश हुआ करते हैं।
(सूरह यूसुफ आयत ८७)

(इस कुरआ़नी आयत के मुताबिक नाउम्मीद (निराश) होना उतना ही बड़ा जुर्म है जितना अल्लाह तआ़ला अस्तित्व से इन्कार करने का जुर्म है।)

- इमाम बुखारी (र.अ.) अपनी किताब "अल-अदबुल मुफर्रद" (उर्दु, जिल्द १, पृ.नं. ४०३, हदीस नं.५६०) में लिखते हैं की, "एक नाउमीद (मायूस) बंदे को उसके आमाल (कर्मों) का हिसाब लिए बगैर नर्क में डाल दिया जाएगा।"

इसलिए सकारात्मक सोच इस्लाम की महत्वपूर्ण तालिमात में से एक तालीम है।

इस्लामी तालीम के मुताबिक कामयाबी पर यकिन रखना बहुत ज़रूरी है:

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमायाः "अल्लाह तआ़ला फरमाते हैं, "मैं मेरे बंदे के गुमान (अनुमान) की तरह हुँ।"
(बुखारी, मुस्लिम, बा-हवाला हदीस नबवी कि रोशनी में, हदीस ५६३)

इस हदीस के मुताबिक अगर बंदा सकारात्मक सोच रखता है कि अल्लाह तआ़ला के करम (दया) से और उसकी मदद से वह कामयाब हो जाएगा, तो उम्मीद है की अल्लाह तआ़ला उसकी मदद करेगा, और वह कामयाब होगा। क्योंकि सूरह तलाक २-३ में है कि अल्लाह तआ़ला का वादा है कि उस पर भरोसा रखने वालों की अल्लाह तआ़ला मदद करता है।

इसके विपरीत अगर बंदा सोचे कि वह नाकाम रहेगा, और अल्लाह तआ़ला उस बंदे के गुमान के मुताबिक अगर उसे अपनी रहमत से महरूम (वंचित) कर दे तो अवश्य वह बंदा नाकाम रहेगा।

- कुरआन करीम में लिखा है कि, "अगर तुम मोमिन (ईमान वाले) हो तो तुम ही गालिब (विजयी) रहोगे"। (सूरह आले इम्रान, आयत १३६)

इस आयत में अल्लाह तआ़ला खालिस ईमान और कर्मों की बुनीयाद पर कामयाबी का यकिन दिलाते हैं।

- "अगर अल्लाह तआ़ला तुम को कोई सख्ती पहुंचाए तो उसके सिवा उसको कोई दूर करनेवाला नहीं, और अगर निअ़मत व राहत (आशिर्वाद और आराम) प्रदान करें तो कोई उसको रोकने वाला नहीं। वह हर चीज़ पर कादिर (सक्षम) है।
(सूरह अनआ़म आयत १७, सूरह यूनुस आयत १०७)

यह कुरआ़न की आयत हमें यकीन दिलाती है कि दिल में जलन रखने वाला दुश्मन हमारा रोज़गार तबाह नहीं कर सकता। हमारा भाग्य अल्लाह तआ़ला के इख्तियार में है। अगर वह हमें खुश्हाली की निअ़मत (वर्दान) देता है, तो कोई उसे रोक नहीं सकता।

- कुरआ़ने करीम में इरशाद हैः

"और जो अल्लाह से डरेगा वह उसके लिए दुख और मुसीबतों से बचने की सूरत पैदा कर देगा। और उसको ऐसी जगह से रिज़्क (रोज़ी) देगा जहाँ से उसे वहम और गुमान (अनुमान) भी न हो।"
(सूरह तलाक आयत २,३)

यह आयते कुरआ़नी हमें यकिन दिलाती है कि अगर हम किसी मुश्किल में घिर जाएं और अगर हम अल्लाह तआ़ला से ड़रते हैं और उस पर यकीन रखते हैं तो वह ज़रूर हमारी मदद करेगा और हमें मुसीबत से निजात (छुटकारा) दिलाएगा।

इसी तरह कुरआ़न और हदीस हमें अच्छे चरित्र और कर्मों के साथ सकारात्मक और दृढ़ विश्वास से भरपूर सोच की शिक्षा भी देते हैं। जो कि कामयाबी के लिए बहोत ज़रूरी है।

इस्लाम में नकारात्मक विचारों पर पाबंदी है।:

- अल्लाह तआ़ला कुरआन शरीफ में फरमाता है कि, "और जिस चीज़ में अल्लाह ने तुममें से कुछ लोगों को कुछ लोगों पर फजीलत दी है उसकी हवस मत करो"। (सूरह नीसा आयत ३२)

अर्थात अल्लाह तआ़ला ने समाज में किसी को धनी और किसी को गरीब, किसी को तंदुरूस्त और किसी को अपंग बनाया है। तो जो कमतर दर्जा पर है उसे अपने से अच्छे दर्जे वाले को देखकर जलन का जज़्बा नहीं रखना चाहिए।

- "तुम उस सांसारिक सामग्री की ओर आँख उठाकर न देखो जो हमने इनमें से विभिन्न तरह के लोगों को दे रखी है, और न इनकी हालत पर अपना दिल कुढ़ाओ। इन्हें छोड़कर ईमान लानेवालों की ओर झुको"
(सूरह हिज्र आयत ८८)

इस आयत में अल्लाह तआ़ला दौलत और जायदाद की हवस से मना कर रहा है।

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "हसद (जलन) मत करो, क्योंकि हसद का जज़्बा, खुदा से हासिल की हुई बरकत को जला डालता है। बिल्कुल उसी तरह जैसे आग सूखी हुई लकड़ी को जला डालती है।"
(अबू दाऊद ३०६४)

- अल्लाह तआ़ला कुरआ़न में फरमाता हैः "और बहोत से नबी हुए हैं जिनके साथ होकर अक़्सर अल्लाह वाले (खुदा के दुश्मनों से) लड़े हैं। तो जो मुसीबतें उन पर खुदा की राह में आईं उन के कारण उन्होंने ना तो हिम्मत हारी और ना कायरता दिखाई, ना काफिरों से दबे और अल्लाह इस्तकलाल (दृढ़ता) रखने वालों को दोस्त रखता है।"
(सूरह आले इमरान आयत १४६)

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने हिम्मत हारने, बुज्दिली दिखाने काफिरों से दबने को नापसंद फरमाया है। और हिम्मत व इस्तकलाल (दृढ़ता) रखने वालों को पसंद फरमाया है।

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जो मुसीबत में बाल मुडंवाए, वावेला करें या कपड़े फाडे वह हम में से नहीं।"
(जवामेउल कलाम : डॉ. ज़हूर अहमद अज़हर)

(अर्थात संयम व हिम्मत मोमिन (ईमान वाले) की शान है, जिसमें संयम व हिम्मत नहीं वह मोमिन नहीं।)

- हज़रत अनस (रज़ि) रावी हैं कि, उनसे हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "ऐ मेरे प्यारे बेटे! तुम्हारे लिए यह संभव हो की ऐसी जिंदगी गुज़ारों जिसमें किसीके लिए तुम्हारे दिल में कोई गलत जज़्बा ना हो, तो ज़रूर ऐसी जिंदगी गुज़ारों। और यह मेरा तरीका-ए-जिंदगी है। जो मेरे तरीका ए जिंदगी (जीवन प्रणाली) की पैरवी (अनुसरण) करते हैं, इसमें कोई शक नहीं के वह मुझसे मोहब्बत करते हैं। और जो मुझसे मुहब्बत करते हैं वह मेरे साथ जन्नतुल फिरदोस (स्वर्ग में उच्चतम स्थान) में रहेंगे।" (मुस्लिम)

इस हदीस में हज़रत मुहम्मद (स.) ने किसी भी तरह के नकारात्मक और गलत विचारो और जज़्बात को दिमाग़ में रखने से मना फरमाया है।

- अल्लाह तआ़ला पवित्र कुरआ़न में फरमाता है, "(और देखना) शैतान (का कहना ना मानना वह) तुम्हें तंगदस्ती (गरीबी) का खौफ दिलाता है और बे-शरमी के काम करने को कहता है। और खुदा तुमसे अपनी बख्शिश और रहमत का वादा करता है। और अल्लाह बड़ी कशायश (बरकत) वाला (और) सब कुछ जाननेवाला है।" (सूरह बक़रा आयत २६८)

इस धरती पर जिन्नातों में शैतान सबसे ज़्यादा उम्रदराज़ (आयुष्यमान) और सबसे ज़्यादा तजुर्बाकार है। वह अपनी ताकत किसी बेकार काम में नष्ट नहीं करेगा। अगर वह अपना वक़्त और ताकत गरीबी का डर दिलाने में खर्च करता है तो यकिनन इसका असर मनुष्य पर बहोत नुकसान पहुँचाने वाला होगा। ड़र एक नकारात्मक विचार है। इससे यह साबित होता है कि नकारात्मक विचार, मनुष्य के लिए बहुत नुकसानदायक हैं। और इस्लाम कभी भी नकारात्मक सोच की तालीम (सीख) नहीं देता है।

चौथा नज़रिया

ख़ुशहाली की स्पष्ट कल्पना:

- अल्लाह तआला कुरआन करीम में फरमाता है कि, "जो व्यक्ति नेक कर्म करेगा चाहे पुरूष हो या महिला, और वह मोमिन भी होगा, तो हम उसको दुनिया में पाक और आराम की ज़िंदगी से जिंदा रखेंगे और आखिरत (परलोक) में उनके कर्मों का बहुत अच्छा बदला देंगे।"
(सूरह नहल आयत ९७)

- "(अल्लाह के नेक बंदे) अल्लाह से दुआ मांगते हैं कि ऐ परवरदिगार हमको हमारी बीवीयों की तरफ से दिल का चैन और औलाद की तरफ से आंख की ठंडक अता फरमा और हमें परहेजगारों का इमाम बना।"
(सूरह फुरकान आयत ७४)

इस आयत से यह मालूम होता है कि ऐसी बीवी और बच्चे भी अल्लाह तआ़ला की बड़ी निअ़मत (वरदान) हैं जिन्हें देखकर दिल को सुकून और आखों को ठंडक महसूस हो।

- हज़रत मुहम्मद (स.) कहते हैं कि अल्लाह तआला फरमाता है: "ऐ मेरे बंदे तू अपने आपको मेरी इबादत के लिए फारिग कर ले (समय निकाल ले), तो मैं तेरे दिल को ग़िना (सखावत/अमीरी) से भर दूंगा और तुझे आसान और पाकीज़ा जिंदगी दूंगा। और अगर तूने मेरी इबादत से लापरवाही की तो ना मैं तेरे हाथ कभी मसरूफियत (व्यस्तता) से खाली करूंगा और ना कभी मैं तेरी ग़रीबी और मोहताजी दूर करूंगा।"
(इब्ने माजा: ४१०)

- रसूल (स.) ने फरमाया "ए अबु जर (रजी.) तुम माल की ज्यादती को मालदारी समझते हो?" हजरत अबु जर (रजी.) ने फरमाया हां! रसूल (स.) ने फरमाया "क्या तुम माल की कमी को फकीर समझते हो?" हज़रत अबु जर (रजी.) ने फरमाया हां! फिर रसूल (स.) ने फरमाया मालदारी और फकीरी दिल में होती है। जिस शख्स की मालदारी दिल में हो तो उसको दुनीया से जो कुछ भी मिला नुकसान नहीं देगा और जिस शख्स के दिल में फकीरी हो तो उस दुनीया से कितना ही ज्यादा मिल जाए उसको कोई फायदा नहीं देगा। बल्कि उसका निजाल (कंजूसी) उसको नुकसान पहूँचाएगा। (तिबरानी कबीर १६१८ अन अबी जर (रजी.))

ऊपर दी गई हदीस से यह साबित होता है कि दिल का ग़नी (दानी/Generous) होना भी अल्लाह तआ़ला की तरफ से एक इनाम और दौलतमंदी है।

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "दौलत किसी मुत्तकी (परहेज़गार) को नुकसान नहीं पहुंचाएगी अगर वह मालदार हो जाए। लैकिन अच्छी सेहत (तनदुरूस्ती), दौलत से बेहतर है एक परहेज़गार बंदे के लिए जो खुदा से डरे। और दिमागी व रूहानी (आध्यात्मिक) सुकून अल्लाह तआ़ला की निअ़मत है। (मिश्कात)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "दुनिया के असबाब (सामग्री) और सामाने जिंदगी की कसरत (अधिकता) का नाम दौलतमंदी नहीं है। अस्ल दौलतमंदी तो दिल की बेनीयाज़ी और ग़िना (सखावत/उदारता) है।
(बुखारी, मुस्लिम, बा-हवाला तर्जुमानुल हदीस-अव्वल, सफा नंबर ५२)

- ऊपर दी गई कुरआनी आयत व हदीस से हम यह नतीजा निकालते हैं के खुशहाली सिर्फ बहोत सारी दौलत और जायदाद का नाम नहीं है बल्कि निम्नलिखित हालात या चीज़े वास्तव में खुशहाली हैं:

१. पाकीज़ा और आरामदेह जिंदगी।
(Pious and comfortable life)

२. ऐसी बीवी और बच्चे जिन्हें देखकर हम खुश होते हैं।
(Having such wife and children, looking at whom we feel pleasure.)

३. उमदा सेहत। (Good health.)

४. दिमागी व रूहानी (आध्यात्मिक) सुकून।
(Peaceful mind and soul.)

(बाकी पेज २७ पर)

७. कामयाबी की शुरूआत कैसे करें?

- इस किताब को पढ़ने के बाद कुछ लोग इस तरह सवाल करते हैं: ''इस किताब को शुरू से आखिर तक पढ़ने के बाद मैं ने दौलत का महत्त्व समझ लिया। मैंने यह भी जाना की उसे किस तरह हासिल किया जाए। मैंने वह सच्चाइयाँ (वास्तविक्ताएं) भी याद रखीं जो दौलत को बढ़ाती और घटाती हैं, खुशहाली को कम और ज्यादा करती हैं। मुझे वह दुआएं भी याद हैं जिनसे में कर्ज के जाल से निकल सकता हूँ। लैकिन सवाल यह है कि में कब, कहाँ और कैसे बेहिसाब दौलत कमाना शुरू करूं? दौलत इकठ्ठा करने की हिम्मत और जोश दिलाने वाली किताबों से मेरा हौसला तो बढ़ता है। मगर दुसरे ही दिन मैं या तो अपने रोजमर्राह के कामों में उलझ जाता हुँ, या मेरी हालत फिर से पहले जैसी हो जाती है। यानी में काहिल, आरामपसन्द, ऐश पसंद और निराश हो जाता हुँ। मैं इस हालत से कैसे बाहर आऊं?''

- ऊपर बताए गए हालात सामान्य (Normal) हैं और हर इंसान को उनसे वास्ता पड़ता है। लैकिन जरा सी कोशिश और लगातार परिश्रम से उन हालात को सुधारा जा सकता है।

- जिंदगी में कामयाबी के लिए तिन चीजे जरूरी है।

१) सही सोच २) सही जदोजहद ३) सही इबादत

सही सोच हम सबक नंबर १ से १३ के दरम्यान पढ़ रहे है। सही जदौजहद हम सबक नं १४ से किताब के आखिर तक पढ़ेंगे और सही इबादत खास तौर से हम सबब नं ३६ से पढ़ेंगे। और इसके अलावा हमारे जो भी अमाल कुरआन और हदीस के मुताबिक होंगे वह सारे के सारे इबादत में शुमार होंगे। आए हम पहले सही सोच के बारे में पढते हैं। पहले हम मगरीबी फलसफा पढेंगे के ख्याल और अलश्वार किया है और उनको कैसे सही किया जाए फिर हम इस्लामी तालीम का मुत्ताला करेंगे के इस्लाम पर चलकर हमारे ख्यायालात कैसे सही हो जाते है।

१. पश्चिमी दर्शनशास्त्र (Western Philosophy)

- नाकामी और मायूसी से बचने के लिए पहले हम एक महान लेखक नेपोलियन हिल का फलसफा (Philosophy) पढ़ेंगे और इसके बाद महान कामयाबी के लिए बेहतरीन इस्लामी तरीका सीखेंगे।

- नेपोलियन हिल एक अमेरिकी लेखक हैं जिनकी पहली किताब "कामयाबी का कानून (Law of Success)" है। यह किताब बेहद प्रसिद्ध हुई थी, लेकिन यह बहोत मोटी थी इसलिए लेखक ने उस किताब का खुलासा एक संक्षिप्त किताब "सोचो और दौलतमंद बनो (Think and Grow Rich)" के नाम से प्रकाशित किया। उस किताब का हिंदी समेत २४ भाषओं में अनुवाद हो चुका है। कुछ उर्दू अखबारात ने भी उसे निबन्धों (Articles) के रूप में प्रकाशित किया है।

- निपोलियन हिल ने व्यापार में सफलता के राज़ जानने के लिए २० बरस तक खोज किया और फिर अपना फलसफा पेश किया। उस फलसफे के कुछ उसूल इस प्रकार हैं:

१. जो कुछ मानव दिमाग़ कल्पना कर सकता है और उसे पाने और बनाने का यकिन रखता है तो वह उसे पा सकता है और बना सकता है।

लेखक ने अपने इस फलसफे को साबित करने के लिए कोका कोला, मॅकड़ोनाल्ड के दुनिया भर में फैले ३५०० होटल, फॅडेक्स कुरियर (Fedex Courier), झेरॉक्स मशीन और एडिसन के द्वारा आविष्कारित रौशनी के बल्ब और दूसरे कई आविष्कारों का हवाला दिया है। एक ज़माने तक इन चीज़ों की लोग कल्पना भी नहीं कर सकते थे। मगर कुछ लोगों ने उनकी कल्पना की। उन्हें अपनी कामयाबी का यकीन था। वह लगातार कोशिश करते रहे और अंत में कामयाब हुए। आज उनकी कामयाबी इतिहास में सुनहरें शब्दों में लिखी जाती है। इसलिए हर इंसान अगर कोई नई चीज़ या कारोबार की कल्पना करता है और उसे अपनी कामयाबी का पूरा यकिन हो और लगातार कोशिश भी करता रहे तो वह इंसान ज़रूर कामयाब होगा।

२.दिमाग में बसा हुआ सबसे मज़बूत विचार, चुंबक की तरह काम करता है। वह ऐसी ही एक समान विचारो और कल्पनाओं या हालात को अपनी तरफ खींचता है और उन्हें हकिकत (वास्तविक्ता) में बदलने की कोशिश करता है।

३.दिल में बसी तीव्र इच्छा (Burning Desire), उप-जागरूक दिमाग़ (Sub Conscious Mind) को सक्रीय करती है। उप-जागरूक दिमाग, जागरूक दिमाग़ से ६ गुना बड़ा होता है। उप-जागरूक दिमाग एक इंटरनेट वाले कम्प्युटर की तरह काम करता है। वह हकायक (तथ्यों) को सुरक्षित रखता है (याद रखता है) और आंकड़ों (Data) का विश्लेषण करता है। अगर ज़रूरी हुआ तो वह ईश्वरीय व्यवस्था से मालूमात भी हासिल करता है और तीव्र इच्छा (Burning Desire) को वास्तविक्ता में बदलने में मदद करता है।

एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक 'के कोले' बेंज़िन (Benzen) की आण्विक संरचना (Molecular Structure) जानने की कोशिश कर रहा था, मगर कामयाबी नहीं मिल पा रही थी। एक रात उसने सपना देखा की एक सांप ने अपनी दुम को मुंह में पकड़े हुए दायरे (Circle) की शक्ल बना रखी है और ऐसे बहोत सारे सांपो ने मिलकर एक बड़े दायरे की शक्ल बना रखी है (जैसे जंजीर का दायरा)। और इसी तरह का बेंज़िन का आण्विक संरचना (Molecular Structure) है। तो जो असंभव और मुश्किल मालूमात उस प्रसिद्ध वैज्ञानिक को सपने के द्वारा हासिल हुई वह अल्लाह तआला का इन्सानों की मदद करने का एक निज़ाम या तरीका है। जो उप जागरूक दिमाग़ (Sub Conscious Mind) के द्वारा या दिल के द्वारा बंदों तक पहुँचता है। वरना ऐसी मालूमात किसी 'वही' (Revelation) के बगैर मालूम होना असंभव है। इससे यह बात साबीत होती है की अगर किसी बंदे के दिल में कोई जायज़ और तीव्र इच्छा हो तो अल्लाह तआला उसे गैबी (अदृश्य) तौर से ज़रूर मदद करते हैं। मगर शर्त यह है कि बंदे को जो कुछ चाहिए वह जायज़ (वैध) हो, स्पष्ट हो और वह उसे दिल से चाहे।

४. तीव्र इच्छा (Burning Desire) कामयाबी की असल कुंजी है।

२. तीव्र इच्छा (Burning Desire) *क्या है?*

- तीव्र इच्छा की व्याख्या के लिए निपोलियन हिल ने तारिक बिन ज़ियाद की मिसाल दी।

- सन ७५० में तारीक बीन ज़ियाद, खलीफा वलीद बीन अब्दुल मलिक के सेनापति थे। तारीक बिन ज़ियाद को दक्षिण अफ्रिका और यूरोप के उत्तरी देशों पर विजय प्राप्त करने का हुक्म दिया गया, जैसे स्पेन और समुद्र पार के देश। तारिक बिन ज़ियाद ने दक्षिण अफ्रिका फतेह कर लिया लैकिन स्पेन फतेह करना आसान नहीं था। तारिक बिन ज़ियाद ने निश्चय कर लिया था की स्पेन फतेह करके रहेंगे। इसलिए उन्होंने अपने १२००० सिपाहियों को कश्तियों (नावों) में सवार किया। स्पेन के समुद्र किनारे तक समुद्री सफर किया। किनारे पर लंगर अंदाज होकर अपनी कश्तियां जला दीं।

  जब कश्तियां समुद्र में जलकर डूबने लगीं तो तारिक बिन ज़ियाद ने अपने फौजीयों से कहा, "उन कश्तियों को देखो जैसे ही वह कश्तियां डूब जाएंगी तो तुम्हारे यहाँ से फरार होने के सारे रास्ते भी बंद हो जाएंगे। तुम इस समुद्र तट से ज़िंदा नहीं लौट सकते जब तक तुम विजयी न हो जाओ। तुम्हारे पास और कोई रास्ता नहीं, या तो फतेह पाओ या फना हो जाओ।" और वह विजयी हो गए।

  जिस चट्टान पर वह स्पेन के १००००० फौजीयों से सात दिन तक लढ़े और फतेह हासिल की उसका नाम आज भी तारिक बिन ज़ियाद के नाम पर 'जबल ए तारीक' या 'जिब्रॉल्टर' है।

  जिस इच्छा से तारिक बिन ज़ियाद का दिमाग भरा हुआ था उसे 'तीव्र इच्छा' (Burning Desire) कहते हैं।

- 'तीव्र इच्छा' रखनेवाला अपने लक्ष्य को पाने के लिए अपनी हर चीज़ दाव पर लगा देता है। तीव्र इच्छा का दिल में होना कामयाबी के उसुलों मे से एक महत्वपूर्ण उसूल है। इसलिए जिसे भी कामयाब होना होगा उसके दिल में तीव्र इच्छा ज़रूर होनी चाहिए।

- हमें क्या करना चाहिए जब दिमाग़ तो तीव्र इच्छा चाहता है, मगर दिल में एक तीव्र इच्छा की आग जलती ही नहीं?

  जवाब है (ऑटो सजेशन) Auto Suggestion.

३.(आत्म-सम्मोहन) Auto Suggestion.

- इसे हम "अपने आप को यकीन दिलाना" भी कह सकते हैं यह एक ऐसा तरिका है जिसमें हम कुछ ख्यालात और हकायक (तथ्यों) को बार-बार दोहराते है, और याद रखने की कोशिश करते हैं ताकी उन्हें हमारा दिलो दिमाग हकिकत (सत्य) के तौर पर कबूल कर ले। क्योंकि खयालात और जज़्बात हमारी कार्यप्रणाली को बेहद प्रभावित करते हैं। और कामयाबी में महत्वपुर्ण किरदार अदा करते हैं। इसलिए अगर सही ख्यालात और जज़्बात हमारे दिमाग़ में बैठ जाएं तो हमारी जिंदगी बदल सकती है।

- Auto-Suggestion में सात कार्य हैं, यानी अपने आप को यकीन दिलाने के लिए आप को सात काम करने हैं जो नीचे दर्ज किए जा रहे हैं:

१.अपना मक्सद और अपनी मंजील बिल्कुल स्पष्ट हो और उस को हासिल करने का आप को पूरा यकीन हो।

२.अपना परिश्रम और योजना भी स्पष्ट और साफ रखें। यानि अपना मक्सद पूरा करने के लिए आप क्या कार्यवाई करेंगे यह भी बिल्कुल स्पष्ट हो। (अपने मक्सद और मंजील को पाने के लिए आप क्या बलिदान देंगे यह भी मन में स्पष्ट हो)।

जैसे तलीबे इल्म कहा गया है की मैं दिन में छह घंटा पढूंगा या कोई ट्युशन क्लास में दाखला लुंगा। ताजिर कहेगा की में रोज बारा घंटा काम करूंगा वगैरा वगैरा।

३.दोनों चीज़ों को एक कागज़ पर लिख लें। यानी अपने मक्सद और कोशिश या योजना (बलिदान) को कागज़ पर लिख लें।

४.रोज़ाना सुबह और शाम उस कागज की लिखाई को ऊंची आवाज़ से पढ़ें।

५.कामयाब होने के पहले ही यह यकीन करने की कोशिश करें की अभी से आप कामयाब हो रहे हैं।

६.अपनी योजनाओं पर अमल शुरू कर दें।

७.अपने मक्सद, अमल और मुश्किलात का विश्लेषण करें। कार्यप्रणाली में सुधार करें और अपना काम जारी रखें।

अपने आप को यकिन दिलाने का यह तरीका न सिर्फ व्यापार में इस्तेमाल होता है बल्की अधिकतर और कई जगह इस्तेमाल होता है, जैस खेलकुद, फौजी प्रशिक्षण, कम्पनी प्रबंधन (Company Management) वगैरा में। और ज्यादा मालुमात के लिए नेपोलियन हिल की किताब Think and Grow Rich का मुत्ताला करें। जो की तकरिबन सभी अंग्रेजी किताबों की दुकानों में दस्ताब है।

Auto Suggestion की बुनीयाद:

- Auto Suggestion निम्नलिखित दो मनोवैज्ञानिक (Psychological) उसुलों पर काम करता है:

  पहला उसूल: जब लोग जुर्म से पहली बार परिचित होते हैं, तो वह उसे पसंद नहीं करते और उन्हें दुख होता है। अगर वह कुछ समय तक जुर्म से करीब रहें तो वह उसके आदी (अभयस्त) हो जाते हैं और उसे बरदाश्त करने लगते हैं। और अगर वह लम्बे समय तक उसके करीब रहें तो आखिरकार वह उसे जिंदगी का एक हिस्सा समझकर स्वीकार कर लेते हैं। यह इंसानी फितरत (प्रवृत्ति) है। इसका मतलब यह है की अगर कोई विचार बार-बार दोहराया जाए तो दिमाग उसे कुबूल कर लेता है। इसी तरह अगर कोई गलत विचार भी बार-बार दोहराया जाए तो आखिरकार दिमाग उसे भी सही समझकर कुबूल कर लेता है, अथवा उस पर यकिन कर लेता है।

  दूसरा उसूल: पावलोव Pavlov (रूसी मनोवैज्ञानिक) ने अपने कुत्ते पर एक प्रयोग किया। वह पहले घंटी बजाता और बाद में कुत्ते को खाना देता। कुछ समय बाद कुत्ते के दिमाग ने घंटी बजने के बाद खाना मिलता है इस व्यवहार को मन में पक्का कर लिया। यानी घंटी की आवाज़ को खाने का इशारा समझ लिया। कुछ दिनों बाद घंटी की आवाज सुनते ही कुत्ते के मुंह से लुआब (लार) निकलने लगती, चाहे खाना हो या ना हो। यह प्रयोग दुनिया भर में प्रसिद्ध है। और उसे "Conditional Response" कहते हैं।

  इसका मतलब यह है की अगर हमारे दिमाग़ को बाहर से कोई इशारा मिले और उस इशारे के मुताबिक हमारे दिल व दिमाग और शरीर को उस इशारे से निपटने के लिए बदलाव करना पड़े, और अस्ल में वह कुछ दिनों तक

उस इशारे से निपटता भी रहे, तो कुछ दिनों बाद सिर्फ इशारे से ही हमारे दिल व दिमाग और शरीर में उस इशारे से निपटने के लिए बदलाव पैदा हो जाएगा। चाहे उस समय शरीर को कोई काम न करना हो।

मिसाल के तौर पर इंजेक्शन लगाने से पहले चमड़ी को स्पिरीट (Spirit) से साफ किया जाता है। अगर किसी बच्चे को हर रोज स्पिरीट (Spirit) से चमड़ी साफ करके इंजेक्शन दिया जाए और वह बच्चा इंजेक्शन से डरता भी हो, तो कुछ दिनों बाद अगर उस बच्चे की चमड़ी को सिर्फ स्पिरीट से साफ कीया जाए तो बगैर इंजेक्शन लगाए भी उस बच्चे के दिमाग़ में डर पैदा हो जाएगा, चाहे इंजेक्शन की सुई वहां मौजुद हो या ना हो।

- कुत्ते और बच्चे की मिसाल की तरह हर इंसान का दिल और दिमाग एक तरह से पहले ही से Trained होता हैं। जैसे, जब हम निराश हो जाते हैं तो हमारा सिर झुक जाता है, कंधे बैठ जाते हैं। हम काहिल हो जाते हैं, हमारा आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान घट जाती है। इरादा और उत्साह कम हो जाता है, और हम बीमार पड़ जाते हैं। यह सारी चीज़ें अपने आप होती हैं। उन्हें हमें करना नहीं होता है। इसी तरह जब हमें बड़ी कामयाबी का यकिन होता है और दौलत मिलने की उम्मीद होती है तो हमारा रवैय्या ऊपर बताए गए हालात के खिलाफ हो जाता है। यानी हम पुरएतेमाद (Confident) हो जाते हैं। हमारा सीना फूल जाता है। चेहरे पर खुशी के प्रभाव नज़र आते है। हिम्मत बढ़ जाती है। काम करने में दिल लगता है। हम मेहनत से दिल नहीं चुराते और ज़रूरत से ज्यादा काम करने लगते हैं वगैरा वगैरा। और यह सारी योग्यताएं कामयाबी के लिए बहोत ज़रूरी भी हैं। इसलिए मनोवैज्ञानिक डॉक्टर इन मनोवैज्ञानिक उसूलों की बुनीयाद पर उन लोगों में असल कामयाबी से पहले कामयाबी की उम्मीद या यकिन पैदा कराने की कोशिश करते हैं जिन्हें कामयाब होने का शौक होता है।

- Auto Suggestion में हम सुबह शाम अपने मक्सद और अपनी मेहनत को इस यकिन के साथ बार-बार याद करते हैं की न सिर्फ हम कामयाब होंगे बल्कि कामयाबी का सिलसिला अभी से शुरू हो गया है।

  अपने आप को यकीन दिलाने वाले इस अमल को बार-बार और लगातार दोहराने के बाद मनोविज्ञान (Psychology) के पहले उसूल के मुताबिक हमारा दिमाग इस बात को कुबूल कर लेता है कि हम ज़रूर कामयाब होंगे। और जैसे ही हमारा दिमाग़ इसे कबूल और यकीन करता है तो मनोविज्ञान (Psychology) के दूसरे उसूल के मुताबिक हममें वह सारी योग्यताएं प्रकट होने लगती हैं जो कामयाबी के लिए ज़रूरी हैं, जैसे पूरऐतेमाद (Confidence) होना, हिम्मत का बढ़ना, मेहनत में जी लगना, ज़रूरत से ज़्यादा काम करना, वगैरा वगैरा।

  इसलिए अगर हम कामयाब होना चाहते हैं तो हमें इन उसूलों को गंभीरता से समझना चाहिए और उनका इस्तेमाल करना चाहिए। या इस Auto Suggestion से ही हम अपनी कामयाबी की शुरूआत करें।

  अगले पाठ में हम पढ़ेंगे की किस तरह इस्लामी जिंदगी गुज़ारने से हम अपने आप Auto Suggestion की क्रिया को दोहरा कर कामयाबी की मंजिल पर चलने लगते हैं।

हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया

१. मोमीन अपने भाई के लिए आईना है।
२. अंधापन आंखो का अंधा होना नहीं है बल्कि दिल का अंधा होना है।
३. बेशक बाज़ बयान (तकरिर या खुत्बात) में जादू है।
४. शैतान अकेले मनुष्य के साथ होता है और दो आदमीयों से वह दूर रहता है।
५. जन्नत तकलीफों से घिरी हुई है और दोजख के गिर्द ख्वाहीशाते नफसानी हैं।
६. मुसलमान वह है जिस की जबान और हाथ से दूसरे मुसलमान सुरक्षित रहें।
७. हदीया (उपहार), बुग्ज (दिल में छुपी नफरत) व दुश्मनी को दूर कर देता है।
८. हिजरत करनेवाला वह है जो उन चीज़ों को छोड़ दे जिनसे अल्लाह तआ़ला ने मना फरमाया है।
९. दानाई (समझदारी/अकलमंदी) मोमिन की गुमशुदा चीज़ है वो जहां उसे पाए वहीं उसे लेने का ज्यादा हकदार है।
१०. अल्लाह जीस से भलाई करना चाहता है उसको दीन की समझ अता फरमा देता है।
११. लोग अपने हाकिमों (शासकों) की जीवन प्रणाली पर होते हैं।
१२. दिलों में उस व्यक्ति की मोहब्बत डाल दी गई जो उनपर एहसान करे और उस व्यक्ति के खिलाफ बुग्ज व दुश्मनी डाल दी गई है जो उनसे बुरा बरताव करें।
१३. तुम उस बात से बचो जिससे उज्रख्वाही करनी पड़े (अर्थात माफी मांगनी पडे)।
१४. आदमी अपने दोस्त के दीन पर चलता है। लिहाजा तुम्हें यह देखना चाहिए की तुम किसे अपना दोस्त बनाते हो।
१५. जो कुछ किसी के लिए पैदा किया गया है वह उसीको मिलकर रहेगा।
१६. तुम पेट भर कर खाने से बचो क्योंकि खुब पेट भरकर खाना आदमी को बीमार कर देता है। तुम भूख से भी बचो क्योंकी यह बुढ़ापा लाती है।
१७. अल्लाह तआ़ला ने जो बीमारी पैदा की है उसके साथ उसकी दवा भी पैदा की है।
१८. परहेज बेहरतरीन इलाज है।
१९. मेदा (Stomach) बिमारी का घर है।
२०. अपने बीमारी का इलाज सदके (दान) के जरिए करो।
२१. सबूत देना उसके ज़िम्मे है जो दावा करें। और कसम वह खाए जो इल्जाम से इन्कार करे।
२२. तुम दुनिया से बेरग्बती इख्तियार करो। अल्लाह तुम्हें दोस्त रखेगा।
२३. जो कुछ लोगों के पास है उससे बेरगबती इख्तियार करो। लोग तुमसे प्यार करने लगेंगे।
२४. दानाई (अकलमंदी) का सरचश्मा (स्त्रोत) अल्लाह तआ़ला का डर है।
२५. करने के लिए दुनिया में भलाई और नेकी तो बहोत हैं, मगर उसके करने वाले कम हैं।
२६. तुम में बेहतर वह है जो ऊंचा मरतबा होते हुवे तवाजों (नम्रता) से पेश आए। जो दौलतमंद होते हुए दौलत से बेरग्बत रहे। जो ताकत के बावजुद दूसरों से इन्साफ बरते और जो इंतेकाम (बदला लेने) पर कादीर (सक्षम) होने के बावजुद दरगुजर (माफ) करे।
२७. चुगलखोर जन्नत में दाखिल ना होगा।
२८. तुम हसद से बचो क्योंकी हसद नेकियों को इस तरह खा जाता है जिस तरह आग लकड़ी को भस्म कर देती है।

जवाहरे हिकमत : मुहम्मद नसरूल्लाह खान खाज़िन मुजद्दिदी शाए शुदा: रोज़नामा इन्किलाब, मुंबई २-९-२००४

८. कामयाबी की शुरूआत ऐसे करें।

- Auto Suggestion पर लाखों लोग अमल करते हैं और उनको नतीजे भी अच्छे मिले हैं। अगर हमारी जिंदगी पूरी तरह सुन्नतों के मुताबिक हो तो खुद बखुद हम से Auto Suggestion पर अमल हो जाता है। यह किस तरह होता है इस बात को हम इस अध्याय (Chapter) में समझने की कोशिश करेंगे।

पहला कदम:

- Auto Suggestion का पहला उसूल है की आप का उद्देष्य और आपका लक्ष्य बिल्कुल स्पष्ट और निश्चित हो।

- हज़रत अबु हूरैरा (रज़ि.) से रवायत है की हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "तुम लोग जब दुआ करों तो यह ना कहो कि ऐ अल्लाह अगर तु चाहे (तु मेरी ज़रूरत पूरी करे)। बल्कि सवाल पर अपने पूख्ता इरादे का इज़्हार करो और अपनी तीव्र इच्छा का इज़्हार (प्रदर्शन) करो। क्योंकि अल्लाह तआ़ला के लिए कोई बात मुश्किल नहीं है।"
(बुखारी उर्दू: २०२३, अल-अदबुल मुफर्रद उर्दू, हदीस ६०७)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "आप अल्लाह तआ़ला से इस यकिन के साथ दुआ करो की वह आपकी दुआ जरूर कुबूल करेगा।"
(बुखारी ६९९५ तिरमिज़ी ३४७९)

- अल्लाह तआ़ला पवित्र कुरआ़न में फरमाता है: "और जब (किसी काम का) पक्का इरादा कर लो तो अल्लाह तआ़ला पर भरोसा रखो। बेशक अल्लाह तआ़ला उस पर भरोसा करने वालों को दोस्त रखता है।"
(सूरह आले इमरान आयत १५९)

- अल्लाह तआ़ला उस बंदे को पसंद फरमाता है जो पक्के इरादे के साथ किसी काम का इरादा करता है। हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया है कि, अल्लाह तआ़ला से पुख्ता इरादे और तीव्र इच्छा (शदीद ख्वाहिश) के साथ दुआ मांगो। आप (स.) ने गैरयकिनी दुआ मांगने से मना फरमाया है।

  यह दोनों रवायतें इस बात को साबीत करती हैं की इस्लाम स्पष्ट उद्देष्य, स्पष्ट लक्ष्य, पक्के यकिन और अपने जायज़ उद्देष्य को हासिल करने के लिए तिव्र इच्छा की तालीम देता है। इसलिए एक सच्चे मुसलमान का कामयाबी हासिल करने का इरादा पक्का हो, मंजील और उद्देष्य स्पष्ट हो, और मन में जायज़ कामयाबी की तीव्र इच्छा के साथ दिन रात अल्लाह तआ़ला से दुआ मांगनी चाहिए।

दूसरा कदम:

- Auto Suggestion का दूसरा कदम है की उद्देष्य के स्पष्ट होने के साथ साथ आप उसको हासिल करने के लिए जो परिश्रम करोगे वह भी निश्चित, स्पष्ट और यकीनी हो।

- हज़रत अनस (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया: اعقل و توکل "अअ्कीलू व तवक्कलू" यानी पहले ऊंट के गले में घंटी बांधो और फिर अल्लाह पर भरोसा करो। (मुस्लिम)

  इसका मतलब यह है कि पहले कोशिश करो (सफर करो या व्यापार करो) और फिर खुदा पर भरोसा करो कि वह तुम्हें दौलत से सम्मानित करेगा। (इस हदीस की तश्रीह हम लेखन नंबर ३ "हमें माल और दौलत किस तरह कमाना चाहिए?" में कर चुके हैं।)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अगर तुम्हारी इच्छा है की तुम किसी गैर के आगे हाथ ना फैलाओ तो व्यापारिक सफर किया करें।"
(तरगीब बा-हवाला तिबरानी)

- हज़रत औफ बिन मालिक (रज़ि.) रिवायत करते हैं की, एक बार दो मुसलमान हज़रत मुहम्मद (स.) के पास किसी विवाद का फैसला कराने के लिए आए। आप (स.) ने एक पक्ष के हित में फैसला सुना दिया। दूसरे व्यक्ति ने उस फैसले से दुखी होकर यह तस्बिह पढ़ी:
حَسْبِیَ اللّٰہُ وَ نِعْمَ الْوَکِیْل "हस-बियल्लाहु व निअ्मल वकील" हज़रत मुहम्मद (स.) ने जब सुना तो उसे नसीहत की के जो बंदा अपने मामलात का ख्याल नहीं रखता अल्लाह तआ़ला उसे मलामत करते हैं। पहले अपने मामलात का पूरा ख्याल रखो और पूरी कोशिश के बाद भी अगर नाकामी हो तब पढ़ो : حَسْبِیَ اللّٰہُ وَ نِعْمَ الْوَکِیْل.
"हस-बियल्लाहु व निअ्मल वकील"। (इसका अर्थ है: अल्लाह तआ़ला ही मेरे लिए काफी है और वह बेहतरीन काम बनाने वाले हैं।)
(अबू दाऊद मुन्तखब अबवाब)

  यानी हाथ पर हात धरे बैठे रहो और अगर कोई नुकसान हो जाए तो कहो की अल्लाह को यही मंजूर था यह सही नहीं है। बल्की अपने मामलात को संवारने सुधारने की पूरी कोशिश करनी चाहिए और उसके बाद अगर नुकसान हो तब सब्र करना चाहिए और अल्लाह पर आइंदा कामयाबी का भरोसा रखना चाहिए। इसी तरह अपनी रोज़ी रोटी कमाने की पूरी कोशिश करनी चाहिए और इस के बाद दौलत हाथ न आए तो सब्र करना चाहिए। मगर कोशिश करना तो ज़रूरी ही है।

  इस विषय की कई हदीसें है जिनमें दौलत हासिल करने के लिए मेहनत और परिश्रम का सुझाव दिया गया है। मज़हबी किताबों में कही लिखा हुआ नहीं है कि सिर्फ इबादत करो और तुम्हारी तकदीर (भाग्य) का पैसा अपने आप तुम्हारे पास आ जाएगा।

  इसलिए इस्लाम हमें तालीम (सीख) देता है कि अपने उद्देष्य को पूरा करने के लिए आपको जिद्दोजहद (संघर्ष) करना ही है। सन्यासी जीवन इस्लामी तालिम (शिक्षा) नहीं है।

तीसरा और चौथा कदम:

- Auto Suggestion के मुताबिक हमें अपना उद्देष्य और अपनी कोशिश साफ तौर पर लिख लेनी चाहिए।

- Auto Suggestion के मुताबिक अपनी लिखित दस्तावीज को सुबह व शाम दौहराना चाहिए।

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "दुआ इबादत का मग्ज (असल) है।"
(तिरमीज़ी, बा-हवाला मुन्तखब अबवाब हदीस ३८२)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "सबसे निकम्मा और असमर्थ वह है जो अपने लिए खुदा से दुआ न मांगे।"
(तरगीब व तरहिब बहवाला तिबरानी, बेहकी, बा-हवाला जादे राह हदीस १२६८)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "तुम में से हर व्यक्ति को अपनी तमाम ज़रूरियात (आवश्यक्ताएं) अपने परवरदिगार से मांगनी चाहिए, यहाँ तक की अगर उसके जुते का तस्मा टूट जाए तो उसे भी खुदा से मांगे।"(तिरमिज़ी, बा-हवाला मुन्तखब अबवाब हदीस ४००)

- नबी करीम (स.) ने फरमाया, "दुआ नफा पहुंचाती है।" उन बलाओं में जो नाजीर हो चुकी और उन बलाओं में भी जो अभी तक नाजिल नहीं हुई है। 'ऐ अल्लाह के बंदे खुब दुआ किया करो'। (मुस्तदरीकः १८१५ अन अब्दुल्ला बिन उमर (रज़ि.))

- नबी करीम (स.) ने फरमाया, "जो शख्स यह चाहता है मुसिबत के वक्त अल्लाह तआला उसकी दुआ कुबूल करे तो उसे चाहे की खुशाली के जमाने में दुआ ज्यादा करें। (तिरमिज़ी ३३८२)

- नबी करीम (स.) ने फरमाया, "दुआ के जरिए बला और मुसिबत से हिफाजत तलब करो। (तिबरानी कबीर १०१६६ अन अब्दुल्ला बिन मसउद (रज़ि.))

ऊपर दी गई हदीसों से जाहिर होता है कीः

हमें हमेशा अल्लाह तआ़ला से दुआ़ मांगते रहना चाहिए। (हर इबादत के बाद) अपनी हर ज़रूरत के लिए जिस में व्यापारीक कामयाबी भी शामिल है, पांचो नमाजों के बाद दुआएं मांगना चाहिए।

इस तरह अपना अमली योजना सिर्फ सुबह व शाम दोहराने (जैसा की Auto Suggestion से जाहिर है) के बजाए एक मुस्लिम इस योजना को दिन में पांच बार अपनी दुआ़ओं के रूप में दोहरा सकता है।

पांचवा कदमः

- Auto Suggestion का पांचवा कदम यह है की आप यह सोचें और नज़रों के सामने रखें की आपने अपना उद्देष्य हासिल करना शुरू कर लिया है। (यानी कामयाब होने के पहले ही आप यह कल्पना करें की आप कामयाब हो रहे हैं।)

- हज़रत जाबिर (रज़ि.) के मुताबिक हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "याद रखों की तुम्हें खुदा से सकारात्मक उम्मीद (अपेक्षा) रखे बगैर मौत नहीं आनी चाहिए।" (मुस्लिम, उर्दु तरर्जुमा जल्द ६ सफहा ४१४)

(इसका मतलब यह है की मौत से पहले तुम्हारे दिल में पक्का यकीन होना चाहिए की खुदा तुमसे खुश होगा, वह तुम्हे माफ कर देगा और तुम कामयाब हो जाओगे।)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अल्लाह तआ़ला फरमाता है की में अपने बंदे के साथ वैसा ही मामला करता हूँ जैसा वह मेरे साथ गुमान (अपेक्षा/Expectation) रखता है।"
(बुखारी, मुस्लिम, बा-हवाला हदीस नबवी (स.) हदीस ५६३ पृ. २१४)

(यानी मैं अपने बंदे से वही बरताव करता हूँ जिसकी वह मुझसे उम्मीद रखता है।)

- कुरआ़न शरीफ में कहा गया हैः "अल्लाह की रहमत से काफिर (अधर्मी लोग) नाउम्मीद (निराश) हुआ करते हैं" (सूरह यूसुफ आयत ८७)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमायाः "अल्लाह तआ़ला से सकारात्मक उम्मीद रखना भी इबादत है।" (जवामी उल कलाम)

ऊपर दी गई हदीस और कुरआ़नी आयात हमें सिखाती हैं की हम अल्लाह तआ़ला के करम (कृपा) से अपने उद्देष्य में १०० फिसद कामयाब होंगे इस दुनिया में भी और मौत के बाद भी। इस तरह कामयाबी से पहले कामयाबी की उम्मीद और यकिन रखना इस्लामी अकिदे/श्रद्धा का एक हिस्सा है।

छटा और सातवाँ कदमः

- छटा और सातवाँ कदम हमें सिखाता हैं कि अपने मनसुबे पर अमल करें और अगर जरूरत पड़े तो उसे तब्दील करें, लैकिन उसे हर हाल में जारी रखें।

- नबी करीम (स.) ने फरमाया, "जो चीज तुम्हें (दुनीया और आखिरत के ऐतबार से) नफा पहुंचाने वाली है उसको कोशिश से हासिल करो और अल्लाह से मदद और तौफिक तलब करो और हिम्मत मत हारो। (मुस्लिम ६६४५, अन अबु हुरैरा (रजि.))

- अल्लाह तआ़ला कुरआ़न करीम में इरशाद फरमाता हैः "फिर जब नमाज हो चुके तो अपनी राह लो और खुदा का फज्ल तलाश करो और खुदा को बहोत याद करते रहो ताकि निज़ात पाओ।"
(सूरह जुमुआ आयत १०)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "مَنْ جَدَّ وَجَد मन जद्द वजद" यानी जिसने कोशिश की वह कामयाब हुआ" (जवामी उल कलाम)

- हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) हज़रत मुहम्मद (स.) से रिवायत करते हैं, आप (स.) ने फरमायाः "बेहतरीन कमाई मज़दूर की कमाई है बशर्ते कि वह अपने मालिक का काम खैर ख्वाही (भला चाहते हुए) और खुलूस (मुहब्बत) से अंजाम दे।"(मस्नद अहमद, बा-हवाला ज़ादे राह हदीस ८५)

- एक बार हज़रत मुहम्मद (स.) ने अपने एक सहाबी (रज़ि.) से मुसाफा किया (हाथ मिलाया) तो पता चला की उनकी हाथ की चमड़ी सख्त है। जब आप (स.) ने उनसे पुछा की इसकि क्या वजह है तो सहाबी (रज़ि.) ने जवाब दिया, "इसकि वजह अपने हाथ से सख्त मेहनत करना है।" हज़रत मुहम्मद (स.) ने उनका हाथ चुमा और तारीफ की। यानी उनका काम (महनत करना) पसंद फरमाया। (अबू दाऊद)

- हज़रत उमर (रज़ि.) के मुताबिक हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जो लोग शहर के बाहर से माल बेचने के लिए लाते हैं उनकि दौलत में बरकत होगी। और जो जख़ीरा अन्दोजी करते हैं वह मलउन (शापित) हैं। (उन पर लानत है) आप (स.) ने फिर फरमायाः "और जो जखीरा अन्दोजी करते है ताकी मुसलमानों को तकलीफ हो तो अल्लाह तआ़ला कि उनपर लानत है और अल्लाह तआ़ला उन्हें कोढ़ की बिमारी और

गरीबी में मुब्तला करेगा।" (इब्ने माजाः २२२६)

- हज़रत कअ्ब बिन उज्रा (रज़ि.) फरमाते हैं की हज़रत मुहम्मद (स.) के पास से एक आदमी का गुजर हुआ। सहाबा (रज़ि.) ने देखा की वह रोज़ी की प्राप्ती में बहोत सक्रीय है और पूरी दिलचस्पी ले रहा है तो सहाबा कराम (रज़ि.) ने हज़रत मुहम्मद (स.) से पूछा, "ऐ अल्लाह के पैग़म्बर (स.)! अगर इसकी दौड़ धूप और दिलचस्पी अल्लाह की राह में होती तो कितना अच्छा होता।" इसपर हुज़ूर (स.) ने फरमायाः "अगर वह अपने छोटे बच्चों के पालन-पोषण के लिए दौड़ धूप कर रहा है तो यह अल्लाह की राह में गिनी जाएगी, और अगर बुढ़े माँ-बाप की देखभाल के लिए कोशिश कर है तो यह भी अल्लाह की राह में ही गिनी जाएगी। और अगर खुद अपने लिए कोशिश कर रहा और उद्देष्य यह है कि लोगों के आगे हाथ फैलाने से बचा रहे तो यह कोशिश भी अल्लाह की राह में गिनी जाएगी। अलबत्ता अगर उसकी यह मेहनत ज्यादा माल हासिल करके लोगों पर बरतरी (वर्चस्व) जताने और लोगों को दिखाने के लिए है तो सारी मेहनत शैतान की राह में गिनी जाएगी।"
(तरगीब बा-हवाला तीबरानी, ज़ादे राह हदीस ८८)

- इस तरह कई हदीसों और धार्मिक शिक्षाओं से हमें सबक (सीख) मिलता है कि सख्त मेहनत व परिश्रम और कामयाबी के लिए जद्दोजहद (संघर्ष) इस्लामी शिक्षाओं का एक हिस्सा है।

अगर हम Auto Suggestion *को संक्षिप्त रुप से दोहराएं तो वह इस प्रकार है:*

१. आपका उद्देष्य बिल्कुल स्पष्ट हो।

२. उद्देष्य को हासिल करने के लिए आप की तरफ से की जाने वाली कोशिशे बिल्कुल स्पष्ट हो।

३. आप अपने उद्देष्य और अमल (कोशिश) को कागज पर लिख लें और सुबह व शाम ऊंची आवाज से पढ़ा करें।

४. अपना अमल और कोशिश शुरू करें इस यकिन के साथ की आप की कामयाबियों का सिलसिला शुरू हो गया है।

५. अपने उद्देष्य, अमल और मुश्किलात का जायज़ा लें और जरूरत हो तो रणनीति में कुछ बदलाव करे।

६. लगातार कोशिश करते रहें।

अगर हम इस्लामी षिक्षाओं को संक्षिप्त रुप से दोहराएं तो वह इस प्रकार हैं:

१. इस्लाम स्पष्ट अल्फाज में और तीव्र इच्छा के साथ दुआ करने की सीख देता है।

२. इस्लाम में सन्यासी जिंदगी को नापसंद किया गया है और सख्त मेहनत और परिश्रम को पसंद किया गया है।

३. हज़रत मुहम्मद (स.) ने हमें अपनी हर जरूरत के लिए ज़्यादा से ज्यादा दुआ मांगने की सलाह दी है।

४. इस्लाम में निराशा को कुफ्र (अल्लाह का इनकार) कहा गया है। और हमेशा पूरयकिन और सकारात्मक सोच रखने की शिक्षा दी गई।

५. इस्लाम हार मानने को नापसंद करता है और लगातार संघर्ष करने की शिक्षा देता है।

इसलिए अगर कोई कुरआ़न और हदीस का ज्ञान हासिल करे और इस्लामी शिक्षाओं के मुताबिक जिंदगी गुज़ारने की कोशिश करे तो Auto Suggestion अपने आप उसकी जिंदगी का हिस्सा बन जाती है। और ऐसा इन्सान जरूर-जरूर दुनिया और आखिरत (परलोक) में कामयाब होता है। (इन्शा अल्लाह)

अगर हम नाकामी से बचने के लिए तमाम फलसफों (Philosophies) और शिक्षाओं का खुलासा बयान करें तो वह निम्नलिखित हो सकता हैः

१. अपने मन में स्पष्ट कर लें की आप क्या चाहते हैं।

२. उसे पाने की योजना बनाइये।

३. अपनी योजना पर अमल करें।

४. अपनी कामयाबी के लिए खुदा पर पूरा भरोसा रखें।

५. हर नमाज के बाद दिल की गहराई से अपनी कामयाबी के लिए दुआ करें और १०० प्रतिशत यकिन रखें की आप कामयाब होंगे।

६. अगर आपको योजना पूरी करने में कुछ कठिनाइयां आएं तो उनका विश्लेषण करें। अपनी योजना के सुधार के लिए माहिर लोगों से मश्वरा (परामर्श) करें और फिर उसको पूरा करना जारी रखें। तब इन्शा अल्लाह आप १०० प्रतिशत कामयाब रहेंगे।

- क्या आप इस बात से निराश हैं कि कई जटिल फलसफों पर गौर करने के बाद हमने बड़े सादा से उसूल आप को बता दिए?

लैकिन आप निराश ना हों और ना ही इन सादा उसूलों को कम कीमत समझीए। क्योंकि यह हर कामयाबी के आज़माए हुए नुस्खे हैं, और सच्चाई कभी पेचीदा (जटिल/उलझे हुए) नहीं होती, बल्की हमेशा सादा और साफ होती है।

▼▼▼▼▼▼▼

दूसरा भाग

बड़ी कम्पनी या संघटन के नियम

Laws related to Management of Company/Organisation

१०. सफल कारोबार के नियम

- अकेले आदमी का कार्यक्षेत्र सीमित होता है। एक बड़ी संघटन, संस्था, या एक बड़ी मज़बूत (Stable) और लाभदायक व्यापारिक कम्पनी कोई एक इंसान अकेले नहीं चला सकता। इसके लिए Team work कि ज़रूरत होती है। इसलिए अगर कोई व्यक्ति अगर बहोत ज्यादा दौलत कमाना चाहता है तो उसे यह जानना जरूरी है कि कैसे एक टिम बनाई जाए, और कैसे उसका नेतृत्व किया जाए?

- बहुत सारे उच्च शिक्षित, बहुत ज़्यादा विद्वान, और योग्य व्यक्ति सिर्फ अपनी प्रशासनिक क्षमताओं के अभाव के कारण व्यापार में कामयाब नहीं हो पाते। वह अकेले ही पूरी जिंदगी परिश्रम करते रहते हैं और बहुत कम रूपया कमा पाते हैं। जबकी अपने यहाँ लोगों को नौकरी देकर और उनसे काम लेकर यही काम वह बड़े पैमाने पर करके बहोत ज्यादा रूपया कमा सकते थे।

- बड़े पैमाने पर दौलत कमाने के माध्यमों में से व्यापार एक बेहतरीन विकल्प (Option) है। कोई व्यक्ति नौकरी से भी अच्छी खासी आमदनी हासिल कर सकता है। लैकिन उसमें आमदनी और आमदनी आने का अंतराल भी सीमित होता है। जब कि व्यापार में आमदनी और तरक्की असीमित होती है। और इसका सिलसिला भी रिटायरमेंट पर खत्म नहीं होता। और ना ही किसी की मौत से व्यापार बंद हो जाता है।

- व्यापार में भी कोई व्यक्ति अपनी मेहनत के मीठे फल उसी वक़्त खा सकता है जब व्यापार बहोत प्रबंधित (organised), ज्ञान, ध्यान, सावधानी, व्यापार के नियम, प्रशासनिक महारत (कौशलता) और धार्मिक नियमों के मुताबिक किया जाए। वरना ना तर्जुबाकारी (अनुभवहीनता) के कारण कोई व्यक्ति अपने माँ-बाप के द्वारा जमे हुए व्यापार को भी खो सकता है और अगर कोई अपने व्यापार के तनाव और टेंशन को झेल न पाया तो जवानी में ही बीमार हो सकता है या उसकी मौत हो सकती है।

- कामयाब कारोबार के उसूल का ज्ञान, व्यापार प्रबंधन (Business Administration) एक विशाल विषय है। उसे समझने के लिए तीन साल के कोर्स की आवश्यक्ता है (जैसे MBA वगैरा)। इसे कुछ पन्नों में बयान करना मुश्किल है। इसके बावजुद हम इसके कुछ बुनियादी और महत्वपूर्ण पहलुओं (Aspects) को उजागर करेंगे।

- आसानी के लिए हम इस विषय को तीन भागों में विभाजित करेंगे।

१. पहले भाग में हम प्रबंधन के नियमों को समझने की कोशिश करेंगे।

   यानी एक कम्पनी की हैसियत से उसके क्या उसूल होने चाहिएं?

२. दुसरे भाग में उन व्यस्थापन तकनीकों को समझने की कोशिश करेंगे जिन्हें एक मालिक या मेनेजर को अपने मातेहतों (Subordinates) से मामलात करते वक़्त इख्तियार करना ज़रूरी है।

३. इस विषय के तीसरे भाग में हम यह जानने की कोशिश करेंगे कि एक लीडर या एक योग्य (सक्षम) प्रबंधक (Administrator) बनने के लिए क्या-क्या योग्यताएं हमें अपने अंदर पैदा करनी चाहिएं?

▼▼▼▼▼▼▼

११. कम्पनी के कारोबारी उसूल क्या होने चाहिएं?

- किसी व्यक्ति के लिए कारोबार में बहोत ज्यादा कामयाब होने के लिए एक स्पष्ट उद्देश्य का होना बहोत ज़रूरी है। तो यह बात जिस तरह व्यक्तिगत स्तर पर ज़रूरी है, इसी तरह संस्था प्रबंधन के लिए भी ज़रूरी है। कोई संस्था (कम्पनी) जो भी उद्देश्य हासिल करना चाहती है, उसका उल्लेख विषेश रूप से और स्पष्ट होना चाहिए ताकि संस्था का हर मेंबर उसे जान ले। इसके बाद ही एक प्रभावी और इज्तेमाइ (सामूहिक) कोशिश उस उद्देश्य को हासिल करने में की जा सकती है। ताकि गैर ज़रूरी कामों और लक्ष्यों में समय और माल नष्ट न हो।

- स्पष्ट उद्देश्य की बड़ी अहमियत होती है। लैकिन यह सवाल मुश्किल है की कोई कम्पनी किस उद्देश्य का इंतेखाब (चयन) करेगी। इस सवाल का साफ और स्पष्ट जवाब देने की बजाए हम यह देखेंगे की किस बड़े संस्था ने किस उसूल और उद्देश्य को अपनाया है जिसकी वजह से वह अपने मैदान में लीड़र बन गया। हम IBM कम्पनी का नमुना सामने रखेंगे और यह तहकीक (शोध) करेंगे की यह कम्पनी कम्प्युटर और सॉफ्टवेअर की सबसे बड़ी कम्पनी कैसे बन गई।

IBM ***कंपनी की कार्यप्रणाली:***

- थॉमस.जे.वॉटसन सीनियर ने सन १९१४ में IBM कम्पनी स्थापित की। शुरूआत में उन्होंने 'तराजू' और 'टाइम क्लॉक' बनाई। और उनका नाम उस समय 'कॉम्प्युटिंग टॅब्यूलेटिंग ॲन्ड रेकॉर्डिंग' कंपनी था। उस वक़्त उनके पास लगभग २०० कर्मचारी थे। आज उनके पास ४००००० कर्मचारी हैं। उनका कारोबार ४०० अरब डॉलर का है। और उनके कारोबार की शाखें और कार्यालय दुनिया के हर देश में हैं।

- इनके कारोबार की बेमिसाल कामयाबी का राज उनके अनोखे उसुलों में है जो निम्नलिखित हैं:

- कम्पनी के हर आदमी को सम्मान (Respect) देना चाहिए।

- हर ग्राहक को बेहतरीन सेवा (Service) देनी चाहिए।

- बेहतरीन और उत्तम कारकिर्दगी (Performance) और गुणवत्ता (Quality) की कोशिश जारी रखनी चाहिए।

पहला उसूल:

कर्मचारी हर कम्पनी की बेहतरीन संपत्ति होते हैं। कर्मचारी अपने मालिक (Boss) से जो गालीयाँ या डाँट खाते हैं उसका बदला (समाधान) रूपयों से नहीं दिया जा सकता है। इसलिए अच्छे कर्मचारीओं को बाकि रखने या परवान चढ़ाने के लिए कम्पनी के उसूल और रणनीतियां (Policies), मानवता और आदर व सम्मान पर आधारित होनी चाहिएं।

IBM, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों (Universities) से बेहतरीन छात्रों का चयन करती है। उसके बाद अपनी कम्पनी में उन्हें अपने कारोबार के मुताबिक ज़रूरी तकनीकी प्रशिक्षण (Technical Training) देती है। और तकनीकी प्रशिक्षण के साथ वह उन्हें अपनी बेहतरीन पॉलिसी और उसूल भी सिखाती है। IBM कम्पनी अपने उसुल सिर्फ कक्षा (Class Room) ही में नहीं सिखाती बल्कि कम्पनी के हर व्यक्ति को इसका अमली मश्क (अभ्यास) भी करवायी जाती है। मिसाल के तौर पर उनके यहाँ ऑफिसरों (Executives) के लिए विशेष खाने की मेज़ (Dining Table), अलग शौचालय और कार पार्किंग के लिए विशेष जगह नहीं होती बल्कि हर व्यक्ति के लिए समान व्यवहार और आदर होता है।

दूसरा उसूल:

IBM कम्पनी की कामयाबी का दुसरा राज इनकी बेहतरीन सेवा नीति (Service Policy) है। इस नीति (Policy) ने IBM को महान सफलता प्रदान किया है। रोज मर्राह की जिंदगी में भी हम देखते हैं की वह कम्पनीयां जो दरम्यानी श्रेणी के उत्पाद (Products) बनाती हैं लैकिन बेहतर सेवा (Service) देती हैं वह उन कम्पनीयों के मुकाबले में ज्यादा बेहतर व्यापार करती हैं जो बेहतर श्रेणी का सामान तैयार करती हैं लैकिन बाद में ग्राहकों को बेहतर सेवा (Service) नहीं दे पाती।

मिसाल के तौर पर हिंदुस्तान में तकरिबन १२ ऑटो मोबाइल कम्पनियां हैं। उनमें से बहुत सी कम्पनियां अपने मशहूर ब्रांड के साथ साथ विदेशों की कम्पनियों से साझेदारी के साथ भी व्यापार करती हैं। लैकिन सन २००७ में ११ कम्पनियां मिलकर भी एक १२ वी कम्पनी के ४० फिसद व्यापार की बराबर भी नहीं कर सकीं और यह १२ वी कम्पनी है मारूती उद्योग। और इस महान सफलता की एक वजह हिंदुस्तान भर में फेला हुआ उनकी सेवाओं (Service Station) का विशाल नेटवर्क है।

इन दिनों मोबाईल एक आम इस्तेमाल की चीज़ है। बल्कि हालत तो यह है कि एक आम हातगाड़ी खिंचने वाला और एक रिक्शा ड्रायवर भी अपने पास मोबाईल फोन रखता है। बहोत से लोग नोकिया (Nokia) का हैन्डसेट इस्तेमाल करते हैं। इसकी वजह यह नहीं हैं की Nokia के हैन्डसेट Panasonic, Samsung, Siemens, Sony Ericsson वगैरा से ज्यादा Standard होते हैं। बल्कि इसकी वजह यह है कि नोकिया के स्पेअर पार्टस आसानी से हर सड़क के कोर्नर पर उपलब्ध हो जाते हैं।

इसलिए किसी व्यापार की कामयाबी के राजों में से एक "बेहतर सेवा नीति" (Better Service Policy) का राज़ है।

तिसरा उसूल:

अग्रेंजी की एक कहावत है "Only Fittest will Survive" यानी जंगल में सिर्फ वही जीएगा जो सबसे तंदुरूस्त और ताकतवर होगा। लैकिन यह कहावत सिर्फ जानवरों की जिंदगी पर ही लागू नहीं होती बल्कि Concrete Jungle यानी मानव समाज पर भी लागू होती हैं। गुज़रते समय के साथ सिर्फ वह कम्पनियां ही जिंदा रह पाती हैं और तरक्की करती हैं जो लगातार उत्तम श्रेणी के लिए कोशिश करती रहती हैं।

(बाकी पेज ४४ पर)

१२. इस्लामी शिक्षाओं की रौशनी में कम्पनी के उसूल क्या होने चाहिएं?

हमने पिछले अध्याय (Chapter) में पढ़ा की किस तरह I.B.M कम्पनी ने तीन उसूलों पर अमल करके बहुत ज़्यादा तरक्की हासिल की और अपने कार्यक्षेत्र (Field) में मार्केट लीडर बन गई। तो क्या यह तीन उसूल कोई अजूबा या नई चीज़ हैं?

नहीं!

बल्की यह तो इस्लाम की बुनियादी शिक्षाओं में से हैं। अलबत्ता लोगों ने ही इसे भुला दिया है। आइयें हम इन्हें फिर ताज़ा करते हैं।

पहला उसूल:

अपने मातहतों** (Subordinates) **के साथ सम्मानजनक बरताव:

- हज़रत काब बिन मालिक (रज़ि.) कहते हैं मैंने हज़रत मुहम्मद (स.) को अपने देहान्त से पांच दिन पहले यह फरमाते सुनाः "अपने गुलामों (नौकरों) के बारे में अल्लाह से डरते रहना, अल्लाह से डरते रहना, उनको पेट भर खाना देना, पेहनने के लिए कपड़े देना और उनसे नरमी से बात करना।" (तरगीब व तरहीब बहवाला तीबरानी, जादे राह, पृ. १११)
- हज़रत अबु बक्र सिदद्दीक (रज़ि.) कहते हैं, हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया "वह व्यक्ति जन्नत में न जाएगा जो अपने सत्ता व अधिकार को गलत तरीका से इस्तेमाल करता हो।" (नोकरों और गुलामों पर सख्ती करता हो) लोगों ने कहा,"ऐ अल्लाह के पैगम्बर!(स.) क्या आप (स.) ने हमें नहीं बताया था की दुसरी उम्म्तों के मुकाबलों में इस उम्मत में यतीम (अनार्थ) और गुलाम (दास) ज़्यादा होंगे।" आप (स.) ने फरमाया "हां! मैने तुम्हें यह बात बताई है फिर भी तुम लोग उन (यतीमों और गुलामों) के साथ वैसा ही बरताव करो जैसा अपनी औलाद के साथ करते हो, उनको वह खाना खिलाओ जो तुम खाते हो," आप (स.) ने अधिक फरमाया, "तुम्हारा गुलाम तुम्हारी जगह काम करता है इससे अच्छा बर्ताव करो, और अगर वह नमाज़ पढ़ता हो तो वह तुम्हारे अच्छे बरताव का ज़्यादा हक़दार है।"
(तरगीब व तरहीब, अहमद व इब्ने माजा व तिरमिजी, बहवाला जादे राह हदीस ७४ पृ.६०)

इस हदीस में गुलामों का जिक्र है। इस ज़माने में गुलाम नहीं रहे इसलिए अब गुलामों की जगह जो लोग कर्मचारी के तौर पर काम करते हैं, यह हुक्म उनके लिए भी होगा।

- हज़रत अबु हुरैरा (रज़ि.) से रवायत है कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया, "तुम्हारे गुलामों का तुमपर यह हक है कि उन्हे खाना पानी दो और कपड़े पहनाओ, और उनपर काम का उतना ही बोझ ड़ालो जितना कि वह उठा सकते हों। और अगर भारी काम उनसे करवाओ तो तुम उनकी मदद करो, और ऐ अल्लाह के बंदो! उन लोगों को जो तुम्हारी तरह अल्लाह की मख्लुक (प्राणी) और तुम्हारी तरह इन्सान हैं अज़ाब और तकलीफ में मत मुब्तला करो।"
(इब्ने माजा, बहवाला जादे राह, हदीस ७४ पृ. ६०)
- हज़रत उमर बिन हारिस (रज़ि.) से रवायत है कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया, "तुम अपने नौकरों से जितनी हल्की खिदमत लोगे उतना ही अजर व सवाब (पुण्य) तुम्हारे आमाल नामे (कार्य-पत्र) में लिखा जाएगा।"
(तरगीब व तरहीब बहवाला अबू याला, बहवाला जादे राह, हदीस ७६, पृ. ६१)
- हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) बिन उमरू बिन आस के मुताबिक हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अदल (इन्साफ) करनेवाले नुर के मम्बर (कुर्सी) पर होंगे। वह जो अपनी हुकुमत में, अपने घरो में, और जो काम उनके सुपुर्द हुआ हो उसमें अदल (इन्साफ) करें।"
(मुस्लिम, बा-हवाला ज़ादे सफर, पृ. ३४६)
- अदल (इन्साफ) करने का मतलब है कि बंदा अपने लोगों (अपने मातहतों) से इन्साफ करे, अपने परिवार से नेक बर्ताव करें और अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा करें। इसी तरह मालिक अपने नौकरों का ज़िम्मेदार होता है। उसे भी अपने नौकरों (कर्मचारियों) से इन्साफ करना चाहिए।

मातहतों** (Subordinates) **से नर्मी का बर्ताव करो:

- अल्लाह तआला पवित्र क़ुरआन में फरमाता हैः "जो आसुदगी (मालदारी) और तंगी (गरीबी) में (अपना माल खुदा की राह में) खर्च करते हैं और गुस्से को रोकते और लोगों के कुसूर (गलतियों को) माफ करते हैं और खुदा (ऐसे) नेको कारों (नेक काम करने वालों) को दोस्त रखता है" (सुरहे आल इमरान आयत १३४)
- "और जो लोग तुम में फज़्ल व वसअत वाले (मालदार) हैं, वह इस बात की कसम ना खांऐ कि रिश्तेदारों और मोहताजों और वतन छोड़ जाने वालों को कुछ खर्च पात नहीं देंगे। उनको चाहिए कि माफ कर दें और दरगुजर करें। क्या तुम पसंद नहीं करते कि खुदा तुमको बख्श दे? और खुदा तो बख्शनेवाला मेहरबान है।" (सूरह नूर आयत २२)
- हज़रत जाबीर (रज़ि.) कहते हैं, "हज़रत मुहम्मद (स.) सफर में काफिले के पीछे रहते थे, कमज़ोरों को चलाते और उन्हें अपनी सवारी पर पीछे बैठा लेते और उनके लिए दुआ फरमाते।"
(अबू दाऊद, बहवाला जादे राह, हदीस ३४०)
- हज़रत आयशा (रज़ि.) के मुताबिक हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अल्लाह नरम दिल (दयालू) है। और वह हर मामले में नरमी पसंद फरमाता है।" (मुस्लिम, बुखारी, जिल्द ७, हदीस २३६)

अपने मातहतों और कर्मचारियों से मुहब्बत करो:

- हज़रत आयशा (रज़ि.) से रिवायत है हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अल्लाह तआला जब किसी हाकिम (शासक) के साथ भलाई का इरादा करता है तो उसको अच्छा वज़ीर देता है, कि अगर वह भूल जाए तो वज़ीर उसको याद दिलाए, और अगर याद हो तो उसकी मदद करे।

और जब किसी हाकिम (शासक) के साथ बुराई का इरादा करता है तो उसको बुरा वज़ीर देता है कि अगर वह भूल जाए तो याद न दिलाए, अगर याद हो तो उसकी मदद ना करे।"(अबू दाऊद, जादे सफर, पृ. ३५६)

- हज़रत औफ बिन मालिक (रज़ि.) के मुताबिक हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "तुम्हारे दरमियान बेहतरीन रहनुमा (अमीर/लीडर) वह है जो तुम से मुहब्बत करते हैं और तुम भी उनसे मुहब्बत करते हो। वह तुम्हारे लिए दुआ करते हैं और तुम भी उनके लिए दुआ करते हो। और तुम्हारे दरमियान बदतरीन (बहोत बूरा) रहनुमा (लीडर) वह हैं जो अपने मातहतों को बुरा भला कहते हैं और मातेहत भी उनको बुरा भला कहते हैं। रहनुमा अपने मातहतो की बुराई चाहते और मातेहत रहेनुमा की बुराई चाहते हैं।"(मुस्लिम, बहवाला जादे सफर, हदीस ५७१, पृ. ३५०)

("अगर आप लोगों को मुलाजिम (नौकर) रखें तो अपनी योग्ता उनके स्वभाव से पता चलाएं। अगर वह आपसे मुहब्बत करते हैं तो आप अच्छे रहनुमा है। अगर वह आपसे नफरत करते हैं तो आप अच्छे रहनुमा (लीडर) नहीं है और आपको एक बेहतर रहनुमा (लीडर) बनना चाहीए।")

- हज़रत जरीर बिन अब्दुल्ला (रज़ि.) से रिवायत है के हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जो लोगों पर रहम (दया) नहीं करता, अल्लाह तआ़ला भी उसपर रहम नहीं फरमाता।"

(बुखारी, मुस्लिम, बहवाला जादे सफर, पृ. १५१)

तो नौकरों और कर्मचारियों (Staff or Subordinates) से इज्ज़त, मुहब्बत और नरमी से पेश आना इस्लाम की बुनियादी शिक्षाओं में से है।

दूसरा उसूल

ग्राहक को बेहतरीन सेवा दो:

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "तुम ऐसा माल बेचकर मुनाफा (लाभ) नहीं कमा सकते जिस माल की तुम ज़मानत (Guarantee) नहीं दे सकते।"(इब्ने माजाः २२६५)

इसलिए हम बगैर ग्यारंटी का घटिया माल नहीं बेच सकते। और न यह कह सकते हैं की "चूंकि हम चीन (China) से ग्यारंटी नहीं ले सकते और यहां के सप्लायर से भी ग्यारंटी नहीं मिलती इसलिए हम आपको इस माल की ग्यारंटी नहीं दे सकते।" यह गलत बात है।

हमें सिर्फ ग्यारंटी वाला माल ही बेचना चाहिए। और बेहतरीन सेवा (Service) देनी चाहिए। और यही व्यापार का इस्लामी तरीक़ा है।

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "ग्राहक को धोखा देने के लिए अगर एक व्यापारी अपने जानवर का कुछ दिन दूध ना दोहे और फिर उसे बेचे और बाद में ग्राहक को पता चले कि जानवर पहले जैसा दूध नहीं देता है, तो तीन दिन में वह ग्राहक उस जानवर को वापस देने का हक़ रखता है। और व्यापारी का फर्ज़ है कि, वह उस जानवर को वापस ले। लैकिन ग्राहक को भी चाहिए कि वह इस्तेमाल किए हुए दूध की कीमत अदा करे।" (मुस्लिम, इब्ने माजा, जिल्द २, पेज २१)

- हज़रत आएशा (रज़ि.) ने फरमाया, "एक व्यक्ति ने एक गुलाम (दास) खरीदा और उससे काम लिया। लैकिन उसे पता चला की उस गुलाम (दास) में कोई ऐब (दोष) है, और उसे उसके मालिक को लौटा दिया। मालिक ने इस मामले की हज़रत मुहम्मद (स.) से शिकायत की (यानी खरीदने और काम लेने के बाद वह ग्राहक उस गुलाम (दास) को कैसे लौटा सकता है।) हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "तुम्हें हक है कि गुलाम (दास) ने जो वहां काम किया है उसके पैसे वसूल करो, लैकिन अगर ग्राहक ने तीन दिन के अंदर उसे लौटा दिया तो तुम्हें उसे वापस लेना ही होगा। क्योंकी वह गुलाम तुम्हारे वादे के मुताबिक नहीं है।"

(इब्ने माजा, जिल्द २, पेज २२-२३)

- हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) कहते हैं की "हज़रत मुहम्मद (स.) ने हमें हिदायत फरमायी की जब माल तौलें या नापें तो असल वजन या नाप से थोडा सा ज़्यादा दें।"(इब्ने माजा हदीस २३००)

- हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) ने फरमाया, "रसूल अल्लाह (स.) ने हमें व्यापार में धोखा देने से मना फरमाया है और नकली, घटिया (दूषित) और खराब माल बेचने से भी मना फरमाया है।" (इब्ने माजाः २२५०)

- ग्राहक को वादे से कम माल देना 'ततफीफ' कहलाता है। यह ऐसा गुनाहे अजीम (महा पाप) है कि मदायन के इलाके पर आग की बारीश हुई जहाँ 'ततफीफ' का जुर्म होता था। (ततफीफ के बारे में अधिक जानकारी के लिए आप किताब "Law of Success for both the Worlds" के पाठ नंबर २६ का अध्ययन करें।)

ऊपर दी गई हदीसों से ज़ाहीर हैं की हम जो माल बेचें उसकी ग्यारंटी लें। हमारा माल और हमारी सेवा अपने वादे से ज़्यादा होनी चाहीए, और अगर ग्राहक संतुष्ट नहीं है तो हमें वह माल निश्चित मुद्दत में वापस भी ले लेना चाहिए। पहले यह Guarantee Period तीन दिन हुआ करता था, लैकिन आज कल माल बेचते हुवे गारंटी की मुद्दत एक साल या ज़्यादा दी जाती है। इस Period में हमारा धार्मिक कर्तव्य है कि ग्राहक पूरी तरह संतुष्ट रहें, वरना हमें अपना माल और सेवा वापस लेनी चाहिए। और ग्राहक को उसकी रकम वापस कर देनी चाहिए।

तीसरा उसूल

बेहतरीन गुणवत्ता (Quality) के लिए कोशिश करना:

- हज़रत शदाद बिन औस (रज़ि.) कहते हैं की हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अल्लाह तआ़ला ने हर काम को अच्छे तरीके पर करने का हुक्म दिया है।"

(मुस्लिम, बहवाला जादे सफर ३४०, हदीस नबवी, हदीस नंबर ३६५)

इस हदीस और ईश्वरीय आदेश के मुताबिक हमें हर काम बेहतरीन तरीके से करने की कोशिश करना चाहिए, और यह कोशिश व्यापार, नोकरी, इबादत और जिंदगी के हर श्रेत्र में होनी चाहिए। समझाने के लिए इस हदीस में और फरमाया गया है कि अगर तुम किसीको (अदालत में मुकदमे के बाद) सज़ा दो तो सही तरीके और सहूलत से दो। यानी मुज़रिम को सज़ा दो मगर मानवता से और बगैर अजीयत (तकलीफ) के। हदीस शरीफ में और कहा गया है कि जानवर को ज़बह करते वक़्त अपना चाकु तेज करलो ताकी जानवर को तकलीफ न हो।

जब जानवर को ज़बह करते हुए भी हमें अच्छी कारकिरदगी का प्रदर्शन करने के लिए कहा गया है तो फिर हम रोज मर्राह के कामों में, व्यापार में

और अपनी आमदनी में लापरवाही कैसे बरत सकते हैं।

- अल्लाह तआ़ला कुरआन में फरमाता है:

"ऐ ईमानवालों! इस्लाम में पूरे पूरे दाखिल हो जाओ।"

(सूरह बक़रा, आयत २०८)

जो ईमान लाता है वह तो इस्लाम में दाखिल हो ही जाता है। फिर पुरी तरह इस्लाम में दाखील होने का क्या मतलब है?

इसका मतलब है कि आधे अधूरे मुसलमान मत बनो बल्कि पूरी तरह से मुसलमान बनो।

- हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) हज़रत मुहम्मद (स.) से रिवायत करते हैं की आप (स.) ने फरमायाः "अगर कयामत आ जाए और किसी के पास पेड़ की कलम हो और उसके पास इतना वक्त हो कि धरती में गाढ़ सकता है तो गाढ़ दे।"

(बैहकी, इरशादात नबवी की रौशनी में आदाब मआशरत (अलअदबुल मफरत), हदीस ४७६)

- एक हदीस इस तरह है:

اِعْمَلْ لِدُنْيَاکَ، کَاَنَّکَ تَعِيْشُ اَبَدًا، وَ اَعْمَلْ لِاٰ خِرَتِکَ کَاَنَّکَ تَمُوْتُ غَدًا.

(इब्ने कतीबा, गरीबुल हदीस)

अर्थात अपनी दुनिया की प्राप्ती के लिए इस तरह अमल किजीए कि जैसे आपको हमेशा ज़िंदा रहेना है। और अपनी आखिरत की प्राप्ती के लिए इस तरह अमल किजीए की जैसे आप को कल मर जाना है।

- हज़रत अब्दुल्ला बिन उमरू बिन आस (रज़ि.) कहते हैं की, हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "यह दीन (इस्लाम धर्म) मज़बुत है इसमें तरक्की अख्तियार करो और अपने रब की इबादत को बुरा ना समझो। बेशक वह इंसान जो थककर सफर से इन्कार कर देता है, ना उसने सफर को पूरा किया और ना ही अपनी सवारी का ख्याल किया। उस इन्सान जैसा अमल कर जो ख्याल करता है कि वह कभी नहीं मरेगा और उस इन्सान की तरह सावधानी कर जो खयाल करता है कि कल मर जाएगा।" (बेहकी, सनन ५४, जईफ हदीस)

ऊपर बयान की गई दोनों हदीसों को उलमा (इस्लामी विद्वानों) ने रावियों की वजह से कमज़ोर करार दिया है। मगर सूरह बक़रा आयत २०८ और उपर बयान की गई कयामत के आने के यकीन के बावजूद पौधा लगाने वाली हदीस से हमें यह सबक मिलता हैं की चाहे दुनियावी मामलात हो या मजहबी, हर जगह हमें परिपूर्ण (Perfect) होना चाहिए।

- इसलिए हर मुस्लिम का यह धार्मिक कर्तव्य है कि जिंदगी के हर क्षेत्र में जो भी काम करे बेहतरीन तरीके से करे।

- ऊपर दी गई रिवायत से हमें यह भी पता चला कि IBM कम्पनी की महान सफलता का राज़ इस्लामी उसूलों पर अमल करना है। और जो व्यक्ति भी इन उसूलों पर अमल करेगा इन्शा अल्लाह वह भी उसी तरह महान कामयाबी हासिल करेगा।

▼▼▼▼▼▼▼

(पेज ४१ से आगे... कम्पनी के कारोबारी उसूल ...)

उत्तमता गुणवत्ता में, उत्तमता कम किमत सामान (Product) तैयार करने और तकनीक में, उत्तमता सेवा (Service) में, उत्तमता बेहतर बिक्री की तकनीकों में वगैरा वगैरा। और उत्तमता के इन मेअ़यारात (Standards) को पाने की शुरूआत कर्मचारिओं की भर्ती से होती है। उन कर्मचारीओं को प्रशिक्षण इस तरह दिया जाता है कि वह बेहतरीन गुणवत्ता को अपना उद्देश्य बना लें और कम्पनी के माहौल और कल्चर को इस तरह ड़िझाईन किया जाता है कि कम्पनी का हर व्यक्ति जानने लगे कि Nobody owns the job यानी किसी की नौकरी पक्की नहीं है या कम्पनी में अहोदे (पद) और माली फायदे सिर्फ वरिष्ठता (Seniority) के बल पर हासिल नहीं किए जा सकते बल्कि सिर्फ सख्त और सही मेहनत के द्वारा ही अपनी नौकरी बचाई जा सकती है और औहदों (पदों) में तरक्की हासिल की जा सकती है।

IBM और दिगर सैकड़ों कम्पनियां, कम्पनी के हर व्यक्ति का सम्मान और ग्राहकों को बेहतरीन सेवाओं की उपलब्धता और उत्तमता के लिए लगातार परिश्रम के इन उसूलों पर अमल करके महान सफलताएं हासिल कर चूकी हैं। यही उसूल आप को भी तरक्की के शिखर पर पहुंचा सकते हैं।

अधिक जानकारी के लिए पढ़ीए Buck Rodgers की लिखी हुई अंग्रेजी किताब "The IBM Way" जो कि "USB" पब्लिशर्स से प्रकाशित हुई है।

▼▼▼▼▼▼▼

(पेज ४६ से आगे... कर्मचारिओं के लिए इस्लामी कानून)

तो गलत है।

मज़दूर से कितना काम लेना चाहीए:

- हज़रत याहीया (र.अ.) के मुताबिक हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया "गुलामों से उनकी ताकत से ज्यादा काम मत लो। (मोअत्ता इमाम मालिक)

यह एक कानुन है। इसे इस तरह लागू करें:

अ- काम का प्रकारः- यानी मुलाजिम से वही काम लो जो वह कर सकता है। (खतरनाक और मुश्कील काम ना लो)

ब- काम कि मात्राः- यानी इन्सान जितना काम आसानी से कर सकता है बस उतना ही काम लो।

क- काम का समयः- इन्सानी खून ना चूसो। काम के औकात भी सहुलत वाले हों, मुलाजिम पर बोझ ना हों।

मिसाल के तौर पर भारी काम जो एक इन्सान एक दिन में सिर्फ ६ घंटे तक कर सकता है। तब अगर मज़दूर को ऐसा काम दिया जाए तो सिर्फ ६ घंटे तक उससे यह काम लेना चाहिए और उसे पूरी आठ घंटे की मज़दूरी देनी चाहिए। आजकल लोग छोटे बच्चों से मज़दूरी कराते हैं। और उनसे १२ घंटे काम लेते है। यह एक गैर कानुनी काम है और धार्मिक तौर पर गुनाह है।

१२. कर्मचारिओं (Workers) के लिए इस्लामी कानून

परिश्रम और नौकरी का महत्व:

- इस्लाम में हाथ से काम करना कोई अपमान की निशानी नहीं है। बल्की इसकी भी इतनी ही इज़्ज़त है जितनी किसी और व्यवसाय की है। निम्नलिखित तथ्यों से इस नज़रियें की पुष्टि होती है।

- हज़रत मुसा (अ.स.) ने हज़रत शोएब (अ.स.) के यहां आठ साल तक जानवरों की देखभाल करने की नौकरी की थी।
(मुस्नद अहमद, हज़रत खुत्बा बिन हजरा रावी हैं)

- हज़रत उस्मान (रज़ि.) फरमाते हैं कि हलाल रोज़ी हासिल करने के लिए परिश्रम करना किसी नेक बादशाह के नेतृत्व में एक बरस तक अल्लाह की राह में लड़ाई करने से बेहतर है।(इब्ने असाकर)

- हज़रत काब (रज़ि.) हज़रत मुहम्मद (स.) से रिवायत करते हैं कि "अपने बच्चों, अपने माता पिता और खुद की रोज़ी के लिए परिश्रम करना इतना ही पवित्र है जितना अल्लाह की राह में लड़ना।" (तिबरानी)

- हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) कहते हैं की, हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया: "हर नबी ने बकरियां चराई हैं और मैं भी मक्का के शहरियों की बकरियों की देखभाल चंद क़िरात (अरब का सिक्का) के बदले में करता था।" (बुखारी, इब्ने माजा)

- हज़रत हकिम (रज़ि.) बिन हज़ाम कहते हैं की हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "बेहतरीन हलाल रोज़ी वह हैं जिसके लिए आप चलते हैं और अपने हाथ से काम करते हैं और ऐसा करते हुए आप पसीना बहाते हैं।"
(दैलमी)

  इसलिए मज़दुर होने में और हाथ से काम करने में कोई अपमान नहीं है। बल्कि यह रोज़ी हासिल करने का सबसे ज्यादा सम्मानजनक माध्यम है।

कर्मचारी (Worker) ***कैसा होना चाहिए?***

- कुरआन शरीफ की एक आयात का अर्थ है कि हज़रत शोएब (अ.स.) की बेटी ने कहा "अब्बा! आप उन्हें (हज़रत मुसा (अ.स.) को) नौकर रख लीजिए, क्योंकि बेहतर नौकर जो आप रखें वह है (जो) ताकतवर और अमानतदार (ईमानदार) हो।" (सूरह कसस आयत २६)

  इस आयत से ज़ाहीर होता है के नौकर को ताकतवर और ईमानदार होना चाहिए। ताकि वह अपना कर्तव्य सही तरह अदा करे, और मालिक के जायदाद की अच्छी तरह देखभाल करे।

मालिक का महत्व (Importance of Employer):

१. हज़रत शोएब (अ.स.), हज़रत मुसा (अ.स.) के आठ साल तक मालिक थे। (यानी मालिक होना भी पैगंबर की सुन्नत है।)

२. हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया: "انّ الله محب العبد المومن المحرف " अल्लाह तआ़ला उस बंदे से मुहब्बत करता है जो व्यापार करना जानता है और हुनरमंद (कुशल) है और उन खूबियों (हुनर) पर अमल करता है। (तिबरानी)

- अल्लाह तआ़ला कुरआन में फरमाता है, "क्या यह लोग (मुश्रिकीन) तुम्हारे पालनहार की रहमत (कृपा) को बांटते हैं? (नहीं) बल्कि हमने उनमें उनकी रोज़ी को दुनिया की जिंदगी में तकसीम (विभाजित) कर दिया और एक दूसरे पर दर्जे बुलंद किए ताकी एक दूसरे से खिदमत लें।" (यानी इस दुनिया में जो मालिक है या जो नौकर है यह दोनों हालतें अल्लाह तआ़ला की बनाई हैं। कोई व्यक्ति खुद अपने से मालिक या नौकर नहीं होता है।) (सूरह अल ज़ुखरफ ३१ और ३२)

  इस लिए मालिक (आजिर) को याद रखना चाहिए कि वह अल्लाह तआ़ला ही है जिसने उसे मालिक बनाया हैं और उसे ईश्वरीय आदेशों के अनुसार कर्मचारियों से बरताव करना चाहिए।

मालिक (Employer) ***की जिम्मेदारियां:***

- हज़रत शोएब (अ.स.) ने हज़रत मुसा (अ.स.) से फरमाया "और में तुम पर तकलीफ ड़ालना नहीं चाहता, तुम मुझे इन्शा अल्लाह नेक लोगों में पाओगे।" (सूरह कसस आयत २७)

- नबी करीम (स.) ने फरमाया तुम अपनी औलाद की तरह मातेहतो (नोकर चाकर) और यतिमों के साथ अच्छा सुलूख करो और जो तुम खाते हो उनको भी खिलाओ। (इब्ने माजा : ३६९१, अन अबिर बकर (रजि.))

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने मक्का के मालदार श्रेणी से जिनके पास गुलाम (दास) थें, मुखातिब होकर फरमाया। "यह गुलाम तुम्हारे भाई हैं, जिन्हें अल्लाह ने तुम्हारा मातहत बनाया है। अल्लाह ने एक भाई को अगर दुसरे का मातहत बनाया है तो मालिक को अपने भाई (मुलाजीम या गुलाम) के साथ बेहतरीन बरताव करना चाहिए। उन्हें भी वही खाना देना चाहिए जो वह खुद खाता है। उन्हें भी उसी प्रकार के कपड़े देने चाहिए जो वह खुद पहनता है। उनपर वह काम ना लादे जो उनके लिए मुश्किल हो और अगर वह ऐसा सख्त काम करें, तो उसे उनकी मदद करनी चाहिए।" (बुखारी, मुस्लिम (र.अ.), अबू दाऊद, तिरमिज़ी)

- हज़रत मारूर (रज़ि.) कहते हैं की हज़रत मुहम्मद (स.) के सहाबा कराम (साथियों) ने इस कानुन पर पूरा अमल किया। इतिहास इसका साक्षी है।

  मिसाल के तौर पर हज़रत अबू जर गिफ़ारी (रज़ि.) ने अपने गुलामों का वही जीवन स्तर बरकरार रखा जो खुद उनका था। (बुखारी)

- हज़रत अनस (रज़ि.) के माता-पिता ने बचपन ही में हज़रत अनस (रज़ी) को हज़रत मुहम्मद (स.) की सेवा में लगा दिया। इसलिए दस बरस तक वह हज़रत मुहम्मद (स.) की सेवा में व्यस्त रहे। इस मुद्दत में हज़रत अनस (रज़ि.) हज़रत मुहम्मद (स.) के बेटे की तरह रहे। आप (स.) ने कभी हज़रत अनस (रज़ि.) पर ना हाथ उठाया ना डाँट

डपट की ना ही कभी दंड दिया।

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने पड़ोसी की पत्नियों और गुलामों को रिझाने से मना किया। (अबू दाऊद)

इस हदीस की रौशनी में आप किसी जान-पहचान वाले या पड़ोसी कारोबारी कम्पनी के कारीगर को ज्यादा तनख्वाह का लालच देकर अपने यहाँ नौकरी पर नहीं रख सकते हैं।

- नबी करीम (स.) ने फरमाया जिस आदमी में तीन चिजें होंगी अल्लाह तआला उसको अपनी रहमत में ले लेगा और उसको जन्नत में दाखिल करेंगे।

१) कमजोरों के साथ नर्मी करना। २) मां-बाप के साथ मेहरबानी करना। ३) गुलामों (नोकर-चाकर वगैरा) के साथ एहसान करना यानी अगर कोई दुनीयावी गर्ज से किसी को मुलाजिम रखा और उसपर एहसान करे तो दुनीया के साथ आखिरत भी सवर जाएगी। (तिरमिजी २४६४ अन जाबिर बिन अब्दुल्ला (रज़ि.))

मालिक और मज़दूर के दरम्यान माली (Financial) *समझौता:*

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने वेतन तय किए बिना किसी को मुलाजीम रखने की मनाई फरमायी है।

- हज़रत अनस (रज़ि.) के मुताबिक हज़रत मुहम्मद (स.) अच्छा वेतन देते थे। आप (स.) ने पैसा बचाने के लिए किसी बंदे का कभी शोषण नहीं किया। (बुखारी)

- हज़रत अबु हुरैरा (रज़ि.) के मुताबिक हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया "कयामत के दिन मैं तीन बंदो से लडूंगा। उनमें से एक वह होगा जो एक नौकर रखता है, उससे पूरा काम लेता है और फिर उसकी मज़दूरी नहीं देता है।" (बुखारी)

- उल्मा-ए-कराम (Religious Scholars) के मुताबिक मज़दूरी अदा करने के लिए तीन प्रकार के समझौते हो सकते हैं:

अ- मालिक मज़दूर से काम लेने के पहले ही मज़दूरी अदा कर दें।

ब- मज़दूर अपनी सेवा प्रस्तुत करने से पहले पूरी मज़दूरी की मांग करें और हासिल करें।

क- मज़दूर को काम पूरा होने पर मज़दूरी दे दी जाए।

(अल-फतावा हिंदीया ५०६/३)

१६०० वी शताब्दी तक जमिनदार और ठेकेदार गरीब मजदूरों से जबरदस्ती काम लेते थे। या तो उन्हें बहुत कम मज़दूरी देते या मज़दूरी ही ना देते थे। इसलिए पेशगी अदाएगी (Full Advance Payment) के लिए दो कानुन बना गए। इस कानुन के जरिए मजदूरों को अपनी सेवा प्रस्तुत करने से पहले मज़दूरी लेने का हक दिया गया। इसलिए यह कानुन मजदूरों के अधिकारों की सुरक्षा करता है।

- नबी करीम (स.) ने फरमाया अल्लाह तआला के नजदिक सबसे बड़ा गुनाह यह है की आदमी किसी से काम ले और उसको उसकी मज़दूरी न दे। (मुस्तदरीक २७४३ अन अब्दुल्ला बिन उमर (रज़ि.))

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया "मजदूर की मजदूरी उसका पसीना सुखने से पहले दे दो।"

इसलिए अगर मज़दूर खुद से मजदूरी का पैसा ना मांगे तो मालिक को खुद उसे काम पूरा होने पर फौरन मजदूरी दे देनी चाहिए।

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया "अपने गुलाम (बावर्ची) को कम से कम कुछ भोजन के निवाले जरूर दो जो तुम्हारा खाना पकाता है।"

(बुखारी, अबू दाऊद, तिरमिज़ी)

तश्रीह (व्याख्या): अगर बावर्ची तुम्हारा नौकर (दास) है, तो उसे तीन वक़्त का खाना खिलाना मालिक का फर्ज है। लैकिन अगर तुम किसी मेहमान के लिए कोई खास चीज़ पकाओं तो तुम्हारे नौकर को उसे खाने का हक नहीं। ऐसी हालत में हिदायत है कि उसे उसमें से कुछ खिलाओ क्योंकी वह उसे पकाने में बहोत तकलीफ उठाता है। इसी तरह अगर आप किसी को नौकरी पर रखते हैं तो उसकी तनख्वाह देना आप के लिए जरूरी है। लैकिन अगर वह मुलाजिम बहोत मेहनत से काम करता है और आप को बहोत अच्छा नफा हो तो उस अधिक नफे पर मुलाजिम का हक ना होते हुए भी उसे कुछ अधिक रक्कम इनाम के तौर दे देनी चाहिए। आज कल तकरीबन सभी कंपनीया इसे बोनस (Bonus) के नाम से देती हैं।

- काज़ी अबुल हसन मारवरदी की इस्लामी कानून की तश्रीह के मुताबिक जो (अहेकामुल सुलतानीया लील मारवरदी) (तर्जुमा) के बाबः ३६६ सफा २० पर लिखा है कि अगर एक मालिक मज़दूर से ज्यादा काम लेता है और कम मज़दूरी देता है, या मज़दूर कम काम करता है और ज्यादा मज़दूरी की मांग करता है, तब शासक या गवर्नर को उसमें हस्तक्षेप करना चाहिए और उन्हें सही तरीका इख्तेयार कराने की कोशिश करनी चाहिए और अगर वह उसकी बात ना माने तो शासक को खुद फैसला लेने का अधिकार है। (उनका मसला हल करने के लिए सरकारी फैसला किया जा सकता है।)

- अगर एक व्यक्ति कहता है कि "मैं अपना मकान, किराए की बुनियाद पर देता हूँ एक बरस के लिए, और सालाना किराया एक दरहम होगा। और अगर किराएदार उसे कुबूल करे और मकान में रहने लगे तब किसी वजह के बगैर ना ही मालिक १ बरस से पहले मकान खाली कर। सकता है। ना ही किराएदार बगैर किसी जायज़ वजह के समझौता रद्द कर सकता है।" (फतावी आलमगीरी ३०५/३)

यानी आपसी रजामंदी से एक बार जो समझौता हो जाए फिर उसे समझौते की मुद्दत पूरी होने तक इस्लामी उसूल के मुताबिक नहीं तोड़ना चाहिए।

- इसी तरह मज़दूरी की रकम और रिटायरमेंट कि उम्र के लिए दोनों पार्टी (मालिक और मज़दूर) ने मिल जुल कर फैसला करना चाहीए। और दोनों को अपना समझौता पूरा करना चाहीए। अगर कोई उससे हट जाए

(बाकी पेज ४४ पर)

१३. पैरवी (अनुसरण) करने वालों के क्या कर्तव्य और ज़िम्मेदारियां हैं?

- सफलता टीम वर्क (Team Work) से हासिल होती है। इसलिए अगर मातहत कर्मचारी (Subordinate) या पैरवी (अनुसरण) करनेवाले या नौकर अपना सहयोग न दे तो प्रभावशाली नेता या लीडर अकेले कामयाबी और खुशहाली निश्चित तौर से हासिल नहीं कर सकता। कामयाबी और खुशहाली के लिए मातहत कर्मचारियों या नौकरों या पैरवी करने वालों का सहयोग भी जरूरी है। और उन्हें नीचे दिए गए उसूलों पर पाबंदी से अमल करना भी ज़रूरी है।

कर्मचारी या पैरवी करनेवाली जनता के लिए पैरवी के उसूलः

- अल्लाह तआ़ला पवित्र कुरआ़न में फरमाता हैः "मोमिनों! खुदा और उसके पैगम्बर की आज्ञापालन करो और जो तुम में से शासक हैं उनकी भी।" (सूरह निसा आयत ५६)

- "ईमान वाले तो आपस में भाई-भाई हैं। तो अपने दो भाईयों में सुलाह करा दिया करो।" (सूरह हुजरात आयत १०)

- हज़रत इरबाज़ (रज़ि) बयान फरमाते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया "मैं तुम लोगों को वसियत करता हुं के अल्लाह से डरते रहना और इस्लाम के शासक व अमीर की इताअत और आज्ञापालन करते रहना अगरचे वह (शासक व अमिर) हब्शी (काला) गुलाम ही क्यों न हो। बेशक तुम में से जो व्यक्ति मेरे बाद जींदा रहेगा वह जल्दी ही (मुसलमानों में पैदा होने वाले) बहोत मतभेद देखेगा। (उस वक़्त के लिए खास तौर से तुम्हें हिदायत करता हुँ कि) मेरी सुन्नत और हिदायत याफ्ता खुलफा ए राशिदीन के तौर और तरीके को लाजिम पकड़ना, उसी पर भरोसा करना और उसको दातों के साथ मज़बूती से पकड़े रहना। (दीन में पैदा की जानेवाली) नई-नई बातों से बचना क्योंकी हर नई बात बिदअत है और हर बिदअत गुमराही है।"

(अहमद, अबू दाऊद, इब्ने माजा, तिरमिजी, बा हवाला मुन्तखब अबवाब जिल्द १ हदीस १५८)

- हज़रत हारिस अश्अरी (रज़ि) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "में तुम्हे पांच चीज़ों का हुक्म देता हुँ, जमात का। सुनने का। इताअ़त का। हिजरत और जिहादफिसबील अल्लाह का।"

(मिश्कात, मसनद अहमद, तिरमिजी, बा-हवाला ज़ादे राह हदीस १८८ पेज १३८)

इस हदीस शरीफ में हज़रत मुहम्मद (स.) ने अपनी उम्मत को निम्नलिखीत पांच चीज़ों का हुक्म दिया हैः

१. जमात बनो, जमाती जिंदगी गुज़ारो।

२. तुम्हारे इज्तेमाई (सामुहिक) मामलात का जो जिम्मेदार हो उसकी बात ध्यान से सुनो।

३. उसकी बात मानो।

४. अगर हालात साज़गार (अनुकूल) न हों तो उस जगह की तरफ हिजरत (स्थानांतरण) करो जहाँ दीन और दुनिया की खुशहाली हासिल की जा सकती है।

५. अल्लाह तआ़ला के आदेश दुनिया में फैलाने का परिश्रम करो।

- हज़रत जैद बिन हारिस (रज़ि) कहते हैं की मैंने हज़रत मुहम्मद (स.) को यह फरमाते हुए सुना है कि, "तीन बातें ऐसी हैं कि उनके होते हुए किसी मुसलमान के दिल में निफाक (कपटाचार) नहीं पैदा हो सकता।"

  १. एक यह कि जो भी अमल करें अल्लाह तआ़ला को खुश करने के लिए करें।

  २. दुसरी यह की जो लोग सामूहिक मामले के जिम्मेदार हों उनके साथ खैरखवाहाना (हितचिंतक वाला) मामला करें।

  ३. तीसरी चीज़ यह हैं कि जमात (दल) से चिमटे रहें, जमात (दल) के लोगों की दुआ़एं उसकी सुरक्षा करेंगी।"

(तरगीब व तरहिब, बा-हवाला इब्ने हुबान व बहेकी, अबू दाऊद, तिरमिज़ी, नसाई, इब्ने माजा, बा-हवाला ज़ादे राह हदीस १६०)

- हज़रत उबादा बिन सामत (रज़ि) कहते है कि हम लोगों ने हज़रत मुहम्मद (स.) से बैअ़त की (वचन दिया) किः हर हालत में अल्लाह व रसूल (स.) और उन लोगों की जिनको अमीर मुकर्रर किया गया हो बात सुनेंगे और इताअत करेंगे, चाहे तंगी की हालत हो या खुशहाली की, और खुशी की हालत में भी और नाराज़ी के हालत में भी। और उस हालत में हम अमीर की बात मानेंगे जबकी दूसरों को हमारे मुकाबले में प्राथमिकता दी जाती हो। और इस बात का हमने आप (स.) को वचन दिया कि जो लोग जिम्मेदार होंगे उनके अधिकार और पद छीनने की हम कोशिश नहीं करेंगे। अलबत्ता इस सूरत में जब कि अमीर ने खुला हुआ कुफ्र किया हो। उस वक़्त हमारे पास इस बात की दलील होगी कि हम उसकी बात न मानें (और हालात अनुकूल हों तो पद से हटा दें)। और इस बात का हमने आप (स.) को वचन दिया की जहाँ कही भी होंगे हक (सच्ची) बात कहेंगे, अल्लाह के संबंध में किसी मलामत करने वाले कि मलामत से नहीं डरेंगे।"

(तरगीब व तरहिब, बहवाला तिबरानी व तिरमिजी, बा-हवाला जादे राह हदीस १६२ पेज १४१)

ऊपर लिखे गए कुरआ़नी आयात और हदीस शरीफ से हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं की अगर हम मुलाजिम, या मातहत कर्मचारी या आम जनता हैं और अगर हमारा कोई रहनुमा (नेता) या मालिक (Boss) हैं तो जब तक वह हमें हमारे मज़हब के खिलाफ कोई हुक्म नहीं देता, हमारा फर्ज है कि उसकी पैरवी (अनुसरण) करें या कमअज कम उसका विरोध ना करें या उसके लिए कठिनाइयां पैदा ना करें।

▼▼▼▼▼▼▼

तीसरा भाग

कर्मचारी, सहयोगी या मातहत काम करने वालों से कैसा बरताव करें?
How to behave with Workers / Subordinates

१५. मानव स्वभाव की मुख्य खामियाँ

- अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को कुछ बुनियादी खामियों के साथ पैदा किया है। अगर हम उन खामियों से वाकिफ रहें तो हम कभी इन्सान के सख़्त और अनअपेक्षित स्वभाव (प्रतिक्रिया) से निराश नहीं होगें। बल्कि इस प्रकार के रद्दे अमल (प्रतिक्रिया) के लिए हम ज्यादा तैयार रहेंगे। इसलिए हमें अपने आप को बेहतर तरीके से तैयार करने के लिए मानव स्वभाव की मुख्य खामियों का अध्ययन करना चाहिए, जो निम्नलिखीत हैं:

१. अपने आप को सबसे ज़्यादा अहमियत देना:

- एक इन्सान सबसे ज्यादा अहमियत खुद को देता है। अपने सर में होने वाले मामूली दर्द की अहमियत उसके नजदीक किसी इलाके में हज़ारों लोगों के मरने की खबर से ज़्यादा अहम है। जब एक टेलीफोन कम्पनी ने फोन पर बातचीत का विश्लेषन किया तो पता चला कि सबसे ज़्यादा इस्तेमाल होने वाले शब्द थे; "मैं, मेरा, हम"। यानी हर मर्द और औरत सबसे ज्यादा अपने बारे में बातचीत करना चाहता है।

  नोटः हम यहा पर कुरआन और हदीस की तालिम भी बयान कर रहे है। ताकि कोई उन खामियों को अपना पैदायशी हक ना समझे बल्कि कुरआन और हदीस की रोशनी में अपने पैदायशी खामयों को दुरूस्त करने की कोशिश करे।

२. अहंकार : (Ego)

- पवित्र कुरआ़न में इरशाद है, "क्या इन्सान ने नहीं देखा कि हम ने उसको वीर्य (Sperm) से पैदा किया। फिर वह तड़ाक पड़ाक झगड़ने लगा। और हमारे बारे में मिसालें बयान करने लगा और अपनी पैदाइश को भूल गया।" (सूरह यासीन आयत ७७-७८)

  "उसीने इन्सान को वीर्य (Sperm) से बनाया मगर वह अल्लाह (निर्माता) के बारे में खुल्लम खुल्ला झगड़ने लगा।"(सूरह नहल आयत ४)

  इन्सान की पैदाइश उस अमल के बाद होती है की अगर वह गैर कानुनी तरीके से हो तो अमल करने वालों को सज़ा हो जाए। मनी (वीर्य) जिससे इन्सान मां के पेट में अपनी जिंदगी का सफर शुरू करता है वह इतना गंदा होता है कि अगर वह कपड़ों या जिस्म पर लग जाए तो उसे साफ किए बगैर इंसान मस्जिद में दाखिल नहीं हो सकता।

  मौत के बाद इन्सान का जिस्म इतनी बुरी बदबू के साथ सड़ता है कि कोई उसके दूर से भी न गुज़रे। और उसकी लाश को गंदे किड़े मकोड़े भी खा लेते हैं। तो इंसान की शुरूआत बहुत गंदी और उसका अंजाम भी भयानक है फिर भी वह अहंकार रखता है। वह खुद अपने अस्तित्व को भुल जाता है और खुदा के अस्तित्व (जो कि तमाम दुनिया का निर्माता व पालनहार और तमाम दोषों से पाक है) के बारे में बहस (चर्चा) करता है। शैतान की तरह इन्सान भी आम तौर से बेहद घमंड़ी है।

३. बर्तरी (Superiority):

दुनिया का हर इन्सान (मर्द और औरत) खुद को दूसरों से श्रेष्ठ समझता है। युरोपियन समझते हैं कि वह कालों और भूरों पर हुकूमत करने के लिए पैदा किए गऐ हैं। जापानी खुद को युरोपियन से बेहतर समझते हैं। वह अपना तमाम तकनीकी साहित्य जापानी भाषा में लिखते हैं, और अगर जापानी लड़की किसी युरोपियन के साथ नाचे तो उन्हें क्रोध आता है।

अफगान लोग समझते हैं कि वह असली खान हैं, और हिंदुस्तान के सारे खान नकली हैं। इसाई समझते हैं कि कुरआ़न करीम, बायबल से संकलित किया गया है इसलीए उनका धर्म असली है। अरब, गैर अरब को 'अजमी' कहते हैं यानी गूंगा। हिंदु तमाम गैर हिंदु को 'मलीछ' कहते हैं यानी गंदे लोग। ब्राम्हण खुद को दूसरों से श्रेष्ठ और पवित्र समझते हैं। यह मानव स्वभाव है। हमें इसे याद रखना चाहिए। और जब कोई अकड़ दिखाए तो इस बात को याद रखना चाहिए कि इंसान इस खामी के साथ पैदा हुआ है।

इस खामी से बचने के लिए मंदर्जाजेल हदीसे और आयते याद रखे।

- हज़रत अबु हुरैरा रिवायत करते है कि नबी करीम (स.) ने फरमाया आदमी को खुद को बेहतर समझने की आदत सबसे ज्यादा हलका करने वाली है। (शआबुल इमान ७२५२)
- नबी करीम (स.) ने फरमाया इतराना अकडना बहुत बुरी आदत है।(मुस्नद अहमद १८५३० (अन अनबरात बिन अजाब (रजी.))
- नबी करीम (स.) ने फरमाया जो शख्स तकबीर (घमंड) करते है। अल्लाह तआला उसको जलील कर देता है। (मुस्नद बजार ६४६ अन तलाहा)
- नबी करीम (स.) ने फरमाया वह शख्स जन्नत में नहीं जाएगा जिसके दिल में जर्रा बराबर भी तकबीर (घमंड) होगा। (मुस्लिमः २७५ अन अब्दुला बिन मसऊद (रजी.))

सब से श्रेष्ठ कौन है?

- "लोगो! हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया। और तुम्हारी कौमें और कबीले बनाए, ताकि एक दूसरे को पहचान सको। और खुदा के नज़दीक तुम में ज़्यादा इज्ज़त वाला वह है जो ज्यादा परहेजगार (अल्लाह से डरने वाला) है। बेशक खुदा सबकुछ जानने वाला (और) सबसे खबरदार है।" (सूरह हुजुरात आयत १३)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने अपने आखरी हज के मौके पर खुत्बा (भाषण) इरशाद फरमाया कि "रंग, मुकाम, पैदाइश, भाषा और देश के आधार पर कोई दूसरों से बेहतर नहीं हो जाता। सब बराबर हैं।"

  (बुखारी, खुत्बा विदा)

४. प्रसिद्ध होने की इच्छा:

यह भी एक इन्सानी कमज़ोरी है कि उसे हमेशा अपनी प्रसिद्धि की इच्छा होती है। वह चाहता है कि लोग उसकी इज्ज़त करें, उसे सुशिक्षित समझें, उसे बहादूर, सुखी, खुशहाल, नेक वगैरा समझें।

- हज़रत अबु हुरैरा (रज़ि) फरमाते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमायाः "कयामत के दिन सबसे पहले उस व्यक्ति के खिलाफ फैसला किया जाएगा जिस को शहीद कर दिया गया था। जब उस व्यक्ति को पेश किया जाएगा तो अल्लाह तआ़ला उसको (दुनिया में दी गई) अपनी निअ़मतें (कृपा) याद दिलाएगा, और वह व्यक्ति उन निअ़मतों को मान लेगा। फिर अल्लाह तआ़ला उससे सवाल करेगा, "(बता) उन निअ़मतों (वरदान) के शुक्राने में तूने (मेरी रज़ा और खुशी की खातिर) कौनसे (अच्छे) कर्म किए?" वह व्यक्ति कहेगा, "मैं तेरी राह में लढ़ा, यहां तक कि शहीद कर दिया गया।" अल्लाह तआला फरमाएगा, "तूने झुठ कहा, वास्तव में तू इसलिए लढ़ा था कि तुझे (लोगों के दरम्यान) बहादुरी की प्रसिद्धि मिले। और वह प्रसिद्धि तुझे हासिल हो चूकी" (अब तू मुझसे किस चीज़ की तलब और आरजू रखता है?) चुनांचे उस व्यक्ति के बारें मे हुक्म किया जाएगा, और उसको उसके मुंह के बल घसीटकर ले जाया जाएगा, यहाँ तक कि (नर्क) आग में फेंक दिया जाएगा।"

  एक और व्यक्ति के खिलाफ फैसला किया जाएगा जिसने दीन (धर्म) का ज्ञान हासिल किया था, दूसरों को भी उसकी शिक्षा दी थी, और पवित्र कुरआ़न पढ़ा था। चुनांचे जब उस व्यक्ति को पेश किया जाएगा तो अल्लाह तआ़ला उसको (दुनिया मे दी गई) अपनी निअ़मतें याद दिलाएगा और वह व्यक्ति उन निअ़मतों का ऐतराफ करेगा। फिर अल्लाह तआ़ला उससे सवाल करेगा "(बता) उन निअ़मतों के शुक्राने में तुने (मेरी रज़ा और खुशनूदी की खातिर) कौनसे (अच्छे) काम किए?" वह व्यक्ति कहेगा "मैंने दीन का ज्ञान हासिल किया, दूसरों को भी उसकी शिक्षा दी और तेरी खुशी के लिए कुरआ़न पढ़ा।" अल्लाह तआ़ला फरमाएगा, "तूने झूठ कहा, वास्तव में तूने ज्ञान इस उद्देश्य से हासिल किया था कि लोग यह कहें कि तू बड़ा विद्वान है, और कुरआ़न तूने इस गर्ज़ से पढ़ा कि लोग यूं कहा करें यह व्यक्ति अच्छा कारी (अच्छी आवाज़ से कुरआन पढ़ने वाला) है, और तू धरती पर मशहूर और प्रसिद्ध हो चुका" (अब तू किस बदले व इनाम की तलब व आरजू लेकर मेरे पास आया है?) चुनांचे उस व्यक्ति के बारे में हुक्म किया जाएगा और उसको मुंह के बल घसीटकर ले जाया जाएगा, यहाँ तक कि नर्क की आग में फेंक दिया जाएगा।"

  एक और व्यक्ति के खिलाफ फैसला किया जाएगा, जिसपर अल्लाह तआ़ला ने उसकी रोज़ी बहोत अधिक कर दी थी, और हर तरह के माल व असबाब से उसको सम्मानित किया था। चुनांचे जब उस व्यक्ति को पेश किया जाएगा तो अल्लाह उसको (दुनिया में दी गई) अपनी निअ़मतें याद दिलाएगा और वह व्यक्ति उन निअ़मतों का ऐतराफ करेगा। फिर अल्लाह तआ़ला उससे सवाल करेगा "(बता) उन निअ़मतों के शुक्राने में तूने (मेरी रज़ा और खुशनूदी की खातिर) कौनसे (अच्छे) काम किए?" वह व्यक्ति कहेगा, "मैंने हर उस अच्छे काम में तेरी खुशी की खातिर माल खर्च किया, जिसमें माल का खर्च किया जाना तुझे पसंद और मतलूब था।" अल्लाह तआ़ला फरमाएगा, "तूने झूठ कहा। वास्तव में तूने इस गर्ज से खर्च किया था कि (लोग तेरे बारे में एक दूसरे से) यू कहा करें की यह व्यक्ति बड़ा सखी (दान करने वाला) है। तो (जब लोगों के द्वारा तेरी असल आवश्यक्ता पूरी हो गई कि एक सखी की हैसियत से) तू मश्हुर और प्रसिद्ध हुआ" (तो अब किस बदले व इनाम की तलब व आरजू लेकर मेरे पास आया है?) चुनांचे उस व्यक्ति के बारे में हुक्म किया जाएगा और उसको मुंह के बल घसीटकर ले जाया जाएगा, यहाँ तक कि (नर्क की) आग में फेंक दिया जाएगा।"

  (मुस्लिम, बा-हावाला मुन्तखब अबवाब जिल्द १ हदीस १६५)

  इस तरह जिस किस्म के लोग सबसे पहले नर्क में दाखिल होंगे वह शहीद, उल्मा (विद्वान) और दौलतमंद लोग होंगे। और उसकी वजह शौहरत और शनाख्त (पहचान) की लालच है।

  तो इन्सान में शौहरत की इच्छा इतनी तेज़ होती हैं कि अधिकतर उल्मा (विद्वान) और दौलतमंद भी अपने आप को उससे सुरक्षित नहीं रख पाते हैं। इस कमज़ोरी का इलाज यह है कि अधिकता से मौत को याद किया जाए और आखिरत की जिंदगी को अपने सामने रखा जाए।

५. ना शुक्री:

- क्या आप जानते हैं कि महान निर्माता (अल्लाह) अपनी बनायी हुई चीज़ (Product) के बारे में क्या कहता हैः

- "वास्तविकता यह है कि इन्सान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है।"

  (सूरह आदियात आयत ६)

- इन्सानी स्वभाव को अल्लाह तआ़ला से ज्यादा कौन जानता है? कुरआन करीम कहता हैः

  "क्या वही न जानेगा जिसने पैदा किया है? हालाँकि वह सूक्ष्मदर्शी और ख़बर रखनेवाला है। "(सूरह अल-मुल्क १४)

- एक बार हज़रत ईसा (अ.स.) ने १० कोढ़ियों का इलाज किया। जैसे ही उन्हें शिफा हुई वह खुशी से उछले और भाग गए। कुछ समय बाद उन १० में से एक वापस आया और हज़रत ईसा (अ.स.) का शुक्रिया अदा किया। बकिया ९ ने कभी उनका शुक्रिया भी अदा नहीं किया।

  ना ही हम हज़रत ईसा (अ.स.) हैं, ना ही हमारा एहसान और मद्द किसी को कोढ़ से शिफा दिलाने जैसी बड़ी होगी। इसलिए १० में से एक भी हमारा शुक्रिया अदा करने नहीं आएगा।

  यह इन्सानी स्वभाव है, इसलिए हमें दूसरे लोगों से शुक्र गुज़ारी और तारीफ की आशा नहीं रखनी चाहिए।

६. मूल चूक इन्सानी स्वभाव है।:

हजरत अबू हुरैरा (रज़ि) फरमाते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया, "जब अल्लाह तआ़ला ने हज़रत आदम (अ.स.) को पैदा किया तो उनकी पीठ पर हाथ फेरा, उस के बाद उनकी पीठ से वह तमाम रूहें (आत्माएं) बाहर निकल आयीं जिनको अल्लाह तआ़ला आदम (अ.स.) की नस्ल (पीढ़ी) से कयामत तक पैदा करने वाला था। फिर अल्लाह तआ़ला ने उन में से हर इन्सान की दोनों आंखों के दरम्यान एक नूरानी चमक रखी, उसके बाद उन तमाम आत्माओं को आदम (अ.स.) के सामने पेश कर दिया। हज़रत आदम (अ.स.) ने पुछाः "मेरे परवरदिगार! यह सब कौन हैं?" परवरदिगार ने इरशाद फरमायाः "यह सब तुम्हारी औलादे हैं (जिनको पीढ़ी दर पीढ़ी कयामत तक पैदा होना है।) हज़रत आदम (अ.स.) ने उन को देखा, तो एक चेहरे की दोनों आखों के दरम्यान की चमक उनको बहुत भली लगी। उन्होंने पूछाः "ऐ मेरे परवरदिगार! यह कौन है?" परवरदिगार ने इरशाद

फरमायाः “यह दाऊद (अ.स.) है। हज़रत आदम (अ.स.) ने पूछाः “मेरे परवरदिगार! तुने इसकी उम्र कितनी मुकर्रर की है?” परवरदिगार ने इरशाद फरमायाः “साठ बरस!” हज़रत आदम (अ.स.) ने अर्ज किया: “मेरे परवरदिगार! मेरी उम्र में से ४० साल लेकर उसकी उम्र में इज़ाफा कर दीजिए।”

रसूल अल्लाह (स.) फरमाते हैं: “जब हज़रत आदम (अ.स.) का जीवन काल पूरा होने में ४० साल बाकी रह गए तो मौत का फरिश्ता उनके पास आ पहुँचा। हजरत आदम (अ.स.) (उसको देखकर) बोलेः मेरा जीवन काल पूरा होने में क्या अभी ४० साल बाकी नहीं हैं? मौत के फरिश्ते ने कहाः क्या आप (अ.स.) ने अपनी उम्र के ४० साल अपने बेटे दाऊद (अ.स.) को नहीं दे दिए थे? (हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमायाः) हज़रत आदम (अ.स.) ने इस बात से इन्कार किया। (हज़रत आदम यह बात भूल गए कि उन्होंने हज़रत दाऊद को ४० वर्ष दिए हैं।) और इसलिए उनकी औलाद भी इन्कार करती है और हज़रत आदम (अ.स.) (खुदा का हुक्म) भूल गए थे जिसके नतीजें में उन्होंने निषिद्ध पेड़ में से फल खा लिया था, और इसलिए उनकी औलाद भी भूलती है। और हज़रत आदम (अ.स.) से गलती हो गयी थी इसी लिए उनकी औलाद भी गलती करती है।

(तिरमिज़ी, बा-हवाला मुन्तखब अबवाब, जिल्द १, हदीस १११)

इन्सानी स्मरण-शक्ति कमज़ोर होती है, इसलिए अपने हर कारोबारी मामले को दो गवाहों की मौजुदगी में कागज़ पर लिख लेना चाहिए। और याद रखना चाहिए कि कभी-कभी इन्सान अंजाने में गलती करता है। (जबकि उसकी ऐसी नियत नहीं होती बल्कि यह उसकी बुनियादी कमज़ोरी है।) कानुनी दस्तावेज के अहमियत का जिक्र कुरआने करीम में ‘सूरह बकरा’ कि आयत नं २:२८२ में लिखा है। इस आयत में भी अपने पैसों के लेन-देन को गवाहों कि मौजूदगी में लिखने को कहा गया है।

७. औरत, दौलत और सवारी की तीव्र चाहतः

- कुरआन में अल्लाह तआला का इरशाद हैः

‘‘ज़ुय्यिना लिन्नासि हुब्बुश-श-ह-वाति मिनन निसा-इ वल बनीना वल कनातीरिल मुकन्त-र-ति मिनज़्ज़-ह-बि वल फिज़्ज़ति वल खैलिल मुसव्व-मति वल अन-आमि वल हर्स। ज़ालिका मताउल हयातुद-दुन्या। वल्लाहु इन्दहु हुस्नुल मआब।’’

“लोगों को उनकी इच्छाओं की चीज़ें यानी औरतें और बेटे और सोने और चांदी के बड़े-बड़े ढेर और निशान लगे हुए घोडे और मवेशी और खेती बड़ी आकर्षक मालूम होती है। मगर यह सब दुनिया ही की जिंदगी के सामान है और खुदा के पास बहुत अच्छा ठिकाना है।”

(सूरह आले इमरान आयत १४)

यह मर्द का स्वभाव है कि वह औरत से गहरी मुहब्बत और दौलत और बढ़िया सवारी कि हिर्स (हवस) रखता है। इसलिए उसकी इस कमज़ोरी से वाकिफ (अवगत) रहो। क्योंकि कभी कभी उन चीज़ों को हासिल करने के लिए वह अपने तमाम उसूल कुर्बान कर सकता है।

८. बागी स्वभावः

अल्लाह तआला ने कुरआन में इरशाद फरमायाः

“और अगर खुदा अपने बंदो के लिए रिज़्क (रोज़ी) में अधिकता कर देता तो वह ज़मीन में फसाद करने लगते। इसलिए वह जो चीज़ चाहता है अंदाजे के साथ नाज़िल करता (उतारता) है। बेशक वह अपने बंदो को जानता और देखता है।”(सुरह शूरा आयत २७)

- अगर आप किसी ऐसे व्यक्ति को अपना पार्टनर बनाते हैं जो व्यापार में अकेला कामयाब नहीं हो सकता, तो वह आप की तमाम शर्तें मान लेगा और आपका बेहतरीन दोस्त और आपके कारोबार का एक भाग बनकर रहेगा। लैकिन जैसे ही उसकी वह हैसियत बन जाएगी जहाँ वह अकेला कायम रह सकता है और खुशहाल बन सकता है तो खुद ब खुद आकस्मिक तौर पर उसका रवय्या बदल जाएगा। वह आपसे बागी होकर, कारोबार से अलग हो सकता है। और अपना कारोबार अलग शुरू कर सकता है। यही बात आप का बेटा भी कर सकता है। यह इंन्सान की प्राकृतिक कमज़ोरी है। इसलिए आप चौकन्ना रहें। और कानूनी तौर पर अपने फायदे और अधिकारों की रक्षा करें।

९. ज़ल्द बाज़ीः

- अल्लाह तआला कुरआन शरीफ में फरमाता हैः “और इन्सान जिस तरह (ज़ल्दी से) भलाई मांगता है उसी तरह बुराई मांगता है। और इन्सान ज़ल्दबाज (पैदा हुआ) है।” (सूरह बनी इस्राईल आयत ११)

इन्सानी स्वभाव में ज़ल्दबाज़ी है। इस वजह से वह चाहता है कि रातों रात लखपती बन जाऐ। इसलिए वह सोने का अंडा देने वाली मुर्गी को पहले ही दिन ज़बाह कर देता (मार देता) है ताकि एक ही वक़्त में सोने के सारे अंडे मिल जाएं। अगर आप भी सोने के अंडे देनेवाली मुर्गी हैं तो अपनी रक्षा करें।

१०. ज़ल्दी हिम्मत हारना।ः

- अल्लाह तआला कुरआन शरीफ में फरमाता हैः “कुछ शक नहीं कि इन्सान कम हौसला पैदा हुआ है।”(सूरह मुआरिज आयत १९)
- “इनसान का हाल यह है कि जब हमारा उसपर कृपादान होता है तो वह ऐंठता और पीठ मोड़ लेता है, और जब तनिक मुसीबत का सामना होता है तो निराश होने लगता है।” (सूरह बनी इस्राईल आयत ८३)
- समाज में कुछ ही लोग ऐसे होते हैं जो मुस्तकील मिज़ाज (स्थाई स्वभाव वाले) और बहादुर होते हैं, और वह नाकामी की स्थिति में भी लगातार परिश्रम में लगे रहते हैं। बाकी लोग पहली नाकामी से ही हिम्मत हार जाते हैं। क्योंकी यह इन्सानी स्वभाव है। इसलिए खुद भी मुस्तकिल मीज़ाज (स्थाई स्वभाव वाले) रहें और किसी मुस्तकील मीज़ाज व्यक्ति को अपना कारोबारी पार्टनर बनाए या अकेले ही कारोबार चलाने की हिम्मत करें।

जल्द हिम्मत हारने वाली इन्सानी कमज़ोरी को याद रखें। और उसे अपने अंदर कम करने की कोशिश करें।

११. कंजूसः

- अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है, “ऐ नबी, उनसे कहो, अगर कहीं मेरे रब की दयालुता के ख़ज़ाने तुम्हारे अधिकार में होते तो तुम ख़र्च हो जाने की आशंका से ज़रूर उनको रोक रखते। वास्तव में इन्सान बड़ा तंग दिल है।”

(सूरह बनी इस्राईल आयत १००)

- इन्सान का स्वभाव प्राकृतिक तौर से कंजूस है। जो दौलत हम कमाते हैं उस पर बहोत सारे लोगों का हक होता है। अगर कंजूस स्वभाव की वजह से हमने दौलत उस जगह खर्च न की जहाँ हमारा फर्ज था, तो आखिरत में हमें ही शरमिंदगी होगी और नुकसान होगा।

१२. नफ्से अम्मारा:

- हज़रत युसूफ (अ.स.) ने कहाः "और मैं अपने आपको पाक साफ नहीं कहता, क्योंकी नफ्से अम्मारा इन्सान को बुराई ही सिखाता रहता है। मगर यह कि मेरा परवरदिगार रहम करे। बेशक मेरा परवरदिगार बख्शने वाला मेहरबान है।" (सूरह यूसुफ आयत ५३)

  नफ्से अम्मारा (इन्सान की नेचूरल फितरत) इतनी खतरनाक है कि पैगंबर हज़रात (अ.स.) तक उस से ड़रते रहते थे। दौलत उस नफ्स को मज़बूत बनाती है। अगर इस्लामी उसूलों पर अमल करके उस नफ्से अम्मारा को कमज़ोर न किया गया तो इन्सान धर्म से दूर होकर गुनाहों के दलदल में धंसता चला जाता है।

- नफ्से अम्मारा इन्सान को ऐश पसंद और मौज मस्ती का रसया बनाता है, आम तौर पर यह मौज मस्ती नाजायज कामों से हासिल होती है। नफ्से अम्मारा, गैर मज़हबी लोगों को धोखा देकर रूपया ऐंठने के लिए उक्साता हैं और हिम्मत अफज़ाई करता है। इसलिए अपने कारोबार के लिए ईश्वरीय प्रकोप से ड़रने वाले, शरीफ कारोबारी पाटर्नर या ग्राहक या सप्लायर का चयन करें। क्योंकी हिंदुस्तानी कानून सुस्त रफ्तार और नुक्स से भरा है। धोकेबाज़ यह हकीकत जानते हैं और कारोबार में हमेशा धोखा देने की कोशिश करते हैं। अगर पैसा फंस जाऐ तो कानूनी चारा जुई से उसे हासील करना बेहद मुश्किल है। नफ्से अम्मारा के बारे में ज्यादा जानकारी के लिए पाठ नं. ४७ पढ़ें।

१३. इन्सान अपनी पैदाइशी कमज़ोरियों और खामियों पर किस तरह काबू पाएं?

ऊपर बताई गई खामियां और नैतिक कमज़ोरियां हर इन्सान में मौजूद होती है। लैकिन उनपर वह लोग काबू पा सकते हैं जो क़ुरआ़न करीम के निम्नलिखीत निर्देशों पर अमल करें:

१. अल्लाह पर ईमान और उसके अज़ाब का खौफ।
२. आखिरत, कयामत के दिन पर ईमान।
३. नमाज़ की बाकायदा पाबंदी।
४. उन बंदो को दान और खैरात करना जो मांगते हैं और उन गरीब बंदो को भी देना चाहिए जो अपनी गैरत (अभिमान) की वजह से लोगों के सामने हाथ फैलाने से बचते हैं।
५. अपना वादा पूरा करना।
६. ज़िना (व्याभिचार) से दूर रहेना।

(सूरह मुआरिज की आयात २२ से २४ का खुलासा)

खुलासाः

सर्कस का रिंग मास्टर खुंख्वार दरींदो (शेर और रीछ वगैरा) का प्रशिक्षण करके उनपर कंट्रोल रखता है। ज़रा सी गलती से वह अपनी जान भी गंवा सकता है। इसलिए वह खुंख्वार दरीदों के स्वभाव से हमेशा चौकन्ना और आगाह रहता है। इन्सान, खुंख्वार दरींदो से ज्यादा खतरनाक है। उसमें बहोत सी खामीयां है। इसलिए उससे कारोबार करते हुए यह तमाम खुसूसियात याद रखें वरना किसी मामूली सी गलती से आप अपनी दौलत गंवा सकते हैं।

हज़रत मुहम्मद (स.) बहुत कम बात करते थे। मगर आप की ज़बान से निकले हुए हर वाक्य का अर्थ बहुत गहरा होता था। ऐसे ही कुछ वाक्य निम्नलिखित हैं।

१.	اَلدُّعاءُ سِلاحُ الْاَنْبِياءِ	अद्दुआउ सिलाहुल अम्बीया	दुआ अंबिया का हथियार है।
२.	اَعْقِلْ وَ تَوَكَّلْ	आकील व तवक्कल	पहले उंट का घंटा बांधो फिर अल्लाह पर तवक्कल करो।
३.	زُرْغِبًّا تَزْدَادُحِبًّا	जुरगिब्बन तज़्दादु जिब्बन	तुम कभी कबार मिलने जाओ, मुहब्बत में इजाफा होगा।
४.	لَاضَرَرَ وَلَا ضِرَارَ	ला ज़रर वलाजीरार	ना किसी को नुकसान पहुँचाना रवा है ना किसी को इतेकाम के खातिर तकलिफ रवा है। (इब्ने माजा)
५.	رِفْقًا بِالْقَوَارِيْرِ	रिफ्कम बिल्कवारीर	आब गिनों को ठेस मत पहुँचाओ (यानी औरतों से मोहब्बत और शफक्कत के साथ पेश आओ।)
६.	اَلنَّصْرُ مَعَ الصَّبْرُ	अन्नस्रू मअस्सब्र	कामयाबी सब्र के साथ वाबस्ता है।
७.	اَلْمَرْءُ بِالْقَرِيْن	अल्मरउ बिल्करीन	इन्सान दोस्तों से पहचाना जाता है।
८.	مَنْ جَدَّ وَجَدَ	मन जद्द वजदा	जिसने कोशिश की वह कामयाब हुआ।
९.	مَنْ ضَحِكَ ضُحِكَ	मन ज़हिका ज़ुहिका	जो दुसरों पर हसता है दुनिया उसपर हंसेगी।
१०.	اَلْحَيَآءُ مِنْ الْاِيْمَانَ	अल हयाउ मिनल ईमान	हया ईमान में से है।
११.	اَلصَّبْرُ مِفْتَاحُ الْفَرَجِ	अस्सबरू मिफ्ताहुल फरज	सबर, राहत व फराखी की कलीद है।
१२.	قَتْلُ الْمُؤْذِىْ قَبْلَ الْاِيْذَاءِ	कतलुल् मूज़ी कबलल ईज़ा	मूजी को इज़ा पहुँचाने के पहले कत्ल कर दो।
१३.	اَلْمَجَالِسُ بِالْاَمَانَةِ	अल् मजालसू बिल अमानती	मजलीस अमानात राज़दारी से कायम है।
१४.	حُسْنُ الْخُلُقِ حُسْنُ الْعِبَادَةِ	हुसनुल खुलकी हुसनुल इबादती	अच्छा अखलाक बेहतरीन इबादत है।
१५.	اَلطِّيَرَةُ شِرْكٌ	अत्तयरतु शिरकु	शगुन लेना शिर्क है।
१६.	اَلصُّمْتُ اَرْفَعُ الْعِبَادَةِ	अस्सुमतु अरफउल इबादती	खामोशी सबसे आला दर्जे की इबादत है।
१७.	اَمْنَكَ مَنْ عَتَبَكَ	अमनका मन अतबका	जिसने तुमपर इताब किया तुम उसके शरस (किना से) महफूज हो गए।
१८.	اِمْلَكْ يَدَكْ	इमलक यदक	अपने हाथ को काबु में रखो। यानी तुम्हारा हाथ किसी पर जुल्म व ज्यादती ना करे।
१९.	مَنْ صَمَتَ نَجَا	मन समता नजा	जो चुप रहा निज़ात पा गया। (तिरमिजी)

माखुजः मजमुन "रसुले अक्रम (स.) के कलाम की फसाहत व बलागत" अजः मोहम्मद नसरूल्ला खान खाजीन मुज्जदी-शाऐ शुदाः रोजनामा इन्कलाब ७ फरवरी २००४

१६. सफल नेतृत्व का एक सुनहरा उदाहरण

- किसी धार्मिक युद्ध में एक विजेता फौज जो दुश्मन का माल हासिल करती है उसका ८० प्रतिशत हिस्सा फौजियों में तक्सीम कर दिया जाता है, और २० प्रतिशत हिस्सा खुदा और उसके पैगम्बर का होता है। और खुदा का पैगम्बर या शासन का मुखिया यह फैसला करता है कि उस रकम को कहां खर्च किया जाए। कौम और जनता की भलाई के लिए उसे माल को कहीं भी खर्च करने का अधिकार है। जंगे हुनैन के बाद जो माले गनीमत हाथ आया था उसका ८० प्रतिशत हिस्सा हज़रत मुहम्मद (स.) ने फौजियों में बांट दिया। और बाकी २० प्रतिशत माल में से ४ किलो चांदी और १०० ऊंट ग्यारह कबीलों के हर सरदार को दिये।

- यह फय्याज़ाना अतिया (उदार उपहार) मक्का के विभिन्न कबीलों के इस्लाम पर जमें रहने और उनसे दोस्ती मज़बूत करने के लिए दिया गया था।

- इतिहास से साबित है कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने बिल्कुल सही फैसला फरमाया, लैकिन कुछ अन्सारी नौजवान (मदीना के निवासी) इस फैसले से संतुष्ट न थे। उनका ख्याल था कि पिछले आठ साल से चूंकी हर मुश्किल वक़्त में वह हज़रत मुहम्मद (स.) के साथ रहे हैं इसलिए तमाम फयाजाना सुलूक (उदार व्यवहार) के सिर्फ वही हक़दार हैं ना की वह लोग जो इस्लाम में नए नए दाखिल हुए हैं। कुछ ने कहा की मुसीबत के वक़्त हमें याद किया जाता है। हमारी तलवारों से अभी तक कुरैश वालों का खून टपक रहा है जो इस्लाम दुश्मन हैं। और तोहफों को बांटने के वक़्त मक्का वालों को प्राथमिकता दी जाती है।

- हज़रत मुहम्मद (स.) को जब इस नाराज़गी की खबर हुई तो आप (स.) ने अन्सारीयों को एक बड़े खैमे में तलब फरमाया। सिवाय मदीना के अन्सार के और किसी दूसरे शहरी को उस मीटिंग में शरीक होने की इजाज़त नहीं थी। जब सब जमा हो गए तो हज़रत मुहम्मद (स.) उनके पास तशरीफ ले गए और दरयाफ्त फरमाया, "ऐ अन्सार समुदाय! यह क्या बात है जो मुझे तुम्हारी तरफ से पहुंची है?"

  उनके बुजुर्ग और बुद्धिमान लोगों ने अर्ज कियाः ''या रसूल अल्लाह (स.) हमने तो कुछ नहीं कहा, अलबत्ता कुछ नौजवानों की यह भावनाएं हैं।''

  हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहाः "ऐ अन्सार समुदाय! क्या तुम गुमराह नहीं थें और अल्लाह ने मेरे द्वारा तुम्हें हिदायत की राह नहीं दिखाई? कहाः बेशक यह अल्लाह और उसके रसूल (स.) का एहसान है।"

  फरमायाः "क्या तुम आपस में एक दूसरे के खुन के प्यासे न थे? और अल्लाह ने मेरे सबब तुम्हारे दिलों में मुहब्बत पैदा नहीं कर दी?"

  अर्ज कियाः "यह अल्लाह और उसके रसूल (स.) ही का एहसान है।"

  फरमायाः "क्या तुम गरीब और पिछड़े न थें? अल्लाह ने मेरी वजह से तुम्हें गनी और मालदार नहीं बना दिया?"

  सब एक साथ बोल उठेः "बेशक यह अल्लाह और उसके रसूल (स.) ही का एहसान है।"

  फरमायाः "तुम इसका जवाब क्यों नहीं देते?"

  अर्ज कियाः "हम इस का क्या जवाब दें, अल्लाह और उसके रसूल (स.) का एहसान ही इसका जवाब है।"

  इरशाद हुआः "ऐ अन्सार के लोगो! तुम चाहो तो कह सकते हो की तू हमारे पास ऐसी हालत में आया कि तेरे लोगों ने तुझे झुठलाया था। हमने तेरी तस्दीक (पुष्टि) की। तुम चाहो तो कह सकते हो कि लोगों ने तुझे बेयार और मदद्गार छोड़ दिया था, हमने तेरा हाथ पकड़ा और मदद् दी। तुम कह सकते हो कि तू मुफलिस था, हमने तुझे माल दिया, आसूदगी दी। अगर तुम यह कहो तो तुम्हारी बात सच है और तुम्हारे सच को माना जाएगा, उसकी तसदीक की जाएगी।

  "ऐ अन्सार के लोगो! क्या तुम दुनिया के सामान के लिए दुखी और नाखुश हो। मैंने नौ-मुस्लिमों को इस्लाम पर जमाने के लिए उनकी दिलदारी की। तुम्हारा ईमान तो इस्लाम के दायरे में है और मज़बूत है। कुरैश ने अभी अभी जाहिलियत को छोड़ा है, एक बड़ी मुसीबत से मुक्ति पायी है। मैंने चाहा कि उनकी दिलजूई और फरयादरसी करूं। क्या तुम इससे खुश नहीं की लोग ऊंट बकरियां और चौपाए समेट कर ले जाएं और तुम अपने साथ अल्लाह के रसूल (स.) को ले जाओ। खुदा की कसम! तुम जो लेकर अपने घर जाओगे वह उससे बेहतर है जो वह लेकर घर जाएंगे। उस ज़ात की सौगंध जिसके कब्जे में मुहम्मद (स.) की जान है अगर हिजरत (स्थानांतरण) का रूत्बा बड़ा ना होता तो मैं अन्सार ही का एक सदस्य होता। अगर सब लोग एक मैदान की राह लें और अन्सार एक घाटी की ओर चलें तो में अन्सार के साथ चलना पसंद करूंगा। ऐ अन्सार! तुम मेरा शुआर हो (शुआर यानी कपड़े का अस्तर जो शरीर से बिल्कुल लगा हुआ होता है।) और दूसरे दिसार (यानी बाहरी कपड़ा जो अस्तर के ऊपर होता है।)। तुम मेरे बाद अपने मुकाबले में दूसरों की प्राथमिकता को देखों तो सब्र करना यहाँ तक कि कौसर के हौज़ (स्वर्ग में एक ठंडे और मीठे पानी का हौज़, जहाँ हज़रत मुहम्मद (स.) खुद अपने हाथों से अपने अनुयायियों को शरबत पिलाएंगे) पर मुझसे मुलाकात हो।"

  पुस्तक 'मदारिजे नबुवत' में यह भी और लिखा हैं की हज़रत मुहम्मद (स.) ने इस मौके पर यह भी फरमाया कि मैं चाहता हूँ कि एक वसीयत लिख कर दूँ कि मेरे बाद 'बैहरैन' तुम्हारी जायदाद होगी जो बेहतरीन मुम्लिकत (राज्य) है और जिसकी विजय अल्लाह तआ़ला ने मेरे लिए खास और सुरक्षित रखी है। फिर आप (स.) ने दुआ़ के लिए हाथ बुलंद करके फरमायाः "ऐ अल्लाह! अन्सार पर रहम (दया) फरमा। उनके बच्चों पर रहम फरमा। उनके बच्चों के बच्चों पर रहम फरमा।"

  हज़रत अबू सईद (रज़ि) खिदरी कहते हैं कि कोई आंख ऐसी न थी जो भर न आई हो। कोई दाढ़ी ऐसी न थी जो आंसुओं से तर न हुई हो। कोई दामन ऐसा ना था जो शरमिंदगी के आंसुओं से न भीगा हो। गिरया बढ़ा तो गिरया पैहम बन गया। आंसू बहने लगे तो 'अब्र गौहरबार' (मोती

बरसाने वाले बादल) बन गए। हिचकियां बढ़ीं तो गले रिंध गए। हर जुबान पर यही था ''हमें कुछ नहीं चाहीए, ''हमें कुछ नहीं चाहीए। ना माल और दौलत ना दुनिया, ना रिश्ते और पेवंद। हमारा हिस्सा ए रज़दी। सैयद मक्की व मदनी (स.)।''

(सीरत अहमद मुज्तबा, जिल्द ३, पेज २७३,अज़: शाह मिस्बाहुद्दीन शकील)

विश्लेषण:

इस घटना से हमें मार्गदर्शन के कई सुनहरे उसूल हासिल होते हैं:

१. किसीको अपमानित ना करें:

हज़रत मुहम्मद (स.) ने अन्सार को एक बड़े खैमें में जमा होने का हुक्म दिया और सिवाय अन्सार के और किसीको उस मीटिंग में शरीक होने की इज़ाजत नहीं थी, गोपनियता (Privacy) का ख्याल रखा गया और सारे लोगों के सामने अपमानित नहीं किया गया। इस तरह अगर गोपनीयता (Privacy) में किसी की कोई गलती की तरफ निशानदही (चिन्हित) की जाए तो वह उसे सुधारने की कोशिश करेगा, और गैरों के सामने शरमिंदगी से बच जाएगा। (सफल मार्गदर्शक किसीको अपमानित नहीं करता)

२. गलत फहमी को दूर करना:

कुछ नौजवान अन्सार हज़रत मुहम्मद (स.) की मेहरबानियां भूल गए थे। उन्होंने सिर्फ अपनी मदद और एहसान याद रखा। हज़रत मुहम्मद (स.) ने उनकी गलतफहमी को दूर किया और अपनी महरबानियों की सूची उन्हें सुनाई ताकि उन्हें याद रहे कि हकीकत क्या है? (सफल मार्गदशक हकीकत से पूरी तरह वाकीफ (अवगत) होता है।)

३. सफल मार्गदर्शक हमेशा ईमानदार और नम्र होता है:

- हज़रत मुहम्मद (स.) अल्लाह के भेजे हुऐ रसूल यानी पैगम्बर थे। आप किसी बंदे का एहसान लेने से इन्कार कर सकते थे। क्योंकि अल्लाह तआ़ला ही बंदो पर एहसान करता है। कोई बंदा किसी दूसरे बंदे को फायदा या नुकसान नहीं पहुँचा सकता बगैर अल्लाह तआ़ला की मर्जी के। लैकीन आप (स.) ने नम्रता को अपनाया। आप (स.) ने बड़े दिल से कुबूल फरमाया कि उनके लोगों ने (शहर मक्का के निवासियों ने) आप (स.) की शिक्षाओं को कुबूल नहीं किया। उन्होंने हज़रत मुहम्मद (स.) को हिजरत (स्थानांतरण) करने पर मज़बूर किया और अल्लाह तआ़ला ने अन्सार के जरिए आप (स.) की मदद फरमायी। और यह अन्सार ही थे जिन्होंने खुले दिल से आप (स.) की शिक्षाएं कुबूल कि थी, और हज़रत मुहम्मद (स.) की मदद कि थी।

  नम्रता एक तामीरी (रचनात्मक) माहोल पैदा करती है। जब इन्सान नम्रता बरतता है तो सुनने वाला कहने वाले के मुहब्बत और शुभचिंतन को महसुस करता है और दिलसे हकीकत को कुबूल करता है। सहाबा कराम (रज़ि) तो आप (स.) के जानिसार (वफादार) थे। उनकी जगह अगर मक्का के मुश्रिकिन (मूर्ती पूजक) होते तो वह भी आप (स.) की मेहरबानियों से इन्कार नहीं कर सकते थे।

४. सफल मार्गदर्शक फरमान जारी करने से बचता है:

- दुश्मन से जीते हुए माल का ८० प्रतिशत हिस्सा फौजियों में बांटने के बाद बाकी २० % के इस्तेमाल के लिए कोई हज़रत मुहम्मद (स.) पर ऐतराज़ करने का हक नहीं रखता था। क्योंकि २० % राज्य के मुखिया यानी हज़रत मुहम्मद (स.) की मिल्कियत में था। वह यह ऐलान फरमा सकते थे कि सब लोग अपने काम से काम रखें। आप को अपना हिस्सा वसुल करने के बाद कोई बात कहने का हक नहीं रखता है। और मैं इसे कहीं भी खर्च करने के लिए आज़ाद हुँ जहाँ मैं मेहसूस करू कि उससे उम्मत को फायदा होगा। लैकिन आप (स.) ने नर्म रवय्या इख्तियार फरमाया। आप (स.) ने उनको ध्यान दिलाया कि उनके दरम्यान हज़रत मुहम्मद (स.) की मौजूदगी उन तोहफों से ज्यादा कीमती है जो दूसरे लोग ले गए।

  हज़रत मुहम्मद (स.) ने उन्हें हौसला दिलाया और उस तरफ ध्यान दिलाया कि हकिकत में वह जिते हैं और उन्हें दूसरों के मुकाबले में ज्यादा फायदा हुआ है।

५. सफल मार्गदर्शक, दोस्ती, मुहब्बत और ईमानदारी का एहसास पैदा करता है:

- हज़रत मुहम्मद (स.) को वास्तव में अन्सार (रज़ि) से बेहद मुहब्बत थी। आप (स.) ने जब उसे ज़ाहिर फरमाया तो अन्सार सहाबा (रज़ि) की आंखों से आंसू जारी हो गए।

  जिस तरह पानी आग बुझाता है उसी तरह मुहब्बत, दोस्ती और प्यार का इज़हार, परिवार के सदस्यों के दरम्यान के मतभेदों को दूर कर देते हैं। रिश्तेदारों में नाराज़गी दूर करने का यह बड़ा नेक तरीका है लैकिन इसपर सिर्फ अकलमंद और बुद्धिमान लोग अमल करते हैं। लापरवाह और मुर्ख लोग बलूत के दरख्त की तरह सीधे अकड़ कर खड़े रहते हैं, ना वह गलती मानते हैं, ना झुकते हैं इसलिए टूट जाते हैं।

६. सफल मार्गदर्शक हर एक को फायदा पहुंचाता है:

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने १०० ऊंट और ४ किलो चांदी ग्यारह कबीलों के हर सरदार को दी क्योंकि उसकी उनको ज़रूरत थी। आप (स.) ने अन्सार को दुआ़एं दिया और उनके साथ रहने का वादा फरमाया। यह अन्सार पर आप (स.) का करम था। हालांकि आप (स.) अपने मक्का के मकान में रह सकते थे, लैकिन आप (स.) ने मदीना और अन्सार को मक्का पर प्राथमिकता दी) आखीर में आप (स.) ने अन्सार के लिए दुआ़ फरमायी क्योंकि पैगंबर (स.) की दुआ़ भाग्य भी बदल सकता है। अन्सार के लिए आप (स.) की दुआ़ उनके लिए महानतम खज़ाना थी। इस तरह हर एक को हज़रत मुहम्मद (स.) से फायदा हुआ। एक कामयाब रहनुमा की यह बड़ी खूबी है।

इस घटना की निम्नलिखीत विशेषताएं हैं:

१.आप (स.) ने गोपनीयता (Privacy) का पूरा ख्याल रखा। सबको एक बड़े खैमा (टेंट) में जमा करके आप (स.) ने मामलात को अपने और अन्सार सहाबा (रज़ि) के दरम्यान ही रखा, आम लोगों के सामने बयान करके अन्सार को शरमिंदा नहीं किया।

२.आप (स.) ने सबसे पहले हकीकत को सबपर स्पष्ट कर दिया और गलतफहेमी को दूर कर दिया। उससे एहसानमंद और मोहसीन (उपकारक) कौन है यह सब पर साफ जाहिर हो गया।

३.आप (स.) ने नम्रता को इख्तेयार किया। आप (स.) अल्लाह के रसूल

(बाकी पेज ५६ पर)

१७. कर्मचारिओं (Workers) की कार्यक्षमता कैसे बढ़ाऐं?

- अगर आप के कर्मचारियों और मातेहत (Subordinate) आप की तारीफ करते हैं, आप से मुहब्बत करते हैं फिर भी वह आपका हुक्म नहीं मानते या आपका फैसला कबूल नहीं करते हैं, तो आप उन लोगों को किस तरह कंट्रोल करेंगे और किस तरह उनसे अपनी पैरवी कराऐंगे? कर्मचारियों और मातेहतों को कंट्रोल करने; या उनके प्रभावी मार्गदर्शन के लिए कुछ सुझाव निम्नलिखीत हैं:

तीव्र इच्छा (Burning Desire) ***पैदा करें।:***

- आप ने अपने कॉलेज में बहुत मेहनत से पढ़ाई क्यों की? या आप अपने दफ्तर या कारखाने में बहुत ज्यादा मेहनत से काम क्यों करते हैं?

  आप ने पढ़ाई में सख्त मेहनत की, क्योंकी आपको बड़ी कामयाबी की इच्छा थी, और आप किसी व्यावसायीक (Professional) कोर्स में दाखला चाहते थे। आप अपने दफ्तर या कारखाने में बहोत मेहनत से काम करते हैं क्योंकी आप मुकाबले में दूसरों से आगे रहना चाहते हैं।

  आप की कोई इच्छा थी इसलिए आपने सख्त मेहनत की। जिस चीज़ ने आप को सख्त मेहनत करने पर मजबूर किया वह "इच्छा" थी। और यही कर्मचारी से बिना ताकत के इस्तेमाल के ज्यादा काम लेने का राज़ है।

  अगर आप किसी कर्मचारी या मातेहत में कुछ हासिल करने की तीव्र इच्छा जगा दें तो वह आपकी उम्मीद (Expectation) से ज्यादा मेहनत से काम करेगा। मिसाल के तौर पर अगर आप अपने कर्मचारियों से कहें कि अगर आप की कंपनी की पैदावार आप के ही लाईन की दूसरी कंपनियों से ज्यादा हो जाए तो आप की कंपनी मार्केट लेंडर (Market Lender) के नाम से मशहूर हो जाएगी। इस तरह कंपनी के साथ कर्मचारियों को भी शौहरत और इज्ज़त हासिल होगी और तनख्वाह भी बढ़ेगी। अगर कर्मचारियों में शोहरत और पैसा कमाने की तीव्र इच्छा जाग गई तो वह दिल लगाकर मेहनत करेंगे।

मुकाबला (Competition) ***का माहौल पैदा करें।:***

- अगर आपके कर्मचारी सुस्त हैं, कम काम करते हैं, या उनमें कुछ अच्छा करने की चाह नहीं है। तो कर्मचारियों के दरम्यान मुकाबले का माहौल बनाएं।

  इस बात को आप निम्नलिखीत उदाहरण से समझ सकते हैं।

- एक लोहे कि प्लेट बनाने वाली कम्पनी में कई कच्चा लोहा पिघलाने की भट्टीया थीं। हर भट्टी पर चार या पांच कर्मचारी काम करते थे। हर भट्टी से हर दिन कर्मचारियों का एक समुह (Group) कभी चार कभी पांच प्लेटस बनाता था।

  मालीक ने हर भट्टी के करीब एक काला बोर्ड लगवा दिया। और एक दिन जिस भट्टी से सबसे ज्यादा माल बना था उसकी मात्रा लिख दी। दूसरे दिन हर भट्टी पर काम करने वाले समुह ने यह कोशिश की कि वह बाज़ी मार ले जाए और बोर्ड पर लिखी गई मात्रा से ज्यादा माल बना कर दिखाएं। दूसरे दिन करीब करीब सभी ने लिखी हुई मात्रा से कुछ ज्यादा या कुछ कम माल तैयार किया। मगर यह रोज़ की पैदावार की मात्रा से २०% से २५% ज्यादा था। लोगों में जब मुकाबले का माहौल बना तो हर एक को काम करने का उद्देश्य और हौसला मिला। उससे कम्पनी का माहौल भी खुशगवार रहता है और पैदावार (Production) भी ज्यादा होती है।

  स्कूल और कालिजो में सबसे ज्यादा नंबर से पास होने वाले बच्चो को इनाम से नवाजा जाता है। इन्हें इज्जत और अहेमियत दी जाती है। उस तकरीब का मक्सद भी लापरवाह बच्चों में अच्छे नंबर से पास होने का जज्बा पैदा करना होता है। इस तरह फौज में निशानेबाजी, घोडसवारी, दौड वगैरा के मुकाबले कराए जाते है। ताकि फौजियों में भी बेहतरीन कारगदर्गी का जज्बा पैदा हो। एक दुसरे से मुकाबला करने की जब वह मिश्क करें तो अपने आप उनका निशाना और सेहत अच्छी हो और फौजी सलाहीयत और नखरे।

- धार्मिक किताबों के अध्ययन से हमें पता चलता है कि हज़रत मुहम्मद (स.) के सहाबा कराम (रज़ि) भी मुकाबले का माहौल पैदा करते थे ताकि उनकी फौजी और जिस्मानी क्षमता में बढ़ौतरी हो और उसके साथ उनका जीवन स्वस्थ और आनंदित हो। ऐसी कुछ रिवायात निम्नलिखित हैं।

- हज़रत आएशा (रज़ि) कहती हैं कि "मुझसे हज़रत मुहम्मद (स.) ने २ बार दौड़ में मुकाबला किया तो एक बार मैं आप (स.) से बढ़ गयी। दूसरी बार आप (स.) मुकाबला जीत गए।"
  (अबु दाऊद, इब्ने माजा, बा-हवाला हदीस नबवी हदीस २३६, पेज १२६)

- हज़रत आएशा (रज़ि) फरमातनी हैं कि मस्जिदे नबवी के सेहेन में हबशी (Negro) भाला फेंकने का अभ्यास कर रहे थे। हज़रत मुहम्मद (स.) ने मेरे लिए आड़ फरमा लिया, और में आप (स.) की आड़ में आप (स.) के पीछे से देखती रही और बराबर देखती रही। और आप (स.) उस वक़्त तक आड़ किए रहे जब तक कि में खुद ऊब नहीं गई।
  (बुखारी, बा-हवाला हदीस नबवी हदीस २३४, पेज १२६)

- हज़रत सलमा बिन अकु (रज़ि) फरमाते हैं कि एक दिन हज़रत मुहम्मद (स.) बनी अस्लम के एक कबीले में तशरीफ लाए, और वह लोग उस वक़्त बाज़ार में आपस में तीर अंदाज़ी (का अभ्यास) कर रहे थे। हज़रत मुहम्मद (स.) ने उनको इस हालत में देखा तो बहुत खुश हुए और इरशाद फरमायाः "ऐ बनी इस्माईल (अ.स.)! (यानी ऐ अरबों!) तीर अंदाज़ी करो, क्योंकि तुम्हारे बाप (हज़रत इस्माईल (अ.स.) तीरंदाज थे, और में उस कबीले के साथ हुँ (यानी उस वक़्त बनी अस्लम के जो दो पक्ष आपस में तीर अंदाज़ी का अभ्यास कर रहे थे, आप (अ.स.) ने उनमें से एक पक्ष का नाम लेकर इरशाद फरमाया की इस अभ्यास मे मैं इस पक्ष की तरफ हुँ) लैकिन दूसरे पक्ष ने अपने हाथ रोक लिए। (यानी जब हज़रत मुहम्मद (स.) एक पक्ष की तरफ हो गए तो मुकाबिल पक्ष ने तीर अंदाज़ी से अपने हाथ खींच लिए) हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमायाः "तुम्हे क्या हुआ? (यानी तुम ने तीर फेंकने क्यु बंद कर दिए?)" उन्होंने कहाः "हम इस स्थिति में कैसे तीर अंदाज़ी कर सकते हैं

जब की आप फलाँ पक्ष के साथ हैं।" (यानी हमें यह गवारा नहीं है की हम आप (स.) की तरफ तीर फेंके।) हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमायाः "अच्छा तुम तीर अंदाज़ी करो में तुम सबके साथ हुँ।"

(बुखारी, बा-हवाला मुन्तखब अबवाब जिल्द १, हदीस ५०६)

- हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर (रज़ि) कहते हैं कि (एक दिन) हज़रत मुहम्मद (स.) ने उन घोड़ों के दरम्यान मुकाबला (घोड़ दौड़) कराया जो प्रशिक्षित (Train) किए गए थे और यह मुकाबला 'हफिया' से शुरू हुआ और 'सनयतुल वीदा' पर खतम हुआ, और उन दोनों स्थानों (यानी हफीया और सनयतुल वीदा) के दरम्यान ६ मील का अंतर था। और जिन घोड़ों को प्रशिक्षित (Train) नहीं किया गया था उनके दरम्यान 'सनयतुल वीदा' से 'मस्जिद बनी जरीक' तक मुकाबला कराया गया और उन दोनों स्थानों (यानी सनयतुल वीदा और मस्जिद बनी जरीक) का दरम्यानी अंतर एक मील था।

(बुखारी व मुस्लिम, बा-हवाला मुन्तखब अबवाब जिल्द १, हदीस ५१५)

- हज़रत बीलाल बिन सईद ताबयी (र.अ.) कहते हैं कि मैंने सहाबा (रजी.) को इस हाल में पाया कि वह (दिन में तीर अंदाज़ी की मश्क के वक़्त) तीर के निशानों के दरम्यान दौड़ा करते थे, और एक दूसरें से हंसी मज़ाक किया करते थे। मगर जब रात होती तो वह अल्लाह से बहोत ड़रने वाले, बहुत बड़े इबादत गुज़ार हो जाते।

(शरहुस्सुन्ना, बा-हवाला मुन्तखब अबवाब जिल्द १, हदीस ८२८)

- हज़रत अनस (रजी.) फरमाते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) के पास एक ऊंटनी थी, जीसका नाम 'अजबा' था और वह कभी पीछे नहीं रहती थी (यानी उसका जीस ऊंट या ऊंटनी से दौड़ मे मुकाबला होता उसको पीछे छोड़कर आगे निकल जाती थी) लैकिन (एक दिन) एक देहाती अपने ऊंट पर आया और (जब उसने अज्बा के साथ अपना ऊंट दौड़ाया तो) उसका ऊंट आगे निकल गया। यह बात मुसलमानों पर सख्त गुज़री तो रसुले खुदा (स.) ने इरशाद फरमायाः "अल्लाह तआ़ला का यह एक अटल फैसला हैं कि दुनिया की जो भी चीज़ सरबुलंद (ऊंची) होती है खुदा उसको पस्त (नीचा) कर देता है।"

(बुखारी, बा-हवाला मुन्तखब अबवाब जिल्द १, हदीस ५१६)

- इसी तरह सहाबा कराम (रजी.) अच्छाई और नेकी में भी एक दुसरे से बढ़ने की भावना रखते थे और उस दिशा में कोशिश भी करते थे। उदाहरण के तौर पर कुछ गरीब सहाबा (रजी.) ने हज़रत मुहम्मद (स.) से शिकायत की "या रसूल अल्लाह (स.)! मालदार सहाबा भी हमारी तरह खूब इबादत करते हैं, मगर वह दान व खैरात भी करते हैं। तो दान व खैरात की वजह से हम उनसे नेकियों में पिछड़ जाते हैं। हम उनसे बराबरी किस तरह करें?

  हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया कि "तुम हर फर्ज नमाज़ के बाद ३३ बार 'सुबहानअल्लाह' ३३ बार 'अलहमदुलिल्लाह' और ३४ बार 'अल्लाहु अकबर' पढ़ लिया करो तो तुम उनके बराबर हो जाओगे।" गरीब सहाबा (रजी.) ने पाबंदी से उसे पढ़ना शुरू किया। मगर जब मालदार सहाबा (रजी.) को यह राज़ पता चला तो वह भी पढ़ने लगे।

  गरीब सहाबा (रजी.) ने फिर हज़रत मुहम्मद (स.) से निवेदन किया कीः "या रसूल अल्लाह (स.)! अब तो मालदार सहाबा (रजी.) भी यह तस्बीह पढ़कर सवाब (नेकी) कमाने में हमारे बराबर हो गए। अब हम दान व खैरात के सवाब (नेकी) की बराबरी कैसे करें?" हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमायाः "माल अल्लाह का करम है वह जिसे चाहता है देता है।" (यानी मालदारों की सवाब में दान की वजह से बरतरी (वर्चस्व) अल्लाह की कृपा से है। और वह जिस पर चाहता है कृपा करता है। आप लोग उसकी कृपा से ही बराबरी कर सकते हो।)

- हज़रत उमर (रजी.) ने तबुक की जंग के मौके पर अपनी क्षमता और अपने बलिदान के मुताबिक अपनी सारी संपत्ति का आधा माल दान कर दिया था और दान करने के बाद दिल में यह चाहा की मैं आज हजरत अबु बक्र (रजी.) से नेकी में आगे बढ़ जाऊं। मगर जब हज़रत अबु बक्र (रजी.) के महान बलिदान का ज्ञान हुआ तो यह कुबूल कर लिया कि हज़रत अबु बक्र (रजी.) से नेकियों में आगे बढ़ना किसी के बस की बात नहीं है।

- सहाबा कराम (रजी.) को अल्लाह तआ़ला ने इस्लाम के प्रचार व प्रसार के लिए चुना था। इबादत करना और इस्लाम को फैलाना ही उनकी जिंदगी का उद्देश्य था। मगर उस मज़हबी जिंदगी में वह राहीबों (सन्यासियों) की तरह नहीं थें। बल्कि जिंदा दिल, बहादूर और जिंदगी को हर तरह से और पूरी तरह से जीकर कामयाब होने वाले थे।

- अगर हम बड़ी कामयाबी हासिल करना चाहते हैं तो किसी बड़े उद्देश्य की तीव्र इच्छा पैदा करें और मुकाबले वाले माहौल की तरह अपनी कारकिर्दगी (Performance) को बेहतर बनाकर आगे बढ़ें। और अपने मुलाजमिन में भी तरक्की की ख्वाहीश पैदा करें और उनके दरम्यान भी मुकाबले वाला वातावरण पैदा करें ताकि वह आपस के मुकाबले में जो काम करें या जब आगे बढ़ें तो फायदा कम्पनी और मुलाजमीन दोनों का हो।

▼▼▼▼▼▼▼

(पेज ५४ से आगे... सफल नेतृत्व का एक सुनहरा उदाहरण)

थे। और उस वक़्त उस क्षेत्र के विजयी बादशाह थें। मगर आप (स.) की बातचीत एक शफीक (मुहब्बत करने वाले) पिता की तरह थी, ना की एक विजयी बादशाह की तरह।

४.आप (स.) ने अन्सार नौजवानों की गलतफहेमी को दूर किया और उन्हें इस बात का एहसास दिलाया कि वह नुकसान में नहीं बल्कि फायदे में है।

५.आप (स.) ने लोगों को वह चीज़ें दी जो उनकी जरूरत थी, नए मुस्लिमों को माल और दौलत और सच्चे पक्के मुसलमानों को अपने पास रहने का शुभ अवसर दिया। यानी आप (स.) ने हर एक का फायदा किया।

गोपनियता (Privacy) का खयाल रखना, हकिकत की बुनीयाद पर बहेस (Discussion) करना, नम्रता इख्तेयार करना, गलतफहेमी को दूर करके नकारात्मक ख्याल को लोगों के दिमाग़ से निकालना, और सबका फायदा करना यह रहनुमायी (Leadership) के सुनहरे उसूल हैं। और नबी करीम (स.) उन उसूलों पर खुद अमल करके उनकी हम सबको सीख दी है।

अल्लाह तआ़ला से दुआ़ हैं कि हमे हज़रत मुहम्मद (स.) को समझने की अकल दे और खुलूस से उनकी पैरवी करने की तौफीक दे। आमीन!

▼▼▼▼▼▼▼

१८. कभी निंदा (मलामत/Criticize) ना करें।

- मनोविज्ञान के अनुसार इन्सान का बुनियादी स्वभाव यह है कि वह हमेशा खुद को किसी दूसरे या तमाम इन्सानों के मुकाबले में महान, बेहतर, सही, इज्ज़तदार, कुशल, और ऊंचा वगैरा वगैरा समझता है। इसलिए जब हम किसी इन्सान को मलामत करते हैं (बुरा भला कहते हैं), या पराजित करते हैं, या उसको अपमानित करते हैं, या उसे ताना देते हैं, या झगडते हैं, तो वास्तव में हम उसके घमंड (अहंकार), उसकी बड़ाई (महिमा), उसके सही होने को, उसके आत्मसम्मान को और उसकी कुशलता को ललकारते हैं।

  ऐसी स्थिति में अगर वह व्यक्ति गलत भी हो तो उसका आत्मसम्मान और अहंकार (Ego) जख्मी होता है। और अपनी गलती कुबूल करने के बजाए वह बगावत करता है, या अपनी गलती दुरूस्त करने के बजाय उसकी वकालत करता है, और ढीट बनकर दोबारा वही गलती करता है। इसलिए मनोविज्ञान के अनुसार किसी को अपमानित नहीं करना चाहिए, ना झिडकना चाहिए, ना बुरा भला कहना चाहिए, ना ही बहस (Arguments) में किसी को सब के सामने हराना चाहिए। अकेले में अगर उसकी गलती को अच्छे तरीके से समझाया जाऐ, सकारात्मक व्यवहार अपनाया जाए और उसे सुधार के लिए राज़ी किया जाए तो परिणाम बहुत आशाजनक होंगे।

- निम्नलिखीत कुरआ़न करीम की आयात और हदीसों से भी यह सिद्ध होता है कि इस्लाम के अनुसार भी मलामत (Critisize) करना अच्छा नहीं है:

- अल्लाह तआ़ला कुरआ़न करीम में इरशाद फरमाता है, "जो अपने गुस्से को रोकते और लोगों के कसूर (गलतियां) माफ करते हैं, अल्लाह तआ़ला ऐसे नेक काम करने वालों को दोस्त रखता है।"

  (सूरह आले इमरान आयत १३४)

- मोमीनों! कोई कौम (समुदाय) किसी कौम का मज़ाक न उड़ाए। संभाव है कि वह लोग उनसे बेहतर हों। और ना औरतें औरतों का (मज़ाक उड़ाएं) संभव हैं कि वह उनसे अच्छी हों। और अपने (मोमीन भाई) को ऐब (दोष) ना लगाओ और ना एक दूसरे का बुरा नाम रखो। ईमान लाने के बाद बुरा नाम रखना गुनाह है। और जो तौबा ना करे वह ज़ालिम (गुनाहगार) है। (सूरह हुजुरात आयत ११)

- "हज़रत अनस (रज़ि) फरमाते है, मैं ने हज़रत मुहम्मद (स.) की दस साल सेवा की लैकिन इस अवधि में आप (स.) ने मुझ से बेज़ारी और नफरत का कोई शब्द कभी नहीं कहा। और अगर मुझसे कोई गलती हो गई तो आप (स.) ने यह नहीं पुछा की तुमने यह गलती क्यो की। और जो काम मुझे करना चाहिए था मैंने नहीं किया तो आप (स.) ने कभी नहीं कहा के तुमने यह काम क्यों नहीं किया।"

  (बुखारी, बा-हवाला ज़ादे राह हदीस ३१४)

- हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि) कहते हैं कि ''जो अल्लाह का बंदा किसी अल्लाह के बंदे की सतरपोशी (दोष पर परदा डालना) करेगा अल्लाह उसकी कयामत में परदा पोशी करेगा (दोष पर परदा डालेगा)।''

  (मुस्लिम, बा-हवाला ज़ादे सफर, जिल्द १, हदीस २२४)

- हज़रत आएशा (रज़ि) फरमाती हैं की हज़रत मुहम्मद (स.) हजरत अबू बक्र सिद्दीक (रज़ि) के पास एक दिन इस हाल में पहुंचे कि जब वह अपने कुछ गुलामों पर लान तान कर रहे थे (बुरा भला कह रहे थे)। हुज़ूर (स) उनकी तरफ मुतवज्जा हुए और फरमाया, "सिद्दीक होकर लान तान?" (यानी यह हरकत तुम्हारी सिद्दीकियत से मेल नहीं खाती) कसम है काबा के रब की ऐसा बिल्कुल नहीं हो सकता कि सिद्दीक का लकब पाने वाला मोमिन लान तान करे। तो हज़रत अबू बक्र (रज़ि) ने उन तमाम गुलामों को आज़ाद कर दिया जिन पर वह लानतान कर रहें थे, फिर हज़रत मुहम्मद (स.) की सेवा में हाजिर हुए और कहा, तौबा करता हुँ अब मुझसे यह गलती फिर ना होगी।"

  (मिश्कात, ज़ादे राह, हदीस ३६०)

- हज़रत अबू बक्र (रज़ि) कहते हैं, हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया, "वह व्यक्ति स्वर्ग में ना जाएगा जो अपनी सत्ता और अधिकार को गलत तरीके से इस्तेमाल करता हो।" (नौकरों और गुलामों पर सख्ती करता हो) लोगों ने कहा "ऐ अल्लाह के रसूल क्या आप (स.) ने हमें नहीं बताया था के दूसरी उम्मतों के मुकाबले में इस उम्मत में यतीम (अनाथ) और गुलाम ज्यादा होंगे।" आप (स.) ने फरमाया, "हां, मैंने तुम्हें यह बात बताई है, फिर भी तुम लोग उन यतीमों और गुलामों के साथ वैसा ही बरताव करो जैसा अपनी औलाद के साथ करते हो, उनको वह खाना खिलाओ जो तुम खाते हो।" लोगों ने पुछा "हमको दुनिया की कौनसी चीज़ (आखीरत में) लाभ पहुँचाएगी?" आप (स.) ने फरमाया, "वह घोड़ा जीसे तुम थान पर बांध कर खिलाओ ताकी उसपर सवार होकर अल्लाह की राह में जिहाद करो। तुम्हारा गुलाम तुम्हारी जगह काम करता है उससे अच्छा सुलूक करो, और वह नमाज़ पढ़ता हो तो वह तुम्हारें अच्छे बरताव का ज्यादा हकदार है।"

  (तरगीब व तरहीब, अहमद व इब्ने माजा व तिरमिज़ी, बा-हवाला ज़ादे राह हदीस ७४)

- हज़रत अब्दुल्ला बिन उमरू बिन आस (रज़ि) का बयान हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ना तो बदमिज़ाज थे और ना ही बुरी बातें आप (स.) जुबान से निकालते थे। (बुखारी, मुस्लिम, बा-हवाला ज़ादे राह हदीस ३१३)

- पुराने ज़माने में जाफरान (केसर) का खुश्बु की तरह इस्तेमाल किया जाता था। लैकिन जब कपड़ों को जाफरान के पानी में भीगोया जाता है तो पूरे कपड़े जाफरानी रंग में रंग जाते हैं। सोने के जेवर पेहनना और जाफरानी रंग के कपड़े इस्तेमाल करना मर्दों के लिए हराम हैं लैकिन औरतों को इज़ाजत है।

  एक बार एक व्यक्ति गहरे पीले रंग के कपड़े पहनकर हज़रत मुहम्मद (स.) की महफिल में आया और आप (स.) से कुछ सवाल पूछकर चला गया। उसके जाने के बाद आप (स.) ने अपने सहाबा करा़म (रजी.) से फरमाया की तुम्हें अपने भाई को समझाना चाहिए था। (यानी उस रंग के कपड़े पहनने से मना करना चाहिए था।)

व्याख्याः अगर हज़रत मुहम्मद (स.) ने खुद उसकी गलती दुरूस्त फरमायी होती तो हो सकता है उस व्यक्ति को शरमिंदगी महसुस हुई होती। लैकिन अगर सहाबा कराम (रजी.) में से किसी ने दोस्ताना तौर पर उस की गलती की निशानदेही की होती तो यकिनन उसकी भावनाएं जख्मी नहीं होतीं।

- यानी हज़रत मुहम्मद (स.) किसी का दिल दुखाने से इतना परहेज किया करते थे कि तमाम लोगों के सामने किसी की ऐसी सुधारणा नहीं फरमाते कि वह सारे लोगों के सामने शरमिंदा हो जाए। बल्कि हिकमत (भले तरीके) के साथ इस तरह सुधारणा फरमाते की उस व्यक्ति की प्रतिष्ठा (वक़ार) बाकी रहे।

गलतीयां माफ करें और अपनी इस्लाह का मौका दे।

- ऐलाने मक्का रसूल (स.) के जानी दुश्मन थे। उन्होंने नबी करीम (स.) को मक्का में कत्ल करने की कोशिश की लेकिन नाकाम रहे। जब आप (स.) ने मदीना हिजरत फरमायी तो उन्होंने मदीना पर हमला किया लेकिन शिकस्त पायी। हिजरत के तिन साल बाद उन्होंने अपनी पुरी ताकद से मदीना पर चढ़ाई कि। रसूल (स.) चाहते थे कि मदीना शहर में रहते हुए मदीना शहर का द फा किया जाए। लेकिन सहाबा अकरम (रजी.) ने जोर डाला की शहर से बाहर जाकर मुकाबला किया जाए। जिसके लिए आप (स.) राजी हो गए। जबकि दुश्मन के तिन हजार सिपाहीयों के मुकाबले में सिर्फ ७०० मुजाहिदीन थे। फौज के पुश्त को हमलावरों से बचाने के लिए आप (स.) ने हजरत जाबिर मिन नोमान अन्सारी (रजी.) के साथ ५० तिरंदाजो को एक छोटी पहाडी पर तैनात फरमाया और सख्ती से हिदायत फरमायी की उस मुकाम से किसी भी हालत में ना हटे। इब्तिदा में मुस्लिम मुजाहिदीनने दुश्मन को शिकस्त दी और जब वह फरार हो गए तो मुजाहिदीन ने माले गनीमत जमा करना शुरू किया चुंकी जंग खत्म हो गयी थी इसलिए बहुत से तिरंदाज उस पहाडी से हट गए हज़रत अब्दुल्ला (रजी.) इन्हें रोकने की बहुत कोशिश की लेकिन उन्होंने उनकी एक ना सुनी और वहां से हट गए। जब दुश्मनों ने देखा की फौज की पुश्त पर तिरंदाज नही है। तो उन्होंने पुश्त से दुबारा हमला कर दिया तो उन्हे मुजाहिदीन बेखबर मिले। उससे जंग की हालत बदली। बहुत से मुजाहिदीन शहीद हुए, जंग में शिकस्त हुई और नबी करीम (स.) बहुत जख्मी हुए। उस शिकस्त की वजह वह ५० तिरंदाज थे। अपनी नाफरमानी की वजह से होने वाली शिकस्त से वह इतने शरमिंदा थे की नबी करीम (स.) से छुपते फिरते थे। नबी करीम (स.) ने उन्हें ना इन्हें फटकारा, ना ताना दिया और ना सजा दी। बल्कि मुहब्बत और शफक्कत से उन्हें माफ फरमाया। अल्लाह तआला ने नबी करीम (स.) के उस बरताव की तारीफ मंदर्जाजेल अल्फाज में फरमायी।

- ऐ मुहम्मद (स.)! खुदा की मेहरबानी से तुम्हारी इब्तीदा मिजाज इन लोगों के लिए नर्म वाक्या हुई है और अगर तुम बदखु और सख्त दिल होते तो यह तुम्हारे पास से भाग खडे होते तो उनको माफ कर दो और उनके लिए खुदा से मगफिरत मांगो और अपने कामों में उनसे मश्वरा लिया करो। और जब किसी काम का अजाम मुस्मम कर लो तो खुदा पर भरोसा कर लो बेशक खुदा भरोसा रखने वालो पर दोस्त रखता है। (सूरह आले इमरान आयत १५९)

खुलासाः

- अगर आप एक कामयाब मालिक या मॅनेजर या लीड़र बनना चाहते हैं तो कभी किसी को ज़लील (अपमानित) मत किजीए, ना किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाइए। अगर किसी मुलाजिम या सहयोगी की सुधारणा करनी हो तो अकेले में इस तरह बात किजीए की उसकी प्रतिष्ठा (वक़ार) बाकी रहे और सामने वाले को अपनी गलती भी समझ में आजाऐ।

  सारी दुनिया के सामने खरीखरी सुनाकर या ज़लील (अपमानित) करके आप कभी किसी को अपना वफादार (Faithful) दोस्त या सहयोगी या मातेहत (Subordinate) नहीं बना सकते, सिर्फ दुश्मन पैदा कर सकते हैं। इसलिए कारोबार में कामयाबी के साथ अगर आप एक बुलंद चरित्र वाला, प्रभावी मालिक या लीड़र बनना चाहते हैं तो हिकमत के साथ (भले तरीके से) बातचित करें। और किसी को सारी दुनिया के सामने ना अपमानित करें ना मलामत करें।

(पेज ६२ से आगे... लोगों को उनके सही नामों से ....)

(इसका मतलब यह है कि कोई भी किसी को बुरे नाम और बुरे लकब से ना पुकारे। यह एक बेहद गंदा अमल और बुरी आदत है।)

- उम्मुल मोमिनीन हज़रत सुफिया (रज़ि.) का कद छोटा था। एक मरतबा हज़रत मुहम्मद (स.) हज़रत आएशा (रज़ि.) से किसी विषय पर बातचीत फरमा रहे थे। जब की हज़रत सूफिया (रज़ि.) वहाँ मौजुद न थीं। बातचीत के दौरान हज़रत आएशा (रज़ि.) ने हज़रत सुफिया (रज़ि) का हवाला दिया और उनका नाम लेने के बजाय हाथ से इशारा किया कि वह पस्त कद (छोटा कद/नाटी) औरत। हज़रत मुहम्मद (स.) ने नाराज़गी ज़ाहिर की और फरमाया, "तुम्हारा इशारा इतना बुरा था कि अगर उसे समंदर में डाल दिया जाए तो तमाम समंदर बदबूदार हो जाए और पानी का मज़ा कड़वा हो जाए।" (अबू दाऊद)

(इसका मतलब यह है कि किसी को बुरे नाम से पुकारना बुरा तो है ही किसी को इशारे से बुरा ज़ाहिर करना भी बुरा है।)

१८. तन्कीद (आलोचना/Criticize) का सही तरीका

- इन्सान से गलती तो होती ही है और हमारे लिए यह भी जरूरी हो जाता है कि उनकी सुधारणा करे। तो हमें यह काम किस तरह करना चाहीए।

  विद्वान कहते हैं की इन हालात में हमें ऐसा तरीका इख्तियार करना चाहिए की मुखालिफ व्यक्ति अपनी गलती समझ जाए और अपनी गलती दुरूस्त करे, मगर वह ना जिल्लत महसूस करे ना शरमिंदगी और ना उसके जज़्बात मज्रूह हों।

  निम्नलिखीत मिसालों से हम हज़रत मुहम्मद (स.) से यह फलसफा (Philosophy) सीख सकते हैं:

- हज़रत मुहम्मद (स.) के मदीना की हिजरत (स्थानांतरण) के समय हज़रत अली (रज़ि) बिल्कुल नौजवान (२३ बरस कि उम्र के) थे। हिजरत के बाद हज़रत मुहम्मद (स.) ने हज़रत अली (रज़ि) की अपनी प्यारी बेटी हज़रत फातिमा (रज़ि) से शादी का इंतेजाम फरमाया। अरब में एक से अधिक औरतों से शादी करने का आमा रिवाज था। इसलिए अबू जहल के रिश्तेदार हज़रत अली (रज़ि) के पास अबू जहैल की बेटी से दुसरी शादी का पैगाम लेकर आए, जिससे हज़रत अली (रज़ि) ने हाँ तो नहीं कहा मगर साफ इन्कार भी नहीं किया। जब हज़रत मुहम्मद (स) को इस बात का पता चला तो आप (स.) ने यह बात पसंद नहीं फरमायी क्योंकी अबू जहल मक्का का सबसे बड़ा कमीना आदमी था और हज़रत मुहम्मद (स.) को हमेशा तकलीफ देता था। दूसरी शादी का पैगाम इसलिए भी हो सकता था की हज़रत मुहम्मद (स.) की बेटी को अबू जहल की बेटी तकलीफ पहुँचाए।

  हज़रत मुहम्मद (स.) हज़रत अली (रजी.) को डांट सकते थे कि उन्होंने उस पैगाम से साफ इन्कार क्यों नहीं किया। लैकीन आप (स.) ने रचनात्मक कार्यप्रणाली का इस्तेमाल फरमाया। मस्जिद में आप (स.) ने खुत्बा दिया और हज़रत अली (रजी.) की दूसरी शादी के पैगाम का हवाला दिए बगैर फरमाया की इस्लाम का एक आम कानून यह हैं कि पैगंबर की बेटी और मज़हब के दुश्मन की लड़की की शादी किसी मुस्लिम से एक साथ नहीं हो सकती। (कुरआ़न करीम की सूरह बक़रा की आयत २२१ का अर्थ भी है कि मुश्रिक (मूर्तीपूजक) औरतों से जब तक कि ईमान न लाए मुसलमान मर्द निकाह नहीं कर सकता।) जब हज़रत अली (रजी.) को यह मालूम हुआ तो आपने फौरन अबू जहल की बेटी से निकाह करने से इन्कार कर दिया। मगर हज़रत मुहम्मद (स) ने हज़रत अली (रजी.) की इस तरह सुधारणा फरमायी की उन्हें पता भी न चला और उनकी सुधारणा भी हो गई।

- जब हज़रत मुहम्मद (स.) ने सफा पहाड़ी की चोटी पर 'काबा' के करीब इस्लाम के प्रचार का पहला भाषण फरमाया तो अबू लहब ने जनता के सामने आप (स.) को बुरा भला कहा और बद्दुआ दी। अबू लहब की बीवी भी हमेशा हज़रत मुहम्मद (स.) को तकलीफ पहुँचाने की कोशिश करती थी इसलिए अल्लाह तआ़ला ने कुरआ़न करीम में सूरहे लहब नाज़िल फरमायी और दोनों पर लानत मलामत की।

  इसलिए जब कोई मुसलमान सूरहे लहब की तिलावत करता है तो वह प्रत्यक्ष रूप से अबू लहब और उसकी बीवी पर लानत करता है। अल्लाह तआ़ला ने अबू लहब की बेटी को तौफीक दी, उसने इस्लाम कुबूल किया और मदीना हिजरत की। मदीना मुनव्वरा में कुछ औरतों ने कहा जब कोई सुरहे लहब की तिलावत करता है तो अबू लहब और उसकी बीवी पर लानत-मलामत करता है। ऐसे मलऊन की बेटी को जन्नत कैसे मिल सकती है? जब अबू लहब की बेटी तक यह खबर (अफवा) पहुंची तो वह दुखी हुई और निराश होकर हज़रत मुहम्मद (स.) से इस बात की शिकायत की। हज़रत मुहम्मद (स.) उन औरतों को बुलाकर फटकार सकते थे जिन्होंने यह अफवा फैलायी थी। लैकिन आप (स.) ने एक सकारात्मक और रचनात्मक तरीके को इख्तेयार फरमाया। आप (स.) ने मस्जीद में खुत्बा दिया और फरमाया की अगर कोई सच्चे दिल से इस्लाम कुबूल करता है तो अल्लाह तआ़ला उसके तमाम पिछले गुनाहों को माफ कर देता है। और हर बंदा अपने गुनाहों की सज़ा पाएगा न कि दूसरे के गुनाहों की। और कयामत के दिन हज़रत मुहम्मद (स.) को इज़ाजत होगी कि वह अपने कबीले (खानदान) की मग्फिरत (माफी) की अल्लाह तआ़ला से निवेदन करें। और अबू लहब की बेटी भी हज़रत मुहम्मद (स.) के खानदान से तालुक रखती है इसलिए कोई उसे मलऊन या जहन्नमी ना समझे। इस खुत्बे से अबू लहब की बेटी की हिम्मत बढ़ी, उसके सम्मान में बढ़ौतरी हुई और मदिना की औरतों ने बुरा माने बगैर उससे नफरत करना खत्म कर दिया।

- मुनाफिकीन (कपटाचारी) मदीना के मुसलमानों को बदनाम करते थें ताकि वह कम हिम्मत हों और खुद को अपमानित समझें। हज़रत मुहम्मद (स.) उन्हें सज़ा दे सकते थे लैकिन आप (स.) ने रचनात्मक कार्यप्रणाली इख्तियार फरमायी। आप (स.) ने उन्हे सिर्फ ईश्वरीय प्रकोप की चेतावनी (Warning) दी ताकी वह बगैर किसी सज़ा और जिल्लत (अपमानता) के अपनी इस्लाह (सुधारणा) करें।

- जंग में विजय के बाद दुश्मन से जीते हुए माल में से ८०% मुजाहिदीन में बांट दिया जाता है और २०% अल्लाह और उसके पैगम्बर (स.) का हक होता है। वह इसे जहाँ चाहें खर्च करें। हुनैन की जंग के बाद हज़रत मुहम्मद (स.) ने अपने उस हिस्सा से मक्का के वह सरदार जो नए मुसलमान हुए थे उनकी हिम्मत अफ्जाई की थी और कुछ ज्यादा तोहफे दिए थे। मदीना के कुछ नौजवानों को यह बुरा लगा, और उनके मुंह से कुछ ऐसी बातें निकलीं जो उनकी शान के खिलाफ थीं।

  हज़रत मुहम्मद (स.) ने सारे अन्सार सहाबा (रज़ि) को बुलाकर नरमी और प्यार से जो बातें कीं तो उससे ना सिर्फ उन्हें अपनी गलती का एहसास हुआ बल्कि आप (स.) की मुहब्बत के जज़्बे से वह इस कदर मगलुब हुए के सारे सहाबा (रज़ि) के आंखों से आंसु जारी हो गए। (इस रिवायत की तफ्सील हम विषय नंबर १५ में पढ़ चुके हैं।)

  तो हज़रत मुहम्मद (स.) का आलोचना और सुधार का तरीका बहोत ही सकारात्मक था। आप (स.) कभी किसी को अपमानित न करते ना बेइज्जत करते। आप (स.) मानवता के लिए 'रहमतुल लिल आलमीन' हैं। जिंदगी के हर क्षेत्र में आप की ही शिक्षा पर अमल करके कामयाबी हासिल कि जा सकती है।

▼▼▼▼▼▼▼

२०. नाराज़गी कैसे ज़ाहिर करें?

- कभी कभी नाराज़गी ज़ाहिर करना ज़रूरी हो जाता है। आइये हम यह जानने की कोशिश करें की हज़रत मुहम्मद (स.) कैसे नाराज़गी ज़ाहिर करते थे।

- हज़रत मुहम्मद (स.) का मामूल था कि जब भी सफर से वापस आते तो सबसे पहले हज़रत फातेमा (रज़ि.) से मिलने उनके घर जाते। हज़रत अब्दूल्लाह इब्ने उमर की रिवायत है कि एक बार आप किसी सफर से वापस आए और हज़रत फातेमा (रज़ि.) से मिलने उन के घर गए। मगर जब उनके घर पहुंचे तो घर के दरवाजे पर डिज़ाइन वाला रंगीन परदा लटका हुआ था। आप (स.) फौरन हज़रत फातेमा (रज़ि.) से मिले बिना दरवाजे से ही वापस हो गए। जब हजरत फातेमा (रज़ि.) को पता चला तो वह बहोत परेशान हुंई और हज़रत अली (रज़ि.) को वजह मालुम करने के लिए आप (स.) के पास भेजा। हज़रत अली (रज़ि.) हज़रत मुहम्मद (स.) की सेवा में हाज़िर हुए और कहा कि, "ऐ अल्लाह के रसूल (स.) हज़रत फातेमा (रज़ि.) को बड़ा गम है इस बात का की आप (स.) हमारे यहाँ गए और हज़रत फातेमा (रज़ि.) से नहीं मिले।" तो आप (स.) ने फरमाया "मुझे दुनिया से क्या दिलचस्पी? मुझे रंगीन डिज़ाइन वाले परदों से क्या मतलब?" रावी कहते हैं की हज़रत अली (रज़ि.) हज़रत फातेमा (रज़ि.) के पास गए और रसूल अल्लाह (स.) ने जो कुछ फरमाया था वह हज़रत फातेमा (रज़ि.) को बताया। हज़रत फातेमा (रज़ि.) ने हज़रत अली (रज़ि.) से कहा, जाइये अल्लाह के रसूल (स.) से पूछीए के वह मुझे इस परदे के बारें में क्या हुक्म देते हैं। तो हज़रत मुहम्मद (स.) ने हज़रत अली (रज़ि.) से फरमाया कि "जाओ हज़रत फातेमा (रज़ि.) से कह दो कि उस पर्दे को फलाँ के घर भेज दें।" (ताकी कुर्ता वगैरा बनाकर औरते पहेन ड़ालें, शायद वह जरूरतमंद थे)।(मस्नद अहमद बिन हम्बल (रज़ि.), बा-हवाला ज़ादे राह, हदीस ३३२)

तश्रीह (व्याख्या): दरवाज़े पर रंगीन परदे का लटकाना इस्लामी कानून में गुनाह नहीं है, लैकिन दुनिया की तरफ बढ़ने की निशानी ज़रूर है। और हज़रत मुहम्मद (स.) अपने ज़माने के ईमान वाले मर्दो और औरतों को कयामत तक आनेवाले मोमिनीन और मोमिनात के लिए नमुना बनाना चाहते थे, इसलिए आप (स.) ने नापसंदगी का इज़्हार फरमाया।

(आप (स.) ने प्रत्यक्ष रूप से उस पर मलामत नहीं फरमायी बल्कि अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करने के लिए हज़रत फातेमा से मिले बगैर अपने घर लौट गए।)

- हज़रत अबु हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है, हज़रत मुहम्मद (स.) ने कभी खाने पर एतराज नहीं किया और उसमें किड़े नहीं निकाली। अगर आप (स.) का जी चाहता तो खाते, नहीं जी चाहता तो नहीं खाते।

(मुत्तफिक इलैहू, बा-हवाला ज़ादे राह, हदीस ३३३)

- हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) कहती हैं, हज़रत मुहम्मद (स.) उनके यहां तश्रीफ रखते थें, आप (स.) ने एक नौकरानी को बुलाया, यह उम्मुल सलमा (रज़ि.) की नौकरानी थी। उसने आप (स.) के पास पहुँचने में देर लगाई तो हज़रत मुहम्मद (स.) के चेहरे मुबारक पर गुस्से के आसार ज़ाहिर हुए। उम्मे सलमा (रज़ि.) ने उसे महसूस कर लिया तो वह परदे के करीब उठकर गईं और नौकरानी को खेलते हुए पाया। जब वह नौकरानी आयी, तो आप (स.) ने फरमाया "अगर कयामत के दिन तेरे बदला लेने की आशंका मुझको ना होती तो इस मिसवाक (लकड़ी की दातून) से मैं तुझे मारता।" उस वक़्त आप (स.) के हाथ में मिसवाक थी। (अल अदबूल मुफरद, बा-हवाला ज़ादे राह, हदीस ३४६)

(मिसवाक एक ६ इंच की छोटी सी नर्म लकड़ी का टुकड़ा होता है। उससे अगर किसी को मारा जाए तो भी कितनी चोट लगेगी? आप (स.) का यह एक प्यार भरा नाराज़गी ज़ाहिर करने का अंदाज था। वरना आप (स.) ने अपनी पूरी जिंदगी में कभी किसीको नहीं मारा है।)

- हज़रत अबु हुरैरा (रज़ि.) फरमाते हैं की (एक दिन) हम कुछ सहाबा बैठे हुए आपस में तकदीर (भाग्य) के मस्ले पर बहस और चर्चा कर रहे थे कि रसूल अल्लाह (स.) आ गए और हमें बहस और चचा में मश्गुल देखा तो आप (स.) ने हमसे पूछा के किस विषय पर बहस कर रहे हो। हमने कहा तकदिर (भाग्य) पर। तकदिर (भाग्य) के शब्द सूनते ही आप (स.) को इतना गुस्सा आया की चेहरा लाल हो गया और लाल भी ऐसा की जैसे अनार के दानों का पानी आप (स.) के गालों में निचोड़ दिया गया हो। और फिर आप (स.) ने (हमें संबोधित करते हुए) इरशाद फरमाया "क्या तुम्हें इस बात पर मामूर (made responsible) किया गया है? और तुम्हारे दरम्यान क्या मैं इसलिए पैगम्बर बना कर भेजा गया हुँ? बेशक तुम से पहले (कुछ उम्मतों) के लोग इस तक्दीर (भाग्य) के मसले में बहस और चर्चा करने की वजह से नष्ट हुए थे। देखो मैं तुमको कसम देता हुँ (फिर) तुमको कसम देता हुँ (आइंदा फिर कभी) इस मस्ले में बहस और चर्चा मत करना।"

(तिरमिजी, इब्ने माजा, बा-हवाला मुन्तखब अबवाब जिल्द १, हदीस ६२)

- इस्लाम क़ुबूल करने से पहले हज़रत वहशी (रज़ि.) ने रसूल अल्लाह (स.) के चाचा हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) को उहद की जंग में शहीद कर दिया था। हज़रत मुहम्मद (स.) अपने चाचा से बेहद मुहब्बत फरमाते थे और उनका बड़ा एहतराम करते थे। जब हज़रत वहशी (रज़ि.) इस्लाम क़ुबूल करने तश्रीफ लाए तो हज़रत मुहम्मद (स.) ने उनसे हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) की शहादत की तमाम तफसील पूछी। जब हज़रत मुहम्मद (स.) तफसीलात (Details) सुन रहे थे तो आप (स.) की आंखों से आंसू जारी थे। जब हज़रत वहशी (रज़ि.) ने हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) की शहादत की तमाम तफसीलात सुना दीं तो हज़रत मुहम्मद (स.) (अरब के बादशाह) उनसे बदला ले सकते थे, लैकिन उनको कत्ल करने के बजाए आप (स.) ने उन्हें माफ फरमा दिया, और सिर्फ इतना फरमाया "क्या तुम खुद पर इतना काबू रख सकते हो कि मुझ से अपना चेहरा छुपाए रखो।" (सही बुखारी, जिल्द २, पेज ५८३)

- हज़रत आऐशा सिद्दीका (रज़ि.) फरमाती हैं, हज़रत सूफिया (रज़ि.) (हज़रत मुहम्मद (स.) की बीवी जो पहले यहूदी धर्म से थीं।) का ऊंट बीमार हो गया था, और हज़रत जैनब (रज़ि.) के पास एक अधिक ऊंट था, तो हज़रत मुहम्मद (स.) ने हज़रत जैनब (रज़ि.) से कहा की

"सुफिया (रज़ि.) को एक ऊंट दे दो।" हज़रत जैनब (रज़ि.) की जुबान से निकला "भला में उस यहूदीया को अपना ऊंट दूंगी?" उस पर हज़रत मुहम्मद (स.) बहुत गुस्सा हुए और हज़रत जैनब (रज़ि.) से जिल्हज्जा, मोहरम और सफर (तीन इस्लामी महीनों) के कुछ दिनों तक संबंध बंद किए रखा। (अबू दाऊद, बा-हवाला जादे राह, हदीस ३२७)

- एक बार हज़रत उमर (रज़ि.) नबी करीम (स.) की मैहफिल में कहीं से तौरात लाए और उसे खोल कर कुछ पढ़ने लगे। नबी करीम (स.) का चेहरा गुस्से से सुर्ख होते देखकर हज़रत अबु बकर (रज़ि.) ने हज़रत उमर (रज़ि.) को टोका जब हजरत उमर (रज़ि.) की नजर नबी करीम (स.) के गुस्से से सुर्ख चेहरे पर पडी तो फौरन अपनी गलती का एहसास किया। तौरात बंद किया और कहा मैं अल्लाह के रब होने और इस्लाम के दीन होने और मुहम्मद (स.) के नबी होने पर खुश (राजी) हूँ।

  नबी करीम (स.) ने फरमाया के अगर हजरत मुसा (अलै.) भी आज जिंदा होते तो उनकी भी नीजात मेरे ही दीन पर चलने से होती। (तिरमीजीः ३/१४१, अहमद ४/३३८)

- हजरत उसामा (रज़ि.) हजरत जैद (रज़ि.) के बेटे थे और चुंके हजरत जैद (रज़ि.) को नबी करीम (स.) ने बेटा बनाया था। इसलिए हजरत उसामा (रज़ि.) नबी करीम (स.) के पोते की तरह थे। और नबी करीम (स.) आपसे बेइंतेहा मुहब्बत करते थे। किसी गज्वे में हजरत उसामा (रज़ि.) की एक गैर मुस्लिम से तलवार से लढाई हो रही थी। जब गैर मुस्लिम हारने लगा तो उसने जान बचाने के लिए कलमा पढना शुरू कर दिया। हजरत उसामा (रज़ि.) ने उस कलमा पढने को जान बचाने की चाल समझा और हारते हुए गैर मुस्लिम को कत्ल कर दिया। मदीना पहुँचकर किसीने उस वाक्यात का जिक्र नबी करीम (स.) से कर दिया। नबी करीम (स.) बहुत गुस्सा हुए और हज़रत उसामा (रज़ि.) से सख्ती से पुछा के तुमने ऐसा क्यों किया? क्या तुमने उसका दिल चीर कर देखा था की वह जान बचाने के लिए कलमा पढ रहा है? और नहीं देखा तो फिर तुमने उसपर यकीन क्यों नही किया? आप (स.) हजरत उसामा से इतने सख्ती से बाज परस कर रहे थे की हजरत उसामा (रज़ि.) यह चाह करने लगे की काश में आज ही पैदा हुआ होता ताकी मुझसे यह गलती न हुई होती। (मुन्तख्ब अबवाब)

- गज्वे हुनैन के वाक्या में हमने देखा के जब नबी करीम (स.) फराखदिली के साथ ११-६ मुस्लिम सरदारों को बहुत ज्यादा चांदी और उंट तख्सिम किए तो उसे देखकर अन्सार नौजवानों के मुंह से कुछ नाशुकरी के अल्फाज निकल गए। जो नबी करीम (स.) पर ना गवार गुजरा। आपने अपने गुस्से पर सबर किया और उन नौजवानों की सारी गलतफैमीयां बातचीत के जरिए दूर कर दिया। (सिरते अहमद, मुज्तबा, जिल्द ३ सफा २७३, अज शहा मस्बाहुद्दीन शकील)

- एक मरतबा रसूल अक्रम (स.) मदीना के एक रास्ते से गुजर रहे थे। तो आप (स.) ने एक नए मकान पर शानदार गुम्बद देखा। आप (स.) ने दरयाफत फरमाया, यह क्या है? एक सहाबी (रज़ि.) ने अर्ज किया, यह नया मकान अन्सारी मुसलमान का है। रसूल अक्रम (स.) ने खामोशी इख्तीयार फरमायी। जब वह अन्सारी सहाबी (रज़ि.) मस्जिद में आकर नबी करीम (स.) को सलाम करते तो आप (स.) अपना रूख उनसे फेर लेते थे। उस तरह का मामला कई दिनों तक होता रहा। नबी करीम (स.) के उस तरह रूख फेर लेने से उन अन्सारी सहाबी को अहसास हुआ के नबी करीम (स.) उनसे खुश नहीं है। तब उन्होंने एक सहाबी रसूल से नाराजगी की वजह दरयाफत की। सहाबी (रज़ि.) ने फरमाया के रसूल (स.) ने उनके इलाके का दौरा किया था और उनके नए मकान के गुम्बद के बारे में दरयाफत फरमाया था अन्सारी सहाबी (रज़ि.) को उस बात का एहसास हो गया के उनके मकान के शानदार गुम्बद की वजह से रसूल (स.) उनसे नाराज है। इसलिए उन्होंने वह गुम्बद फौरन तुडवा दिया। (मुन्तखब अबवाब)

  इन रिवायात से हमने देखा के हज़रत मुहम्मद (स.) का नाराजगी ज़ाहिर करने का तरीका हानीकारक (Destructive) ना था। बल्की बिल्कुल रचनात्मक (Constructive) था। आप (स.) के रवय्या से सामने वाले पर बिल्कुल स्पष्ट हो जाता की आप (स.) नाराज़ हैं। फिर आप (स.) की नाराज़गी दूर करने के लिए वह खुद आप (स.) की मुहब्बत में अपनी इसलाह (सुधार) कर लेता।

- हज़रत आएशा (रज़ि.) फरमाती हैं, रसूल अल्लाह (स.) ने कभी किसी को अपने हाथ से नहीं मारा, न किसी बीवी को मारा ना किसी नौकर को और ना किसी और को। हां अलबत्ता अल्लाह की राह में जिहाद करते हुए दीन के दुश्मनों को जरूर मारा है। और आप (स.) को कभी कोई तकलीफ नहीं पहुँचाई गयी की आप (स.) ने तकलीफ पहुँचाने वाले से बदला लिया हो। अलबत्ता जब कोई व्यक्ति अल्लाह के आदेशों की खिलाफ वर्जी करता तो खुदा की खातिर उससे बदला लेते (सज़ा देते)। (मुस्लिम, बा-हवाला ज़ादे राह, हदीस ३४६)
- हज़रत आएशा (रज़ि.) फरमाती हैं, जब हज़रत मुहम्मद (स.) को किसी कि बुराई का पता चलता या बदअमली दिखाई देती या गलत बयानी नज़र आती तो उसको सही करने या चेतावनी देते समय किसी व्यक्ति का नाम प्रत्यक्ष रूप से नहीं लेते थे बल्कि आम जनता के लिए नसीहत वाला भाषण फरमाते, ताकी तमाम आवाम विशेषतः वह व्यक्ति खुदको सही कर ले और उसे बेइज्जती का अहसास ना हो।(शिफा, सफा ५२)

(पेज ६२ से आगे... गलतियों के सुधार के लिए....)

जख्मी हुए।

उस पराजय की वजह वह ५० तीरंदाज थे। अपनी नाफरमानी की वजह से होनेवाली पराजय से वह बहोत ही शरमिंदा थें और हज़रत मुहम्मद (स.) से छुपते फिरते थें। लैकिन हज़रत मुहम्मद (स.) ने उन्हें ना ही फटकारा ना ताना दिया और ना ही सज़ा दी बल्कि मुहब्बत और शफ्फकत से उन्हें माफ फरमाया। अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मुहम्मद (स.) के इस बरताव की तारीफ निम्नलिखीत शब्दों में फरमाईः

- "ऐ मुहम्मद (स.) खुदा की मेहरबानी से तुम्हारा मिज़ाज (स्वभाव) उन लोगों के लिए नर्म वाके हुआ है, और अगर तुम बदखु और सख्त दिल होते तो यह तुम्हारे पास से भाग खड़े होते। तो उनको माफ कर दो और उनके लिए खुदा से मग्फीरत मांगो और अपने कामों में उनसे मश्वरा लिया करो। और जब किसी काम का मज़बूत इरादा कर लो तो खुदा पर भरोसा रखो। बेशक खुदा भरोसा रखने वालों को दोस्त रखता है।"

२१. गलतियों के सुधार के लिए किसी को कैसे आमादा (प्रेरित) करें?

- अगर कोई गलती करता है तो एक तरीका यह है कि उसे कहा जाए कि वह गलत है (और उसे खुद से सुधर जाना चाहिए।) दूसरा तरीका यह है की उसमें अपनी गलती के सुधार की चाह या शौक पैदा किया जाए।

  पहले तरीके का अधिकतर उलटा असर होता है। जिसकी आलोचना की गई है और जिसे गलत साबित किया गया है वह अपमानता महसूस करता है, और ढीट बनकर या तो अपनी गलती पर कायम रहता है या फिर और बड़ी गलती करता हैं। लैकिन अगर उसमें सुधार का शौक पैदा किया जाए तो अधिकतर अच्छे परिणाम निकलते हैं।

  किसी को अपनी गलती के सुधार पर आमादा करना या उसमें सुधार का शौक व भावना पैदा करना बड़ा मुश्किल काम है। आइये हम यह हज़रत मुहम्मद (स.) की जीवन शैली से सीखते हैं कि किसी में अपने सुधार के लिए आमादगी या चाह कैसे पैदा की जाए।

- इब्ने खन्ज़ला (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया, "खरीम असेदी बहोत अच्छे आदमी हैं अगर उन के सिर पर बड़े बड़े बाल ना होते और उनका तैह बंद टखनों से नीचे न होता।" जब हज़रत खरीम को हज़रत मुहम्मद (स.) का यह इरशाद मालूम हुआ तो उन्होंने असतरा उठाया और अपने बड़े हुए बालों को कानों तक काट दिया और उसके बाद अपनी लुंगी को आधी पिंडली तक कर लिया।

  (रियाजुस्सालेहीन, बा-हवाला ज़ादे राह, हदीस ३७०)

  हज़रत खरीम असेदी (रज़ि.) ने इस्लाम कुबुल किया लैकिन लंबे बाल रखते थे। (जो हो सकता है उस ज़माने के रिवाज के मुताबिक हो) और एसा लिबास पहनते थे जो टखनों से निचे होता था। उनके दोनों कामों के सुधार की जरूरत थी। लेकीन उन्हें हुक्म देने की बजाय हज़रत मुहम्मद (स.) ने उन्हें शरीफ आदमी बनने के एक आसान तरीके की तरफ इशारा किया। उन्होंने उसे कुबूल किया और फौरन अपना सुधार कर लिया।

गलतियों की निशानदही कैसे करें?

- हज़रत अनस (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) अपनी तबियत की नरमी की वजह से कम ही किसी को सीधे सीधे नापसंदीदा बात पर टोकते थे। एक दिन एक आदमी आप (स.) के पास आया जिसके कपड़ों पर पीलेपन के असरात थे। तो जब वह जाने के लिए उठा तो आप (स.) ने सभा को संबोधित फरमाया "अगर यह साहब पीले लिबास को बदल दें या कपड़े के पीलेपन को कम कर दें तो कितना अच्छा हो।"

  (अल अदबूल मुफर्रद, बा-हवाला ज़ादे राह, हदीस ३३१)

स्पष्टीकरण: आलोचना करना कि यह गलत है या यह हुक्म देना कि इस कपड़े को बदल दो, इसके बजाए हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "यह बेहतर होता कि वह लिबास बदल लेता या रंग की तेज़ी कुछ कम कर लेता।" सुधार के शब्द किसी का अपमान नहीं करते बल्कि दूसरों में सुधार की चाह पैदा करते हैं।

- हज़रत आएशा (रज़ि.) से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने मस्जिद के दरवाज़े पर झगड़ा करने वालों की आवाज़ सुनी। उनकी आवाज़े तेज़ थी। उनमें से एक अपने कर्ज़ को कम कराता था और नर्मी चाहता था और दूसरा कहता था की खुदा की कसम में कम न करूंगा। आप (स.) बाहर निकले और फरमाया कहाँ है अल्लाह पर कसम खाने वाला कि मैं नेकि न करूंगा। उसने कहा में हुँ या रसूल अल्लाह (स.) जो यह चाहे वह उसके लिए है।"(यानी जितनी सहुलत कर्ज लेने वाला मांग रहा है वह उसे उतनी दे रहा है।)

  (मुस्लिम, बुखारी, बा-हवाला ज़ादे सफर जिल्द १, हदीस २३३, पेज १६०)

स्पष्टीकरण: कर्ज़ देकर गरीब की मदद करना बड़ी नेकी है। कर्ज़ देने में दान देने से ज्यादा सवाब है। क्योंकि भिख तो लोग व्यवसाय के तौर पर मांगते हैं मगर कर्ज़ लोग सिर्फ मजबुरी ही में मांगते हैं। गरीबों से नर्मदिली से पेश आना और उन्हें कर्ज की वापसी के लिए ज्यादा समय काल देना भी बड़ी नेकी है। एक रिवायत के मुताबिक कर्ज़ के निश्चित मुद्दत के बाद जो मोहलत दी जाती है तो मोहलत के हर दिन कर्ज की पूरी रकम दान देने के बराबर सवाब मिलता है।

ख़ुदा की कसम खाकर यह कहना कि मैं गरीब को कर्ज़ अदा करने में मोहलत नहीं दुंगा, नेकी ना करने की कसम खाने की तरह है। हज़रत मुहम्मद (स.) ने निशानदेही फरमायी कि आप के कसम खाने का मतलब यह है की आप नेकी नहीं कमाना चाहते और इस बात का कर्ज देने वाले को फौरन एहसास हो गया और यह भी पता चल गया की रसूल अल्लाह (स.) गरीब को कर्ज लौटाने के लिए और ज्यादा मोहलत देना चाहते थे। इसलिए कर्ज देने वाले ने कोई अपमान महसूस किए बिना फौरन अपनी गलती सुधार ली।

- हज़रत आएशा (रज़ि.) फरमाती हैं, रसूल अल्लाह (स.) ने दो आदमीयों के बारे में फरमाया,"मेरा खयाल यह है की फलाँ और फलाँ व्यक्ति हमारे दीन (धर्म) को कुछ नहीं समझते।" (बुखारी, बा-हवाला ज़ादे राह हदीस ३४४)

स्पष्टीकरण: दो लोग जिनका नाम रिकोर्ड नहीं किया गया है संभव है वह मुनाफिकीन (ढोंगी मुसलमानों) में से हों। इसलिए उन्हें अपमानित करने के बजाय हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया की वह दीन से परिचित नहीं हैं। इसलिए उन्हें चाहिए की दीन का ज्ञान हासिल करें और उसपर अमल करें।

शब्दों के बजाए अमल से शिक्षा देना ज्यादा प्रभावित करता है:

- मदीना की ओर हिजरत (स्थानांतरण) के ६ साल बाद हज़रत मुहम्मद (स.) ने उमराह का इरादा किया। आप (स.) अपने १४०० सहाबा कराम (रज़ि.) के साथ मक्का रवाना हुए। जब मक्का वालों को इस बात का पता चला तो उन्होंने हज़रत मुहम्मद (स.) और उनके साथियों से लड़ाई का इरादा किया। मक्का के मुश्रीकीन (मुर्तीपूजकों) ने हज़रत मुहम्मद (स.) और सहाबा कराम (रज़ि.) को न मक्का में दाखिल होने की इजाज़त दी,

और ना ही उमराह अदा करने दिया। हुदैबीया के मुकाम पर लम्बी बातचीत के बाद हज़रत मुहम्मद (स.) और मक्का वालों के प्रतिनिधिओं के दरम्यान एक समझौता हुआ। लैकिन ऐसा नज़र आया की यह समझौता हज़रत मुहम्मद (स.) और सहाबा कराम (रज़ि.) से ज्यादा मक्का वालों की तरफदारी में था। क्योंकि इस समझौते से हज़रत मुहम्मद (स.) और सहाबा कराम (रज़ि.) के मक्का में दाखले पर पाबंदी आयद हुई थी। यह पाबंदी एक साल तक कायम रहने वाली थी। इस समझौते के मुताबिक मक्का वालों में से जो इस्लाम कुबूल करता उसे हज़रत मुहम्मद (स.) पनाह नहीं दे सकते थे। जबकी अगर कोई मुरतद होकर (इस्लाम से मुकर कर) मक्का जाता है तो उसे मक्का में रहने की इजाज़त थी।

हज़रत मुहम्मद (स.) और सहाबा कराम (रज़ि.) अपने साथ कुर्बानी के जानवर लाए थे ताकी उमराह की अदाएगी के वक़्त उन्हें कुर्बान करें। लैकिन उस साल समझौते के मुताबिक वह उमराह नहीं कर सके इस लिए हज़रत मुहम्मद (स.) ने हुक्म दिया की कुर्बानी के जानवर हुदैबिया ही में ज़बाह (कुर्बान) किए जाएं और फिर मदीना वापसी हो।

चूंकि तमाम सहाबा कराम (रज़ि.) ने कुछ समय पहले ही हज़रत मुहम्मद (स.) के साथ मौत तक लढ़ते रहने का वादा किया था ("बैतेरिज़वान" किया था) इसलिए एक तरफा समझौता उनकी समझ में नहीं आ रहा था। इसलिए वह लोग अत्यंत निराश और दिल टूटने जैसी स्थिति में थे। इसलिए किसीने हज़रत मुहम्मद (स.) के हुक्म पर अमल नहीं किया। इन हालात में हज़रत मुहम्मद (स.) को निराशा हुई, क्योंकी आप (स.) ने अल्लाह तआ़ला के हुकुम पर अमल फरमाया था, लैकिन सहाबा कराम (रज़ि.) नहीं समझ सके कि आप (स.) ने ऐसा क्यों किया? (यानी एक तरफा समझौता पर दस्तखत क्यों की?) लैकिन आप (स.) ने सहाबा कराम (रज़ि.) से नाराज़ होने या उनपर गुस्सा होने के बजाए वह किया जिसका वह दूसरों को हुक्म दे रहे थे। यानी आप (स.) ने अपने जानवरों की कुर्बानी खुद अपने हाथों से की।

जब सहाबा कराम (रज़ि.) ने देखा की हज़रत मुहम्मद (स.) अकेले कुर्बानी दे रहे हैं तो उन्हें विश्वास हो गया कि इस साल उमराह की कोई उम्मीद नहीं और उन्हें मदीना लौटना ही है। उन्हें अपनी गलती का एहसास भी हुआ की उन्होंने हज़रत मुहम्मद (स.) की नाफरमानी की। उन्होंने फौरन अपनी गलती की इस्लाह की। और अपने अपने जानवर फौरन कुर्बान कर ड़ाले।

एसा मालुम होता था कि समझौता से मक्का वालों की जीत और हज़रत मुहम्मद (स.) और उनके साथी सहाबा कराम (रज़ि.) की हार हुई। लैकीन अल्लाह तआ़ला कुरआन करीम में फरमाता हैः

"(ऐ मुहम्मद (स.)!) हमने तुमको फतेह दी, फतेह भी शरीह व साफ।"
(सूरह फतह आयत१)

अल्लाह तआ़ला ने उस समझौते को हज़रत मुहम्मद (स.) और उनके सहाबा कराम (रज़ि.) की फतह करार दिया। और यह वाक्या (घटना) एक खुली व साफ विजय थी। क्योंकि इस समझौता के मुताबिक मक्का के कुफ्फार और मुसलमानों को एक दूसरें से मिलने और संबंध कायम करने की बिला रोक टोक इजाज़त थी। और जब दुनिया ने देखा की हज़रत मुहम्मद (स.) और उनके सहाबा कराम (रज़ि.) कैसी पवित्र जिदंगी गुज़ारते हैं। तो वह बड़े प्रभावित हुए और उस समझौता के बाद इस्लाम कुबूल करने वालों की संख्या हुदैबिया की सुलह (शांती-समझौता) से पहले मुसलमान होने वालों की संख्या से बहोत ज़्यादा थी। और इस्लाम अरब में जंगल की आग की तरह फैल गया।

हज़रत मुहम्मद (स.) के सहाबा कराम (रज़ि.) आप (स.) के इतने आज्ञाकारी थे कि वह हज़रत मुहम्मद (स.) के हुक्म पर अपनी जानें कुर्बान करने के लिए हमेशा तैयार रहते थे। लैकिन चूंकी उस वक़्त उस समझौते से वह दुख और सक्ते के स्थिति में थे इसलिए उन्होंने आप (स) की नाफरमानी की, जो उनकी गलती थी। हज़रत मुहम्मद (स.) ने उन्हें फटकारा नहीं बल्कि आप (स.) ने जो हुक्म उन्हें दिया था उसपर पहले खुद अमल फरमाया और सकारात्मक तौर पर उन्हें आमादा फरमाया की अपनी गलती का सुधार कर लें।(सीरते अहमद मुज्तबा (स.)

नौजवानों को किस तरह शिक्षा दी जाए?

- हज़रत अबू उमामा (रज़ि.) फरमाते हैं कि एक बार एक नौजवान हज़रत मुहम्मद (स.) की सेवा में हाजिर हुआ और कहने लगा, "ऐ अल्लाह के रसूल (स.)! मुझे इजाज़त दें कि में नाजायज़ यौन-संबंध कायम करूं। क्योंकि मेरे लिए इस भावना पर काबु पाना बहोत ही मुश्किल है।"

  एक सहाबी (रज़ि.) ने उसे फटकारा की ऐसी नाजायज़ और गुनाह की इजाज़त चाह रहे हो। लैकिन हज़रत मुहम्मद (स.) ने नरमी से उस नौजवान को अपने करीब आने की इजाज़त दी। नौजवान आप (स.) के बिल्कुल करीब आकर बैठ गया, तब हज़रत मुहम्मद (स.) ने उससे पूछा, "क्या तुम अपनी माता से संबंध करना पसंद करोगे?"

  नौजवान ने जवाब दिया, "ऐ अल्लाह के रसूल (स.) में अपनी माता से कभी संबंध करना पसंद नहीं करूगा।"

  हज़रत मुहम्मद (स.) ने जवाब दिया, "लोग भी यह बात पसंद नही करते, और ना वह चाहते हैं कि कोई गैर उनकी माँ से संबंध करे।"

  फिर हज़रत मुहम्मद (स.) ने नौजवान से सवाल किया, "क्या तुम अपनी बहन से संबंध करना पसंद करोगे?"

  नौजवान ने जवाब दिया, "ऐ अल्लाह के रसूल (स.) में अपनी बहन से कभी संबंध करना पसंद नहीं करूंगा।"

  हज़रत मुहम्मद (स.) ने जवाब दिया, "लोग भी यह बात पसंद नही करते, और ना वह पसंद करते हैं कि कोई गैर उनकी बहन से संबंध करे।"

  तब हज़रत मुहम्मद (स.) ने नौजवान से सवाल किया, "क्या तुम अपनी बेटी से संबंध करोगे?"

  नौजवान ने जवाब दिया, "ऐ अल्लाह के रसूल (स.) में अपनी बेटी से कभी संबंध करना पसंद नहीं करूंगा।"

  हज़रत मुहम्मद (स.) ने जवाब दिया, "लोग भी यह बात पसंद नही करते, और ना ही वह पसंद करते हैं कि कोई गैर उनकी बेटी से नाज़ायज संबंध करें।"

  हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "क्या तुम अपनी खाला से संबंध करना पसंद करोगे?"

नौजवान ने जवाब दिया, "ऐ अल्लाह के रसूल (स.) में कभी अपनी खाला (मौसी) से संबंध करना पसंद नहीं करूंगा।"

हज़रत मुहम्मद (स.) ने जवाब दिया, "लोग भी यह बात पसंद नही करते, और ना वह पसंद करते हैं कि कोई गैर उनकी खाला (मौसी) से नाज़ायज संबंध करे।"

तब हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "क्या तुम अपनी फुप्पी से संबंध करना पसंद करोगे?"

नौजवान ने जवाब दिया, "ऐ अल्लाह के रसूल (स.) मैं अपनी फुप्पी (बुआ) से संबंध करना कभी पसंद नहीं करूंगा।"

हज़रत मुहम्मद (स.) ने जवाब दिया, "लोग भी यह बात पसंद नही करते, और ना वह पसंद करते है की कोई गैर उनकी पिता की बहन से नाज़ायज संबंध करें।"

(इसका मतलब यह है की हर औरत मां, बहन, बेटी, मौसी और फुप्पी (बुआ) की तरह आदरणीय है। जिस प्रकार आप उनसे कभी नाजायज संबंध करना पसंद नहीं करते, ना ही आप पसंद करते हैं कि कोई गैर उनसे नाजायज संबंध करे। दूसरों में भी यह एहसास होता है। इसलीए किसी गैर औरत से नाज़ायज संबंध करने की कोशिश और ख्वाहीश ना करें क्योंकी वह भी किसी की मां, बहन, और बेटी की तरह आदरणीय है।)

तब उस नौजवान ने कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल (स.) मुझे अपनी गलती का एहसास हो गया है और में इस गुनाह से बचने की कोशिश करूंगा।"

उसके बाद हज़रत मुहम्मद (स.) ने उस नौजवान के सिने पर हाथ रखकर दुआ फरमायी की, अल्लाह तआ़ला उसके विचारों और भावनाओं को पवित्रता प्रदान फरमाऐं।

हज़रत मुहम्मद (स.) के एक बुढ़े सहाबी (रज़ि.) ने फरमाया की वह नौजवान बुढ़ापे तक बाजार में किसी पराई औरत पर नज़र डालने से भी बचा रहा और किसी वली (अल्लाह वाले) की तरह उम्र भर पवित्र रहा। (मस्नद अहमद)

जाहीलों को समझदारी के साथ नज़रअंदाज करो:

- एक देहाती ने मस्जिद में पेशाब कर दिया तो लोग उसको मारने पीटने के लिए दौड़े। आप (स.) ने फरमाया उसको छोड़ दो, उसके पेशाब पर एक ड़ौल (बाल्टी) पानी ड़ालकर बहा दो, तुम लोग तो इसलिए पैदा किए गए हो कि दीन (धर्म) की तरफ लोगों को खिंचो और दीन को आसान बनाओं। तुम्हे इसलिए अल्लाह तआ़ला ने पैदा नहीं किया है कि लोगों के लिए दीन की तरफ आना मुश्किल बना दो।

(बुखारी, बा-हवाला सफीना नीजात, हदीस ४२५)

सब्र (धीरज) की तल्कीन (सलाह) कैसे करें?

- हज़रत कुरा बिन अयास (रज़ि.) फरमाते हैं, अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (स.) जब नसीहत फरमाते तो आप (स.) के सहाबा (रज़ि.) में से कुछ लोग आप (स.) के पास बैठ जाते, उन बैठने वालों में एक साहब थे जिनका एक छोटा बच्चा था। यह बच्चा हज़रत मुहम्मद (स.) की पीठ की तरफ से आता तो आप (स.) उसको अपने सामने बैठा लेते। फिर ऐसा हुआ की वह बच्चा मर गया, तो बच्चे के बाप उसके दुख में कुछ दिनों तक आप (स.) की बैठक में नहीं आए, तो हज़रत मुहम्मद (स.) ने पुछा "वह फलाँ व्यक्ति क्यों नहीं आते? क्या बात है?" लोगों ने आप (स) को बताया की "उनका छोटा बच्चा जिसे आप (स.) ने देखा था उसका देहांत हो गया (शायद इसी वजह से वह नहीं आ रहें हैं।)" तो हज़रत मुहम्मद (स.) ने उनसे मुलाकात की और बच्चे के बारें में पूछा। जब उन्होंने बताया कि उस बच्चे का देहांत हो गया है तो आप (स.) ने उन्हें तस्सली दी, फिर फरमायाः "बताओं तुम्हे क्या चीज़ पसंद है? क्या यह बात पसंद है कि वह जींदा रहे या यह पसंद है कि वह बच्चा पहले जन्नत में जाए और जन्नत का दरवाजा तुम्हारे लिए खोले और जब तुम पहोंचो तो वह तुम्हारा स्वागत करे।" उस व्यक्ति ने कहा "ऐ अल्लाह के नबी (स.) मुझे यही बात पसंद है कि वह मुझसे पहले जाए और मेरे लिए जन्नत का दरवाजा खोले।" तो आप (स.) ने फरमाया की "यह बच्चा इसलिए तुम्हारी जिदंगी में मरा है ताकी वह तुम्हारे लिए जन्नत का दरवाजा खोले।" (नसाई शरीफ, बा-हवाला ज़ादे राह, हदीस ३३६)

(अपने बच्चे की मौत पर अगर माता-पिता धीरज रखें और अल्लाह तआ़ला से जन्नत की आरजू (इच्छा) करें तो अल्लाह तआ़ला उन्हे उस दुख के तीव्र झटके को बरदाश्त करने पर उमीद है जन्नत अता फरमाएगा।)

हज़रत मुहम्मद (स.) की प्रभावी शिक्षा ने उस सहाबी (रज़ि.) को दुख बरदाश्त करने की योग्यता अता फरमायी।

गलतियां माफ करें और अपनी इस्लाह (सुधार) का मौका दें:

- मक्का वासी, हज़रत मुहम्मद (स.) के जानी दुश्मन थे। उन्होंने हज़रत मुहम्मद (स.) को मक्का में कत्ल करने की कोशिश की लैकिन नाकाम रहे। जब आप (स.) ने मदीना हिजरत फरमायी तो उन्होंने मदीना पर हमला किया लैकिन पराजित हुए। हिजरत (स्थानांतरण) के तीन साल बाद उन्होंने अपनी पूरी ताकत से मदीना पर चढ़ाई की। हज़रत मुहम्मद (स.) चाहते थे कि शहर के अंदर रह कर ही बचाव किया जाए। लैकिन सहाबा कराम (रज़ि.) ने जोर डाला कि शहर से बाहर निकलकर मुकाबला किया जाए, जिसके लिए आप (स.) राज़ी हो गए, जबकी दुश्मन के ३००० सिपाहीयों के मुकाबले में सिर्फ ७०० मुजाहिदीन थे। फौज के पीछे वाले भाग को हमलावरों से बचाने के लिए आप (स.) ने हज़रत अब्दुल्ला बिन जुबैर बिन नोमान अन्सारी (रज़ि.) के साथ ५० तीरंदाजों को एक छोटी पहाड़ी पर तैनात फरमाया और सख्ती से हिदायत फरमायी कि उस मुकाम से किसी भी हालत में न हटें। शुरूआत में मुस्लिम मुजाहिदीन ने दुश्मन को शिकस्त दी और जब वह फरार हो गए तो मुजाहिदीन ने माले गनीमत (युद्ध के बाद फौजियों का पड़ा हुआ सामान) जमा करना शुरू किया। चुंके जंग खत्म हो चुकी थी इसलिए बहोत से तीरंदाज़ उस पहाड़ी से हट गए। हज़रत अब्दुल्ला (रज़ि.) ने उन्हें रोकने की बहोत कोशिश की लैकिन उन्होंने उनकी एक ना सुनी और वहां से हट गए। जब दुश्मन ने देखा की फौज की पीठ पर तीरंदाज नहीं हैं तो उन्होंने पीछे से दोबारा हमला कर दिया और उन्हें मुजाहिदीन बेखबर मिले। उससे जंग की हालत बदली। बहोत से मुजाहिदीन शहीद हो गए, जंग में शिकस्त (पराजय) हुई और हज़रत मुहम्मद (स.) बहोत

(बाकी पेज ६४ पर)

२२. अच्छे काम की सराहना करें और आभार मानें।

अच्छे काम की सराहना करो (तारीफ करो):

- एक लतीफा बयान करता हूँ, गोपाल ने एक हिरे कि अंगुठी खरीदी और उसे अपनी उंगली में पहन लिया। लोगों का ध्यान अपनी तरफ रागीब करने के लिए जब भी वह बात करता अपने हाथ और उंगली को हवा में लहराकर बात करता ताकी लोगों की नजर उसके खुबसूरत अंगुठी पर पडे और लोग उसकी तारीफ करें। लेकिन किसी की भी तवज्जा उसकी अंगुठी की तरफ नहीं गयी।

  आखिर झिलाकर उसने अपने घर को आग लगा दिया। घर जलता देख पडौसी पानी की बालटी हाथ में लेकर आग बुझाने दौड पड़े। गोपाल उनके दरमियान खड़ा हो गया और हाथ और उंगली के इशारे से लोगों को डायरेक्शन देने लगा। यहां पानी डालो वहां की आग बुझाओ वगैरा वगैरा। इसी दरमियान एक शख्स की नजर गोपाल की अंगुठी पर पड़ी और उसने बरजस्ता कहां ''अरे गोपाल तुम्हारी अंगुठी तो बहुत खुबसूरत है।'' गोपाल ने एक ठंडी आह खिंची हुई और कहां ''मेरे दोस्त यही बात तुमने अगर कुछ देर कही होती तो मैं अपने घर को आग क्युं लगाता?''

  यह सिर्फ एक लतीफा था मगर इन्सान की फितरत का सौ फिसद अकासी करता है। इन्सान शनाख्त तारीफ Recognisation वगैरा का भूखा है जैसा के हमने इन्सान के फितरती खामियों के सबक में पड़ा। इसलिए जब कोई मुलाजीम (नौकर) बेहतरीन तरीके से अपने कर्तव्य को अंजाम देता है और उसके काम की कोई सराहना (Appreciation) नहीं की जाती। और जब वह कोई गलती कर बैठे तो उसकी गलती को नज़रअंदाज नहीं किया जाता, बल्कि सब के सामने उसे अपमानित किया जाता है। तो ऐसे हालात में मुलाज़िम बद-दिल हो जाता हैं। बेहतरीन काम करने की उमंग उनमें से खत्म हो जाती हैं और कारोबार पर उसका बुरा प्रभाव पड़ता है।

- इसी तरह कारोबार और समाज में हर व्यक्ति को किसी दूसरे व्यक्ति से कोई ना कोई काम तो ज़रूर निकलता है। अगर एक व्यक्ति दूसरे पर एहसान करे और दूसरा व्यक्ति पहले व्यक्ति के एहसान को भुला दे, और एहसान और शुक्रिया (आभार) का कोई इज़हार या बदल ना दे तो उस हाल में भी एक दूसरे की मदद और एहसान का जज़्बा धीरे-धीरे खत्म हो जाएगा और हर व्यक्ति को तकलीफ होगी।

- इसलिए मुलाजमिन के अच्छे काम को सराहने और किसी के एहसान का शुक्रिया अदा करना तो कारोबार की लाईन से ज़रूरी है ही, यह धार्मिक तौर से भी बेहद ज़रूरी है। निम्नलिखीत आयात और रिवायात इसका सबुत हैं:

- हज़रत फूजाला बिन उबेदा (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरर्शाद फरमाया, "तीन प्रकार के इंसान मुसीबत और आफत हैं":

  १. वह शासक और मुखिया जिसकी अच्छी तरह आज्ञापालन करो तो उसकी कद्र ना करे, और कोई गलती कर बैठो तो माफ ना करे (सज़ा दिए बगैर ना छोड़े)।

  २. बुरा पड़ोसी: अगर तुम उसके साथ भलाई करो तो उसका नाम तक ना ले, कहीं चर्चा ना करे, और बुराई देखे तो हर जगह फैलाता फिरे।

  ३. वह बीवी जो तुम्हें तकलीफ दे, जब तुम घर आओ। और तुम्हारी गैरमौजूदगी में बेवफाई करे। (बदकारी करना और घर की सुरक्षा ना करना अर्थ है।) (तिबरानी, बहवाला जादे राह, हदीस १७७)

  इसलिए अगर आप मालिक या नेता हैं तो दूसरों के लिए मुसिबत ना बनें। अपने कर्मचारियों और मातहतों की बढ़िया कारकिर्दगी की दिल खोलकर तारीफ करें।

  नबी करीम (स.) ने फरमाया अगर तुम लोगों की गलतियां तलाश करने लगोगे तो तुम उनको बिगाड दोगे के वह बेशरम होकर खुल्लमखुल्ला गुनाह करने लगेंगे।

शुक्रगुज़ारी (आभारी होना):

लोगों का शुक्र:

- हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया: "जो अल्लाह तआ़ला की शरण चाहे उसको शरण दो और जो अल्लाह के वास्ते से मांगे उसको दो। और जो अल्लाह के नाम से अमान तलब करे उसको आमान दो। जो तुम्हारे साथ अच्छा बरताव करे उसका बदला दो। अगर बदले की क्षमता ना हो तो उसके हक में इतनी दुआ करो कि तुम को यह महसुस हो कि तुमने उसका बदला चुका दिया।" (अबू दाऊद व निसाई, बा-हवाला हदीस नबवी, हदीस ४०६)

- हज़रत उसामा बिन जैद (रज़ि.) कहते हैं की हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया: "जिस व्यक्ति के साथ अच्छा बरताव किया गया और उसने उस अच्छे बरताव करने वाले से 'जज़ाकल्लाह' कह दिया तो उसने तारीफ का हक अदा कर दिया।"
  (अबू दाऊद, तिरमिज़ी,बा-हवाला हदीस नबवी, हदीस ४१२)

- हज़रत जाबीर बिन अब्दुल्ला (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया: "जिसको कोई अतिया (पैसों की मदद) दिया गया फिर वह मालदार हो गया तो चाहिए कि वह अतिया देनेवाले को उसका बदला दे। अगर वह गरीब ही रहा तो उस देने वाले की तारीफ करनी चाहिए (तो इस तरह से) उसने उसका शुक्र अदा कर दिया। और जिसने उसको छुपाया, खामोश रहा उसने नाशुक्री की।
  (अबू दाऊद, तिरमिज़ी, बा-हवाला हदीस नबवी हदीस ४११)

- हज़रत अबु हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया: "वह अल्लाह का शुक्रगुज़ार नहीं हो सकता जो लोगों का शुक्र अदा ना करता हो।"
  (अबू दाऊद, तिरमिज़ी, बा-हवाला हदीस नबवी, हदीस ४१३)

ख़ुदा का शुक्र

- पवित्र क़ुरआन में अल्लाह तआ़ला फरमाते हैंः

  "और अपने परवरदिगार की निअ़मतों का बयान करते रहना।"
  (सुरहे वज्जुहा, आयत ११)

  "तुम मेरा शुक्र अदा करोगे तो में तुम्हे और ज़्यादा दुंगा।"
  (सुरह इब्राहीम, आयत ७)

- हज़रत अब्दुल्ला बिन उनमर (रज़ि.) का बयान है कि 'हबश' नामक देश (अफ्रीका) का एक आदमी हज़रत मुहम्मद (स.) के पास आया। उसने कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल (स.)!, आप (स.) नबुवत (पैगम्बरी) से सम्मानित किए गए। और आप लोगों को अच्छा रंग भी अल्लाह तआ़ला ने दिया। मुझे बताइयें कि अगर में ईमान लाऊं और अमल करूं तो क्या स्वर्ग में आप (स.) के साथ रह सकुंगा?" नबी करीम (स.) ने फरमाया "वह तमाम लोग जिन्होंने कलमा (وملكاً كبيراً) कहा होगा अल्लाह तआ़ला उन्हें स्वर्ग में मेरा साथ नसीब फरमाएगा। उसने अपनी किताब में इसका वादा किया है (सूरह निसा आयत ६९) और जो व्यक्ति 'सुबहान अल्लाह' कहेगा उसके कर्मपत्र में एक लाख नेकियां लिखी जाएगी, तो किसीने कहां कि, "ऐ अल्लाह के रसूल! (स.) उसके बाद हम लोग किस तरह नरक में जाऐंगे?" (यानी इतनी कम इबादत पर भी जब अल्लाह तआ़ला इतना ज्यादा सवाब देता है तो हमारे गुनाह हमारे सवाब से ज़्यादा किस तरह होंगे?) आप (स.) ने फरमाया, "कसम है उस ज़ात की जिसके कब्जे में मेरी जान है, आदमी कयामत के दिन इतने नेक कर्म लिए हुए आएगा कि अगर वह पहाड़ पर रख दिए जाएं तो पहाड़ भी ना उठा सकें। लैकिन उसका जब मुकाबला होगा अल्लाह की किसी निअ़मत (वरदान) से तो यह निअ़मत उसके सारे आमाल पर भारी होगी (इसलिए नेक कर्मों पर किसी को घमंड नहीं होना चाहिए, अल्लाह तआ़ला की रहमत और उसके फजल (कृपा) और एहसान ही के नतीजे में स्वर्ग मिल सकेगा।)" फिर आप (स.) ने सूरहे दहर कि तिलावत फरमायी। पहली आयत से लेकर ( ) तक जिसमें नाशुक्रों के बुरे अंजाम और स्वर्गवासियों के इनामों का जिक्र हुआ है। यह सुनकर हबशी आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल (स.)! जिस तरह स्वर्ग की निअ़मतों को आप (स.) देख रहें है क्या मेरी आंख भी स्वर्ग में उन निअ़मतों को देखेगी जिनका जिक्र इस सुरहे में हुआ है।" तो आप (स.) ने फरमायाः "हां।" यह सुनकर हबशी रोने लगा यहाँ तक कि उसका देहांत हो गया। अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) कहते हैं कि "मैंने हज़रत मुहम्मद (स.) को उस आदमी को कब्र में उतारते हुए देखा।"
  (तरगीब व तरहीब, बा-हवाला तिबरानी, ज़ादे राह हदीस ४४९)

  यानी बंदा सिर्फ नेकी कमाकर ही स्वर्ग नहीं कमा सकता। उसे अल्लाह तआ़ला का हमेशा शुक्र गुज़ार भी रहेना चाहिए।

▼▼▼▼▼▼▼

नबी करीम (स.) ने फरमाया

१. तुम कर्ज से बचो क्योंकी यह रात का गम और दिन की रूसवाई हैं।
२. तुम्हारे कर्म ही तुम्हारे शासक हैं। जैसे तुम होंगे वैसे ही शासक तुम पर थोप दिए जाऐंगे।
३. तुम दुनिया में इस तरह रहो जैसे तुम परदेसी हो या राह चलने वाले मुसाफिर हो।
४. लोगों की मिसाल उन १०० ऊंटो की है जिनमें सवारी के लायक एक भी ना हो (यानी आम लोगों में नेक व खुदा से ड़रने वाला आदमी एक भी नहीं मिलता)।
५. जो व्यक्ति अपनी तवंगरी (दौलत या इबादत गुज़ारी या ज्ञान) उस चीज़ से जाहिर करे जिसका वह मालिक नहीं है (या जो इसमें मौजुद नहीं है) उसकी मिसाल उस व्यक्ति की तरह है जो झूठ और धोकाबाज़ी के दो कपड़े पहने हो।
६. कोई चीज़ तोहफा देकर वापस लेने वाला ऐसा है जैसे उलटी करके फिर उसको चाट लेने वाला।
७. लोग अपने बाप दादाओं की तुलना में अपने ज़माने से ज्यादा मुशाबा (समान) होते हैं।
८. बेहतरीन दान वह है जो एक तंगदस्त (गरीब) आदमी अपनी ताकत के मुताबिक करे।
९. जितनी जिम्मेदारी होगी उतनी ही मदद उतरेगी (यानी बड़े फॅमिली की वजह से जितना ज्यादा खर्चा होगा अल्लाह तआ़ला की तरफ से उसी के मुताबिक रोज़ी आऐगी।)
१०. लड़कियों को घरों में पाबंद करना इज्ज़त की बात है। क्योंकी लड़कियों का घरों से आज़ादाना निकलना और घुमना फिरना उनके अख्लाक (चरित्र) को तबाह करता है। अख्लाक (चरित्र) की तबाही अपमानकारक है।
११. जिसने बीच का रास्ता अख्तियार कीया वह तंगदस्त नहीं होगा।
१२. मुसलमान को गाली देना गुनाह है और उसको कत्ल करना कुफ्र है।
१३. मुसलमान का मुसलमान पर सब कुछ हराम है (ना वह उसका नाजायज तरीके से माल ले सकता है ना बेइज्जत कर सकता है ना उसकी जान ले सकता है)।
१४. जो रहेम नहीं करता उसपर रहेम नहीं किया जाएगा। तुम उनपर रहम करो जो जमीन पर हैं तुमपर वह रहम करेगा जो आसमानों में है।
१५. किसी के बारे में अच्छा गुमान (अनुमान) एक अच्छी इबादत है।
१६. खुश नसीब वह है जो दुसरों से इबरत हासिल करे।
१७. अपना कौड़ा (मारने की छड़ी) ऐसी जगह लटकाओ जहां से वह तेरे घर वालों को नज़र आता रहें। (यानी आपके घर वाले आप से डरना चाहिए)
१८. आनंद को खतम करने वाली को अधिकता से याद किया करो। (यानी मौत को अधिकता से याद किया करो।)
१९. दुनिया की चाह दुख और गम को बढ़ाती है और बेकारी इन्सान को संगदील (कठोर दिल) बना देती है।
२०. लोग कंघी के दनदानों की तरह हैं (यानी सब बराबर हैं)।
२१. उपर वाला हाथ निचे वाले हाथ से बेहतर हैं। (यानी दान देने वाला लेने वाले से बेहतर है।)
२२. तुम्हारा किसी चीज़ से मुहब्बत करना अंधा बहरा कर देता है। (यानी उसकी खामीयां नजर नहीं आती)।

(जवाहरे हिकमत, मुहम्मद नसरूल्लाह खान खाजिन मजदवी)(इन्कलाब ०२.०९.२००४)

२३. लोगों को उनके सही नामों से पुकारें

• किसी के कान में सबसे मिठी आवाज उसके नाम की होती है। अगर लोगों को उनके सही नाम और सही तलफ्फुज़ (उच्चारण) से पुकारा जाए तो उनका रद्दे अमल (प्रतिक्रिया) बहुत सकारात्मक होता है। इसलिए अगर आप अपने लिए किसीके दिल में जगह बनाना चाहते हैं तो उसका सही नाम और सही तलफ्फुज़ याद रखें। इस्लाम में सही नाम से पुकारने का बड़ा महत्त्व है। निम्नलिखीत आयतों और हदीसों से आप इस बात के कायल हो जाऐंगेः

• हज़रत अबु दर्दा (रज़ि.) कहते हैं की हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया की, "अच्छे नाम रखा करो क्योंकि कयामत के रोज तुम्हें तुम्हारे नामों से और तुम्हारे बाप के नाम से पुकारा जाएगा।"

(मस्नद अहमद, अबू दाऊद, मुन्तखब अहादीस, हदीस ४८६)

• हज़रत आएशा (रज़ि.) फरमाती हैं की, "हज़रत मुहम्मद (स.) अधिकतर अपने साथियों के गलत नामों को बदल दिया करते थे।"

(तिरमिज़ी, मुन्तखब अहादीस, हदीस ४३६)

• अब्दुल्लाह इब्ने उमर (रज़ि.) से रिवायत है किः "हज़रत उमर (रज़ि.) की बेटी का नाम 'आसिया' था। जिस का अर्थ 'गुनहगार' है, जिसे हज़रत मुहम्मद (स.) ने बदलकर 'जमीला' रखा था, जिसका अर्थ 'खूबसूरत' है।"

(सही मुस्लिम, किताबुल आदाब हदीस २१३६, मुन्तखब अहादीस, हदीस ८३७)

• हज़रत हुन्नजला (रज़ि.) बिन अज़ीम कहते हैं किः "हज़रत मुहम्मद (स.) चाहते हैं कि हर एक आदमी को अच्छे और उसके पसंदीदा नामों से पुकारा जाए। अगर वह आदमी चाहता है कि वह अपने बच्चों के नाम के ज़रीए से पुकारा जाए। तो भी उसे उसके बच्चों के अच्छे नाम से पुकारा जाए।" (अल अदबुल मुफर्रद, इमाम बुखारी, इरशाद नबवी कि रौशनी में निज़ामे मआशिरत, हदीस ८१६)

मिसाल के तौर पर हम आम तौर पर कहते हैं किः ऐ फलाँ-फलाँ की माता और फलाँ-फलाँ के पिता। तो ऐसे नाम से पुकारते वक़्त भी अच्छे नाम का खयाल रखें।

• अल्लाह तआ़ला कुरआ़न करीम में फरमाता हैं किः "ऐ इमानवालो! कोई कौम (समुदाय) किसी कौम का मज़ाक ना उड़ाए, संभव हैं कि वह कौम उनसे अच्छी हो, और ना औरते औरतों का मज़ाक उड़ाए, संभव हैं कि वह उनसे अच्छी हों। और आपस में एक दूसरे पर ऐब (दोष) ना लगाओ, और ना किसी को बुरे नाम से पुकारो। ईमान लाने के बाद बुरे नाम से पुकारना गुनाह है और जो तौबा ना करें वह ज़ालिम लोग हैं।"

(सूरह हुजुरात आयत ११)

उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफिहा (रज़ि.) का कद छोटा था। एक मरतबा रसूल (स.) हज़रत आएशा (रज़ि.) से किसी मौजू पर गुफतगु फरमा रहे थे जबकी हजरत सफिहा (रज़ि.) वहां मौजूद न थी। गुफ्तगु के दौरान हज़रत आएशा (रज़ि.) ने हजरत सफिया (रज़ि.) का हवाला दिया और उनका नाम लेने के बजाए हाथ से इशारा किया, वह पस्त कद खातुन। रसूल (स.) ने नाराजगी जाहीर की और फरमाया "तुम्हारा इशारा इतना बुरा था के अगर उसे समुंदर में डाल दिया जाए तो तमाम समुंदर बदबुदार हो जाए और पानी का मजा तल्ख हो जाए। (अबु दाऊद)

(उसका मतलब यह है की किसीको बुरे नाम से पुकारना बुरा तो है ही किसीको इशारे से बुरा जाहिर करना बुरा है।)

नामों के प्रभावः

• हज़रत अब्दुल हमीद बिन झुबैर बिन शिबा (रज़ि.) कहते हैं कि (एक दिन) मैं हज़रत सईद बिन मसय्यब के पास बैठा था कि उन्होंने मुझसे यह बात बयान कीः मेरे दादाजी (जीन का नाम हिज़्न था) हज़रत मुहम्मद (स.) कि सेवा में हाज़िर हुए, तो आपने पूछा "तुम्हारा नाम क्या है?" उन्होने कहाँः "मेरा नाम हिज़्न (सख्त मिज़ाज) है।" हज़रत मुहम्मद (स.) ने (सुनकर) फरमायाः "(हिज़्न कोई अच्छा नाम नहीं है) बल्कि तुम सहल हो (यानी मैं तुम्हारा नाम सहल रखता हुँ।)" मेरे दादा ने कहाः "मेरे बाप ने मेरा जो नाम रखा है मैं उसको बदल नहीं सकता। हज़रत सईद बिन मस्सयब (र.अ.) ने फरमाया (इस 'हिज़्न' नाम की वजह से) अब तक हमारे खानदान में लोग गरम मिज़ाज हैं।"

(बुखारी, मुस्लिम, मुन्तखब अबवाब जिल्द १, हदीस ८५७)

• एक मरतबा एक ऊंटनी को दौहने (दूध निकालने) की ज़रूरत पेश आयी। हज़रत मुहम्मद (स.) ने चाहा की कोई रज़ाकार (स्वयंसेवक) यह काम करे। उस काम को करने के लिए एक व्यक्ति ने अपने आप को पेश किया। हज़रत मुहम्मद (स.) ने उसका नाम पुछा। उसने अपना नाम 'मररा' बताया जिसका मतलब 'तेज़' है। आप (स.) ने उसे बैठ जाने के लिए कहा। फिर एक दूसरा व्यक्ति खड़ा हुआ। उसने अपना नाम 'हरब' बताया जिसका मतलब 'जंग' है। हज़रत मुहम्मद (स.) ने उसे भी बैठ जाने के लिए कहा। फिर तीसरे आदमी ने अपनी सेवा पेश की जिसका नाम 'युएश' था जिसका अर्थ 'जिंदा रहना' और 'जिंदा' था। हज़रत मुहम्मद (स.) ने उसे इजाज़त दी कि ऊंटनी का दूध दौहे। (मुअत्ता)

• एक जमीन ऐसी थी जिसमें कोई चीज़ नहीं उगती थी, लोगों ने उसका नाम 'हिज़रा' (बंजर जमीन) रख दिया था। हज़रत मुहम्मद (स.) ने उसका नाम बदलकर खिजरा (हराभरा और ताज़ा) रख दिया। थोड़े दिनों के बाद वह जमीन हरीभरी और ताज़ी हो गयी।

(जन्नत की कुंजी सफहा १७७)

बुरे नामों (अल्काब) से ना पुकारोंः

• हज़रत आऐशा सिद्दीका (रज़ि.) फरमाती हैं, हज़रत सुफिया (रज़ि.) (हज़रत मुहम्मद (स.) की बीवी जो पहले यहूदी मज़हब से थी।) का ऊंट बीमार हो गया था, और हज़रत जैनब (रज़ि.) के पास एक अधिक ऊंट था। तो हज़रत मुहम्मद (स.) ने हज़रत जैनब (रज़ि.) से कहा की "सुफिया (रज़ि.) को एक ऊंट दे दो।" हज़रत जैनब (रज़ि.) की जुबान से निकला "भला में उस यहूदिया को अपना ऊंट दुंगी?" उस पर हज़रत मुहम्मद (स.) बहुत क्रोधित हुए और हज़रत जैनब (रज़ि.) से जिल्हज्जा, मोहरम और सफर के कुछ अय्याम तक बातचीत बंद किए रखा। (अबू दाऊद, बा-हवाला ज़ादे राह, हदीस ३२७, पेज २८८)

(बाकी पेज ६४ पर)

२३. दरमियानी (Moderate) रास्ता इख्तियार करें

अल्लाह तआ़ला कुरआन शरीफ में फरमाता हैः

- ''ऐ मुहम्मद (स.) हमने तुमपर कुरआ़न इसलिए नहीं उतारा कि तुम मश्क्कत (मुश्किलात) में पड़ जाओ।'' (सूरह ताहा आयत ०२)

- "खुदा तुम्हारे लिए तो आसानी चाहता है। और सख्ती नहीं चाहता।" (सूरह बक़रा आयत १८५)

- "खुदा किसी व्यक्ति पर उसकी ताकत से ज्यादा बोझ नहीं ड़ालता।" (सूरह बक़रा २८६)

- "ऐ अहले किताब! अपने दीन की बात में हद से ना बढ़ो और खुदा के बारे में हक के सीवा कुछ ना कहो। (सूरह निसा आयत १७१)

  (शादी शुदा जिंदगी ना गुज़ारना पादरियों के वर्ग के लिए एक बड़ा धार्मिक काम है, मगर यह काम धर्म में हद से आगे बढ़ना है। क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने धर्म में कभी यह उसूल लागू नहीं किया।)

- ''न तो अपना हाथ गरदन से बाँध रखो (यानी बहोत तंग करलो की किसी को कुछ दो ही नहीं) और न उसे बिलकुल ही खुला छोड़ दो कि (सभी कुछ दे डालो और) निन्दित और बेबस बनकर रह जाओ।'' (सूरह बनी इस्राईल आयत २६)

- अल्लाह तआ़ला अपने नेक बंदों के गुण कुरआ़न करीम में इन शब्दों में बयान करता हैः

  "और वह जब खर्च करते हैं तो ना बेजा (व्यर्थ) उड़ाते हैं और ना तंगी को काम में लाते है। बल्कि संतुलन के साथ (न ज़रूरत से ज़्यादा न कम)।" (सूरह फुरकान आयत ६१)

- ऊपर दी गई आयात से यह ज़ाहिर होता हैं कि अल्लाह तआ़ला दरमियानी रास्ते पर चलने वालों को पसंद फरमाता है और उनकी प्रशंसा करता है। और यही संतुलन व्यापार में कामयाबी के लिए भी बहुत ही महत्वपूर्ण है।

- हज़रत अब्दुल्ला इब्न उमर (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया "खर्च में बीच का रास्ता इख्तियार करना आधी मईशत (Good Economy) है, और लोगों से मेल मुहब्बत रखना आधी अक़लमंदी है और अच्छा सवाल करना आधा ज्ञान है।" (बेहकी, मुन्तखब अबवाब जिल्द १, हदीस ११३१)

  इसका अर्थ है कि अच्छी मईशत (अर्थव्यवस्था) का राज़ मियाना रवी (Moderate) से खर्च करने में छिपा हुआ है। अच्छे लोगों से मेलजोल सही और ऊंची अक्लमंदी की अलामत (प्रतिक) है, हमारा अच्छे सवालात का पुछना ज्ञान हासिल करने को आसान कर देता है। यानी जब योग्य और सही सवाल किया तो योग्य और सही जवाब भी मिलेगा। इससे मुश्किल बात भी समझ में आ जाएगी।

  सिर्फ माली लेन देन में ही नहीं बल्कि जिंदगी के हर क्षेत्र में, मियाना रवी या दरमियानी रास्ता ही जिंदगी में कामयाबी का बेहतरीन रास्ता है। इसकी कुछ मिसालें निम्नलिखित हैं।

- हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) के मुताबिक हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "नेक आमाल, अच्छे अख्लाक और एअ्तदाल पसंदी (दरमियानी रास्ता) पैगंबरी का २५ वा हिस्सा है।" (अबू दाऊद)

- हज़रत जुबैर बिन समरा (रज़ि.) के मुताबिक हज़रत मुहम्मद (स.) की दुआ़ छोटी होती और इसी तरह खिताब (भाषण) भी छोटा होता था। (मुस्लिम)

- उम्मूल मोमिनिन हज़रत आएशा (रज़ि.) कहती हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) मेरे कमरे में तशरीफ लाऐ और उस वक़्त उनके (यानी हज़रत आएशा (रज़ि.) के पास एक औरत मौजूद थी। आप (स.) ने पूछा की "यह कौन है?" हज़रत आएशा (रज़ि.) ने फरमाया, "यह फलाँ औरत है जिनकी इबादत (नमाज़ों) का चर्चा आम है, (यानी यह की वह बहोत नमाज़े पढ़ती है।)" आप (स.) ने फरमायाः "ऐसा ना करो, तुम इतना करो जितना हमेशा कर सकती हो। अल्लाह तआ़ला (सवाब देने से) नहीं उक्ताएगा, तुम इबादत से उक्ता जाओगी। अल्लाह तआ़ला को वही दीनदार पसंद है जिसमें मुदावमत (पाबंदी) हो।" (बुखारी, मुस्लिम, हदीस नबवी ४३६ पेज २०२)

- उम्मुल मोमिनिन हज़रत आएशा (रज़ि.) कहती हैं की हज़रत मुहम्मद (स.) को जब दो कामों में अधिकार का मौका होता तो गुनाह ना होता तो आसान काम इख्तियार फरमाते। और अगर गुनाह होता तो सबसे ज्यादा आप (स.) उससे दूर रहते। और अपने नफ्स के लिए कभी इंत्तेकाम (बदला) नहीं लिया। अगर अल्लाह तआ़ला कि हुरमतों (हराम की हुई चीज़ों) में से कोई बात होती तो अल्लाह तआ़ला के लिए इंत्तेकाम (बदला) लिया। (बुखारी, मुस्लिम, हदीस नबवी हदीस ३५७ पेज १६६)

- उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा (रज़ि.) फरमाती हैं कि अल्लाह के नबी हज़रत मुहम्मद (स.) ने हमेशा ऐसा काम किया जिसके अंदर सुविधा थी। कुछ लोगों ने उन सहुलत वाले अमल को कम दर्जा का समझ कर ना अपनाया। हज़रत मुहम्मद (स.) को उनके इस अमल की खबर पहोंची, तो आप (स.) ने अल्लाह की हम्द और सना (प्रशंसा) बयान की फिर फरमायाः "लोगों को क्या हो गया है, कि वह उस अमल से बचते है, जिसको में करता हुँ, खुदा की कसम मैं उनसे ज़्यादा अल्लाह को जानने वाला और डरने वाला हुँ।" (बुखारी, हदीस नबवी, हदीस ३१ पेज ४६)

स्पष्टीकरणः यानी लोगों के आसान रास्ते और आसान अमल को छोड कर मुश्किल इबादत वाली जीवन शैली अपनाने को आप (स.) ने नापसंद फरमाया। हज़रत मुहम्मद (स.) ने शादी शुदा जिंदगी गुजारी। आप (स.) की दुआ़ छोटी होती थी। रात के कुछ हिस्से में आप (स.) इबादत फरमाते थे। आप (स.) आम महीनों के कुछ दिनों में रोज़ा ही रखते थे। आप (स.) लगातार रोज़ा नहीं रखते थे। जबकि आप (स.) के कुछ सहाबा कराम (रज़ि.) ने राहिबों (सन्यासियों) की तरह शादी नहीं करने का इरादा किया। तमाम रात इबादत भी करनी चाही और लगातार रोज़ा रखना चाहा। हज़रत मुहम्मद (स.) ने इस बात को नापसंद

फरमाया और सहाबा कराम (रज़ि.) को हिदायत फरमायी कि एक संतुलित जिंदगी गुजारें और दरमियानी रास्ता इख्तियार करें।

- हज़रत उमेमा बिन रकीका (रज़ि.) फरमाती हैं, मैंने कुछ औरतों के साथ हज़रत मुहम्मद (स.) के सामने दीन और दीन के आदेशों पर अमल करने का अहद (प्रतिज्ञा) किया, तो आप (स.) ने हमसे अहद (प्रतिज्ञा) लेते वक़्त फरमायाः "जितना तुम्हारे बस में हो जहां तक तुमसे हो सके (उतना ही अमल करना।)" मैंने कहाः "अल्लाह और उसके पैगम्बर हज़रत मुहम्मद (स.) हम पर उससे ज्यादा मेहरबान हैं जितना हम अपने ऊपर मेहरबान हो सकते हैं।"

(मिश्कात, ज़ादे राह, हदीस ३६४ पेज २४८)

- हज़रत अब्दुल्ला बिन मसुद (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "कोई बंदा अपना पूरा रिज्क (रोज़ी) खाए बगैर नहीं मरेगा। जो अल्लाह तआ़ला ने उसकी पूरी जिंदगी के लिए निश्चित फरमाया है। इसलिए सावधानी बरतो और अल्लाह तआ़ला से डरो और माल और दौलत कमाने में भी दरमियानी रास्ता इख्तियार करो। दौलत हासिल करने में अगर देर हो तो तुम्हे उसे हासिल करने के लिए कोई नाज़ायज रास्ता इख्तियार नहीं करना चाहिए। तुम अपनी इच्छा के मुताबिक वह हासिल नहीं कर सकते जो खुदा के नियंत्रण में है। इसका मतलब यह है की तुम खुदा की खुशनूदी के बगैर दौलत हासिल नहीं कर सकते।"

(बेहकी)

- हज़रत अली (रज़ि.) ने फरमाया, "सम्मानपूर्ण जिंदगी गुजारने के लिए हमेशा दरमियानी रास्ता इख्तियार करो और ऐतेदाल पसंद रहो क्योंकी ऐतेदाल पसंद व्यक्ति कभी दिवालिया नहीं होता।"

  निम्नलिखित पांच कामों में संतुलन से सुकून और खुशहाली मिलती हैः

  १) खाने में संतुलन से बढ़िया सेहत बनती है।

  २) खर्च में संतुलन से अच्छी माली हैसियत बनती है।

  ३) काम में संतुलन से लंबी उम्र मिलती है।

  ४) बातचीत में संतुलन से इज्जत और वकार (प्रतिष्ठा) मिलती है।

  ५) फिक्र में संतुलन से आत्मविश्वास बढ़ता है।

- हज़रत अबु हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमायाः "तुम में से किसीका अमल उसको निजात नहीं दिला सकता। सहाबा (रज़ि.) ने अर्ज कियाः "और आप का अमल भी निजात नहीं दिला सकता?" इरशाद फरमाया "और ना मैं अपने अमल से निजात पा सकता हूँ सिवाय इसके कि अल्लाह तआ़ला अपनी रेहमत से ढक ले। लिहाजा मियाना रवी इख्तियार करो और तौसत और एअ्तदाल से काम लो और सुबह और शाम और रात के कुछ हिस्से में बंदगी करो (नमाज़ पढ़ो)। राहे एअ्तदाल पर हमेशा कायम रहो, मंज़िले मक्सूद पर पहोंच जाओगे।" (अदबुल मुफरद उर्दू, तरजुमा जिल्द १, हदीस ४६१)

- हज़रत इब्ने मसूद (रज़ि.) कहते हैं, हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमायाः अपनी तरफ से दीन में सख्ती करनेवाले बरबाद हो गए। आप (स.) ने तीन बार यही इरशाद फरमाया।

(मुस्लिम, उर्दु रियाजूल स्वालेहिन जिल्द अव्वल, हदीस १४४)

धार्मिक शिक्षाएं जिंदगी गुज़ारने का बहुत आसान तरीका सीखाती हैं। कुछ लोग जान बुझकर उसे मुश्किल बनाते हैं और उसपर वह अमल करने की कोशिश करते हैं। और ऐसे लोग अंत में नाकाम होते हैं। राहीबों (सन्यासियों) की जिंदगी उसकी बेहतरीन मिसाले हैं। जो सारी जिंदगी शादी नहीं करते और ज्यादा से ज्यादा रोजे रखते हैं, बीमारियों में अपना इलाज नहीं करते हैं, सारी सारी रात इबादत करते है वगैरा। यह उनकी जिंदगी के नमूने हैं जो खुद अपने आप से खुद पर दीन को सख्त करते है और नाकाम होते हैं।

अपने मामलात में संतुलन रखो:

हज़रत उमर बिन खित्ताब (रज़ि.) ने फरमायाः "तुम्हारी मुहब्बत ऐसी न हो कि दिल और जान से फिदा हो जाओ और ना ही तुम्हारी दुश्मनी और नफरत किसी को मिटा देने वाली हो।"

(इरशादे नबवी की रोशनी में निजामे मुआशिरत, अदबुल मुफरद की उर्दू शरह जिल्द २, पेज १३२२)

(क्योंकि भविष्य में आप का दोस्त आपका दुश्मन बन सकता है और आपका दुश्मन दोस्त बन सकता है। उस वक्त आप अपने रवय्ये पर पछताऐंगे।)

▼▼▼▼▼▼▼

(पेज ६८ से आगे... अस्सलाम अलैकुम को बढ़ावा दें)

फरमायाः तीन व्यक्ति ऐसे है जो अल्लाह तआ़ला की ज़िम्मेदारी में है। अगर जिंदा रहे तो उन्हें रोज़ी दी जाएगी और उनके कामों में मदद की जाएगी और अगर उन्हें मौत आ गयी तो अल्लाह तआ़ला उन्हें स्वर्ग में दाखिल फरमाऐंगे। एक वह जो अपने घर में दाखिल होकर सलाम करें। दूसरे वह जो मस्जिद में नमाज पढ़ने के लिए जाए तिसरे वह जो अल्लाह तआ़ला के रास्ते में निकलें।(इब्ने हुबान, बा-हवाला मुन्तखब अहदीस, पेज ६६१)

आर्थिक खुशहाली के लिए अमल:

- हज़रत सहल बिन सअद (रज़ि.) फरमाते हैं कि एक व्यक्ति आप (स.) की सेवा में आया, गरीबी व भूखमरी और रोज़ी की तंगी की शिकायत की। आप (स.) ने उससे फरमाया जब तुम अपने घर में दाखिल हो तो सलाम करो चाहे कोई हो या ना हो, फिर मुझपर सलाम भेजो।

  الصلوٰة والسلام علىٰ رسول الله صلى الله عليه وسلم

  फिर एक बार 'सूरह इख्लास' पढ़ो।

  चुनांचे उसने ऐसा ही किया। अल्लाह पाक ने उसपर रोज़ी की बारिश फरमादी, यहाँ तक की वह करीबी रिश्तेदारों और पड़ोसियों पर भी बहाने लगा।

  (अल-कौलुल बदीअ़, पेज १२४, बा-हवाला ज़ाद ए मोमिन, पेज१६० लेखकः मौलाना मुनीर)

खुलासा :

- घर से निकलते वक्त और घर में दाखिल होते वक्त सलाम करें।
- आफिस पहुंचकर और ऑफिस से बाहर निकलते वक्त सबको सलाम करें।
- अपने वर्कर को पहले खुद सलाम करें। कुछ दिनो बाद वह शरमाकर आपको सलाम करना शुरू करेंगे।
- जब आप अपने वर्कर और मातेहतों को सलाम करना शुरू करेंगे तो आप में से बड़ा हूँ यह घमंड टूटेगा। आप बड़े नहीं हैं यह अल्लाह तआला जिसने आपको मालिक और किसीको आपका मातेहत बनाया है। अल्लाह तआला उसका उलटा करने पर भी कादीर है। इसलिए अपना तक्कबुर कंट्रोल में रखने के लिए अपने से छोटों को सलाम करने में पहल करें।
- सलाम को रवाज देने से आप के घर में और ऑफिस में एक मुहब्बत भरा और पूरनुर माहौल पैदा होगा। जो रिज्क में बरकत का बाइस होगा।

▼▼▼▼▼▼▼

२५. अस्सलाम अलैकुम को बढ़ावा दें।

व्यापार में अच्छी अख्लाक (आचरण) और तवाज़ो (Good Manners) बड़ा महत्व रखते हैं। इसलिए व्यापार में कामयाबी के लिए ग्राहक का गरम जोशी के साथ मुस्कुराकर अच्छे शब्दों में स्वागत किया जाता है।

अच्छे शब्दों में स्वागत और अच्छे अख्लाक (आचरण) सिर्फ व्यापार में कामयाबी के लिए ही ज़रूरी नहीं बल्की सामाजिक और धार्मिक जीवन में भी कामयाबी के लिए ज़रूरी हैं।

- निम्नलिखित कुरआ़नी आयतों और हदीस से आप सलाम करने के महत्व का अंदाज़ा कर सकते है।

- अल्लाह तआ़ला पवित्र कुरआन में फरमाता है:

"और जब घरों में जाया करो तो अपने घर वालों को सलाम किया करो। यह खुदा की तरफ से मुबारक और पवित्र तोहफा है।"
(सूरह नूर आयत ६१)

"ऐ इमानवालो! अपने घरों के सिवा दूसरे लोगों के घरों में न जाओ जब तक कि इज़ाजत न ले लो और वहाँ के घर वालों को सलाम न कर लो"
(सूरह नूर आयत २७)

"और जब तुम्हें कोई सलाम करे तो तुम उससे अच्छा जबाब दो या उन्ही शब्दों से जवाब दो।" (सूरह नीसा आयत ८६)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया: "बात करने से पहले सलाम किया करो।"(बुखारी)

- नबी करीम (स.) ने फरमाया: "तुम रहेमान (अल्लाह) कि इबादत करो और लोगों को खाना खिलाओ और सलाम खुब आम करो तुम जन्नत में सलामती के साथ जाओगे। (तिरमीजी: १८५५, अन अब्दुल्ला बिन उमर (रज़ि.))

- हज़रत अब्दुल्ला बिन उमरू बिन आस (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) से एक व्यक्ति ने सवाल किया कि इस्लाम में कौनसी बात बेहतर है? हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया: "खाना खिलाना और सलाम करना, चाहे पहेचान हो या ना हो।"
(बुखारी, मुस्लिम, हदीस नबवी, हदीस २९३, पेज १५१)

- हज़रत अबू हूरैरा (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया: "जो व्यक्ति अपने भाई से मिले तो उसको सलाम करे अगर चलते चलते दिवार या पत्थर बीच में आ जाए फिर उससे मिले तो उसको फिर सलाम करे। अबू दाऊद (रज़ि.) की रिवायत में हैं कि जब जुदा होने लगे तो भी सलाम करें।"
(अबू दाऊद, हदीस नबवी हदीस २९५ सफहा १५२)

- हज़रत अबू हूरैरा (रज़ि.) कहते हैं की हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया: "सबसे बड़ा निकम्मा और असमर्थ वह है जो अपने लिए खुदा से दुआ़ ना मांगे और सबसे बड़ा कंजूस वह है जो सलाम में कंजूसी करे (किसी को सलाम ना करे)"
(तरगीब व तहरिब बा-हवाला बजार, ज़ादे राह, हदीस १२९)

- हज़रत अब्दुल्ला बिन जुबैर (रज़ि.) कहते हैं की हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया: "तुमसे पहले की उम्मतों की बीमारी, दुश्मनी और जलन तुम्हारे अंदर भी घुस आएगी। दुश्मनी तो जड़ से काट देनेवाली चीज़ है। यह बालों को नहीं मूंडती, बल्कि दीन (धर्म) को मूंडती है। कसम है उस ज़ात की जिसके कब्ज़े में मेरी जान है तुम स्वर्ग में ना जा सकोगे जब तक मोमिन ना हो, और मोमिन बन नहीं सकते जब तक आपसी मेल मिलाप और मुहब्बत ना हो। क्या में बताऊं यह आपसी मुहब्बत कैसे पैदा होगी? 'अस्सलामो अलैकुम' को बढ़ावा दो।"
(तरगीब व तहरिब बा-हवाला बज़ार, ज़ादे राह, हदीस १७०)

- हज़रत मआज़ बिन जबल (रज़ि.) कहते हैं कि जब हज़रत मुहम्मद (स) ने मुझे यमन भेजा, उस वक्त उन्होंने मुझे कुछ वसीअतें कीं उनमें यह भी शामिल है कि "लोगों से नरम अंदाज़ में बातचीत करना और उन्हें सलाम करना।"(तरगीब व तहरिब बा-हवाला बेहकी, ज़ादे राह, हदीस १५५)

- हज़रत अनस (रज़ि.) जब बच्चों के पास से गुज़रते तो उनको सलाम करते और फरमाते "हज़रत मुहम्मद (स.) भी बच्चों को सलाम करते थे।" (मुत्तफिक अलैह, ज़ादे राह, हदीस ३७३, पेज २५४)

- हज़रत अब्दुल्ला बिन मसूद (रज़ि.) के अनुसार हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया "अगर किसी बंदे के दिल में कण बराबर भी घमंड होगा तो वह स्वर्ग में दाखिल नहीं होगा।" तब एक सहाबी (रज़ि.) ने सवाल किया, "ऐ अल्लाह के रसूल (स.)! हर बंदा चाहता है कि उसे खूबसूरत कपड़े और जूते मिलें। क्या यह भी घमंड है?" हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "नहीं!" अल्लाह तआ़ला जमील (खूबसूरत) है और खूबसूरती को पसंद फरमाता है। घमंड यह है कि सच्चाई को गुरूर की वजह से न माने और किसी को कमतर समझे।"
(मुस्लिम, तिरमिज़ी, मिश्कात)

हज़रत अब्दुल्ला बिन मसऊद (रज़ि.) हज़रत मुहम्मद (स.) से रिवायत करते हैं की आप (स.) ने फरमाया, "सलाम में पहेल करने वाला घमंड से पाक है।" (बेहकी, मुन्तखब अबवाब जिल्द १, हदीस ७४६)

(इसका मतलब यह है कि जो चाहे कि उसमें गुरूर और घमंड की बीमारी ना हो तो उसे पहले ही आगे बढ़कर दूसरों को सलाम करना चाहिए।)

- हज़रत अस्मा बिन्त यज़ीद (रज़ि.) कहती हैं की एक दिन हज़रत मुहम्मद (स.) हम औरतों के पास से गुज़रे तो आप (स.) ने हमें सलाम किया।(अबू दाऊद, इब्ने माजा, दारमी, मुन्तखब अबवाब हदीस ७४३)

सलाम की बरकतें:

- हज़रत अबू इमामा (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद

(बाकी पेज ६७ पर)

चौथा भाग

अपने कारोबारी हुनर को कैसे संवारें?

Self Improvement.

Features required for an effective Leadership

२६. बेहतरीन अख्लाक़ (Character) का महत्व

मैंने अपनी तालिम १९८३ में पूरी किया था। १९८३ से १९८६ तक कई जगह नौकरी करता रहा फिर १९८७ में नौकरी छोडकर कारोबार की शुरूवात कर दिया। जब मैंने कारोबार शुरू किया तो मेरे पास सिर्फ एक ६०० सौ रूपये का ब्रिफकेस था। और एक ६००० रूपये की पुरानी बजाज स्कुटर उसके अलावा मेरे पास और कोई पुंजी नहीं था। जब में नौकरी कर रहा था तो बहुत सारे माल सप्लाई करने वालों से मुझे अपने ड्युटी के मुताबिक माल लेना पड़ता था। वह लोग मुझे अच्छी तरह से पहचानते थे। जब नौकरी छोड़कर मैंने उनसे माल उधार मांगा तो अल्लाह तआला ने अपने कर्म से मुझे जो अच्छे अख्लाक दिये थे उसी अख्लाकी बुनियाद पर अल्लाह तआला ने उनके दिल में बात डाल दी की यह शख्स आपको धोखा नहीं देगा। आप उसे उधार माल दे सकते हो। उस दिन से आज २०१३ तक यह लोगों का भरोसा और अल्लाह तआला के कर्म से कारोबार की गाडी चल रही है और मुझे लाखों रूपयों का माल उधार मिल रहा है। अगर लोग माल उधार देना बंद कर दे तो बैंक के कर्ज पर इतना माल खरीदना मेरे लिए नामुनकिन हो जाए और वैसे भी कर्ज पर सूद देना हराम है। इसी बात को अगर मैं आसान लफ्जों में मैं कहुं तो वह इस तरह है की अल्लाह तआला ने अपने कर्म से जो मुझे अच्छे अख्लाक दिए है बस उसी अख्लाक कि वजह से मेरा कारोबार चल रहा है। अगर मेरे अख्लाक खराब होते तो कोई मुझे एक फुटी कौडी भी उधार न देता और न मैं कारोबार कर पाता तो कारोबार में कामयाब होने के लिए अच्छे अख्लाक बेहद जरूरी है और इतना ही जरूरी यह आखिरत में कामयाबी के लिए है। आइए हम कुछ अहकाम और रवायात पढते है ताकी हमारे अच्छे अख्लाक अपनाने का जज्बा और बढे।

अच्छे अख्लाक क्या हैं?:

- आप (स.) ने फरमायाः "अच्छे अख्लाक नेकी हैं।"
  (मुस्लिम, बा-हवाला हदीस नबवी, हदीस नं. ३४७)

  यानी अच्छे आचरण पुण्य है।

- नबी करीम (स.) ने फरमायाः "ईमानवालों में ज्यादा कामिल ईमान उसका है जिसके अख्लाक ज्यादा अच्छे है। (अबु दाऊदः ४६८२ अन अबी हुरैरा (रज़ि.))

अच्छे अख्लाक हमें किससे सीखना चाहिंए?:

- अल्लाह तआ़ला क़ुरआ़न शरीफ में फरमाता है, "(ऐ मोहम्मद (स.)!) तुम्हारे आचरण सर्वश्रेष्ठ हैं।" (सूरह कलम आयत ४)

- "(ऐ मोहम्मद (स.)!) खुदा की मेहरबानी से तुम्हारा मिज़ाज लोगों के लिए नर्म है।" (सूरह आले इमरान आयत १५९)

- हज़रत इमाम मालिक (र.अ.) के मुताबिक हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अल्लाह तआ़ला ने मेरी नियुक्ति पैगंबर की हैसियत से किया है, ताकि मैं दुनिया को बेहतरीन अख्लाक (आचरण) की शिक्षा दूं।"
  (मुअत्ता इमाम मालिक (र.अ.))

  इसका मतलब यह है कि इस्लाम की बुनियादी शिक्षा बेहतरीन अख्लाक ही हैं। हज़रत मुहम्मद (स.) के देहांत के बाद आप (स.) के सहाबा (रज़ि.) ने ईश्वरीय संदेशो को आम करने के लिए चीन, हिंदुस्तान, अफ्रीका, इंडोनशिया जैसे दूरदराज मुकामात का सफर किया, और यह उनके महान अख्लाक ही थे जिससे नई दुनिया प्रभावित हुई और बिना युद्ध के उन्होंने इस्लाम कुबूल किया।

- बेहतरीन अख्लाक का बेहद महत्व है। इसी से दुनिया में व्यापार में कामयाबी और आखिरत (परलोक) में स्वर्ग मिलेगा। इसलिए हम उन रिवायातों का अध्ययन करते हैं जिनमें ऊंचे अख्लाक के महत्व का उल्लेख है।

- हज़रत आएशा (रज़ि.) फरमाती हैं, "अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (स.) का अख्लाक, क़ुरआ़न था"
  (मुस्लिम, बा-हवाला ज़ादे राह, हदीस नं. ३१२)

  यानी पवित्र क़ुरआ़न में जिन ऊंचे चरित्रों की शिक्षा दी गई है वह सब आप (स.) के अंदर पाए जाते थे, आप (स.) उनका बेहतरीन नमूना थे।

- हज़रत अयाज बिन हुमार (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अल्लाह तआ़ला ने मुझे 'वही' फरमाया है कि तुम तवाज़े (नम्रता) व खाकसारी (सादापन) अपनाओ ताकि कोई (तुम्हारी उम्मत) किसी पर गुरूर और घमंड का प्रदर्शन ना करे, न कोई किसी पर ज़्यादती करे।" (मुस्लिम, बा-हवाला हदीस नबवी, हदीस नं. ३५५)

- हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमायाः "तुम में से बेहतरीन आदमी वह हैं जो अपनी बीवी के लिए बेहतर हों। और मैं तुम में से सबसे बेहतर हूं अपनी बीवियों के लिए।" (इब्ने माजा, इब्ने अब्बास, बा-हवाला ज़ादे राह, हदीस नं. ३२१)

- "हज़रत अब्दुल्ला बिन उमरो बिन आस (रज़ि.) का बयान हैं कि रसूल अल्लाह (स.) ना तो बद-मिज़ाज थें और ना ही बुरी बातें आप (स.) जुबान से निकालते थे।"
  (बुखारी, मुस्लिम, बा-हवाला ज़ादे राह, हदीस नं.३१३)

बेहतरीन इख्लाक के फायदे:

- अल्लाह तआ़ला क़ुरआ़न शरीफ में फरमाता हैः "जो व्यक्ति नेक कर्म करेगा चाहे मर्द हो या औरत (बशर्ते यह के) मोमिन भी होगा, तो हम उसको दुनिया में पाक (और आराम) की जिंदगी से जिंदा रखेंगे और (परलोक में) उनके कर्मों का बहोत अच्छा बदला देंगे।"
  (सूरह नहल आयत ९७)

  इसलिए नेक कर्म दुनिया में आराम दायक जिंदगी के लिए बेहद ज़रूरी हैं। और बेहतरीन अख्लाक के बगैर नेक कर्म को अंजाम देना संभव नहीं, इसलिए लम्बी खुशहाली के लिए बेहतरीन अख्लाक इख्तेयार करें।

- हज़रत अबू दरदा (रज़ि.) से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने

(बाकी पेज ७३ पर)

२७. विनम्र स्वभाव (Soft Nature) का महत्व

- हज़रत आएशा (रज़ि.) कहती हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अल्लाह तआ़ला किसी घरवालों के लिए नर्मी का इरादा नहीं करता मगर उनको नफा पहुँचना हो। और उनको नर्मी से मेहरूम (वंचित) नहीं करता मगर उनको नुकसान पहुँचाना हो। (यानी अल्लाह तआ़ला उसी परिवार के लिए नर्मी को पसंद करता है जिसको नफा पहुँचाना चाहता है और जिस परिवार को नुकसान पहुँचाना चाहता है उसको नर्मी से महरूम (वंचित) कर देता है।)"

(बेहकी, बा-हवाला मुन्तखब अबवाब जिल्द १, हदीस नं.११६१)

- कारखाना, कम्पनी, ऑफिस या कोई संस्था, यह भी एक घर की तरह हैं। और इसमें काम करने वाले सारे लोग एक परिवार की तरह हैं। ऊपर बयान की गई हदीस में बताया गया है कि जिस परिवार के भाग्य में तरक्की होगी अल्लाह तआ़ला उस घर वालों के दरम्यान नर्मी पैदा कर देते है। यानी तरक्की आपस के नर्म संबंधों से जुड़ी हुई हैं।

  इसी बात को हम इस तरह भी कह सकते है कि अगर किसी को तरक्की करनी है तो उसके संबंध और मामलात घर वालों से और कारोबार से जुड़े लोगों से नर्म होने चाहिए।

- विनम्र स्वभाव का बहोत महत्व है इसलिए हम कुछ और आयात और अहादीस आपके सामने पेश करते है:

- कुरआ़न में अल्लाह तआ़ला इरशाद फरमाता है: "(ऐ मूसा (अ.स.))! मैंने तुमको अपने काम के लिए बनाया है। तो तुम और तुम्हारा भाई दोनों हमारी निशानियां लेकर जाओ और मेरी याद में सुस्ती ना करना, दोनों फिरौन के पास जाओ वह बागी हो रहा है। और उससे नर्मी से बात करना शायद वह गौर करे या ड़र जाए।"(सूरह ताहा, आयत ४१ से ४४)

- "(ऐ मोहम्मद (स.)!) खुदा की मेहरबानी से तुम्हारा स्वभाव उन लोगों के लिए नर्म वाकेअ् हुआ है। और अगर तुम बद खू और सख्त दिल होते तो यह तुम्हारे पास से भाग खड़े होते। तो उनको माफ कर दो और उनके लिए (खुदा से) माफी मांगो। और अपने कामों में उनसे मश्वरा लिया करो। और जब (किसी काम का) पक्का इरादा कर लो तो खुदा पर भरोसा रखो। बेशक खुदा भरोसा रखने वालों को दोस्त रखता है।"

(सूरह आले इमरान, आयत १५९)

- हज़रत मआज (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने मुझे यमन का गवर्नर मुकर्रर किया और विदा करते समय मेरा हाथ पकड़ा और थोड़ी दूर चले, फिर फरमाया:

  "ऐ मआज़ (रज़ि.)!

१. मैं तुम्हें अल्लाह की नाफरमानी से बचने
२. सच बोलने
३. अहद (प्रतिज्ञा) को पूरा करने
४. अमानत को ठीक ठीक पहुँचाने
५. खयानत (बेईमानी) ना करने
६. यतीम (अनाथ) पर रहम करने
७. पड़ोसी के अधिकारों की सुरक्षा करने
८. गुस्से को दबाने
९. लोगों से नर्म अंदाज में बातचीत करने और लोगों को सलाम करने की वसीअत करता हुँ और इस बात की भी वसीअत करता हुँ की खलीफा से चिमटे रहना (ना उससे अलग होना ना उसके खिलाफ मोर्चा बनाना)।"(तरगीब व तरहीब, बेहकी, बा-हवाला ज़ादे राह, हदीस नं.१५५)

- नबी करीम (स.) ने फरमाया "जो बंदा (किसीको) माफ कर देता है अल्लाह तआला उसके बदल उसकी इज्जत बढा देता है। (मुस्लिम :६७५७ अन अबीर हुरैरा (रज़ि.))

- हज़रत जुरैर बिन अब्दुल्ला (रज़ि.) कहते है कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया "अल्लाह तआ़ला उस व्यक्ति पर रहम (दया) नहीं करता जो लोगों पर रहम (दया) नहीं करता।"

(बुखारी, मुस्लिम, बा-हवाला मुन्तखब अबवाब जिल्द १, हदीस नं.१०१५)

- हज़रत अबु हुरैरा (रज़ि.) कहते हैं कि मैंने अबु कासिम (हज़रत मुहम्मद (स.)) को जो सच्चे हैं और जिनके सच्चे होने की अल्लाह ने खबर दी है, यह फरमाते हुए सुना की रहमत और शफकत सिवाय बद बख्त के किसी के दिल से नहीं निकाली जाती।

(अहमद, तिरमिज़ी, बा-हवाला मुन्तखब अबवाब जिल्द १, हदीस नं.१०३६)

- हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया "खुदा की मखलूक (प्राणियों) पर रहमत और शफकत (महरबानी) करने वालों पर रहमान (यानी अल्लाह) की रहमत उतरती है, इसलिए तुम धरती वालों पर रहम करो, जो आसमान में है वह तुम पर रहम करेगा।"

(अबु दाऊद, तिरमिज़ी, बा-हवाला मुन्तखब अबवाब जिल्द १, हदीस नं. १०३७)

- हजरत उसामा बिन जैद रिवायत करते है की नबी करीम (स.) ने फरमाया "अल्लाह तआला अपने रहम दिल बंदो पर ही रहम करते है। (बुखारीः १२८४)

- नबी करीम (स.) ने फरमाया "वह मुसलमान जिसकी (लोगों को) माफ करने की आदत है। वह जन्नत में जानेका हकदार है। (कन्जुल अमाल : ७०१५ अन अब्दुल्ला बिन अब्बास (रज़ि.))

- हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स) ने फरमाया "क्या मैं तुम्हें बताऊं वह व्यक्ति कौन है जो आग पर और आग उस पर हराम होगी? (सुनो) नरक की आग हर उस व्यक्ति पर हराम होगी जो विनम्र स्वभाव, नर्म तबीयत, लोगों से नज्दीक और नर्म खु है।"

(अहमद, तिरमिज़ी, बा-हवाला मुन्तखब अबवाब जिल्द १, हदीस नं.११४७)

- हज़रत आएशा (रज़ि.) कहती हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया

(बाकी पेज ७५ पर)

२८. अपने सुधार (Self-Improvement) की कोशिश करें

- मार्गदर्शक हमेशा इन्कसारी (विनम्रता) से काम लेता है, उसमें घमंड नही होता। वह मातहतों की सेवा और अपने सुधार के लिए हमेशा तैयार रहता है। हज़रत मुहम्मद (स.) के सहाबा कराम (रज़ि.) अज़ीम शख्सीयतों (महान व्यक्तित्व) के मालिक और रहनुमा थे और हमारे लिए एक खुली किताब की तरह हैं। हमें कई मिसालें मिलती है कि उन्होंने कभी अपनी कोई गलती स्वीकार करने से इन्कार नहीं फरमाया और अपने सुधार की फौरन कोशिश फरमायी। हमें यह मिसालें याद रखनी चाहिए और अपनी गलतियों के सुधार की कोशिश करनी चाहिए। इसमें हमारे लिए कोई शर्म की बात नहीं है।

  इस सिलसिले में कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं:

- हज़रत खालिद बिन वलीद (रज़ि.) कहते हैं की मेरे और अम्मार बिन यासिर (रज़ि.) के दरम्यान बातचीत हो रही थी तो मैंने उन्हें सख्त सुस्त कह दिया, तो हज़रत अम्मार मेरी शिकायत करने के लिए हज़रत मुहम्मद (स.) के पास चले। पीछे से हज़रत खालिद (रज़ि.) भी आ गए और उन्होंने हज़रत अम्मार (रज़ि.) को हज़रत मुहम्मद (स.) से शिकायत करते हुए सुन लिया तो हुज़ूर (स.) की मौजूदगी में भी उन्होंने सख्त सुस्त कहना शुरू किया, और बराबर उनकी सख्त कलामी बढ़ती ही गई और हज़रत मुहम्मद (स.) खामोश थे, कुछ नहीं कह रहे थे। तो हज़रत अम्मार (रज़ि.) रो पड़े और कहा "ऐ हज़रत मुहम्मद (स.)! क्या आप खालिद (रज़ि.) को नहीं देखते?"। तब हज़रत मुहम्मद (स.) ने अपना सिर उठाया और फरमाया, "जो अम्मार (रज़ि.) से दुश्मनी रखेगा अल्लाह उसका दुश्मन होगा और जो अम्मार (रज़ि.) से बुग्ज (दिल में नफरत) रखेगा तो खुदा उससे बुग्ज रखेगा।"

  (शायद यह इसलिए है कि हज़रत अम्मार (रज़ि.) इस्लाम की शुरूआती ज़माने में सख्त आजमाइशो (परिक्षणों) से गुज़रे है और इस्लाम के लिए उन्होंने बहोत कुर्बानियां दी है।)

  हज़रत खालिद (रज़ि.) कहते हैं कि आप (स.) का यह इरशाद सुनकर मजलिस से जब में बाहर निकला तो सबसे ज्यादा महबूब चीज़ मेरे नज्दीक यह थी के किसी तरह हज़रत अम्मार (रज़ि.) मुझसे खुश हो जाएं। चुनांचे मेंने उनसे मिलकर अपनी सख्त कलामी की माफी मांगी तो उन्होंने माफ कर दिया और खुश हो गए।

  (मिश्कात, बा-हवाला ज़ादे राह, हदीस ३९३)

  (दुनिया के महानतम फौजी जरनल हज़रत खालिद बिन वलीद (रज़ि.) जिन्होंने ईरान और रोम को हराया, कभी अपनी गलती दुरूस्त करने में नहीं हिचकिचाए।)

- मदीना की ओर हिजरत (स्थानांतरण) के बाद हज़रत मुहम्मद (स.) ने हज़रत अली (रज़ि.) और हज़रत फातिमा (रज़ि.) के निकाह की व्यवस्था फरमायी। पति और पत्नी में मतभेद नैसर्गिक हैं, इसलिए उनमें भी था। नई-नई शादी की वजह से वह एक दूसरे को (adjust) नहीं कर पाए थे। इसलिए किसी बात पर हज़रत फातिमा (रज़ि.) कुछ नाराज़ हुईं और हज़रत मुहम्मद (स.) से हज़रत अली (रज़ि.) के शिकायत की। हज़रत मुहम्मद (स.) ने अपनी बेटी का समर्थन करने की बजाए उन्हें नसीहत फरमायी और समझाया की शादी शुदा जिंदगी में उतार चढ़ाव आते हैं और पति और पत्नी को एक दूसरे को संभालना और समझौता करना चाहिए। फिर आप (स.) ने हज़रत फातिमा (रज़ि.) को निर्देश दिया कि हज़रत अली (रज़ि.) की आज्ञाकारी बनकर रहें।

  जब हज़रत फातिमा (रज़ि.) परेशान होकर हज़रत मुहम्मद (स.) से अपने पती की शिकायत करने जा रही थीं तो हज़रत अली (रज़ि.) ने खुफिया तौर पर उनका पीछा किया और मस्जिद की दीवार के पीछे हज़रत मुहम्मद (स.) और हज़रत फातिमा (रज़ि.) की बातचीत सुनी। जब हज़रत मुहम्मद (स.) ने हज़रत फातिमा (रज़ि.) का समर्थन नहीं किया बल्कि उन्हे निर्देश दिया की हज़रत अली (रज़ि.) की आज्ञाकारी करें तो हज़रत अली (रज़ि.) जज्बाती (भावुक) हो गए और आंखों में आंसू लेकर हज़रत मुहम्मद (स.) के सामने हाजिर हुए और हज़रत फातिमा (रज़ि.) को दुख देने के लिए माफी मांगी और वादा किया कि हज़रत फातिमा (रज़ि.) को मुम्कीना हद तक आराम पहुचाएंगे और उनका एहतराम करेंगे। और हज़रत अली (रज़ि.) ने अपनी बाकी जिंदगी में अपने वादे पर पूरी तरह अमल भी किया।

  हज़रत अली (रज़ि.) जो कि एक महान विद्वान और मुजाहिद थे और जिन्हें बाद में जनता में जमहुरी (प्रजातंत्रित) तरीके से अमीरूल मोमिनीन (खलीफा) चुना था, इतने महान खलीफा ने कभी अपनी गलती कुबूल करने से इन्कार नहीं किया बल्कि उसका सुधार करने की फौरन कोशिश की।

- 'खंदक' की जंग के बाद यहूदियों ने हत्यार ड़ालने से पहले हज़रत अबु लुबाबा (रज़ि.) को अपना सलाहकार और सालिस (मध्यस्थ) मुकर्रर किया। जब हज़रत अबु लुबाबा (रज़ि.) उनके किले (दुर्ग) में गए तो बेखबरी (गलती से) मुसलमानों की एक खुफिया बात यहूदियों को बता दी, लैकिन फौरन ही उन्हें अपनी गलती का एहसास हो गया। उन्हें अपने इस कर्म पर इतनी शरमिंदगी हुई की वह मुस्लिम खेमें मे वापस आने के बजाए सीधे मस्जिदे नबवी पहुंचे और खुद को सज़ा देने के लिए मस्जिद के एक सुतून (स्तंभ) से अपने आप को बांध लिया। और कसम खायी की जब तक अल्लाह तआला माफ नहीं करेगा वह जंजीरो से बंधे रहेंगे। १५ दिन के बाद आपको खुशखबरी मिली कि अल्लाह तआला ने उन्हें माफ कर दिया। तब हज़रत अबु लुबाबा (रज़ि.) ने खुद को आज़ाद किया। (इब्ने जोज़ी वफा, मुरत्तबः अलमुस्तफा, पेज ३०५)

- गज्वे तबुक में सुस्ती की वजह से हज़रत काब बिन मालिक गज्वे तबुक में शरीक न हो सके यह उनकी गलती थी। मगर मुनाफिकीन जैसा झुठ बोलकर न उन्होंने अपना दामन बचाया और न गैर मुस्लिम बादशाहों के दावतनामा को कबुल करके आसानी का रास्ता अपनाया। एक सच्चे पक्के मुसलमान कि तरह अपनी सजा बर्दाश्त करते रहे और अपनी इस्लाह करते रहे और आखिरकार अल्लाह तआला ने उनकी तौबा कबुल कर लिया।

- एक मर्तबा हज़रत मुहम्मद (स.) मदीना के एक रास्ते से गुजर रहे थे तो आप (स.) ने एक नए मकान पर शानदार गुम्बद देखा। आप (स.) ने दरयाफ्त फरमाया, “यह क्या है?” एक सहाबी (रज़ि.) ने अर्ज किया, “यह नया मकान अन्सारी मुसलमान का है।” हज़रत मुहम्मद (स.) ने खामोशी इख्तयार फरमायी। जब वह अन्सारी सहाबी(रज़ि.) मस्जिद में आकर हज़रत मुहम्मद (स.) को सलाम करते तो आप (स.) ने अपना रूख उन से फेर लिया तो उन अन्सारी सहाबा (रज़ि.) को एहसास हुआ की हज़रत मुहम्मद (स.) उनसे खुश नहीं हैं। तब उन्होंने एक सहाबी से नाराजगी का कारण पूछा। सहाबी (रज़ि.) ने फरमाया कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने उनके इलाके का दौरा किया था और उनके नए मकान के गुम्बद के बारे में पूछा था। अन्सारी सहाबा (रज़ि.) को इस बात का एहसास हो गया कि उनके मकान के शानदार गुम्बद की वजह से हज़रत मुहम्मद (स.) उनसे नाराज़ हैं इसलिए उन्होंने वह गुम्बद फौरन तुड़वा दिया।

  हज़रत मुहम्मद (स.) और उनके सहाबा कराम (रज़ि.) अगली नस्लों के लिए मिसाल और नमूना हैं। आप (स.) पसंद नहीं फरमाते थे कि आप (स.) के सहाबा कराम (रज़ि.) दुनिया के सामने ऐशो इश्रत वाली जिंदगी का नमूना पेश करें। इसलिए आप (स.) ने उन अन्सारी सहाबी (रज़ि.) को नज़रअंदाज किया। और आप (स.) के सहाबा कराम (रज़ी) इतने चरित्रवान, महान और आप (स.) के जानिसार थे कि अल्लाह और रसूल (स.) की खुशनूदी के लिए उन्होंने कभी किसी जायदाद या ऐश और इशरत की कुर्बानी देने से नहीं रूके।

- हज़रत काब बिन मालिक (रज़ि.) बड़े सहाबा (रज़ि.) में से हैं जो ‘लय लतुल उक्बा’ में हज़रत मुहम्मद (स.) की सेवा में हाजिर थें। यानी यह मदीना के उन अन्सार सहाबा (रज़ि.) में से हैं जिन्होंने हज़रत मुहम्मद (स.) की हिजरत से पहले ‘मीना’ मुकाम पर हज़रत मुहम्मद (स.) और इस्लाम से अपनी वफादारी की प्रतिज्ञा की थी। यह सहाबी (रज़ि.) तकरीबन हर गजवा (जंग) में हज़रत मुहम्मद (स.) के साथ रहे। मगर तबूक की जंग में अपनी काहिली और सुस्ती की वजह से शामिल न हो सके। चूंकी इस्लाम में इमाम जब जिहाद का ऐलान करे तो सब पर जिहाद में शरीक होना फर्ज (अनिवार्य) होता है। इसलिए जो जिहाद में शामिल ना हो सके, उसे इमाम के सामने हाजिर होकर अपनी गैर-हाजरी का शरयी उज्र (उचित कारण) पेश करना जरूरी है। इसलिए गजवा (जंग) के बाद मदीना के वह सारे लोग जो जिहाद में शामिल ना हो सके थे हज़रत मुहम्मद (स.) के सामने हाजिर हुए और अपनी अपनी मजबूरियां बयान करके हज़रत मुहम्मद (स.) से माफी मांगते चले गए। उनमें अधिकतर मुनाफिक (ढोंगी मुसलमान) थे और उन्होंने झूठ बोला था। यह बात हज़रत मुहम्मद (स.) जानते थे फिर भी आप (स.) ने उनके बयानात को कुबूल कर लिया और उनके लिए अल्लाह से मगफिरत (माफी) की दुआ करके माफ कर दिया।

  हज़रत काब बिन मालिक (रज़ि.) और दूसरे दो सहाबा (रज़ि.) जो सुस्ती और काहिली की वजह से जिहाद में शामिल नहीं हुए थे वह भी झूठ बोलकर हज़रत मुहम्मद (स.) से माफी हासिल कर सकते थे। मगर उन महान सहाबा (रज़ि.) ने एक सच्चे मुसलमान की तरह जो सच था वही कहा। चूंकी उन्होंने गलती की थी और अपना गुनाह भी कुबूल किया था, इसलिए हज़रत मुहम्मद (स.) ने अल्लाह तआ़ला के हुक्म के मुताबिक उन्हें सजा के तौर पर आम मुसलमानों से कतय तालुक (समाजिक बहिष्कार) और अपनी बीवी से अलग रहने का हुक्म दिया। यह बायकाट ५० दिनों तक रहा। उस दौरान उन सहाबा (रज़ि.) को बहुत तकलीफ हुई। काफिर बादशाहों से उन्हें अपने यहां आने की दावत भी मिली। मगर यह महान सहाबा (रज़ि.) सज़ा बरदाश्त करते रहे और तौबा और इस्तगफार (माफी मांगने) में व्यस्त रहें। आखिर अल्लाह तआ़ला ने ५० दिन बाद उनकी तौबा को कुबूल किया और उनकी गलतियों को माफ कर दिया।

  सहाबा कराम (रज़ि.) की इन्ही खूबियों की वजह से अल्लाह तआ़ला ने अपनी रज़ा का परवाना उन्हें दे दिया था। और जिससे अल्लाह तआ़ला राजी हो जाए उसे दुनिया और आखिरत में कौन नाकाम कर सकता है?

(पेज ७० से आगे... बेहतरीन अख्लाक़ का महत्व)

फरमाया, “कयामत के दिन मुसलमानों के तराजू में अख्लाक से ज्यादा वज़नी कोई और अमल नहीं होगा। अल्लाह तआ़ला फहश गोई (गाली बकना) और ना शाइस्ता बात करने वाले को नापसंद करता है।”
(तिरमिज़ी, बा-हवाला हदीसे नबवी, हदीस नं.३४६)

- हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया, “क्या मैं तुम लोगों को ऐसे व्यक्ति के बारे में न बतलाऊं जो नरक (की आग) पर हराम कर दिया जाएगा या जिसपर नरक (की आग) हराम है। हर मानूस (जिसे हर कोई अपना समझे), बेआज़ार (जो किसी को नुकसान ना पहुंचाता हो), नर्म खू (जो नर्म लहजे में बात करे), नर्म रौ (जिसके अख्लाक में नर्मी हो)।”
(तिरमिज़ी, बा-हवाला हदीसे नबवी, हदीस नं.३६८)

- हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) से पूछा गया की कौनसी चीज़ लोगों को सबसे ज्यादा नरक में ले जाने वाली है? आप (स.) ने फरमाया, “मुंह और शर्मगाह।” आप (स.) से पूछा गया कि “कौनसी चीज़ लोगों को स्वर्ग में ले जाने वाली है?” आप (स.) ने फरमाया, “अल्लाह तआ़ला का पास व लिहाज़ (डर) और अच्छे अख्लाक।” (तिरमिज़ी, बा-हवाला हदीस नबवी, हदीस नं.४२२/३५०)

- हज़रत जाबिर (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया: “कयामत के दिन तुम में से मुझे सबसे ज्यादा महबूब (पसंद) और मुझसे करीब वह व्यक्ति होगा जिसके अख्लाक तुममें सबसे अच्छे होंगे और कयामत के दिन मेरे नज्दीक सबसे ज्यादा नापंसदीदा और मुझसे दूर तुम में से वह लोग होंगे, जो बतकल्लुफ (बनावटी) खूब बातें करते हैं और हदसे आगे बढ़ जाते हैं और गला फाड़ फाड़ कर बात करने वाले, बतकल्लुफ फसाहत बलागत (बनावटी बातें) का प्रदर्शन करने वाले, और अपनी फज़ीलत (अच्छाई) और वर्चस्व को जाहिर करने के लिए ज़ोर ज़ोर से बातें करने वाले।”
(तिरमिज़ी, बा-हवाला हदीस नबवी, हदीस नं.३५४)

- हज़रत इब्न अब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने अशज अब्दुल कैस से फरमाया, “तुम्हारे अंदर दो खूबियां है और वह दोनों ही अल्लाह और उसके रसूल (स.) को पसंद हैं। एक बुरदबारी (सहनशीलता) और दुसरी मतानत (यानी गंभीरता)।
(मुस्लिम, बा-हवाला हदीस नबवी, हदीस नं.३६१)

- हजरत अबु हुरैरा (रज़ि.) रिवायत करते है कि, नबी करीम (स.) ने फरमाया: “अच्छे अख्लाक का बरताव करो चाहे काफिरों (गैर मुस्लिमों) के साथ ही क्यु न हों। जन्नत में नेक लोगों के साथ दाखिल हो जाओगे। (तिबरानी कबीर १११५)

- नबी करीम (स.) ने फरमाया: “जो शख्स तवाजा (आजीजी) अख्तियार करता है। अल्लाह तआला उसको इज्जत और सरबुलंदी अता करता है। (मुस्नद अहमद बजार: ९४६, अन तलहा (रज़ि.))

अगर आपके अख्लाक अच्छे नहीं हुए तो क्या होगा?:

- हज़रत हारिस बिन वहब (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, “स्वर्ग में ना उखड मिजाज दाखिल होगा, ना बद-अख्लाक

२९. सर्वश्रेष्ठ बनने की भावना का सफलता पर प्रभाव

ज़्यादा से ज़्यादा नेकियां कमाने की भावना:

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "मैं अपने उम्मतीयों को उनके चमकदार शारीरिक अंगों से पहचानूंगा। वह अंग जो वज़ु से धोए जाते हैं कयामत के दिन चमकेंगे।" वज़ु में कोहनीयों तक हाथ धोना ज़रूरी है। लैकिन अंगों के अधिक भाग चमकाने के लिए हज़रत अबू हुरैरा (रज़ी.) कंधो तक हाथ धोते थे।

- सअद बिन अबी वकास (रज़ि.) फरमाते हैं, मैं बीमार था तो हज़रत मुहम्मद (स.) मेरा हालचाल पूछने को तशरीफ लाए। आप (स.) ने पुछा "क्या तुमने वसीयत (मरने से पहले इच्छा ज़ाहिर करना) कर दी?" मैंने कहा "हां!" आप (स.) ने पुछा "कितने की वसीयत की है?" मैंने कहा "मैंने अपने पूरे माल की वसीयत कर दी है और खुदा की राह में दे दिया है।" आप (स.) ने पुछा "अपनी औलाद के लिए क्या छोड़ा?" मैंने कहा "वह मालदार हैं, अच्छी हालत में हैं।" आप (स.) ने फरमाया "सारी जायदाद राहे खुदा में मत दो बल्कि अपनी औलाद के लिए भी कुछ छोड़ो।" मैंने कहा "मैं अपनी जायदाद का तीन चौथाई हिस्सा खुदा की राह में देता हूं।" आप (स.) ने फरमाया "यह भी ज़्यादा है।" मैंने कहा "आधा हिस्सा खुदा की राह में देता हुँ।" आप (स) ने कहा "यह भी ज़्यादा है।" अंत में हज़रत मुहम्मद (स.) ने मुझे एक तिहाई हिस्सा खुदा की राह में देने की इजाज़त दे दी मगर कहा कि "यह भी बहुत है।" (तिरमिज़ी, बा-हवाला सफिना ए निजात, हदीस १८६)

- हज़रत सलमान फारसी (रज़ि.) ईरान के एक अमीर और मुअज़्ज़िज़ (प्रतिष्ठित) ज़मिनदार के बेटे थे। जब यह कुछ बड़े हुए तो उनके पिता ने उन्हें 'आतिश कदा' की जिम्मेदारी दे दी। यानी उनकी जिम्मेदारी यह थी कि रात दिन वह आग पर नज़र रखें और आग एक सेकंड के लिए भी बुझ न पाए। यह काम हज़रत सलमान फारसी (रज़ि.) बड़ी ज़िम्मेदारी के साथ करते थे। एक दिन उनके पिता ने उन्हें किसी काम से दूसरे गांव भेजा। रास्ते में उन्हें एक चर्च में कुछ लोग इबादत करते नज़र आए। उन्होंने नज़्दीक जाकर ईसाइयत की मालूमत हासिल की। चूंकि ईसाइयत के नज़रियात पारसीयों से कहीं बेहतर हैं इसलिए उन्होंने ईसाइयत धारण करने की ठान ली। पिता सख्त खिलाफ थे इसलिए घर से फरार होकर शाम देश चले गए और एक चर्च में रहने लगे। जब वहां के पादरी का देहांत हुआ तो नेक पादरी की तलाश में 'नसीबन' जाकर वहां के चर्च में रहने लगे। जब वहां के पादरी का देहांत का समय करीब आया तो उस पादरी ने किसी दूसरे पादरी का पता तो नहीं बताया सिर्फ इतना कहा कि अंतिम पैगम्बर के प्रकट होने का समय हो गया है। और वह अरब देश में प्रकट होंगे। उस अरब इलाके की सारी जानकारी भी दे दी। इसलीए हज़रत सलमान फारसी (रज़ि.) अरब जाने के लिए एक कारवां में शामिल हो गए। जब मक्का मुकर्रमा करीब आया तो कारवां वालों ने उन्हें गुलाम बनाकर मक्का मुकर्रमा में बेच दिया। फिर एक यहूदी उन्हें मक्का मुकर्रमा से खरीदकर मदीना मुन्नवरा ले गया। गुलामी के बावजूद सत्यमार्ग की खोज उन्होंने जारी रखी। कुछ दिनों बाद हज़रत मुहम्मद (स.) ने मक्का से मदिना हिजरत की तो आप (स.) की सेवा में हाज़िर होकर पहले तो हज़रत मुहम्मद (स.) की परिक्षा ली कि आप (स.) वास्तव में अल्लाह के सच्चे नबी हैं। और जब आप (स.) को सच्चा नबी पाया तो अपने मालिक की मर्ज़ी के खिलाफ ऐसा ईमान लाए और ऐसे सच्चे मुसलमान सिद्ध हुए की हज़रत मुहम्मद (स.) ने आपको गुलामी से आज़ाद कराने के बाद अपने 'अहले बैत' (हज़रत मुहम्मद (स.) के परिवार) में शामिल फरमाया। खंदक की जंग में खंदक खोदने की सलाह हज़रत सलमान फारसी (रज़ि.) की ही थी। वह सन्यासी (Monk) न थे मगर इबादत का इतना ज़्यादा शौक आपमें था की सारी जिंदगी सन्यासियों की तरह बगैर घरबार के रहे।

(मुहाजरीन वॉल्युम २, पेज ६०, शाह मायुयदीन अहमद नदवी)

- हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमरौ बिन आस (रज़ि.) बयान करते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) को (मेरे बारे में) बताया गया कि मैं कहता हूं: अल्लाह तआ़ला की कसम! मैं जबतक जिंदा रहूंगा मैं रोज़ा रखुंगा। और रात को कयाम करूंगा (इबादत के लिए खड़ा रहूंगा)। हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "तुमने यह यह बातें की हैं?" मैंने आप (स.) से कहा "ऐ अल्लाह के रसूल (स.)! मेरे माता-पिता आप पर कुर्बान हों मैंने यह बातें कीं हैं।" आप (स.) ने फरमायाः "तुम यकीनन (निश्चित) इसकी ताकत नहीं रखोगे। इसलिए तुम कभी रोज़ा रख लो और कभी ना रखो। रात को सोया भी करो और कयाम भी किया करो। हर माह तीन रोज़े रख लिया करो। क्योंकि हर नेकी का सवाब दस गुना है। इस तरह तुम्हारा यह कर्म महीने भर के लिए रोज़े रखने के बराबर हो जाएगा।" मैंने अर्ज़ किया "मैं इससे ज़्यादा की ताकत रखता हूँ।" आप (स.) ने फरमाया "एक दिन रोज़ा रखो और दो दिन रोज़ा ना रखो।" मैंने अर्ज़ किया "मैं उससे ज़्यादा की ताकत रखता हूँ।" आप (स.) ने फरमाया "फिर एक दिन रोज़ा रखो और एक दिन रोज़ा ना रखो। यह हज़रत दाऊद (अ.स.) का रोज़ा है। यह रोजों में सबसे मुतअ़दिल (संतुलित) और रास्त (सीधा) तरीका है।"

  एक और रिवायत में है कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने मुझ से पूछाः "क्या मुझे यह नहीं बताया गया कि तुम हमेशा रोज़ा रखते हों और पूरी रात कुरआ़न पाक पढ़ते रहते हो?" मैंने अर्ज़ किया; "ऐ अल्लाह के रसूल (स.)! ऐसा ही है, लैकिन मैं यह सब कुछ नेकी और भलाई के इरादे ही से करता हूँ।" आप (स.) ने फरमायाः "अल्लाह तआ़ला के नबी हज़रत दाऊद (अ.स.) के जैसा रोज़ा रखो क्योंकि वह लोगों में सबसे ज़्यादा इबादत गुज़ार थे। और हर महीने में एक कुरआ़न की तिलावत पूरी करो।" मैंने अर्ज़ किया "ऐ अल्लाह के नबी! मैं इस से ज़्यादा की ताकत रखता हूँ।" आप (स.) ने फरमाया "फिर बीस दिन में पढ़ लिया करो।" मैंने अर्ज़ किया "ऐ अल्लाह के नबी! में इससे ज़्यादा की ताकत रखता हूँ।" आप (स.) ने फरमाया "फिर दस दिनो में पढ़ लिया करो।" मैंने अर्ज़ किया "ऐ अल्लाह के नबी! में उससे ज़्यादा की ताकत रखता हूँ।" आप (स.) ने फरमाया "फिर उसे सात दिनो में पूरा करो। और उससे ज़्यादा ना करो। पस मैं ने सख्ती की तो मुझपर सख्ती कर दी गई।" हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमायाः "तुम्हें मालूम नहीं कि शायद तुम्हारी उमर लम्बी हो।" (रियाजुल स्वालेहिन, जिल्द १, हदीस १५०)

- हज़रत मुहम्मद (स.) के सहाबा कराम (रज़ि.) मस्जिदों की चार दीवारी

में कैद रहने वाले सन्यासी (Monk) नहीं थे बल्कि व्यापारी, किसान और मैदान कारज़ार के शहसवार (फौजी) थे।

हज़रत मुहम्मद (स.) की वफात (इस दुनिया को छोड़ कर चले जाने) के बाद हज़रत सअद बिन अबी वकास (रज़ि.) जो अपनी सारी जायदाद खुदा की राह में दे देना चाहते थे वह इस्लामी फौज के कमांडर चीफ बने और उनकी फौज ने ईरान पर विजय प्राप्त कीया। हज़रत अब्दुल्ला बिन उमरी बिन आस (रज़ि.) जो सारी जिंदगी रोज़े रखना चाहते थे, सारी रात इबादत करना चाहते थे और हर रात एक कुरआ़न खतम करना चाहते थे वह इराक के गवर्नर बने। और हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) जिन्होंने बहोत ज़्यादा हदीसें बयान की हैं और जो कयामत में अपने ज़्यादा से ज़्यादा शारिरीक अंगो को चमकाने के लिए वजू में कंधो तक हाथ धोया करते थे, वह बेहरैन के गवर्नर बने। हज़रत सलमान फारसी (रज़ि.) जो हक (सत्य) की तलाश में ईरान से निकले और मक्का मुकर्रमा में गुलामों की तरह बेचे गए, हज़रत उमर (रज़ि.) की खिलाफत (इस्लामी शासन) में मदायेन के गवर्नर नियुक्त हुए। उन सहाबा कराम (रज़ि.) में इतनी योग्यताएं थीं की २० साल की अवधि में उन्होंने ईरान और रोम को फतेह कर लिया और वहां ऐसा राज कीया कि दुनिया आज भी उन्हें याद करती है। W.H. Hart ने हज़रत उमर (रज़ि.) को महानतम लोगों की अनुक्रमाणिका में ५० वे नंबर पर जिक्र किया है। (हज़रत मुहम्मद (स.) का नाम उस अनुक्रमाणिका में पहले नंबर पर है।)

- सहाबा कराम (रज़ि.) की बहुत अधिक इच्छा थी कि मज़हबी मामलों और इबादतों में बेहतर से बेहतर बनें। बेहतरी और आगे बढ़ते रहने के उस स्वभाव ने ना सिर्फ उन्हे दीन (धर्म) में ऊंचा स्थान प्रदान किया बल्कि संसारिक पहलू से भी उन्होंने महान सफलता प्राप्त की। सहाबा कराम (रज़ि.) का कहना है कि अल्लाह तआ़ला ने हमें धर्म पर चलने के कारण माल और दौलत से इतना सम्मानित कीया कि हमारी आनेवाली पीढ़ी इतनी रकम ५०० साल में भी न कमा पाती। अपने सुधार और नेकी में बढ़त की चाह ने सहाबा कराम (रज़ि.) को इतिहास में अमर बना दिया।

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जिसे सबसे ज़्यादा चिंता आखिरत (परलोक) की होगी अल्लाह तआ़ला उसके दिल को गनी (मालदार) कर देता है, उसके उलझे हुए कामों को सुलझा देता है, और दुनिया उसके पास नीच और अपमानित होकर आती है।"

(तिरमिज़ी, तर्जुमाने हदीस जिल्द१,, हदीस नंबर २२)

दुनियावी कामयाबी का यह भी एक राज़ है। एक ईश्वर को न मानने वालों के लिए यह दुनिया तो स्वर्ग है उनको अल्लाह तआ़ला बगैर किसी मेहनत के भी दौलत देते रहते हैं। लैकिन अगर एक सच्चे पक्के मुसलमान को बड़ी दुनियावी कामयाबी प्राप्त करनी है तो आखिरत की कामयाबी की उस में बहुत चाह होनी चाहिए और उसकी कोशिश भी होनी चाहिए। अगर हम जिंदगी और व्यापार में सहाबा कराम (रज़ि.) की तरह कामयाबी चाहते हैं तो हमें भी सहाबा कराम (रज़ि.) की तरह अपने सुधार और नेकी में बढ़त की बहुत अधिक चाह होनी चाहिए और कोशिश होनी चाहिए। (इन्शा अल्लाह)

▼▼▼▼▼▼▼

(पेज ७१ से आगे... विनम्र स्वभाव का महत्व)

"जिस व्यक्ति को नर्मी में से उसका हिस्सा दिया गया, उसको दुनिया और आखिरत की भलाइयों मे से उसका हिस्सा दिया गया और जो व्यक्ति नर्मी में से अपने हिस्से से महरूम (वंचित) कर दिया गया वह (दुनिया और आखिरत की) भलाइयों में से अपने हिस्से से महरूम रहा।"(शरहुस्सुन्ना, बा-हवाला मुन्तखब अबवाब जिल्द १, हदीस नं.११४०)

- नबी करीम (स.) ने फरमाया "बेशक गुस्सा शैतान की तरफ से होता (अबु दाऊद ४७८४ अन अतिया (रज़ि.)

- हज़रत अबु हुरैरा (रज़ि.) हज़रत मुहम्मद (स.) से रिवायत करते हैं कि आप (स.) ने फरमाया, "नेक मोमिन भोला और शरीफ होता है, और 'बदकार व्यक्ति' मक्कार और कमीना होता है।"

(अहमद, तिरमिज़ी, अबु दाऊद, बा-हवाला मुन्तखब अबवाब, जिल्द १, हदीस११४८)

- हज़रत मक्हुल (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया "ईमान वाले विनम्र स्वभाव, नर्म तबीयत और उस ऊंट की तरह फरमां बरदार (आज्ञाकारी) होते है, जिसकी नाक में नकील पड़ी हो। अगर उसको खींचा जाएं तो खिंचा चला आए, और अगर पत्थर पर बैठाया जाए तो पत्थर पर बैठ जाए।"

(तिरमिज़ी, बा-हवाला मुन्तखब अबवाब जिल्द १, हदीस नं.११४६)

- हज़रत उमर बिन हारिस (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमायाः "तुम अपने मुलाजिमों (कर्मचारियों) से जितनी हल्की सेवा लोगे उतना ही अज्र और सवाब तुम्हारे कर्म-सूची (आमालनामा) में लिखा जाएगा।" (अबू याला, बा-हवाला ज़ादे राह, हदीस नं.७६)

- नबी करीम (स.) ने फरमाया "अल्लाह तआला हर उस शख्स से नफरत व अदावत रखता है जो तंद खौ और सख्तदिल है जिसके मिजाज में गुरूर और तक्कबुर है। जो मंडीयों और बाजारों में दफ्तरों और काम की जगहों पर चिंखता और दहाडता रहता है। जो रात को बिस्तर पर उस तरह जा पडता है। गोया मुर्दा लाश है दिन के वक्त कामों में उस तरह जुटा नजर आता है जैसे गधा। जो अमुर दुनीया में तो बड़ी वक्फीयत और मालुमात रखता है मगर आखिरत के मामलात में कोरा है। (मुस्नद अहमद)

एक और हदीस का मफहुम यह है की दुनीया परस्तों के इस गिरोह का यह हाल होता है की रात छा जाती है तो बिस्तरों में इस तरह ढेर हो जाते है जैसे लकडी के कुंदे पडे हुए हो। सुबह होती है तो हर्ष व बखिल में डुबे हुए इस तरह कारोबारी में उलझते है कि किसीको डांट रहे है या किसी पर दहाड रहे है किसी को पुकार रहे है, किसी को बता रहे है और किसी से पुछ रहे है, गोया एक हंगामा है जो इनके दुनिया परस्ताना मिजाज ने बरपाकर रखा है।

- हज़रत बहैज बिन हकीम अपने वालीद के वास्ते से अपने दादा मआविदा बिन हैदा कसेरी से रवायत करते है की नबी करीम (स.) ने फरमाया "गुस्सा ईमान को ऐसे खराब करता है जैसे एलवा शहद को खराब कर देता है। (शुएबुल ईमान लल बैहकी, बा हवाला मारूफुल हदीस)

तश्रीहः दर हकीकत गुस्सा ऐसी ही सौज चीज है जब आदमी पर सवार होता है तो अल्लाह की मुकर्रर की हुई हुदूद से तजाविज कर जाता है और इन्सान से वह बाते और वह हरकते सरजद होती है जो उसके दीन को बरबाद कर देती है और अल्लाह तआला की नजर से उसको गिरा देती है।

- ऊपर बयान की गई अहादीस शरीफा और कुरआनी आयात से आप अंदाजा लगा सकते हैं कि विनम्र स्वभाव कारोबार के लिए जरूरी तो है ही, मगर खुद अपनी दुनिया और आखिरत की कामयाबी के लिए भी बहुत ज़रूरी है। इसलिए हम अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करते हैं कि वह हमें नर्म तबीयत अता फरमाऐ। और हम खुद भी लोगों से नर्मी से पेश आने की कोशिश करें।

▼▼▼▼▼▼▼

३०. मुस्कुराहट का महत्व

- एक प्रसिद्ध चीनी कहावत है कि, "जिस आदमी का चेहरा मुस्कुराता हुआ ना हो उसे दुकान नहीं लगानी चाहिए।"

- जब आप मुस्कराते हैं तो अप्रत्यक्ष रूप से कहते हैंः

  "मैं आपको पसंद करता हुँ।"
  "मैं आपसे खुश हुँ।"
  "मुझे आपको देखकर खुशी हुई।" वगैरा।

- आप की इस प्रतिक्रिया से दूसरा व्यक्ति खुश हो जाता है और उसकी प्रतिक्रिया भी सकारात्मक हो जाती है। इस तमाम कारवाई से दोस्ताना माहौल पैदा होता है।

- मुस्कुराहट लोगों के दरम्यान दिवार को तोड़ देती है। इस से गर्मजोशी और दोस्ताना माहौल पैदा होता है। लोग प्राकृतिक तौर पर ऐसे लोगों को पसंद करते हैं और उनसे सहयोग करते हैं जिनके चेहरों पर फितरी और वास्तविक मुस्कुराहट होती है। इसलिए लोगों का स्वागत गर्मजोशी से मुस्कुराकर करें।

- क्या इस्लाम में सिर्फ नफ्सकशी, गंभीरता और मेहनत व कठोर परिश्रम ही है, या कुछ आसानी और खुश रहने की इज़ाजत है? आइयें पवित्र कुरआ़न और हदीस में हम उस सवाल का जवाब तलाश करते हैं। अल्लाह तआ़ला कुरआ़न करीम में फरमाता हैः

- "ऐ मोहम्मद (स.)! हमने तुमपर कुरआन इस लिए नाजील नहीं किया कि तुम मशक्कत (बहोत अधिक तकलीफ) में पड़ जाओ।"
  (सूरह ताहा आयत २)

- अल्लाह तुम्हारे हक में आसानी चाहता है। और सख्ती नहीं चाहता।
  (सूरह बकरा आयत १८५)

- रसूल अल्लाह (स.) ने फरमाया, "अपनी तरफ से दीन (धर्म) में सख्ती करने वाले नष्ट हो गए।" (मुस्लिम, रियाज़ूल स्वालेहीन)

  उपर दी गई आयत और हदीस से आप समझ सकते हैं कि इस्लाम आसानी का धर्म है। अब मुस्कुराने की रिवायात का अध्ययन करते हैंः

- इस्लाम गैर-दिलचस्प (गैर-रोचक), डर और चिंताओं से भरी हुई और निराश जीवन की शिक्षा नहीं देता, बल्कि वह खुश, दोस्ताना, हमदर्ददाना, वलवला खेज (पूर जोश) और सम्मानित जीवन-शैली की शिक्षा देता है। उदाहरणतः इस्लाम में मुस्कुराकर गर्म जोशी से किसीका स्वागत करने का बड़ा महत्व है। निचे दिए गए बयान से आप इसका अंदाजा कर सकते हैं।

- हज़रत अब्दुल्ला बिन हारीस (रज़ि.) कहते हैं कि मैं जब से मुसलमान हुआ हुँ, हज़रत मुहम्मद (स.) ने मुझे (अपने पास आने से) कभी नहीं रोका, और जब भी आप (स.) मुझे देखते मुस्कुरा देते।
  (बुखारी, मुस्लिम, मुन्तखब अबवाब, हदीस ८२५)

- हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमायाः "अपने भाई के सामने मुस्कुराना भी सदका (पुण्य का काम) है"
  (तिरमिज़ी, हदीसे नबवी हदीस ११०)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अपने भाई से मुस्कुराकर मिलने से उतना ही सवाब मिलता है जितना रूपया दान करने से होता है।"
  (तिरमिज़ीः १९५६)

- हज़रत मोहम्मद (स.) हमेशा लोगों से मुस्कुराकर और खुलूस व अख्लाक से मुलाकात करते थे, अल्लाह तआ़ला ने कुरआ़न में आपके चरीत्र की तारीफ की और यूं फरमाया, "(ऐ मोहम्मद (स.)) तुम्हारे अख्लाक (चरीत्र) बड़े ऊंचे हैं।" (सूरह कलम आयत ४)

- हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) और हज़रत मआ़ज़ बिन जबल (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमायाः "हर हाल में अल्लाह से डरो। कोई गुनाह हो जाए तो फौरन नेकी करो, वह उसको मिटा देगी, और लोगों से अच्छे अख्लाक से पेश आओ। "
  (तिरमिज़ी, हदीसे नबवी हदीस ४२१, सफा १९४)

- हज़रत अनस (रज़ि.) फरमाते हैं की हज़रत मुहम्मद (स.) कभी अकेले रहना पसंद नहीं फरमाते थें। बल्कि हमसे मिलजुलकर रहते थे। बतौर तवाज़ेहः आप (स.) मेरे छोटे भाई (दस साल से कम उम्र) से पुछते, "ओह! अबू उमेर तुम्हारी चिड़ीया को क्या हुआ?" (अबू उमैर के पास एक परींदा (चिड़िया) था जो बाद में मर गया)।

- हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) फरमाते हैं कि लोगों ने आश्चर्य के साथ आप (स.) से कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल (स.) आप हमसे हंसी और खुश तबयी (दिल्लगी) की बातें फरमाते हैं," आप (स.) ने जवाब दिया, "हां लैकिन कोई गलत और इस्लामी उसूल के खिलाफ नहीं कहता।"
  (तिरमिज़ी, ज़ादे राह हदीस ३२०)

- हज़रत मुहम्मद (स.) बेहद हंसमुख थे और बड़ा शाइस्ता (पवित्र) मज़ाक फरमाते थे। कभी कभी आप (स.) मुहब्बत और शफक्कत से सहाबा कराम (रज़ि.) को उनके असली नामों के बजाए दूसरे प्यारे नामों से संबोधित फरमाते थे। और आप (स.) के सहाबा कराम (रज़ि.) भी आप (स.) से उतनी मुहब्बत फरमाते थे कि वह उन्हीं नामों को अपने असली नामों से ज़्यादा पसंद करते थे। उदाहरणतः हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) का असल नाम "अब्दुल रहेमान बिन सखर" था और उन्होने एक बिल्ली पाल रखी थी। उस बिना पर हज़रत मुहम्मद (स.) ने एक बार उन्हें 'अबू हुरैरा' कहकर पुकारा जिसका मतलब होता है "बिल्ली के पिता"। हज़रत को अपना नया नाम 'अबू हुरैरा' इतना पसंद आया कि उन्होंने उसी को अपना लिया। आज इतिहास में वह उसी नाम से जाने जाते हैं। उनका असली नाम शायद ही किसी को पता हो।

  इसी तरह एक मरतबा हज़रत अली (रज़ि.) बिना चादर के मस्जिद में सो रहे थे उनके चेहरे पर रेत लगी हुई थी। हज़रत हज़रत मुहम्मद (स.) का गुजर वहां से हुआ तो आप (स.) ने कहा "ओ अबू तुराब उठो।"

'अबू तुराब' का अर्थ है रेत या मिट्टी के पिता। और हज़रत अली (रज़ि.) ने भी उस नाम को अपना लिया।

- हज़रत आएशा (रज़ि.) फरमाती हैं कि एक बार एक यहूदी, हज़रत मुहम्मद (स.) से मिलने आया। हज़रत मुहम्मद (स.) ने उस का गर्मजोशी से स्वागत फरमाया और मुस्कुरा कर अच्छी तरह से उस से बात की। जब वह चला गया तो हज़रत मुहम्मद (स.) ने हज़रत आएशा सिद्दीका (रज़ि.) से फरमाया, "वह यहूदी, अच्छा आदमी नहीं था।" हज़रत आएशा (रज़ि.) को बड़ा आश्चर्य हुआ और उन्होंने हज़रत मुहम्मद (स.) से पूछा, "फिर आपने (स.) उस से इतनी अच्छी तरह से क्यों बातचीत की? हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया "अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक सब से बूरा आदमी वह है जिसकी शरीर फितरत (दृष्ट स्वभाव) की वजह से लोग उससे दूर रहते हैं और मैं ऐसा व्यक्ति बनना नही चाहता।" (तिरमिज़ी, बेहकी)

  इसका मतलब यह है कि मेरे (हज़रत मुहम्मद (स.) के बरताव की वजह से लोग मुझसे मिलना जुलना ना छोड़ें।

  हज़रत बकर बिन अब्दुल्ला (रज़ि.) कहते हैं, "हज़रत मुहम्मद (स.) के सहाबी हज़रात (रज़ि.) दोस्ती और मज़ाक़ में (कभी कभी) खरबूज़े के छिलके एक दूसरे पर फेंकते थे। लैकिन जब इस्लाम की रक्षा का मौका आता तो यह बहोत ही गंभीर हो जाते थे।"

  (अल अदबुल मुफरद, जादे राह हदीस ३६८, पेज २५१)

- हज़रत अब्दुर रहेमान बिन औफ (रज़ि.) फरमाते हैं हज़रत मुहम्मद (स.) के सहाबी हज़रात तंग-दिल और तंग जहेनियत नहीं रखते थे। और ना ही वह अपने आप को पूर-तक्कलुफ (बनावटी अंदाज़) बनाए रखते। वह लोग तो अपनी मज्लीसों में शेर (शाइरी) सुनते और पढ़ते और जाहिली जिंदगी और उसका इतिहास बयान करके उस पर हसंत थे। अलबत्ता जब उनसे खुदा के दीन के सिलसिले में कोई अनुचित मांग की जाती तो उनकी आंखे गुस्से की वजह से लाल हो जातीं।

  (अल अदबुल मुफरद, जादे राह हदीस ३६७, पेज २५१)

- हज़रत कतादा (रज़ि.) (ताबयी) कहते हैं, किसी ने अब्दुल्ला बिन उमर (रज़ि.) से सवाल किया कि "रसूल अल्लाह (स.) के सहाबा हंसते भी थे?" उन्होंने जवाब दिया की "हां वह हसते भी थे, मगर ईमान उनके दिलों में इतनी मज़बुती से जमा हुआ था जितना पहाड़ मज़बुत होता है।" और बिलाल बिन सअद (र.अ.) कहते हैं की "मैंने सहाबा कराम (रज़ि.) को दिन में दौड़ में मुकाबला करते देखा है, और उन्हें एक दूसरे से हंसते हुए भी पाया है, लैकिन जब रात होती तो वह इबादत गुजार बन जाते थे।" (अल अदबुल मुफरद, जादे राह हदीस ३६६, पेज २४६)

- हज़रत जाबिर बिन समरा (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) जिस जगह पर फर्ज़ की नमाज़ पढ़ते, वहां से उस समय तक नहीं उठते थे जब तक सुरज (अच्छी तरह) न निकल आता, जब सूरज निकल आता (और बुलंद हो जाता) तो आप (इश्राक की नमाज़ पढ़ते और घर में तशरीफ ले जाने के लिए) खड़े होते, उस समय जो सहाबा मस्जिद में आप (स.) के साथ मौजूद रहते वह कभी जाहीलीयत के ज़माने की बातें भी करते और हंसते और हज़रत मुहम्मद (स.) उनकी बाते सुनकर मुस्कुराते (यानी आप हंसते नहीं थे बल्कि मुस्कुराते थे।)

  (मुन्तखब अबवाब, जिल्द १, हदीस ८२६)

  मुस्लिम और तिरमिज़ी की रिवायत में यूं है कि (उस दौरान) सहाबा कभी कभी अश्आर भी पढ़ते।

- हज़रत आएशा (रज़ि.) कहती हैं कि, मैंने हज़रत मुहम्मद (स.) को इतना ज़्यादा हंसते हुए कभी नहीं देखा कि मुझे आप (स.) के हलक का भीतरी भाग नज़र आया हो, (अधिकतर) आप (स.) का हंसना मुस्कुराने की हद तक रहता था।

  (बुखारी, मुस्लिम, मुन्तखब अबवाब, जिल्द १, हदीस ८२४)

मज़ाक की हद:

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) हज़रत मुहम्मद (स.) से रिवायत करते हैं कि आप (स.) ने फरमाया, "तुम अपने मुसलमान भाई से झगड़ा ना करो, ना उससे ऐसा मज़ाक करो (जिस से उसको तकलीफ पहोंचे) और ना अपने दोस्तों से ऐसा वादा करो जिसको पूरा ना कर सको।"

(तिरमिज़ी, मुन्तखब अबवाब, जिल्द १, हदीस ६६० सफहा ४७६)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अपने भाई की कोई चीज़ बिना इज़ाजत ना लें, यहां तक की मजाक़ में भी न लें।"

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने उस व्यक्ति पर लानत की जो दूसरों को हंसाने के लिए झूठी बातें बनाता है।

- खुशमिज़ाजी अच्छी बात है लैकीन किसीको खुश करने के लिए हमें मज़ाक़ में भी झूठ बोलना नहीं चाहिए, क्योंकि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "एक मोमिन का ईमान उस वक़्त तक पूरा नहीं होता जब तक वह झूठ बोलना ना छोड़े यहां तक कि वह मज़ाक़ और बहस में भी झूठ ना बोले, हालांकि वह दूसरे मामलात में सच बोलने वाला हो।" (बेहकी)

▼▼▼▼▼▼▼

क्या कयामत में आप अपने आमाल को चेक करना चाहते हैं?

अब्दुल्ला बिन करत (रजी.) का बयान है कि, हज़रत मुहम्मद (स) ने फरमाया, "कयामत के दिन सबसे पहले नमाज़ का हिसाब लिया जाएगा। अगर बंदा उसमें पूरा उतरा तो बकिया आमाल में भी कामयाब होगा। और अगर नमाज़ में पूरा न उतरा तो बकिया सारे आमाल खराब हो जाएंगें"

(अलमुंजरी बहावाला तिबरानी, सफिना ए नीजात हदीस नं ४१)

हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जो लोग खुदा का इन्कार करते हैं और जो लोग एक खुदा की इबादत करते हैं उन दोनो गिरोह में फर्क सिर्फ नमाज़ का है।" (मुस्लिम)

यानी जो लोग नमाज़ नहीं पढ़ते वह खुदा का इन्कार करने वालों की तरह हैं।

हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जो जान बूझकर नमाज नहीं पढ़ते उन्हें स्वर्ग से निकाल दिया जाऐगा।" (तिबरानी)

३१. हज़रत मुहम्मद (स.) के जीवन के कुछ मधुर क्षण

- मेरे छात्रावस्था के जमाने (सन १९७० सन १९८०) में गंभीरता, और प्रोफेसरों से ड़र-खौफ को अनुशासन (Discipline) का महत्वपूर्ण हिस्सा समझा जाता था। प्रोफेसर के क्लास-रूम में दाखिल होते ही एक दम सन्नाटा छा जाता। कड़वी दवा की तरह सारा लेक्चर गले के नीचे उतारना होता था, चाहे कोई बात समझ में आए या ना आए और ना इतनी हिम्मत होती की खड़े होकर जो बात समझ में नहीं आई फिर से पूछ लें।

  मगर अब नए जमाने में पढ़ाने का कुछ नया ही अंदाज है। कई ऊंची श्रेणी के और अच्छे टयूशन क्लासेस जिन्हें हर हाल में अपने बच्चों का अच्छा परिणाम (Result) चाहिए वह प्रोफेसर को बिल्कुल हंसी और खुशी के माहौल में पढ़ाने के लिए कहते हैं। यहाँ तक कि बच्चों को हसांने के लिए पढ़ाते पढ़ाते लतीफे (Jokes) वगैरा सुनाते हैं। हास्य गीत (Comedy songs) गाते हैं वगैरा वगैरा।

- इसी तरह बड़ी बड़ी कम्पनियों में साल में एक बार कम्पनी के तमाम लोग एक साथ पिकनिक पर जाते हैं और खूब मज़े करते हैं, या किसी होटल में वार्षिक दिन (Annual day) मनाते हैं और जमकर दावत उड़ाते हैं।

  क्लास रूम में खुशी का माहौल और कम्पनियों में पिकनिक और दावत के द्वारा लोगों की दूरी को कम करने की वजह इस बात की तहकीक (Research) है की खुशी और दोस्ताना माहोल में पढ़ाई अच्छी होती है और आफिस और कम्पनी में काम ज़्यादा होता है।

  खुशी और दोस्ताना माहोल में मुश्किल काम भी आसान लगता है। मुश्किल पढ़ाई में भी दिल लगता है और परिणाम (Results) अच्छे आते हैं। यही हाल आम जिंदगी का भी है। इमाम गज़ाली (र.अ.) ने अपनी किताब में लिखा हैं की देहातों में रात के समय भेड़िए वगैरा गांव से बिल्कुल करीब आ जाते हैं। और मुर्गी, बकरी वगैरा को उठा ले जाते है। इसी तरह वह छोटे बच्चों पर भी हमला करते हैं तो बच्चों को भेड़ियों से ड़राते रहना चाहिए। मगर इतना न ड़रा देना चाहिए की वह रात को घर से निकलना छोड़ दें। इसी तरह मौत की सख्ती, कब्र का अज़ाब, कयामत की सख्ती, नरक का अज़ाब, वगैरा अटल हैं। मगर उससे लोगों को इस कदर ना ड़रा देना चाहिए की मज़हब उन्हें बोझ लगने लगे। हज़रत मुहम्मद (स.) से बेहतर इस बात को और कौन जान सकता है? इसलिए आप (स.) खुद भी जिंदादिल और मुस्कुराते रहते और अपने आसपास भी एक मुस्कुराता पुरजोश और जिंदादिल माहोल बनाए रखते।

- हज़रत अब्दुल्लाह बिन हारिस (रज़ि.) कहते हैं कि मैंने हज़रत मुहम्मद (स.) से ज़्यादा किसी व्यक्ति को मुस्कुराते हुए नहीं देखा।
  (तिरमिज़ी, मुन्तखब अबवाबः ८२७)

  आप (स.) का पाकीज़ा मिज़ाह और आप की जिंदगी के कुछ खुशगवार (मधुर) लम्हात (क्षण) निम्नलिखित हैंः

हज़रत मुहम्मद (स.) का देहाती दोस्तः

- हज़रत अनस (रज़ि.) कहते हैं कि गांव के रहने वाले एक सहाबी जिनका नाम ज़ाहिर बिन हराम था। वह गांव से चीज़े लाकर मदीना में बेचते थे। हज़रत मुहम्मद (स.) के लिए भी हदिया (तोहफा) के तौर पर वह गांव से कुछ लाया करते थे। और जब वह मदीना से गांव के लिए जाते तो हज़रत मुहम्मद (स.) उनको मदीना शहर की चीज़े तोहफा के तौर पर दिया करते थे।

  वह बहुत मुत्तकी और परहेजगार थे। वह अरब ही के थे, मगर व्यक्तित्व (Personality) काले अफ्रीकी लोगों जैसी थी। हज़रत मुहम्मद (स.) उनसे मुहब्बत करते थे। और उनके बारे में फरमाते थे कि "यह मेरे देहाती दोस्त हैं और मैं इनका शहरी दोस्त हुँ।"

  एक दिन हज़रत मुहम्मद (स.) बाज़ार में तश्रीफ ले गए तो देखा की वह अपना सौदा सुल्फ बेच रहे है। आप (स.) ने पीछे से उनकी इस तरह कोली भर ली की वह आप (स.) को नहीं देख सकते थे। (यानी आप (स.) उनकी बेखबरी में उनके पीछे बैठ गए और अपने दोनों हाथों से उनकी आंखे छुपा लीं ताकि वह आप (स.) को पहचान न सकें।) ज़ाहिर ने कहाः "मुझे छोड़ दो, यह व्यक्ति कौन है?" फिर उन्होंने कोशिश करके कनअंखियों से देखा और हज़रत मुहम्मद (स.) को पहचान लिया, फिर वह अपनी पीठ को हज़रत मुहम्मद (स.) के सीने से चिमटाने की पूरी कोशिश करने लगे (ताकी ज़्यादा से ज़्यादा बरकत हासिल कर लें।) उधर हज़रत मुहम्मद (स.) ने आवाज़ लगानी शुरू कर दी कि कौन व्यक्ति इस बंदे को खरीदता है? उन्होंने अर्ज किया, "या रसूल अल्लाह (स.)! खुदा की कसम आप मुझको नाकारा (बेकार) पाऐंगे (यानी मेरी काली शख्सियत की वजह से आपको मेरी कोई कीमत नहीं मिलेगी)।" हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया "लैकिन तुम खुदा के नज्दीक नाकारा (बेकार) नहीं हो।" (शरहुस्सुनत, मुन्तखब अबवाब जिल्द अव्वल, हदीस ६५७)

ज़्यादा खजूरें किसने खायीं?

- एक रोज़ हज़रत मुहम्मद (स.) हज़रत अली (रज़ि.) और कई सहाबा (रज़ि.) एक साथ एक थाल में खजूरें खा रहे थे। हज़रत मुहम्मद (स.) युहीं खजूरे खा-खाकर गुठलियों को हज़रत अली (रज़ि.) के आगे रखते जा रहे थे। जब सारे लोग खजूरें खा चूके और हज़रत मुहम्मद (स.) के सामने गुठलिया नहीं थी और हज़रत अली (रज़ि.) के सामने गुठलियों का ढ़ेर था तो हज़रत मुहम्मद (स.) ने मज़ाक में फरमाया किः "ऐ अली (रज़ि.)! तुमने बहोत ज्यादा खजूरें खायीं है।" हज़रत अली (रज़ि) ने फौरन कहा की "या रसूल अल्लाह (स.) आज मुझे मालूम हुआ की आप (स.) गुठलियों समेत खजूरें खाते हैं।"

  हज़रत मुहम्मद (स.) और दूसरे सहाबा कराम (रज़ि.) इस हाज़िर जवाबी से बहुत आनंदित हुए। इसी तरह हज़रत शोएब (रज़ि.) जो कि प्रसिद्ध सहाबी ए रसूल थे, हज़रत मुहम्मद (स.) की सेवा में पहुँचे। आप (स.) उस समय खजूरें खा रहे थे। हज़रत शोएब (रज़ि.) की एक आंख आयी हुई थी। चूंकी खजूरें गर्म प्रभाव की होती हैं इसलिए आंख की तकलीफ के समय नहीं खानी चाहिए। फिर भी हज़रत शोएब (रज़ि.)

खजूरें खाने लगे, तो हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया की "आंख आयी हुई है और खजूरे खा रहे हो?" जिसपर हज़रत शोएब (रज़ि.) ने कहा "या रसूल अल्लाह (स.) मैं अच्छी आंख से खा रहा हुँ, एक आंख तो दुरूस्त है।" इस हाजिर जवाबी पर आप (स.) मुस्कुरा दिए।

ऊंट के बच्चे की सवारी :

- हज़रत अनस (रज़ि.) कहते हैं कि एक दिन एक व्यक्ति ने हज़रत मुहम्मद (स.) से सवारी के लिए जानवर मांगा, तो आप (स.) ने मज़ाक में फरमायाः मैं तुम्हें सवारी के लिए ऊंटनी का बच्चा दूंगा, उस व्यक्ति ने (आश्चर्य के साथ) कहाः "या रसूल अल्लाह (स.) में ऊंटनी का बच्चा लेकर क्या करूंगा, जो सवारी के काबिल नहीं होता?" हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया "जवान ऊंट भी ऊंटनी का बच्चा ही होता हैं।" (तिरमिज़ी, अबू दाऊद, मुन्तखब अबवाब जिल्द १, हदीस ६५४)

- हज़रत अनस (रज़ि.) से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने एक बार प्यार से उन्हें दो कानों वाला कहकर पुकारा था। कान तो हर इंसान के दो ही होते हैं। हज़रत मुहम्मद (स.) का यह एक प्यार भरा और मज़ाक में कहने का अंदाज था। इसी तरह एक बार हज़रत अली (रज़ि.) मस्जिदे नबवी की फर्श पर बगैर चादर बिछाए मिट्टी पर ही लेटे हुए थे इसलिए उनके गाल पर मिट्टी भी लग गई थी। जब हज़रत मुहम्मद (स) ने उन्हें जगाने के लिए आवाज दी तो गाल की मिट्टी को देखते हुए मज़ाक से कहा किः "ऐ अबू तुराब! (यानी मिट्टी के पिता)। यह नाम हज़रत अली (रज़ि.) को इतना पसंद आया कि उन्होंने हमेशा के लिए उसे अपनी कन्नियत (उपनाम) रख ली।"
(तिरमिज़ी, अबू दाऊद, मुन्तखब अबवाब जिल्द १, हदीस ६५५)

स्वर्ग में कोई बुढ़िया नहीं जाएगी:

हज़रत अनस (रज़ि.) कहते हैं कि एक बार एक बुढ़िया हज़रत मुहम्मद (स.) के पास आयी और कहने लगी कि "या रसूल अल्लाह (स.) मेरे लिए दुआ करें की अल्लाह अपनी कृपा से मुझे स्वर्ग में दाखिल करें।" हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा, "कोई बुढ़िया स्वर्ग में नहीं जाएगी।" वह बुढ़िया आपके मज़ाक को समझ न पायी और दुखी हो गई और उसने कहा "या रसूल अल्लाह (स.) क्यों कोई बुढ़िया स्वर्ग में नहीं जाएगी?" हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहाः "क्या आपने कुरआन में नहीं पढ़ा कि स्वर्ग में औरते जवान होंगी"। (तब बुढ़िया को सुकून हुआ।)
(जरीन, मुन्तखब अबवाब जिल्द १, पेज ६५५)

(जवानी अल्लाह की बहोत बड़ी नियामत (वरदान) है। इसलिए अल्लाह तआ़ला जिसे भी स्वर्ग में दाखिल करेंगे पहले उसे जवानी की नियामत (वरदान) प्रदान करेंगे। फिर स्वर्ग में दाखिल करेंगे।)

दोस्ताना बातचीत:

- हज़रत औफ बिन मालिक अश्जा (रज़ि.) कहते हैं कि तबूक की लड़ाई के दौरान एक दिन मैं हज़रत मुहम्मद (स.) की सेवा में हाज़िर हुआ। उस वक़्त आप (स.) चमड़े के एक छोटे से खैमे में ठहरे हुए थे। मैंने आप (स.) को सलाम किया। आप (स.) ने जवाब दिया और फरमायाः "अंदर आ जाओ" मैंने (दिल्लगी के तौर पर) अर्ज कियाः "या रसूल अल्लाह (स.)! मैं सब का सब अंदर आ जाऊं यानी सारे जिस्म को अंदर ले आऊं?" आप (स.) ने फरमायाः "हां! सारे बदन के साथ अंदर आ जाओ।" चुनांचे मैं खैमे के अंदर दाख़िल हो गया।

  हज़रत उस्मान (र.अ.) बिन अबू आतिक़ा (जो इस हदीस के एक रावी हैं।) कहते हैं कि हज़रत औफ (रज़ि.) ने यह बात की "क्या मैं सबका सब अंदर आ जाऊं" इसलिए कही थी की खैमा छोटा था। आप सिर्फ अंदर झांककर भी बातचीत कर सकते थे। मगर दोनों हज़रात खुशगवार माहोल में थे। इसलिए आप (स.) से आधे और पूरे जिस्म का जिक्र हुआ। (अबू दाऊद, मुन्तखब अबवाब जिल्द १, पेज ६५८)

- सिर्फ युं ही मिज़ाह के लिए हज़रत मुहम्मद (स.) ने एक व्यक्ति से पूछा, "तुम में और तुम्हारे मामा की बहन में क्या रिश्ता होगा?" वह व्यक्ति अपना सिर झुकाकर सोचने लगा। जब वह कोई जवाब नहीं दे सका तो आप (स.) ने उससे फरमायाः "अपनी बुद्धि इस्तेमाल करो, क्या तुम अपनी माँ को याद नहीं कर सकते हो?"

- एक बार एक देहाती ऊंट पर सवार होकर मदीना आया। और रसूल अल्लाह (स.) के साथ नमाज अदा की। जब जाने के लिए ऊंट पर सवार हुआ। उस समय उसने ऊंची आवाज में कहा, "ऐ खुदा! मुझपर और हज़रत मुहम्मद (स.) पर अपनी कृपा फर्मा और किसी पर अपनी कृपा मत फरमाना।" हज़रत मुहम्मद (स.) यह मूर्खतापूर्ण दुआ सुनकर मुस्कुराए और अपने एक सहाबी (रज़ि.) से मज़ाक में पूछा, "कौन बड़ा मूर्ख हैं? यह व्यक्ती, या उसका ऊंट! क्या तुमने सुना उसने क्या कहा?" सहाबा (रज़ि.) मुस्कुराए और अर्ज किया, "हाँ हमने उसे सुना।"
(मुन्तखिब अबवाब)

हालाते अमन में मुझे नज़रअंदाज ना करो:

- हज़रत नोमान बिन बशीर (रज़ि.) कहते हैं कि एक दिन हज़रत अबू बक्र ने हज़रत मुहम्मद (स.) की सेवा में हाज़िर होने के लिए दरवाजे पर खड़े होकर आप (स.) से इज़ाजत मांगी। जभी उन्होंने हज़रत आएशा (रज़ि.) की आवाज सुनी, जो जोर-जोर से बोल रही थीं। फिर हज़रत अबू बक्र (रज़ि.) जब घर में दाखिल हुए तो उन्होंने हज़रत आएशा (रज़ि.) को तमाचा मारने के इरादे से पकड़ा और कहा। (खबरदार! आइंदा) मैं तुम्हें हज़रत मुहम्मद (स.) से ऊंची आवाज़ में बोलते हुए न देखूं। उधर हज़रत मुहम्मद (स.) ने हज़रत अबू बक्र (रज़ि.) को मारने से रोकना शुरू किया। फिर हज़रत अबू बक्र (रज़ि.) गुस्से की हालत में निकलकर चले गए।

  हज़रत मुहम्मद (स.) ने हज़रत अबू बक्र (रज़ि.) के चले जाने के बाद (हज़रत आएशा (रज़ि.) से) फरमाया "तुमने देखा मैंने उस आदमी यानी हज़रत अबू बक्र (रज़ि.) के हाथ से तुम्हें किस तरह बचा लिया?" हज़रत आएशा (रज़ि.) कहती हैः "उसके बाद हज़रत अबू बक्र (रज़ि.) (मुझसे नाराज़ी की बिना पर या हज़रत मुहम्मद (स.) से शरमिंदगी की वजह से) कई दिन तक हज़रत मुहम्मद (स.) की सेवा में नहीं आए। फिर एक दिन उन्होंने दरवाज़े पर हाजिर होकर अंदर आने की इज़ाजत मांगी और अंदर आए तो देखा की दोनों (यानी हज़रत मुहम्मद (स.) और हज़रत आएशा (रज़ि.)) सुलह की हालत में है, तो उन्होंने दोनो को मुखातिब करके कहाः "तुम दोनों मुझको अपनी सुलह में शरीक कर लो, जिस तरह तुमने मुझको अपनी लड़ाई में शरीक किया था।" हज़रत मुहम्मद ने (स.) यह सुनकर फरमायाः "बेशक हमने ऐसा ही किया, बेशक हमने ऐसा ही किया, बेशक हमने ऐसा ही किया (यानी उन्हें

अपनी सुलह में शरीक कर लिया)।"

(अबू दाऊद, मुन्तखब अबवाब जिल्द १, पेज ६५६)

मुफ्त की दावत:

एक बार हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) ने हज़रत मुहम्मद (स.) से कहा, "सुना है कि जब दज्जाल जाहिर होगा तो दुनिया कहत (अकाल) का शिकार होगी। उस आम कहत (अकाल) में दज्जाल लोगों की दावत करेगा जिसमें अलग अलग तरह के खाने होंगे। मेरा खयाल है कि अगर मैं उस दौर में हुआ तो पहले उसके खानों से खुब पेट भरूंगा, फिर उससे मुनहरफ (बागी) हो जाऊंगा।" यह सुनकर हज़रत मुहम्मद (स.) मुस्कुराए और इरशाद फरमाया कि अगर तुम उस दौर में हुए तो अल्लाह तआ़ला तुम्हें उसका मोहताज नहीं रखेंगे।

मासूम मुसाफिर की आदरणीय सवारी:

एक बार नन्हें हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि.) ने जो हज़रत मुहम्मद (स.) के नवासे हैं ऊंट की सवारी की इच्छा ज़ाहिर की, तो हज़रत मुहम्मद (स.) ने उन्हें कंधो पर उठा लिया और कमरे के एक कोने से दूसरे कोने तक ले गए। उसी दौरान इमाम हुसैन (रज़ि.) ने कहा की "ऊंट की तो मुहार (लगाम) होती है। जब के मेरे ऊंट की मुहार (लगाम) कोई नहीं।" उसपर हज़रत मुहम्मद (स.) अपने बाल उनके हाथ में दिए और कहा "यह तुम्हारे लिए मुहार (लगाम) है।"

उस हालत में हजरत उमर (रज़ि.) तशरीफ ले आए और मुस्कुराकर हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि.) से कहा "ऐ हुसैन! तुम्हारी सवारी तो बहोत खूब है।" उसपर हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया की, "सवार भी तो खूब है!"

मैं आपको स्वर्ग में नहीं चाहता:

हज़रत अबू जर गिफ़्फारी (रज़ि.) जो हज़रत मुहम्मद (स.) के सहाबा में से थे। वह बहुत मुत्तकी, परहेजगार और हमेशा सच्ची बात कहने वाले थे। हज़रत मुहम्मद (स.) के मृत्यु के बाद जब वह लोगों को गलत काम करते देखते तो डंडा लेकर खुद सज़ा देने दौड़ पड़ते। वह किसी बुराई को बर्दाश्त नहीं कर सकते थे, इसलिए जिंदगी के आखरी दिन शहर से बाहर वादियों में अकेले गुज़ारे।

हज़रत अबू जर गिफ्फारी (रज़ि.) कहते हैं कि मैं एक दिन हज़रत मुहम्मद (स.) की सेवा में पहुंचा तो आप (स.) उस समय सफेद कपड़ा ओढ़े सोए हुए थे। फिर कुछ देर बाद मैं हाजिर हुआ तो आप (स.) जाग चुके थे। उस समय हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमायाः "जो कोई बंदा 'ला इलाहा इल्ललाह' कहे, और फिर उसी पर उसको मौत आ जाए, तो वह स्वर्ग में जरूर जाएगा।" अबू जर (रज़ि.) कहते हैं, मैंने पूछा "क्या उसने ज़िना किया हो और अगर चा उसने चोरी की हो," हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमायाः "हां! अगर चा उसने ज़िना किया हो, और उसने चोरी की हो तब भी?" (अबू जर (रज़ि.) कहते है) मैंने फिर अर्ज किया "अगर चा उसने ज़िना किया हो और अगर चा उसने चोरी की हो?" हज़रत मुहम्मद (स.) ने फिर इरशाद फरमायाः "हां! अगर चा उसने ज़िना किया हो, अगर चा उसने चोरी की हो!" (अबू ज़र (रज़ि.) कहते हैं) मैंने फिर ताज्जुब से अर्ज किया कीः (या रसूल अल्लाह (स.)! 'ला इलाहा इल्ललाह' की शहादत (गवाही) देनेवाला स्वर्ग में जरूर जाएगा) "अगर चा उसने ज़िना किया हो और अगर चा उसने चोरी की हो?" हज़रत मुहम्मद (स.) ने फिर इरशाद फरमायाः "हां! वह स्वर्ग में जरूर जाएगा। अगर चा उसका स्वर्ग में जाना अबू ज़र (रज़ि.) को कितना ही बुरा लगे।"

हज़रत मुहम्मद (स.) के देहांत के बाद जब कभी भी हज़रत अबू जर (रज़ि.) यह हदीस जिक्र करते तो उस जुमले को (आनंद ले कर) जरूर दोहराते। "जो कोई अल्लाह पर ईमान रखता है स्वर्ग में जरूर जाएगा अगर चा उसने ज़िना और चोरी की हो और अगर चा उसका स्वर्ग में जाना अबू जर (रज़ि.) को कितना ही बुरा लगे।"

(बुखारी, मुस्लिम, मारूफुल हदीस जिल्द १, पेज १०१)

लालची बंदा:

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया "कयामत के दिन अल्लाह तआ़ला एक बंदे का हिसाब किताब दुनिया वालों की नज़र से दूर पर्दे के पीछे खड़ा करके लेंगे और एक-एक करके उसे उसके छोटे-छोटे गुनाह गिनाएंगे।"

  बंदा डरता होगा की अभी तो यह छोटे-छोटे गुनाह हैं, बड़े गुनाहों के दफ्तर (Book) खुले तो जाने क्या होगा। मगर हिसाब किताब के दरम्यान में ही अल्लाह तआ़ला उसकी किसी नेकी की वजह से उसे बख्श देंगे और कहेंगे जा मैंने यह तेरे सारे गुनाह भी नेकी में बदल दिए। बंदा जब अपने छोटे गुनाह नेकियों से बदलते देखेगा तो कहेगाः "या अल्लाह! अभी ठहरिए, अभी तो मेरे बड़े-बड़े गुनाह बाकी हैं। मैंने यह गुनाह भी किया है। और यह गुनाह भी किया है (वगैरा वगैरा)।"

  हज़रत मुहम्मद (स.) यह जुमला फरमाते हुए मुस्कुरा दिए।

(पेज ८२ से आगे... लगातार परिश्रम या दृढ़ता का महत्व)

कुरआनी आयतें जिस तरह आप (स.) पर नाज़िल हुईं और आप (स.) ने सहाबा ए कराम (रज़ि.) के रूबरू तिलावत फरमायीं। वह तमाम आयात उस दौर के तमाम पेशावर कवियों की कविताओं से कई दर्जे बेहतर थीं। यह अरब वालों के लिए चमत्कार था। उन के लिए यह शब्दों का तोहफा सबसे अज़ीम तोहफा था। पवित्र कुरआन का एलान यह है कि तमाम इंसान अल्लाह तआ़ला की नज़र में बराबर हैं। और दुनिया में इस्लामी व्यवस्था कायम होनी चाहिए। और मुहम्मद (स) की इच्छा थी कि काबा के ३६० बुतों को तोड़ दिया जाए। इन दो बातों की वजह से आपको जिलावतनी (निर्वासन) मिला। क्योंकि उन बुतों की वजह से ही लोग मक्का आते और वहा के व्यापार में बढ़ोतरी होती थी। (अगर बुत ही ना होते तो लोग वहा क्यूं आते और व्यापार में बढ़ोतरी क्यूं होती।) इसलिए मक्का के मालदार व्यापारी आप (स.) के पीछे पड़ गए और आपको हिजरत (स्थानांतरण) करना पड़ा।

इस्लाम के उरूज की शुरूआत रेगिस्तान में एक षोले (ज्वाला) की तरह हुई। इस धर्म की फौज एकजुट होकर इस बहादुरी से लड़ी कि कट गए मगर पीछे ना हटे। हज़रत मुहम्मद (स.) ने यहूदियों और ईसाइयों को अपने साथ शामिल होने की दावत दी। क्योंकि आप (स.) कोई नई बात नही कह रहे थे। आप (स.) सिर्फ कह रहे थे कि खुदा को माननेवाले एकजुट हो जाएं। मगर वह आप (स.) की बात न माने। अगर यहूदी और ईसाइ आप (स.) की दावत कुबूल कर लेते तो इस्लाम तमाम दुनिया को जीत लेता। ना उन्होंने आप (स.) की दावत कुबूल की ना उन्होंने मुहम्मद (स.) के जंग के उसूलों को अपनाया। जब मुहम्मद (स.) की फौज येरूशलम (Jerusalem) में दाखिल हुई तो एक भी इंसान का खून उसके धर्म की वजह से न बहाया गया। लेकिन जब सलैबी फौज सदियों बाद उस शहर में दाखिल हुई तो ना सिर्फ मुस्लिम मर्द औरत

३२. लगातार परिश्रम या दृढ़ता (Persistence) का महत्त्व

लगातार परिश्रम का महत्व:

शुद्ध लोहा नर्म होता है इसलिए शुद्ध लोहे का प्रयोग कभी कभार ही होता है। जब लोहे में ०.१ प्रतिशत कार्बन मिलाया जाता है तो लोहे की सख्ती (Hardness) और ताकत (Strength) में कुछ इजाफा होता है। यह लोहा वहाँ प्रयोग होता है जहाँ लचक (Yielding Property) का महत्व ताकत/मज़बूती (Hardness) से ज्यादा होता है। उदाहरणतः रोजमर्रा में प्रयोग होने वाले गहरे बरतन वगैरा। जब लोहे में ०.१ प्रतिशत से ०.२ प्रतिशत (Average) कार्बन और मिलाया जाता है तो लोहे की कठोरता और ताकत में (Average) बढ़ोतरी होती है। रोज मर्राह की जिंदगी में जो लोहा प्रयोग होता है उसमें ०.२ से ०.३ प्रतिशत कार्बन होता है। लोहे में जब और ०.१ प्रतिशत कार्बन की बढ़ोतरी होती है तो उसकी लचक कम होती है और ताकत में बढोतरी होती है। ऐसा लोहा जहाँ ज़्यादा ताकत की ज़रूरत होती है वहाँ प्रयोग होता है। उदाहरणतः बोल्ट, रेल की पटरी की एक्सल शाफ्ट वगैरा में। जब लोहा में कार्बन का ०.१ प्रतिशत की और बढ़ोतरी होती है तो लोहा बहोत ही सख्त हो जाता है। उसे 'प्लेन कार्बन' और 'ॲलॉय स्टील' कहा जाता है और यह सिर्फ खास मक्सद के लिए ही प्रयोग होता है। उसे आम चीजों में प्रयोग नहीं किया जाता।

जैसे कार्बन की कम मात्रा लोहे की क्वालिटी पर जादू का असर रखती है और वह लोहे को उपयोगी या बेकार बना देती है। वैसे ही मुस्तकिल मिजाज़ी (दृढ़ता) भी इंसान के जीवन में जादू का असर रखती है। यह इंसान को कारआमाद (उपयोगी) या बेकार बना देती है। मुस्तकिल मिजाज़ी (Persistance) के बगैर इंसान बेकार और नाकाम ही होगा।

निम्नलिखित कारणों से मुस्तकिल मिजाज़ी (Persistance) बढ़ती है।

मुस्तकिल मिजाज़ी (दृढ़ता) बढाने वाले कारण:

१. जिंदगी का स्पष्ट उद्देश्य।
२. अपने उद्देश्य को हासिल करने की तीव्र इच्छा।
३. अपने उद्देश्य को हासिल करने की सही योजना (Planning)
४. उन लोगों से संबध बनाना या बनाए रखना जो आपको आपके उद्देश्य में सफल होने में मदद करें।

मुस्तकिल मिजाज़ी निम्नलिखित कारणों से घटती है:

१. बिना उद्देश्य जीवन: जब ना जीवन का कोई उद्देश्य होता है और ना जीवन में कुछ पाने या हासिल करने या प्रगति करने की चाह होती है तो इंसान कटी पतंग की तरह हवा में लहराता रहता है और अंत में जाकर गरीबी के गढ्ढे में गिरता है।

२. आलोचना का भय: लोगों की आलोचना के डर से ना लोग ऊंचा उद्देश्य अपनाते हैं और ना कोई बहुत बड़ा काम अंजाम देने की कोशिश करते हैं। वह सोचते हैं कि नाकाम हुए तो लोग हसेंगे। जब कोई व्यक्ति ना कोई बड़ा उद्देश्य बनाएगा ना उसको हासिल करने के लिए जी जान से कोशिश करेगा, तो कहाँ से कामयाब होगा? और कामयाबी की तीव्र इच्छा ही नहीं है तो मुस्तकिल मिज़ाजी (Persistance) कहां से आएगी।

३. नकारात्मक विचार वालों का साथ: अध्याय नं ४० में हम पढेंगे कि हर व्यक्ति अपने दिमाग के खयाल के मुताबिक शक्ति की लहरें (Waves of energy) खारिज करता है। जो दूसरों के दिल और दिमाग और उनके सोचने पर असर करती हैं इसी तरह इन्सान यह शक्ति दूसरों से भी हासिल करता है। इसलिए अगर कोई व्यक्ति नकारात्मक विचारवालों के साथ में रहता है तो वह खुद भी नकारात्मक विचार अपनाता है और नकारात्मक अंदाज में सोचने लगता है। एक नकारात्मक विचार सभी सकारात्मक विचारों को मिटा देता है। बगैर सकारात्मक विचार के साबित कदम (दृढ़) रहना असंभव है। प्रसिद्ध कहावत है कि, "आदमी अपने दोस्तों से पहचाना जाता है"। यह बात बिल्कुल सही है। इसलिए हमेशा सकारात्मक विचारवालों के साथ में रहो। ताकि मुस्तकिल मिज़ाजी (Persistance) और साबित कदमी बढ़े।

४. हालात से समझौता करने का स्वभाव: कुछ लोग गरीबी और अपमान भरे जीवन को अपना लेते हैं और हालात से समझौता यह सोचकर कर लेते हैं कि यह गरीबी मेरे नसीब का हिस्सा है। हालात से समझौता करने की आदत साबित कदमी और मुस्तकिल मिजाज़ी (Persistance) को खत्म कर देती है।

पवित्र कुरआन की एक आयत का अर्थ है कि, "निराश वही होते हैं जो खुदा पर भरोसा नहीं करते" (सूरह यूसुफ आयत ८७)

इसलिए खराब हालात में भी हालात को बदलने की कोशिश करनी चाहिए।

५.सकारात्मक सोच वालों का साथ: अगर सिर्फ एक बैटरी से टार्च की रौशनी १० फिट तक पहुँचती है तो दो बैटरी से वह रौशनी २० फिट की बजाए ४० फिट तक पहुँचेगी। इसी तरह एक इंसान का दिमाग अकेले जो कुछ सोचता है अगर दो आदमी मिल जाएं तो उनके सोचने समझने और योजना बनाने की योग्यता सिर्फ दुगनी नहीं होगी बल्कि दो आदमियों के मुकाबले में कई गुना होगी। इसलिए सफलता के रास्ते पर अकेले ना चलो बल्कि ऐसे लोगों से दोस्ती करो जो तुम्हारी तरह परिश्रम कर रहे हैं। मेरा मतलब यह नहीं है कि व्यापार में आप उनको अपना भागीदार बनाओ बल्कि यह है कि सफलता के रास्ते पर ग्रुप बनाकर चलो।

पुराने ज़माने में लोग एक जगह से दूसरी जगह का सफर ग्रुप बनाकर करते थे। जिससे सुरक्षा, मदद और मार्गदर्शन सबको मिलता था। यह 'कारवां' कहलाता था। इस ज़माने में भी अगर आप सफलता का कठिन और सख्त सफर करना चाहते हों तो एक ग्रुप को तलाश करें। उन लोगों से दोस्ती बढ़ाएं जो सकारात्मक सोच रखते हैं। नेक कर्मो वाले हों, ऊंचे अखलाक वाले, बुलंद हौसले वाले, दौलत की कद्र करने वाले हों और झगडालू और स्वार्थी ना हों। अगर आप ऐसे लोगों के साथ में रहेंगें तो आप के दिमाग और आत्मा को लगातार सकारात्मक शक्ति की लहरें (Vibrations) और हौसला मिलेगा। आप में कामयाबी की तीव्र इच्छा हमेशा जागेगी। आपके मन में अत्याधुनिक, रचनात्मक विचार और खुशहाली की कल्पनाऐं और इच्छाशक्ति हासिल होगी। जिससे आप

साबित कदम (Persistance) और मुस्तकिल मिजाज़ (दृढ़ता) रहेंगे। लैकिन अगर आप सकारात्मक विचारों वालों के साथ में नही रहेंगें तो साबित कदमी (Persistance) खो देंगें।

इस्लाम में मुस्तकिल मिजाजी (Persistance) *या लगातार परिश्रम का महत्व:*

- नबी करीम (स.) ने फरमाया, "जो चीज तुम्हें (दुनीया और आखिरत के ऐतबार से) नफा पहुंचाने वाली हो उसको कोशिश से हासिल करो और अल्लाह से मदद और तौफिक तलब करो और हिम्मत मत करो। (मुस्लिम ६६४५ अन अबी हुरैरा (रज़ि.))
- हज़रत राबेआ जिरशी (र.अ.) कहती हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "दीन पर मज़बूती से कायम रहो। मुस्तकिल मिजाजी (Persistance) बहुत ही अच्छी चीज़ है। वजू कि हिफाजत करो।"

  (तरगीब तिबरानी, ज़ादे राह ११६)
- हज़रत आएशा (रज़ि.) से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा है कि "अल्लाह उस इबादत को पसंद करता है जो लगातार की जाती हो। चाहे वह बहुत थोड़ी हो।"

  (रियाजु स्सवालेहीन, उर्दू जिल्द नं. १ हदीस नं. १४२ मुस्लिम बुखारी)

  इसका मतलब है कि अगर एक व्यक्ति थोड़ी सी ही इबादत करे, लैकिन वह प्रतिदिन करें। और दूसरा व्यक्ति जो बहोत इबादत करता है लैकिन वह रोज़ाना नहीं करता। तो अल्लाह को पहले वाला व्यक्ति ज़्यादा पसंद है।
- खुद हज़रत मुहम्मद (स.) का जीवन मुस्तकिल मिजाजी (Persistance) का. एक जीवित उदाहरण है।

  अगर मैं मुस्लिम होने की हैसियत से हज़रत मुहम्मद (स.) की प्रशंसा करूं तो आप कहेंगे कि मैं आप (स.) के गुणों को बयान करने में बढ़ा चढ़ा कर बयान कर रहा हुँ। इसलिए एक ईसाई लेखक 'नेपोलियन हिल' की अमेरिका में छपी हुई पुस्तक "Think and Grow Rich" के कुछ पन्ने नकल करूंगा।

  नेपोलियन हिल अपनी पुस्तक अध्याय ६ में मुस्तकिल मिजाज़ी (Persistence) के बारे में लिखता है:

  पैगंबरों के जीवन का अगर कोई निःपक्षता से अध्ययन करता है और साथ ही पूर्व के फलसफी (Philosopher), मौजज़े (चमत्कार) दिखाने वाले और धार्मिक रेहनुमाओं की जीवन शैली से वाकिफ (अवगत) होता है तो इस नतीजे पर पहुंचेगा कि साबित कदमी (Persistance) लगातार परिश्रम और मक्सद (Goal) को हासिल करने में मुस्तकिल मिज़ाजी (Persistance) ही उनकी कामयाबी की असल वजह थी।

  उदाहरण के तौर पर हज़रत मुहम्मद (स.) की आश्चर्यजनक और प्रभावी जिंदगी पर गौर करें। उनकी पवित्र जीवनी का विश्लेषण करें। और मौजूदा दौर के उद्योग और वित्तीय (Finance) के प्रसिद्ध लोगों से आप (स.) की तुलना करें तो नज़र आएगा कि उन सब में एक गुण मुश्तरिक (Common) है जिसे हम लगातार परिश्रम (Persistence) कहते हैं।

  अगर आप किसी व्यक्ति की अजीब जिंदगी से लगातार परिश्रम की शिक्षा हासिल करने में बेहद दिलचस्पी रखते हैं तो हजरत मुहम्मद (स.) की 'स्वानेह उमरी' (जीवन कथा) का अध्ययन करें, खास तौर पर "ऐसाद बे" की किताब का। यह मुख्तसर तबसिरा (संक्षिप्त समीक्षा) 'Thomas Sugrue' ने किया है जो 'Herald-Tribune' जैसे अंतराष्ट्रीय अखबार में प्रकाशित हुआ था। इसके अध्ययन से आपको पता चलेगा कि मानव संस्कृती में लगातार परिश्रम की रौशन तरीन मिसाल हज़रत मुहम्मद (स.) की पवित्र जीवनी में मौजूद है।

अंतिम महान पैगंबर

समिक्षा :(द्वारा Thomas Sugrue)

मुहम्मद (स.) एक पैगंबर थे मगर आप (स.) ने कभी कोई चमत्कार नही दिखाया। आप (स.) सूफी नहीं थे। आप (स.) ने किसी स्कूल से ज्ञान प्राप्त नहीं किया। आप (स.) ने ४० साल की उम्र से पहले अपने धर्म का प्रचार नहीं किया। जब आप (स.) ने यह ऐलान किया कि वह अल्लाह के पैगंबर हैं और सच्चे धर्म का संदेश लाए हैं तो आप (स.) का मज़ाक उडाया गया और मक्का वालों ने आपको पागल करार दिया। बच्चों ने आपको परेशान किया औरतों ने आप (स.) पर कचरा फेंका। उन्हें अपने शहर से निकाला गया। उनके सहाबा ए कराम (रज़ि.) को लूटा गया और षहरों से भगा दिया गया।शुरू के १० सालों के धर्म प्रचार के बदले में आप (स.) को सिर्फ गरीबी और नफरत मिली। मगर अगले १० साल में आप (स.) अरब के शासक थे। और जिस का शासन क्षेत्र डयुनोब से पायनीज तक था। इस महान सफलता के तीन कारण थे। कुरआ़न, (ईमान की ताकत) इबादत और खुदा पर भरोसा।

मुहम्मद (स.) का किरदार समझ के बाहर रहा। मुहम्मद (स.) का जन्म मक्का के प्रसिद्ध और प्रतिश्ठित खानदान में हुआ था। चूंकि मक्का एक व्यापारी शहर था व्यापारी रास्ते इस शहर से गुज़रते थे। उस शहर में काबा शरीफ भी था। इसलिए लोगों की लगातार आवाजावन की वजह से इसकी फिजा (हवा) बहोत साफ सुथरी ना थी। इसलिए उस शहर के बच्चे देखभाल के लिए साफ सुथरी देहाती फिजा में भेजे जाते थे। आप (स.) भी देहात में भेजे गए। और आप ने भी अरब के देहाती लोगो में परवरिश पायी और मज़बूत और ताकतवर हुऐ। आप (स.) ने वहाँ भेड़ें भी चरायी। जब जवान हुए तो आप (स.) एक धनवान औरत (हज़रत खदीजा (रज़ि.)) के व्यापारी दल (कारवां) के अमीर बनाए गए।

आप (स.) ने पूर्व विश्व के तमाम इलाकों का सफर किया। अलग अलग विचारधारा रखने वालों से बातचीत की और अनुभव किया कि ईसाइयत का जवाल (पतन) हो चुका है, और उसे समुदाय में बटे देखा। जब आप (स.) २५ साल के हो गए तो आप (स.) का विवाह हज़रत खदीजा (रज़ि) से हुआ। और बाद के १५ साल तक हज़रत मुहम्मद (स.) ने एक प्रतिश्ठित मालदार की जिंदगी गुज़ारी और एक बेहद बुद्धिमान व्यापारी की प्रतिश्ठा पाई। इसके बाद आप (स.) इबादत के लिए सहराओं (रेगिस्तान) का रूख करने लगे और एक दिन आप (स.) कुरआ़नी आयतें लेकर लौटे। और हज़रत खदीजा (रज़ि.) से फरमाया कि फरिश्तों के सरदार हज़रत जिब्रील (अ.स.) उनकी सेवा में हाजिर हुए और सूचित किया कि वह अल्लाह तआ़ला के पैगंबर हैं।

पवित्र कुरआ़न यानी ईश्वरीय संदेश (वही द्वारा) हज़रत मुहम्मद (स.) के पवित्र जीवन में एक चमत्कार से कम नहीं था। आप (स.) कभी कवी नहीं थे ना आप (स.) के पास शब्दों का भंडार था। लैकिन

(बाकी पेज ७५ पर)

३२. धीरज का महत्व

जानी दुश्मन पर विजय:

सन् ६३० में हज़रत मुहम्मद (स.) अपने दस हजार सहाबा कराम (रज़ि.) के साथ मक्का में दाखिल हुए और मक्का पर कब्जा कर लिए। मक्का वाले इस चढ़ाई से अंजान थे और जंग के लिए तैयार नहीं थे। इसलिए उन्होंने जंग किए बगैर हार मान ली। पिछले २० सालों में मक्का वालों ने हर तरह कोशिश की कि हज़रत मुहम्मद (स.) और उनके सहाबा कराम को परेशान किया जाए, तकलीफ पहुंचायी जाए और आप (स.) और उनके सहाबियों को मार दिया जाए। लैकिन हज़रत मुहम्मद (स.) ने उनपर पूरी तरह काबु पाने के बाद सबको माफ कर दिया। आप (स.) हर व्यक्ति को उसके अत्याचार की सज़ा दे सकते थे लैकिन आप (स.) ने सब्र किया।

मक्का के शुरूआती जिंदगी में हज़रत मुहम्मद (स.) को परेशान किया गया, आप (स.) को अपमानित कर दिया गया, बुरा भला कहा गया लैकिन आप (स.) ने सब्र किया। आरंभिक दौर में आप (स.) के पास कोई शासन या ताकत नहीं थी। लैकिन सब्र के उपर दिए गए उदाहरण उस दौर के है जब आप (स.) एक बादशाह से भी ज्यादा ताकतवर थे। आप (स.) हर गुन्हेगार और गुस्ताख को सज़ा दे सकते थे, मगर सब्र और माफी के इसी स्वभाव की वजह से जो की आप (स.) के शासन काल में भी कायम रही और आप (स.) ने लोगों और अपने जानी दुश्मनों का भी दिल जीत लिया। वह दुश्मन जो कि आप (स.) के जानी दुश्मन थे आप (स.) के बहोत ही आज्ञाकारी बन गए। इसलिए जिंदगी में कामयाबी के लिए सब्र के उसूल पर चलना बेहद जरूरी है। और हर कामयाबी चाहने वाले को चाहिए कि इस उसूल पर अमल करे। क्योंकि अल्लाह तआ़ला कुरआन करीम में फरमाता है:

''नेकी और बुराई बराबर नहीं होती, बुराई को भलाई से दफा करो, फिर वही जिसके और तुम्हारे दरम्यान दुश्मनी है ऐसा हो जाएगा जैसे दिली दोस्त। और यह बात उन्ही को नसीब होती है जो सब्र करते हैं। और इसे सिवाय बड़े नसीब वालों के कोई नही पा सकता।"

(सूरह निसा आयत नंबर ३४ से ३५)

- सब्र की अहमियत को जाहीर करने वाली कुछ हदीस कुरआन करीम आयते और कुछ वाक्यात मदंर्जाजेल है।

धीरज का महत्व:

- हज़रत अबु हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया "बहादुर वह नहीं जो किसी को पछाड़ दे। बहादुर वह है जो गुस्से के वक़्त अपने नफ्स पर काबू रखे।"

(बुखारी, मुस्लिम, रियाजूल स्वालेहिन जिल्द १, पेज नंबर ८७)

अल्लाह तआ़ला कुरआ़न करीम में फरमाता है:

"कह दो कि ऐ मेरे बन्दो! जो ईमान लाए हो, अपने परवरदिगार से ड़रो, जिन्होंने इस दुनिया में नेकी की उनके लिए भलाई है, और खुदा की धरती कुशादा (विशाल) है, जो सब्र करने वाले हैं उनको बेशुमार सवाब मिलेगा।" (सूरह जुमर आयत १०)

- "ऐ ईमान वालो! सब्र और नमाज से मदद लिया करो। बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ हैं। और अल्लाह तआ़ला की राह में जो शहीद हुए उन्हें मुर्दा मत कहो। वह जिंदा हैं लैकिन तुम नहीं जानते और हम किसी ना किसी तरह तुम्हारी आज़मायिश (परिक्षण) जरूर करेंगे, दुश्मन के ड़र से, भूख, प्यास से, माल और जान और फलों की कमी से। और उन सब्र करने वालों को खुशखबरी दे दीजिए, जिन्हें जब कोई मुसीबत आती है तो कहते हैं कि हम तो खुद अल्लाह तआ़ला की मिल्कियत हैं और हम उसी की तरफ लौटने वाले हैं। उनपर उनके रब की नवाजिशें (मेहरबानियां) और रहमतें हैं और यही लोग हिदायत याफ्ता हैं।" (सूरह बकरा आयत १५३ से १५७)

- "और जो व्यक्ति सब्र करे और कुसूर (गलती) माफ कर दे तो यह हिम्मत के कामों में से एक काम है।" (सूरे अलःशूरा आयत ४३)

- "ज़माने की क़सम, इनसान वास्तव में घाटे में है, सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए, और अच्छे कर्म करते रहे, और एक-दूसरे को हक़ की नसीहत और सब्र की ताकीद करते रहे।.(सूरह अस्र आयत १-३)"

अपने बाप का गम ना कर:

सब्र की सीख जो हज़रत मुहम्मद (स.) ने दुनिया को दि थी आपने उसपर खुद भी अमल करके दिखाया था। कुछ मुश्किल क्षण और कुछ अवसर जब आपने सब्र का प्रदर्शन किया था निम्नलिखित हैं।

हज़रत मुहम्मद (स.) के एक सहाबी (रज़ि.) फरमाते हैं कि इस्लाम कुबूल करने से पहले मैंने देखा कि एक खूबसूरत नौजवान है और लोगों को दावत देता फिर रहा है। सुबह से चल रहा है और कलमा (एक अल्लाह की बंदगी) की तरफ बुला रहा है। मैंने पूछा यह कौन है? किसी ने कहा यह कुरैश का एक नौजवान मुहम्मद (स.) है, जो अधर्मी हो गया है। सुबह से वह नौजवान दावत देता रहा यहाँ तक कि सूरज सर पर आ गया। इतने में एक आदमी ने आके उसके मुंह पर थूक दिया। दूसरे ने गिरेबान फाड़ दिया, तीसरे ने सिर पर मट्टी ड़ाल दी और चौथे ने चेहरे पर थप्पड मारा। लैकिन खूबसूरत नौजवान की जुबान से बददुआ का एक शब्द ना निकला। उतने में एक लड़की जोर ज़ोर से रोते हुए पानी का प्याला लेकर आयी। लड़की को रोता हुआ देखकर आप (स.) की आंखे जरा नम हुईं और कहा, "बेटी अपने बाप का गम ना कर। तेरे बाप की सुरक्षा अल्लाह कर रहा है। और मेरा कलमा बुलंद होगा।" उन सहाबी (रज़ि.) ने किसी से पूछा यह लड़की कौन है? किसी ने कहा उसकी बेटी जैनब (रज़ि.) है। (बसीरत अफरोज वाकेआत, सफहा नंबर २२)

ताइफ का सफर:

सन ६२० हज़रत मुहम्मद (स.) ने तायफ का दौरा किया जो मक्का से १०० किलोमीटर दूर है। तायफ एक हिल स्टेशन की तरह था और वहाँ के बाशिंदे दौलतमंद और प्रभावी थे। जब हज़रत मुहम्मद (स.) ने वहाँ के सरदारों को दीन इस्लाम की तब्लीग की तो उन्होंने आप (स.) को सुनने से इन्कार ही न किया बल्कि वह चाहते थे कि आप (स.) उनकी बिरादरी में तब्लीग भी ना करें, इसलिए उन्होंने वहॉ के अपराधियों और

नौजवानों से कहा कि वह आप (स.) पर पथराव करें।

वह हज़रत मुहम्मद (स.) की जान लेना नहीं चाहते थे सिर्फ आप (स.) को तक्लीफ देना चाहते थे, इसलिए पत्थर सिर्फ आप (स.) के टखने और पिडलियों पर मारे गए।

हज़रत मुहम्मद (स.) अपनी जान की सुरक्षा के लिए वहाँ से तीन मील की दूरी तक दौड़ते रहे। आखिरकार आप (स.) बेहोश होकर जमीन पर गिर गए। हज़रत मुहम्मद (स.) के सहाबी (रज़ि.) हज़रत जैद (रज़ि.) ने आप (स.) को अपनी पीठ पर लाद कर तायफ की सीमा से बाहर ले आए।

तायफ के बाहर जब आप (स.) को होश आया तो हज़रत जिब्रईल (अ. स.) पहाड़ों के फरिश्ते को लेकर हाजिर हुए और फरमाया कि, अल्लाह तआ़ला ने इस पहाड़ के फरिश्ते को आप (स.) के हुक्म के ताबे (अधीन) किया है। आप (स.) के हुक्म पर यह ताइफ शहर को उन दो पहाड़ों के दरम्यान पीस ड़ालेगा। हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "उन लोगों ने मुझपर पथराव किया क्योंकि वह मुझे नहीं पहचानते। मैं उनकी आने वाली नस्ल से पुर उम्मीद हुँ। मुझे उम्मीद है कि उनकी दूसरी नस्ल मुझे पहचानेगी और इस्लाम कुबूल करेगी।"

(बुखारी, मुस्लिम, सफीना निजात, पेज नंबर २५०)

और वास्तव में बहोत कम मुद्दत में तायफ की पूरी आबादी ने इस्लाम कुबूल कर लिया। और वहाँ जलीलुल कद्र नेक और बहादुर लोग पैदा हुए जिनमें हज़रत मुहम्मद बिन कासिम भी है जिन्होंने इस्लाम को खत्म करने के बजाए उसकी सुरक्षा की। और इस्लामी सरहदों को सिंध (हिंदुस्तान) तक फैला दिया।

कबीला बनू क़ीनका का चैलेंज:

सन ६२२ में हज़रत मुहम्मद (स.) ने मदीना हिजरत फरमायी, चूंकी आसपास के इलाकों के मुसलमान भी हिजरत करके मदीना में इकठ्ठा हो गए इसलिए वह ताकतवर हो गए और अपनी सुरक्षा के योग्य हो गए। जब १००० से ज्यादा मक्का के मुश्रिकीन ने मुसलमानों पर हमला किया तो मुसलमानों ने उन्हें पराजित किया और पीछा करके उनको भगा दिया।

मदीना के आसपास यहूदी कबीला 'बनू क़ीनका' बहुत ताकतवर था और बढ़ती हुई मुस्लिम ताकत से जलन करता था इसलिए उन्होंने जंग की गुप्त योजना बनायी।

जब हज़रत मुहम्मद (स.) ने उन्हें अमन-समझौते के लिए आमादा करना चाहा ताकि मदीना और अतराफ में सुकून और चैन कायम रहे तो उन्होंने आप (स.) की बात नहीं सुनी, कोई सहयोग नहीं किया बल्कि आप (स.) का मज़ाक उड़ा कर इन शब्दों में चुनौती दीः

"हमें मक्का के कुरैश की तरह मत समझो। तुमने उन लोगों से जंग की जो इस कला से नावाकिफ थे, इसलिए उनकी हार हुई। हम खुदा की कसम खाकर कहते हैं कि अगर तुमने हमसे जंग की तो तुम्हे असली जंग का पता चलेगा। क्योंकी हम जानते हैं कि जंग किस तरह लड़ी जाती है।" हज़रत मुहम्मद (स.) ने कोई प्रतिक्रिया ज़ाहिर नहीं की, सब्र किया और वापस लौट आए। आप (स.) इतने ताकतवर थे कि उन्हें सबक सिखाकर उनके अहंकार को कुचल सकते थे लैकिन आप (स.) अपने ज़ाती अपमान पर साबिर रहे।

लैकिन कुछ दिनों बाद एक ऐसी घटना हुई जिसे आप (स.) नज़रअंदाज ना कर सके। बनू क़ीनका के एक नौजवान ने बाज़ार में एक मुस्लिम औरत को नंगा कर दिया। एक मुस्लिम नौजवान जो मुस्लिम औरत के समर्थन में उठा तो उसे यहूदियों ने जान से मार दिया मुसलमानों ने भी उस यहूदी को जान से मार दिया और बात बढ़ गई। बनू क़ीनका के होश ठिकाने लगाने के लिए हज़रत मुहम्मद (स.) ने उनके किला का घेराव कर लिया। १५ दिन तक यहूदी घेराव में रहे और आखिरकार बगैर लड़े हथियार ड़ाल दिए और पूरा कबीला बनू क़ीनका अपने माल और असबाब के साथ मदीना से चले गए। अपने जाती अपमान के पहले दिन ही आप (स.) उनको सबक सिखा सकते थे। लैकिन हज़रत मुहम्मद (स.) ने सब्र किया और अपने अपमान पर उन्हें सज़ा नहीं दी।

(सिरते अहमद मुज्तबा शाह मिस्बाहुद्दीन शकील)

जाहिल बद्दू की बदतमीज़ी:

हज़रत मुहम्मद (स.) से जब कोई कुछ मांगता तो आप इन्कार नहीं करते थे। एक बार एक बद्दू ने आप (स.) की चादर पकड़कर इस जोर से खींचा कि आप (स.) की गर्दन की बायीं जानिब चादर की रगड़ से निशान आ गए। और बद्दू ने कहाः "ऐ मुहम्मद (स.) मुझे खाने को कुछ दो उस में से जो कुछ अल्लाह ने आप को प्रदान किया है।" हज़रत मुहम्मद (स.) एक बादशाह से ज्यादा ताकतवर थे। बद्दू की उस हरकत पर उसे तमांचा मार सकते थे। लैकिन आप (स.) ने सब्र किया। सिर्फ मुस्कुराए और अपने एक सहाबी (रज़ि.) से कहकर उसके ऊंट पर खाने का सामान रखवा दिए।

(बुखारी, मारूफुल हदीस जिल्द ८, पेज नंबर २३२)

गरीबी का इलाज

एक दफा अब्बासी खलीफा मामुन रशीद ने हज़रत हुदबा बिन खालिद (रजी.) को अपने यहाँ खाने पर बुलाया, खाने के आखिर में जो दाने वगैरा गिर गए थे वह आप चुन चुनकर खाने लगे। मामुन रशीद ने हैरान होकर पुछा, "ऐ शेख क्या आपका अभी तक पेट नहीं भरा?"

आप ने फरमाया, "क्यों नही। दरअसल बात यह है की मुझसे हज़रत हमाद बिन सलमा (रजी.) ने एक हदीस बयान फरमायी है कि 'जो व्यक्ति दस्तरखॉन पर गीरे हुए टुकड़ों को चुनकर खाएगा वह तंगदस्ती से बेखौफ हो जाएगा।' में इसी हदीस नबवी (स.) पर अमल कर रहा हूँ। यह सुनकर मामून बेहद प्रभावित हुआ और अपने एक खादीम (नौकर) की तरफ इशारा किया। वह एक हजार दिनार रूमाल में बांध कर लाया। मामुन रशीद ने उसे हुदबा बिन खालिद (रजी.) की सेवा में नज़राना (भेंट) के तौर पर पेश कर दिया। हज़रत हुदबा ने फरमाया "अल-हमदु-लिल्लाह, हदीस पर अमल की बरकत हातोंहात जाहीर हो गई।" (समरातुल औराक)

३३. सुनहरे अवसर मत खोइये

- सन २००७ में मुंबई (भांडुप-सोनापुर) की हुसैनिया मस्जिद के विस्तार के लिए मैंने एक लाख रूपया चंदा दिया। दूसरे ही दिन मेरे दोस्त अलीमुल्लाह खान ने मुझे वर्कशॉप बनाने के लिए एक प्लॉट दिखाया जो मुंब्रा पनवेल रोड पर स्थित है। अलीमुल्लाह भाई जमीन के लेन-देन का कारोबार भी करते हैं और एक दोस्त की हैसियत से उन्होंने मुझे सुझाव दिया की मैं पैसों की अदाएगी की फिक्र ना करूं, प्लॉट फौरन खरीद लुं। और उसकी रकम सहूलत से अदा करू। उस वक़्त मेरे पास रकम कम थी। मैं कर्ज लेना नहीं चाहता था इसलिए फौरी तौर से तो मैंने इन्कार कर दिया मगर दिल में सोचा की जमीन इतनी जल्दी नहीं बिकेगी पैसे आएंगे तो ले लूंगा। वह प्लॉट बहोत अच्छे इलाके में था। अलीमुल्लाह खान ने ज़ोर दिया की खरीदी में देर ना करो, लैकिन मुझे कोई जल्दी नहीं थी। आखिरकार किसी ने उस प्लॉट को ज्यादा कीमत पर खरीद लिया।

  अगर मैं वह जमीन उस वक़्त मामूली टोकन देकर खरीद लेता तो में उसे दोबारा बेच करके लगभग १० लाख कमा लेता। क्योंकि वह जमीन मुझे सिर्फ २०० रूपया (Per Sq. ft) के हिसाब से दे रहे थे और कुछ ही दिनों में उस जमीन की कीमत ५५० रूपया (Per Sq. ft) हो गयी।

- सन २००८ में दोबारा मैने उसी मस्जिद को जमीन खरीदने के लिए सव्वा लाख रूपया चंदा दिया। दूसरे ही दिन मुझे वाडा में एक एकर प्लॉट की पेशकश हुई जिसकी कीमत बहोत ही कम थी। मैने फैसला करने में सिर्फ एक हफ्ते की देर लगाई और अवसर खो दिया। उस सौदे से मैं २५ लाख कमा सकता था।

- सन २००९ में आर्थिक मंदी की वजह से मेरी कम्पनी का उत्पादन ७५ प्रतिशत कम हो गया और मैं आर्थिक परेशानियों से घिर गया। एक सुबह मैंने अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की कि वह मुझे इस परेशानी से छुटकारा दिला दे। उसी दिन दोपहर में मुझे Satic Ind. से टेलिफोन पर स्टंम्पिंग मशीन बनाने का ऑर्डर मिला। मेरे पास वह मशीन तैयार थी। Satic Ind. वालों ने २५ प्रतिशत छूट (Discount) मांगी, मैंने उन्हें १५ प्रतिशत तक छुट दी। हालाकि २५ प्रतिशत पर भी मुझे कोई नुकसान नहीं था, लैकिन मैंने एक दिन इंतेज़ार किया और फैसला किया कि २० प्रतिशत या मजबूरन २५ प्रतिशत पर सौदा कर लूंगा। लैकिन दूसरे दिन कम्पनी से संपर्क करने से पहले ही किसी और से उन्होंने मशीन का सौदा कर लिया।

- अल्लाह तआ़ला से लगातार विनम्र दुआ़ के बाद Perfect Metal कम्पनी ने दो मशीनों का ऑर्डर दिया। मैने मशीन बनाने का काम फौरन शुरू करवा दिया, लैकिन ॲडवान्स का चेक उनसे नहीं लिया। हालांकि चेक उनके ऑफिस में तैयार था। सात दिन बाद मैंने अपने एक मुलाजिम को चेक लाने के लिए भेजा। उन्होंने जवाब दिया की उनका इरादा बदल गया है।

- मेरी जिंदगी में इस किस्म की सफलता और असफलता का एक लंबा सिलसिला है। मैं सन १९८७ से कारोबार में लगा हुआ हुँ, अगर मैं भूतकाल पर नज़र ड़ालूं और अपने तमाम अनुभव को याद करूं तो मुझे महसूस होता है कि अगर हम अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करें, या कोई और हमारे लिए दुआ़ करे। या हमारे नेक कर्मों की वजह से अल्लाह तआ़ला हमें कोई सुनहरा अवसर प्रदान करता है की हम कुछ लाभ कमाऐं। या हम अपनी परेशानी से छुटकारा पालें। तो यह अवसर हमेशा के लिए खुले नहीं रहते बल्कि बहोत ही कम समय के लिए होते हैं। अगर हम फौरी तौर पर अमल करते हैं, फैसला करते हैं और बढ़कर अवसर का फायदा उठाते हैं तो हम जिस मक्सद के लिए अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करते है वह पूरा हो जाता हैं। या जो मक़ाम अल्लाह तआ़ला हमें देना चाहता है वह हम पा लेते हैं।

  इसके विपरीत अगर हम सुस्ती काहिली करें और आज का काम कल पर डाल दें तो वह अवसर हाथ से निकल जाते हैं और हम पछताते रह जाते हैं।

- हज़रत उमरो बिन मेमुउदा (रज़ि.) के मुताबिक हज़रत मुहम्मद (स.) मुसलमानों को हिदायत फरमाते थे कि नेक आमाल में जल्दी करें और आगे बढ़े ताकि कोई रूकावट बीच में ना आए। मिसाल के तौर पर आप (स.) ने फरमायाः नेक आमाल अंजाम देने में ज़रासा भी वक़्त ना गंवाएं इससे पहले कि आप सात आसमानी आफतों में से किसी एक का शिकार हों जैसेः

  फाका कशी (भुखमरी) जिससे आपकी बुद्धि नष्ट हो, ऐसी खुश्हाली जो आपको गुमराह कर दे। ऐसी बीमारी जो आपका स्वास्थ तबाह कर दे। दज्जाल के प्रकट होने से पहले और कयामत का दिन जो बहोत ही सख्त है। (तिरमिज़ी, बेहकी)

- इसलिए हमें आखिरत के दृष्टिकोण से भी नेकी करने में जल्दी करनी चाहिए और दुनियावी दृष्टीकोण से भी अपनी खुश्हाली और तरक्की के लिए जो अवसर मिले उससे फौरन फायदा उठाना चाहिए।

- अगर हम हज़रत उमर (रज़ि.) की निम्नलिखित हिदायत याद रखें तो बड़ी हद तक मौके गंवाने से बचे रहेंगे। हज़रत उमर (रज़ि.) ने यह हिदायत अपने गवर्नर हज़रत मूसा अशअरी (रज़ि.) को पत्र के द्वारा दी थी।

  ''ऐ मूसा अशअरी (रज़ि.): काम की मज़बूती यह है कि आज का काम कल पर ना उठा रखो। ऐसा करोगे तो तुम्हारे पास बहोत से काम इकठ्ठे हो जाऐंगे फिर परेशान हो जाओगे कि किसको करें और किसको छोड़ दें। इस तरह कुछ भी ना हो सकेगा। (हज़रत उमर (रज़ि.)

- हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फरमाते हैं कि रसूल अल्लाह (स.) ने इरशाद फरमायाः "दो निअ़मतें हैं जिनके बारे में बहोत से लोग फरेब और धोखे में रहते हैं, एक सहेत और तंदुरूस्ती, और दूसरी फिरागत और फ़ुरसत।" (बुखारी, मुन्तखब अबवाब १२१३)

(बाकी पेज ८८ पर)

३५. ताकतवर मोमिन कमज़ोर मोमिन से बेहतर है

- Only Fittest will Survive
  "सिर्फ ताकतवर ही अपना वजूद बरकरार रखेगा।"

  Only Healthy Body can carry Healthy Mind
  "सेहतमंद कंधो पर ही एक सेहतमंद दिमाग हो सकता है।"

  यह सब कहावतें हैं मगर वास्तविक्ता पर आधारित हैं।

इसलिए वास्तविक खुशहाली के लिए अच्छी सेहत का बडा महत्व है इसलिए वास्तविक खुशहाली पाने के लिए अच्छी सेहत बनाने की कोशिश करें।

इस्लाम में अच्छे स्वास्थ का महत्वः

कुरआन की एक आयत है कि "उनके नबी ने उनसे कहा कि अल्लाह ने तालूत को तुम्हारे लिए बादशाह मुक़र्रर किया है। यह सुनकर वे बोले : ''हम पर बादशाह बनने का वह कैसे हक़दार हो गया? उसके मुक़ाबले में बादशाही के हम ज़्यादा हक़दार हैं। यह तो कोई बड़ा मालदार आदमी भी नहीं है।'' नबी ने जवाब दिया : ''अल्लाह ने तुम्हारे मुक़ाबले में उसी को चुना है और उसको दिमाग़ी और जिस्मानी दोनों प्रकार की योग्यताएँ भरपूर प्रदान की हैं और अल्लाह को अधिकार है कि अपना राज्य जिसे चाहे दे, अल्लाह बड़ा महान है और वह सब कुछ जानता है।''" (सूरह बकरा आयत २४७)

(यानी बनी इस्राईल में जब अल्लाह तआला ने एक बादशाह मुकर्रर करना चाहा तो एक इत्तेहाई सेहतमंद इन्सान को ही चुना।)

- हज़रज मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "एक ताकतवर (जिस्म वाला) मुसलमान एक कमज़ोर (जिस्म वाले) मुसलमान से बेहतर है। और अल्लाह ताकतवर मुसलमान से मुहब्बत करता है।"
  (मुस्लिम, मुन्तखब अबवाबः ७१)

क्योंकि, ताकतवर मोमिन जिहाद कर सकता है, कौम की सेवा कर सकता है।

- एक मर्तबा एक पहेलवान रूकाना बिन यजीद ने हज़रज मुहम्मद (स.) को कुश्ती लढ़ने की दावत दी। आप (स.) ने यह दावत मंजूर कर ली। और मुकाबले में रूकाना पहेलवान को हरा दिया।
  (सीरते अहमद मुज़्तबा, जिल्द १, पेज २५७)

- हज़रज मुहम्मद (स.) जंग में हमेशा पहली सफ में रहते थे। हुनैन की जंग में आप (स.) पहली सफ मे तनहा थे और सिवाय ८ सहाबा कराम (रज़ि.) के बाकी लोगों ने आप (स.) का साथ छोड़ दिया था।
  (सीरते अहमद मुज्तबा, अजशाह, मिस्बाहुद्दीन शकिल)

ऊपर लिखी गयी कुरआन की आयत और हदीसों से पता चलता है कि अल्लाह तआला का मेहबुब बंदा और एक लीडर या रेहनुमा बनने के लिए अच्छी सेहत बहोत जरूरी है।

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "दौलत किसी मुत्तकी (परहेजगार) को नुकसान नहीं पहुँचाएगी अगर वह मालदार हो जाए। लैकिन उमदा सहेत, दौलत से बेहतर है ऐसे परहेज़गार बंदे के लिए जो खुदा से डरे। और दिमागी व रूहानी (आध्यात्मिक) सुकून अल्लाह तआला की निअ्मत (वरदान) है।" (मिश्कात)

- हज़रत अबु खुजामा (रज़ि.) अपने पिता से नक्ल करते हैं कि उनके पिता ने हज़रत मुहम्मद (स.) से सवाल किया किः या रसूल अल्लाह (स.)! वह झाड़ फूंक जो हम कराते हैं, वह दवा जिसके द्वारा हम इलाज करते हैं और वह सुरक्षा वस्तुएं (यानी ढाल, तलवार और ज़िरा वगैरा) जिसके द्वारा हम अपना बचाव करते हैं, मुझे बताइयें कि क्या यह चीज़े किस्मत को बदल देती हैं? हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया, "यह चीज़ें भी किस्मत में शामिल हैं।"
  (अहमद, तिरमिज़ी, इब्नेमाजा, मुन्तखब अबवाब जिल्द १: ६१)

इसके मायने यह हुए कि अगर हमारी किस्मत में सेहतमंद रहना लिखा है तो सिर्फ उसी हाल में हम अपना इलाज करते हैं। अगर हमारी किस्मत में महफूज रहना लिखा है तो सिर्फ उसी हाल में हम अपनी हिफाजत के लिए हथियार इस्तेमाल करते हैं। और अगर हमारी किस्मत के मुताबिक हम को बीमार रहना है तो उस वक़्त हम अपना इलाज़ नहीं करेंगे। और किस्मत के मुताबिक अगर हम को तकलीफ पहुंचना लिखा है तो हम खुद की हिफाजत हथियारों से भी नहीं कर सकेंगे।

यानी अच्छी सेहत अल्लाहा तआला की एक निअ्मत है। अच्छी सेहत के होने में किस्मत का बड़ा हाथ है मगर किस्मत दुआओं से बदलती है। इसलिए अपनी मगफिरत (माफी) और खुशहाली के साथ साथ अच्छी सेहत के लिए भी लगातार दुआ करते रहें। जमजम का पानी पीते समय हज़रत मुहम्मद (स.) जो दुआ पढ़ते थे वह दुआ आपको दुनिया और आखिरत दोनों जगह हर तरह से खशहाल और कामयाब कर देगी। इसलिए हर नमाज़ में यह दुआ मांगा करें वह दुआ हैः

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ عِلْماً نَّافِعاً، وَّرِزْقًاوَّاسِعًا وَّ شِفَاءً مِّنْ كُلِّ دَاءٍ.

तर्जुमाः "ऐ अल्लाह! मुझे लाभदायक ज्ञान दे, रिज़्क (रोज़ी) में वसअत और फराखी (बढोतरी) दे और हर बीमारी से शिफा अता फरमा।"

क्या अपनी बीमारी का इलाज करना गलत है?

- हज़रत उसामा बिन शरीक (रज़ि.) फरमाते हैं कि एक बार जब वह हज़रत मुहम्मद (स.) की सेवा में हाजिर हुए तो कुछ सहाबा कराम (रज़ि.) हज़रत मुहम्मद (स.) से पूछ रहे थे, "ऐ अल्लाह के रसूल (स.) अगर हम अपनी बीमारी का इलाज दवा से करे तो क्या यह गुनाह है?" हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया "नहीं यह गुनाह नहीं है। अपना इलाज दवाओं से करो क्योंकि जो बीमारियां अल्लाह तआला ने पैदा की है उनका इलाज भी पैदा किया है, सिवाय मौत के।"
  (तिब्बे नबवी (स.), पेजः १३)

- अपने इलाज और सेहत बरकरार रखने के लिए हमें चार तरीके अपनाने चाहियेंः

१. अल्लाह तआला से अच्छी सेहत के लिए दुआ करें।
२. इलाज के लिए दवाएं इस्तेमाल करें।
३. सावधान रहें और उचित आहार लें।

४. नियमित व्यायाम करें।

अच्छी सेहत बनाने के लिए क्या करें?

- हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "कलौंजी में हर बीमारी का इलाज है सिवाय मौत के।"
(मुस्लिम, तब्बी नबवी (स.) पेजः ३७)

  इसलिए हर दिन पांच से दस कलौंजी के दाने खाने की कोशिश करें।

- हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "रात में खाली पेट सोया ना करो, उससे आदमी जल्दी बूढ़ा हो जाता है।" (अबू नईम, तिब्बे नबवी (स.) पेजः ३७)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया "रोज़ा रखने से सेहत में इज़ाफा होता है।"(तरगीब, तिबरानी, ज़ादे राह)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया "अपने पेट के एक तिहाई हिस्से में खाना खाओ, एक तिहाई हिस्सा में पिओ, और एक तिहाई हिस्सा हवा के लिए खाली रखो।

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया कि, "जो ज़्यादा खाना खाएगा वह ज़्यादा दवाएं भी खाएगा। जो कम खाना खाएगा वह कम दवाई भी खाएगा।" (इसलिए हमेशा पेट भरके खाना खाने से सावधानी बरतें।)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया कि, "अपने बच्चों को तैरना और तीरंदाज़ी (Archery) सिखाओ।" (जन्नत की कुंजी)

  (तैरने से सेहत में इज़ाफा होता है, तीरंदाजी से एकाग्रता (Concentration) में बेहतरी, आत्मविश्वास और जंगी (Marshal) योग्यताएं बढ़ती है।)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया कि, "अपनी गिज़ा (आहार) को नमाज़ और ईबादत से हज़म करो।" (तिब्बे नबवी (स.) पेजः ६२)

  (इस हदीस से हमें यह सीख मिलती है कि हमें आरामपसंद नहीं बनना चाहिए या तो हम अपने कारोबार में व्यस्त रहें और अगर रिटायर हों या आजाद हों तो इतनी नमाज़ पढ़ें की खाना हजम हो जाए।)

- अबू नईम 'किताबे तिब' में लिखते हैं कि हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) के मुताबिक रसूल अकरम (स.) ने फरमाया, सफर करो, उससे तुम्हारी सेहत और खुशहाली में बढ़ोतरी होगी।

  (अगर हम ऐसे कारोबार में हैं जहाँ हमें सफर करने की ज़रूरत नहीं तो भी हमें छुट्टियां मनाने के लिए सफर करना चाहिए, जिससे हमारी सेहत बेहतर होगी।)

- पवित्र कुरआन की एक आयत का अर्थ हैं कि "शहद में शिफा है।"
(सूरह नहल आयात ६९)

  इसलिए रोज़ाना शहद का इस्तेमाल करें। हज़रत मुहम्मद (स.) सुबह सबसे पहले एक प्याला पानी में शहद मिलाकर पीते थे।

- अल्लाह तआ़ला पवित्र कुरआन में फरमाता हैः "कुरआ़न ईमानवालों के लिए शिफा है।" (सूरह बनी इस्राईल आयात ८२)

  कुरआ़न में ऐसी ७ आयात हैं जिनमें शिफा का बयान है। उन आयात को 'आयाते शिफा' कहा जाता है। हर बीमारी में उनको पढ़कर अपने ऊपर दम किया करें।

- हज़रत अब्दुल मालिक बिन उमेर (रज़ि.) रिवायत करते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया "सूरह फातिहा हर बीमारी के लिए शिफा है।"
(दारमी बेहकी, मुन्तखब अबवाब हदीस नंबर ३२१)

  हज़रत अली (रज़ि.) और सहाबा कराम (रज़ि.) सूरह फातिहा से दम करके इलाज करते थे। हम भी रोज़ाना सूरह फातिहा की तिलावत की पाबंदी करें।

  मैं (लेखक) और मेरे दोस्त जिस दिन सुबह १०० बार सूरह फातिहा पढ़ते है उस दिन सारा दिन कोई दिमागी तनाव नहीं रहता। और दिमागी तनाव बहुत सारी बीमारियों की जड़ है।

  नज़र में ज़हर है। हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमायाः "अल्लाह तआला की तरफ से तय की गई मौत और भाग्य के बाद सबसे ज़्यादा बुरी नज़र की वजह से मेरी उम्मत में मौतें होगी।"
(सही जामा १२०६, अलसहिया ७४७, जादु का इलाज कुरआ़न और सुन्नत की रौशनी में, अब्दुल सलाम बाली)

- जब भी आपको नज़र लगने का अहसास हो, नज़र उतारने वाली दुआ़एं पढ़े। (सूरतुल कलम आयत नंबर ५१ और ५२) नज़र उतारने के लिए बहोत प्रभावी है और लेखक का निजी अनुभव है। खुद पर लगी नज़र उतारने के लिए इसे ४० से ७० बार तक पढ़ने से नज़र का असर तुरंत कम हो जाता है। इस विषय में ज़्यादा जानकारी के लिए पाठ नंबर ५२ पढें।

याददाश्त को कैसे कब्जी बनाये?

- दुनीया में सबसे जो कीमती चिज है वह है वक्त हम अगर घंटो या महीनो या कई साल तक कुछ हिब्ज करने की कोशिश करें या इल्म हासिल करें और फिर वह याद न रख सकें तो फिर यह वक्त की बहोत बड़ी बर्बादी और नुकसान है।

- हाफिजा या यादशाश का कमजोर होना एक बीमारी है यह हाजमा की खराबी और बहोत ज्यादा फिक्र रंजो गम वगैरा से लाहेक हो जाती है और युनानी दवाईयों से उसका इलाज भी हो सकता है।

- ''गांवजबान उमरी जवाहर वाला'' उस माजुन को अगर सुबह खाली पेट पानी या दुध के साथ रोजाना पांच ग्राम ले तो इन्शा अल्लाह कुछ दिनों में यह बीमारी दूर हो जाती है।

- कभी कभी अच्छी सेहत होने के बावजुद हम पढी हुई बातों को याद नहीं रख पाते है और भूल जाते है ऐसी हालत में पढाई शुरू करने के पहले वजु कर ले। फिर (अरबी आयत) (कुरआन करीम सूरह ताहॉ आयतः ११४) (तर्जुमा मेरे परवरदिगार मुझे और ज्यादा इल्म दे।) उस दुआ से पढ़ाई शुरू करें और जब पढ़ाई खत्म करे तो (अरबी आयत) (कुरआन

करीम सुरतुल आला आयत ६,७) (तर्जुमाः हम तुम्हें पढा देंगे कि तुम फरामोश ना करोगे मगर जो खुदा चाहे।) उस आयत को पढकर अपने उपर दम कर ले। इन्शा अल्लाह पढी हुई बाते आपको याद रहेगी।

- जब नबी करीम (स.) पर वही उतरी थी तो आप उसे याद करने के लिए जल्दी जल्दी दौहराते थे तो अल्लाह तआला ने फरमाया कि आप जल्दी ना करें यह हमारी जिम्मेदारी है कि कुरआन हम आपको याद करा दे। यह वही आयत है उसको पढने के बाद इन्शा अल्लाह अल्लाह तआला हमें भी पढी हुई बात याद करा देंगे।

  हर फर्ज नमाज के बाद दुआ से पहले या बाद में सिधा हाथ सर पर रखकर एक ग्यारह बार 'या कव्वी' पढ़े। इससे इन्शा अल्लाह हाफीजा कव्वी होगा।

- दिमाग यह एक (Super computer) से ज्यादा पेचीदा मशीन है। उसे चलाने के लिए तवानायी (Calories) की बहोत जरूरत होती है। अगर आपके खाने में तवानाई वाली चीजे नहीं होगी तो आप पढ़ाई करते हुए बहोत जल्दी थक जाऐंगे और पढ़ी हुई बाते भुल जाऐंगे, मिठी चिजों में तवानाई (Calories) ज्यादा होती है इसलिए रोजाना एक चमचा असली शहद एक मीठा सेब और कुछ तैयार केले रोजाना जरूर खाना चाहिए।

- बदाम और आक्रोड यह दोनों भी दिमाग के बहोत अच्छे टॉनिक है मगर उन्हें एहतियाद से खाएं क्युंके जिनका हाजमा कमजोर होता है वह उन्हें हजम नहीं कर पाते है।

- इल्म अल्लाह का नुर है वह इल्म जिससे दुनिया और आखिरत की कामयाबी हासिल हो। ऐसा इल्म गुनहगारों को नहीं मिलता। इसलिए अगर खैर वाला इल्म हासिल करना आपके लिए मुश्किल हो रहा हो तो अपने अमाल पर गौर करें।

- हज़रत अबु लैला (रज़ि.)

शारीरिक व्यायाम करें।

- हज़रत सलमा (रज़ि.) बिन अकुक कहती हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने लोगों को तीरअंदाजी करते देखा तो बहुत पसंद किया। और आप (स.) खुद भी उसमें शामिल हो गए।

  (बुखारी, बा-हवाला मुन्तखब अबवाब, जिल्द १, हदीसः ५०६)

- बिलाल (रज़ि.) बिन सअद ताबयी कहते हैं कि सहाबा कराम (रज़ि.) तीरअंदाजी की मश्क (अभ्यास) करते और दौड़ लगाया करते थे।

  (शरहूस्सुन्ना, बा-हवाला मुन्तखब अबवाब, जिल्द १, हदीसः ८२८)

- अब्दुल्ला बिन उमर (रज़ि.) कहते हैं कि, (लोगों मे जंगी महारत (कुशलता) बढ़ाने के लिए) हज़रत मुहम्मद (स.) घोड़ों की भी दौड़ लगवाया करते थे।

  (बुखारी, मुस्लिम बा-हवाला मुन्तखब अबवाब, जिल्द १, हदीसः ५१५)

- हज़रत मुहम्मद (स.) अपने घर वालों के लिए बेहद मुहब्बत करनेवाले थे। घरेलू जिंदगी में भी खुशी और उमंग पैदा करने के लिए आप (स.) ने हज़रत आएशा (रज़ि.) से खुद दौड़ में मुकाबला किया। जब हज़रत आएशा (रज़ि.) दुबली पतली थीं तो पहली दौड़ में आप (रज़ि.) जीत गई। कुछ समय बाद जब आप (रज़ि.) दुबली पतली नहीं रही तो हज़रत मुहम्मद (स.) जीत गए।

  (अबु दाऊद, इब्ने माजा, बा-हवाला हदीस नबवीः २३६, पेज नंबर १२६)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने अच्छी सेहत के लिए जिस्म पर तेल की मालिश को पसंद फरमाया है।

  जैतून के पेड़ को कुरआन में पवित्र पेड़ कहा गया है। और वास्तव में यह इंसानो के लिए एक वरदान है। आधुनिक साइन्स के अनुसार जिन लोगों को दिल की बीमारी है उन्हें हर तरह के तेल के इस्तेमाल से नुकसान होगा। मगर रोज़ाना एक चम्मच जैतून का तेल इस्तेमाल करने से फायदा होगा। यह खून में कोलेस्ट्रॉल को कम करता है इसलिए जहाँ तक संभव हो सके दूसरे तेल को कम करके एक चम्मच जैतून का तेल रोज़ाना इस्तेमाल करें। आप उसे रोटी पर लगाकर भी खा सकते हैं।

  राई के तेल और दूसरे तेलों मे कुछ दुर्गंध होती है इसलिए तेल की मालिश के बाद ऑफिस या काम पर जाने से पहले आप को नहाना ज़रूरी होता है। मगर ज़ैतून के तेल में कोई दुर्गंध नहीं होती। इसलिए जब भी ज़रूरत हो उस दिन नहाने से पहले अच्छी तरह जैतून के तेल से मालिश करें। ज़िस्म पर जहाँ पर नापाकी लगी है बस उतना ही हिस्सा साबुन से धो लें और दूसरे हिस्सो पर ज़ैतून का तेल लगा रहने दें (साबुन से धोकर साफ ना करे)। जिस्म पर पानी बहा लें और गुसल (नहाने) के बाद जिस्म कपड़े से पोछकर कपड़े पहन लें। जैसे जैसे ज़ैतून का तेल जिस्म में जज़्ब होगा जिस्म का दर्द और कमज़ोरी कम होती जाएगी। आप ताकत और खुशी महसूस करेंगे। चूंकी जैतून में बदबू नहीं होती इसलिए ना आपको और ना किसी को इसका एहसास होगा, और ना आपके कपड़े तेल से खराब होंगें। इसलिए हर दिन जैतुन का तेल इस्तेमाल करें। और अगर आप कमज़ोरी महसूस करते हो तो कम से कम कमर, जांघ और घुटनों पर सुबह नहाने से पहले या रात को सोते समय लगाने का नियम बनायें।

- इस्लामी विद्वानों का कहना है कि वह लोग जिनकी सेहत अच्छी नहीं है और जिन्हें शारीरिक व्यायाम की ज़रूरत है, उनके लिए सुबह नमाज़ के बाद चहल कदमी करना मस्जिद में बैठकर तस्बीह पढ़ने से बेहतर है। क्योंकि अगर सेहत अच्छी रही तो इबादत का मामूल जिंदगी भर चलता रहेगा। लैकिन अगर सेहत खराब से खराब होती गई तो एक दिन नमाजें भी जाती रहेगीं। इसलिए वह धार्मिक विद्वान जिन्हें रोजाना चहेल कदमी की सख्त ज़रूरत है वह फज्र की नमाज़ के बाद तस्बीह पढ़ते हुए चहेल कदमी (Morning Walk) के लिए निकल जाते हैं। और चहेल कदमी से वापस मस्जिद आकर इशराक की नमाज़ पढ़कर फिर घर जाते हैं।

  इसलिए इबादत करें मगर 'मुजाहिद' बनने की भी कोशिश करें। और 'मुजाहिद' बनने के लिए आप को शारीरिक व्यायाम तो करना ही होगा।

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जिन्हें इलाज करना नहीं आता और वह लोगों का डाक्टर की तरह इलाज करते हैं और उनके इलाज से अगर किसी इंसान को नुकसान होता है तो उस निम हकीम को कयामत के दिन खुदा के दरबार में अपने उस काम का हिसाब देना होगा। यह जिस्म आपके पास अल्लाह तआ़ला की एक अमानत है। अगर आपको

दवाओं के बारे में मालुमात नहीं है तो ना आप किसी और को दवा दे सकते हैं और ना खुद खा सकते हैं। लोगों की जुबानी सुने हुए नुस्खों से अपना इलाज करना बहोत खतरनाक है। ऐसा हरगीज़ ना करें।"

अंग्रेजी दवाओं के बहुत सारे साइड इफेक्टस (Side Effects) होते है। इसलिए सिर्फ मज़बुरी और इमरजंसी में ही अंग्रेजी दवाओं का इस्तेमाल करें। वरना युनानी और आर्युवेदीक दवाओं का ही इस्तेमाल करें।

- ऐसी बहुत सी किताबे उपलब्ध हैं जिनमें फलों, सब्जीयों, शहद, दुध, दही वगैरा से इलाज का जिक्र किया गया है। उन किताबों से जानकारी हासिल करें। तिब्बे नबवी के नाम से कई किताबें उपलब्ध हैं। जिनमें अहादीस की रौशनी में कई बीमारियों के इलाज का आसान तरीका बयान किया गया है। उन किताबों का अध्ययन करें।

  दारूस्सलाम पब्लिशर्स से प्रकाशित किताब शिर्षक 'Healing with the Medicine of the Prophet' (लेखकः इमाम इब्ने कइयिम जूज़ीया) ज़रूर पढ़ें ताकि सेहत की बेहतरी के लिए हज़रज मुहम्मद (स.) की हिदायात का ज्ञान हो और बीमारीओं के इलाज का पता चले।

▼▼▼▼▼▼▼

३५. सफाई और पवित्रता का महत्त्व

- सऊदी हुकूमत (Saudi Arab) ने मदीना मुनव्वरा में मस्जिदे नबवी की तामीर में ३६० अरब रूपए खर्च किए हैं। वह एक महल की तरह खुबसूरत मस्जिद है और उसे 'गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्ड' में दर्ज किया गया है।

  जो इंजिनीयर उसके खूबसूरत डिजाइन और मज़बूती के जिम्मेदार थे उन्होंने एक और सावधानी उसके निर्माण में बरती है। उन्होंने उसे इस तरह निर्माण किया है कि कोई पक्षी ना उस मस्जिद के अंदर बैठ सकता है और ना ही कहीं उसमें घोसला बना सकता है। पक्षियों के फूजलों (मल) से जो गंदगी होती है उससे यह मस्जिद सुरक्षित है और यह डिजाइन का बेहतरीन तरीका है।

- आम खाते वक़्त अगर उसका रस आपके हाथों, पैरों, और पतलून को लग जाए तो मक्खियों से बचने की आप कितनी ही कोशिश करें मक्खियां आपके आसपास भनभनाती ही रहेंगीं।

- अगर आप अपने कमरे के बीच में नमाज़ पढ़ रहे हों और अगर कोई कमरे के चारों कोनों में आपका मन पसंद गाना बजाए तो क्या आप नमाज़ पर एकाग्रता कायम रख सकेंगे? यह असंभव है!

- फरिश्ते साफ सुथरे (पाक) हैं। शैतान गंदे और अपवित्र हैं। शैतान फरिश्तों को शिकस्त नहीं दे सकता, लैकिन फरिश्तों में एक कमज़ोरी है, वह किसी गंदी जगह नहीं जा सकते हैं। इसलिए शैतान खुदाई पोलिस (फरिश्ते) से बचने के लिए गंदी जगहों पर छुप जाते हैं।

- स्नान करते समय अपने बालों मे शैंम्पू लगाएं। उसे तीन मिनट रखें फिर सिर धो लें। आप के बाल रेशम की तरह नर्म और चमकदार हो जाऐंगे। फिर उसके बाद शैंम्पू के असर को खत्म करने के लिए आप बालों को तीन घंटा धोएं तो भी बाल रेशम की तरह मुलायम ही रेहेंगे। शैंम्पू का असर खत्म नहीं होगा। क्योंकि बाल नायलॉन के धागों की तरह नहीं हैं। यह जिस्म के खलियों (Cells) से बनते हैं। पानी और किमियायी (रसायनिक) कण जज़्ब करते है और बाकी रखते है।

- वीर्य (Semen) और माहवारी का खून (Menstrual Blood) धार्मिक तौर से अपवित्र है। अगर वीर्य या माहवारी का खून बालों को लग जाए तो वह उसे जज़्ब कर लेते है। इसी तरह पसीना भी बदबूदार और गंदा होता है वह भी बाल ज़ज्ब (सोख) कर लेते हैं। स्नान करने के बाद तो हम शरयी (इस्लामी) तौर पर पाक हो जाते हैं, क्योंकि शरीयत (इस्लामी कानून) में नर्मी रखी गई है और हर इंसान हर रोज बाल साफ नहीं कर सकता। इसलिए बाल साफ करने की मुद्दत ४० दिन है। इसके बाद नमाज़ नहीं होगी। मगर असल में बाल एक हफ्ता पुराने हों तब भी कुछ ना कुछ गंदगी तो जज़्ब किए ही रहते हैं। यही वो जगह है जहाँ शैतान छुपकर फरिश्तों से सुरक्षित रहता है और वह लगातार दिल में वसवसे (बहकावे) ड़ालता रहता है। इसलिए हज़रत मुहम्मद (स.) अपने खास सहाबा को १५ दिन के अंदर ही बाल साफ करने की नसीहत करते थे। (मुस्लिम)

- आप का शरीर आपकी आत्मा का निजी कमरा (Private Room) है। जैसे आप अगर कमरे के बीच नमाज़ पढ़ें और कोई कमरे के चारों तरफ आप का पसंदीदा गीत लगा दे तो आप कभी नमाज़ पूरे ध्यान से नही पढ़ सकते है। इसी तरह जब आत्मा की गहराइयों से आप खुदा की तरफ ध्यान लगाकर इबादत करना चाहेंगे तो नापाक बालों में छुपा शैतान आपके ध्यान में बाधा डालता ही रहेगा। जैसे आम का रस लग जाए तो असंभव है कि आप मक्खियों से बचे रहें। इसी तरह नापाक बालों की वजह से असंभव है कि आप शैतानी वसवसों (बहकावों) से सुरक्षित रह सकें।

- अपवित्र हालत में क्रोध, जलन, चिंता, नकारात्मक सोच वगैरा दिमाग पर सवार रहते हैं। मगर कुछ लोग समझते है कि अपवित्र हालत में भी वह पवित्रता की तरह शांत होकर सकारात्मक सोच सकते हैं। मगर यह बात गलत है। कभी कभी भावनाएं, इच्छा शक्ति पर छा जाती है। मिसाल के तौर पर हम सब जानते हैं कि हम किसी भी समय मर सकते हैं। हमें दिल का दौरा, सड़क हादसा, आतंकवादी हमलों से और किसी भी वजह से मौत आ सकती है। लैकिन हम में से कोई भी इससे परेशान नहीं रहता लैकन कैंसर का मरीज़, या वह अपराधी जिसे फांसी की सज़ा सुनाई जा चुकी है वह निराश रहता है। अगर हम उन्हें विश्वास दिलाएं की अगले ६ महीने तक वह मरने वाले नहीं है, तब भी वह कितना भी खुश रहने की कोशिश करें आखिर में उदासी की भावना उन पर गालिब आ जाती है, और वह दुखी हो जाते हैं। इसी तरह एक अपवित्र आदमी अपनी इच्छा शक्ति से सकारात्मक तरीके से सोचने की कितनी भी कोशिश करे वह अपने आप नकारात्मक अंदाज में सोचने लगता है।

- पवित्र लोग आम आदमियों कि तरह होते हैं जो जानते हैं कि मौत अटल है, लैकिन वह शांत रहते हैं। और गंदा और अपवित्र आदमी एक कैंसर के मरीज़ की तरह या फांसी के सज़ा-याफ्ता अपराधी की तरह है जो नकारात्मक अंदाज में सोचने से बचा नहीं रह सकता।

- शैतान हमेशा डर, चिंता, गुस्सा, लैंगिक इच्छा, लालच, नफरत, निराशा और हर प्रकार की नकारात्मक भावनाएं पैदा करता है। और एक नकारात्मक भावना तमाम सकारात्मक भावनाओं का खात्मा कर देती है, चूंकि खयालात, हकीकत में बदल सकते हैं। इसलिए नकारात्मक विचारों से बचने के लिए और खुशहाल बनने के लिए हमेशा साफ सुथरे रहें।

- इसलिए अपने ऊंचे कैरियर के लिए उत्तम डिजाइन बनाते हुए खयाल रखें कि शैतान आपके घर में घोसला ना बना सके। अपनी बगल के भीतर और नाभि के नीचे के बाल हर १५ दिन बाद या जितनी जल्दी हो सके साफ कर लें। ४० दिन के बाद मुम्किन है आपकी कोई इबादत कबूलियत के लायक ना हो।

- आप पूरी कोशिश करें की पेशाब की एक बूंद भी आपकी जांघिया (Underwear) या कपड़ों में जज़्ब ना हो। जिन्हें पेशाब के बूंद आने की कमज़ोरी है वह अपने जांघिया (Underwear) में एक टिशु पेपर (Tissue Paper) रख लेते हैं और समय समय से उन्हें बदलते रहते हैं।

इस्लाम में सफाई पर ज़ोर:

- सूरह मुदस्सिर का औतारण इस्लाम में शुरूआती दौर में हुआ। इस्लाम में सफाई का इतना महत्व है कि अल्लाह तआ़ला ने इस सूरह में विशेष तौर पर सफाई के निर्देश दिए हैं:

  "ऐ (कम्बल) ओढ़-लपेटकर लेटनेवाले (हज़रत मुहम्मद)! उठों और ख़बरदार करो। और अपने रब की बढ़ाई का एलान करो। और अपने कपड़े स्वच्छ रखो। और गन्दगी से दूर रहों" (सूरह मुदस्सिर आयात १ से ५)

- "और खुदा पवित्र रहने वालों को ही पसंद करता है।"
  (सूरह तौबा आयात १०८)

  इसी तरह पवित्रता की अच्छाइयों पर बहोत सारी हदीसे हैं। मिसाल के तौर पर:

- हज़रत अबू मालिक अश्अरी (रज़ि.) बयान करते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "पवित्रता प्राप्त करना आधा ईमान है।"
  (स्वर्ग की कुंजी, पेज ३१)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जन्नत की कुंजी नमाज़ है और नमाज़ की कुंजी सफाई है।"
  (अहमद जमा अल गवामा ६: ३८३ रकमुल हदीसः १६६२)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जो हमेशा पवित्र रहते हैं (यानी जो वजू किए रहते हैं) उनकी दौलत में इज़ाफा होगा।"
  (नफा ए खलाइक, पेज ३३१)

- अपने परिवार के सदस्यों को देखे बगैर हम उनकी कदमों की आहट सुनकर ही हम उन्हें पहचान लेते हैं।

  इसी तरह शबे मेराज में हज़रत मुहम्मद (स.) ने स्वर्ग में हज़रत बिलाल (रज़ि.) के कदमों की चाप सुनी। ज़मीन पर वापसी के बाद हज़रत मुहम्मद (स.) ने हज़रत बिलाल (रज़ि.) से पूछा कि उन की महत्वपूर्ण और खुफिया इबादत क्या है, जिसकी वजह से उन्हें स्वर्ग प्रदान हुआ है? हज़रत बिलाल (रज़ि.) ने अर्ज किया, "ऐ अल्लाह के रसूल (स.)! मैं हमेशा कोशिश करता हुँ कि बा-वजू रहुँ। और जब मैं वजू करता हुँ तो दो रकात नफिल नमाज़ अदा करता हुँ। सिर्फ यही एक खास इबादत है या सावधानी है जिस पर मैं अमल करता हूँ।" (मिश्कात)

  इस बयान से आप समझ सकते हैं कि साफ रहने की क्या बरकतें और फायदे हैं और बावजू रहने से क्या इनाम मिलता है।

- हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) पेशाब करने के बाद फौरन मिट्टी से तयम्मुम कर लेते। मैंने अर्ज किया "या रसूल अल्लाह (स.)! पानी तो आप के बहोत करीब है?" (यानी जब पानी बहोत करीब है तो फिर तयम्मुम क्यों करते हैं?) हज़रत मुहम्मद (स.) ने (मेरे इस बात के जबाब में) इरशाद फरमाया, "मुझे क्या मालूम कि मैं उस पानी तक पहुंच भी सकूंगा या नहीं।"
  (बगवी व इब्ने जौज़ी, मुन्तखिब इब जिल्द २, हदीस १३३१)

- फर्ज नमाज़ की अदाएगी के लिए सुन्नत के मुताबिक मुकम्मल वजू कर लेना चाहिए। लैकिन आम हालात में बावजू रहने के लिए लाज़मी नहीं कि तमाम अंगों को तीन बार धोएं।

  हज़रत मुहम्मद (स.) ने वजू करते हुए अपने अंग एक दो या तीन बार धो लेते थे। और तीन वक़्त धोना आम था। और इसे सुन्नत समझा जाता है। लैकिन आम हालात में बावजू रहने के लिए एक बार भी धोना काफी है। इसलिए अगर आप तीन बार अंगों को धोना मुश्किल समझते हैं तो भी वजू से गाफिल (लापरवाह) ना हों, बल्कि अपने हाथ कोहनियों तक धोएं (एक बार), चेहरा एक बार धो लें, सर के चौथाई हिस्से पर मसाह करें और पैर टखनों तक एक बार धो लें। इस तरह आप का वजू पूरा हो जाएगा और आपको बावजू होने का शांतिदायक अहसास होगा।

- वजू में चार बातें लाज़िम हैं: चेहरा धोना, कोहनी तक हाथ धोना, चौथाई सर का मसा करना और टखनों तक पैर धोना। अगर आप चमड़े के मौज़े पहनते हैं और अगर आप ने वजू के बाद चमड़े के मोज़े पहने तो वजू टूटने के बाद पैर धोने के बदले अगर आप सिर्फ चमड़े के मौजे पर मसाह करते हैं तो भी आपका वजू हो जाएगा। शरीयत के मुताबिक अगर आप का मोज़ा चमड़े का नहीं है तो मौजे पर मसह करने से आपका वजू मुक्कमल नहीं होगा और ना मुक्कमल वजू से आप नमाज़ पढेंगे भी तो आपकी नमाज़ नामुक्कमल होगी।

  अगर आप का वजू ऐसी जगह टूटता है जहाँ पैरों को धोना मुम्किन नहीं है। जैसे एअरपोर्ट या सफर में या सर्दी के दिन और आपने वजू के बाद जूता और कपड़े का मौज़ा पहना है। तो ऐसे वक़्त आप चेहरा धो लें, कोहनियों तक हाथ धो लें, सिर का मसाह कर लें और अपने कपड़ों के बने मौजे पर भी मसाह कर लें। इस तरह करने से आपका वजू नहीं होगा। इस तरह के वजू से आप न नमाज़ पढ़ सकते हैं और ना कुरआ़न शरीफ को हाथ लगा सकते हैं। मगर चूंकि आप ने मजबूरी में ऐसा किया है और जहाँ आपकी ताकत खत्म होती है वहाँ अल्लाह तआ़ला की मदद शुरू होती है। इसलीए जिस तरह वजू से रहने से दिमाग शांत रहता है। आप उस नाकिस वजू के बाद भी अपने आप को शांत महसूस करेंगें। इसलिए कुछ ना करने से अच्छा है कि आप इस तरह के नाकिस वजू की हालत में जरूर रहिए।

  मैं आप को एक गैर शरई (गैर इस्लामी) बात क्यूं सिखा रहा हुँ? क्योंकि मेरा मक्सद आपको दौलतमंद बनाना है। और मैं आपको हर वह जायज़ तरीका बताना चाहता हुँ जिससे आप शांत रहें। सही दिशा में सोचें और तरक्की करें। कभी कभी पल भर के गुनाह पर सदियों भर की सज़ा मिलती है। बगैर वजू के ज़्बाती होकर आप किसी से उलझ पड़ें और वक़्त और दौलत बरबाद करें इससे अच्छा है नाकिस वजू के साथ शांत और अमन के साथ रहें। और मैं निजी तौर पर जो तजुर्बा (प्रयोग) कर चुका हुँ वही आपको बता रहा हुँ।

- आप अपने घर के नज़दीक या कारखाने के बाहर सड़क पर किसी जानवर के फुज़ले (मल) पर कई दिनों तक नज़र रखें। वह फुजला धीरे धीरे सूख कर लोगों के कदमों और मोटर गाड़ियों के टायरों से दबकर धीरे धीरे धूल बनकर उड़ जाएगा।

  तो शहरों में जो धूल उड़ती है उसका खेत खलिहान की मिट्टी की तरह पवित्र होना ज़रूरी नहीं है। वह सूखी गटर और जानवरों का फुज़ला (मल) भी हो सकता है। इस तरह कि धूल अगर बालों में घुस जाए तो वह सारे अपवित्र असरात (प्रभाव) पैदा करती है। जब तेज़ हवा चले

और धूल उड़ने लगे तो अपने सर को ढ़ाक लीजिए। सर ढ़ांकना सुन्नत तो है ही इसके साथ मुकम्मल पाकी के लिए बेहद जरूरी भी है। वरना शैतान का संगीत (वसवसा) अपने कानों से कभी दूर ना होगा।

इस तरह चप्पल या सैंडल के बदले जूता पहनने की आदत डालिए। अगर आप मौज़ा और जूता पहनते हैं तो आपके कदम रास्तों की गंदगी से नापाक होने से महफूज रहते हैं। चप्पल या सैंडल से कदम खाक आलूदा तो हो ही जाते हैं और शहर की धूल अधिकतर अपवित्र होती है।

हज़रत अब्दुर्राहमान बिन औफ (रज़ी) ने हज़रत मुहम्मद (स.) की एक तवील हदीस बयान की है जिसमें हज़रत मुहम्मद (स.) ने ऐसे बहुत सारे कर्म बताए हैं जिनसे खुशहाली आती है। जैसे ईमानदारी के साथ व्यापार करना, हज उमरा करना, मां-बाप के साथ नेक सुलूक करना वगैरा वगैरा। इन में एक कर्म पैरों में जूता पहनना भी है।

(आसान रिज्क, पेज १६)

इसलिए खुशहाली और सकारात्मक रवय्ये के लिए मुक्कमल सफाई यकीनी बनाऐं और हमेशा वजू के साथ रहने की कोशिश करें।

▼▼▼▼▼▼▼

एक देहाती के २५ सवाल और हज़रत मुहम्मद (स.) के जवाब

एक देहाती हज़रत मुहम्मद (स.) के दरबार में हाजिर हुआ और अर्ज किया कि या रसूल अल्लाह (स.)! मैं कुछ पूछना चाहता हुँ? फरमायाः कहो! (देहाती के सवाल और हज़रत मुहम्मद (स.) के जबाब इस तरह हैं।)

प्र.१ः मैं अमीर (गनी) बनना चाहता हुँ?
उत्तरः फरमाया कनाअत अेख्तियार करो। (यानी आपके पास जो है उसमें संतुष्ट रहों।)

प्र.२. अर्ज कियाः मैं सबसे बड़ा आलिम बनना चाहता हुँ?
उत्तरः तक्वा अेख्तियार करो आलिम बन जाओगे।

प्र.३. इज्जतवाला बनना चाहता हुँ?
उत्तरः मख्लूक के सामने हाथ फैलाना बंद कर दो बाइज्जत बन जाओगे।

प्र.४. अच्छा आदमी बनना चाहता हुँ?
उत्तरः लोगों को नफा पहुँचाओ।

प्र.५. आदिल (इन्साफ करनेवाला) बनना चाहता हुँ?
उत्तरः जिसे अपने लिए अच्छा समझते हो वही दूसरों के लिए पसंद करो।

प्र.६. ताकतवर बनना चाहता हुँ?
उत्तरः अल्लाह पर तवक्कल (भरोसा) करो।

प्र.७. अल्लाह के दरबार में खास दर्जा चाहता हुँ?
उत्तरः कसरत से जिक्र करो।(अल्लाह तआ़ला को बहोत याद करों।)

प्र.८. रिज्क की कुशादगी चाहता हुँ?
उत्तरः हमेशा बावजू रहो।

प्र.९. दुआओं की कुबूलियत चाहता हुँ?
उत्तरः हराम ना खाओ।

प्र.१०. ईमान की तक्मील (Perfection) चाहता हुँ?
उत्तरः अख्लाक अच्छे कर लो।

प्र.११. कयामत के रोज अल्लाह से गुनाहों से पाक होकर मिलना चाहता हुँ?
उत्तरः जनाबत (नापाकी) के बाद फौरन गुस्ल किया करो।

प्र.१२. गुनाहों में कमी चाहता हुँ?
उत्तरः कसरत से इस्तगफार किया करो।

प्र.१३. कयामत के रोज नूर में उठना चाहता हुँ?
उत्तरः जुल्म करना छोड दो।

प्र.१४. मैं चाहता हुँ कि अल्लाह मुझपर रहम करे?
उत्तरः अल्लाह के बंदो पर रहम करो।

प्र.१५. मैं चाहता हुँ कि अल्लाह मेरी पर्दा पोशी करें?
उत्तरः लोगों की पर्दा पोशी करो।

प्र.१६. रूसवाई से बचना चाहता हुँ?
उत्तरः जिना (Sexual Sin) से बचो।

प्र.१७. मैं चाहता हुँ कि अल्लाह और उसके रसूल (स.) का महबुब बन जाऊं?
उत्तरः जो अल्लाह और उसके रसूल को महबुब हो उसे अपना महबूब बना ले।

प्र.१८. अल्लाह का फर्मा बरदार बनना चाहता हुँ?
उत्तरः फराएज का अेहतमाम करो।

प्र.१९. एहसान करनेवाला बनना चाहता हुँ?
उत्तरः अल्लाह की इस तरह बंदगी करो जैसे तुम उसे देख रहे हो या जैसे वह तुम्हे देख रहा हो।

प्र.२०. या रसूल अल्लाह! क्या चीज़ गुनाहों से माफी दिलाएगी?
उत्तरः आंसु..... आजज़ी..... और बीमारी।

प्र.२१. क्या चीज़ दोजख की आग को ठंडा करेगी?
उत्तरः दुनिया की मुसिबतों पर सब्र।

प्र.२२. अल्लाह के गुस्से को क्या चीज़ ठंडा करेगी?
उत्तरः चुपके चुपके सदका.... और सिलारहमी।

प्र.२३. सबसे बड़ी बुराई क्या है?
उत्तरः बुरे अखलाक..... और बुख्ल (कंजूसी)।

प्र.२४. सबसे बड़ी अच्छाई क्या है?
उत्तरः अच्छे अखलाक.... तवाज़े (Good Manners).....और सब्र।

प्र.२५. अल्लाह के गुस्से से बचना चाहता हुँ?
उत्तरः लोगों पर गुस्सा करना छोड़ दो।

(कन्जुल अमाल, मस्नद अहमद)

▼▼▼▼▼▼▼

३६. माल और दौलत बढ़ाने वाली इबादतें (Prayers of Prosperity)

इस अध्याय में हम अध्ययन करेंगे कि खुशहाली और स्थाई सफलता के लिए दीनदार होना क्यों ज़रूरी है? फिर हम यह जानने की कोशिश करेंगे कि क्या दीन (धर्म) और बेदीन (अधर्म) के बीच का रास्ता भी इख्तेयार किया जा सकता है? फिर अध्ययन करेंगे कि इस्लाम क्या है? और खुश्हाली के लिए कौनसी विशेष इबादत करें? फिर हम अध्ययन करेंगे कि हम खुश्हाली वाली इबादत कैसे करें और आम जिंदगी कैसे गुज़ारें? अल्लाह तआ़ला हमें सही बात कहने सुनने और अमल करने की तौफीक अता फरमाऐ।

कोई एक रास्ता अपनाओ:

कुरआने करीम में अल्लाह तआ़ला फरमाता है:

- "और यह कि वही दौलतमंद बनाता है और गरीब करता है।"
(सूरह नज्म आयत ४८)

- "जो व्यक्ति नेक आमाल करेगा मर्द हो या औरत, और वह मोमिन भी होगा, तो हम उसे (दुनिया में) पाक (और आराम की) जिंदगी से जिंदा रखेंगे और (आखिरत में) उनके कर्मों का बहोत ही अच्छा बदला देंगे।"
(सूरह नहल आयत ९७)

- "और अगर यह खयाल न होता कि सब लोग एक ही जमात हो जाऐंगे तो जो लोग खुदा से इन्कार करते हैं हम उनके घरों की छत चांदी की बना देते और सीढियां (भी) जिनपर वह चढ़ते है। और उनके घरों के दरवाजे भी और तख्त भी जिनपर तकिया लगाते हैं और (खूब) सजावट व आराईश, (कर देते) और यह सब दुनिया की जिंदगी का थोड़ा सा सामान है। और आखिरत तुम्हारे परवरदिगार के यहाँ परहेजगारों के लिए है।" (सूरह जुख्रूफ आयत ३३ से ३५)

- इसलिए अगर आप बेहद दौलत चाहते हैं तो इस के लिए दो रास्ते हैं या तो आप अल्लाह तआ़ला के पूरी तरह आज्ञाकारी बंदे बन जाऐं, या ऐसे काफिर बनें कि ऐसी कोई उम्मीद ना हो कि कभी आप एक खुदा की इबादत करेंगे, और उसके आदेशों की पाबंदी करेंगे।

- पहली हालत में (जब आप अल्लाह की आज्ञा का पालन करेंगे) तो खुशहाली आपको नकद रकम या जायदाद के रूप में नहीं मिलेगी। बल्कि पाकीज़ा और आरामदेह जिंदगी के रूप में मिलेगी। आप को अपने बीवी बच्चे देखकर शांति प्राप्त होगी। सेहत अच्छी होगी, शारीरिक और रूहानी (आध्यात्मिक) शांती होगी, तमाम आवश्यक्ताएं पूरी करने के लिए जरूरत के मुताबिक रूपया होगा और सखावत (दान) करने के लिए दिल होगा। खुशहाल जिंदगी के बाद आपको शांतिपूर्ण मौत आएगी और मरने के बाद परलोक के तमाम मरहले (चरण) आसान होंगे और अल्लाह तआ़ला आपको स्वर्ग प्रदान फरमाएंगे।

  दूसरी हालत में (जब आप खुदा की जात से इन्कार करें फिर) खुशहाली आम तौर पर नकद रकम और जायदाद की शक्ल में मिलेगी। उस जायदाद के साथ आपको लंबी उमर से गहरी मोहब्बत होगी। लैकिन मौत के वक़्त आप बड़ी परेशानी का शिकार होंगे, और आपको एहसास होगा कि आप ने कोई महत्वपूर्ण वस्तु खो दी है। (यानी पवित्र और मज़हबी जिंदगी)। आपको यकीन होगा कि नर्क आपका बेसबरी से इन्तेज़ार कर रही है। इसलिए आपका दिमाग और आत्मा बहुत ही भयभीत हो जाएंगें। और मौत के वक़्त आप को बहुत तकलीफ होगी और आप मरने के बाद हमेशा के लिए नर्क की आग में जलते रहेंगें।

कोई दरमियानी रास्ता नहीं:

- अगर कोई ऐसा कहें कि ना में १०० प्रतिशत मज़हबी बनना चाहता हुँ और ना १०० प्रतिशत माद्दियत पसंद (Materialistic) बल्कि दरमियानी रास्ता इख्तेयार करना चाहता हुँ तो क्या होगा?

- अगर आप की बीवी कहें कि मैं दरमियानी रास्ते पर चलना चाहती हुँ। ना तो में सौ प्रतिशत पाकीजा रहना चाहती हुँ और ना सौ प्रतिशत बद-चलन! फिर आप क्या करेंगे?

- पहले आप अपनी बीवी को नसीहत करेंगे, अगर वह ना माने तो फिर आप उसको चेतावनी देंगे, उसके बाद उसे सज़ा देंगे, आखिर में अगर आपको कोई उम्मीद ना रही कि वह कभी बा-असमत रहेगी तो आप उसे तलाक देकर कहेंगे कि वह सम्मानपूर्वक तरीके से आपका घर हमेशा के लिए छोड़ दे।

- मज़हब के मामले में भी यही होगा। आपकी इस्लाह के लिए अल्लाह तआ़ला पहले कुरआ़न करीम, वलियों, मुत्तकियों और नेक लोगों को ज़रिया बनाएगा।

  अगर बंदा मानने से इन्कार करता है तो अल्लाह तआ़ला गरीबी और बीमारी वगैरा से चेतावनी देता है। फिर भी अगर वह अड़ा रहा तो उसके लिए खुशहाली के तमाम दरवाजे खोल देता है और फिर उसे अचानक पकड़ लेता है।

  ऊपर लिखी हुई वास्तविक्ताओं को कुरआ़न करीम इस तरह बयान करता है।

- "तुमसे पहले बहुत-सी क़ौमों की ओर हमने रसूल भेजे और उन क़ौमों को मुसिबतों और दुखों में डाला ताकि वे बेबसी के साथ हमारे सामने झुक जाएँ। तो जब हमारी ओर से उनपर कठिनाई आई तो क्यों न उन्होंने विनम्रता अपनाई? मगर उनके दिल तो और कठोर हो गए और शैतान ने उन्हें इतमीनान दिलाया कि जो कुछ तुम कर रहे हो ख़ूब कर रहे हो। फिर जब उन्होंने उस नसीहत को, जो उन्हें की गई थी, भुला दिया तो हमने हर तरह की ख़ुशहालियों के दरवाज़े उनके लिए खोल दिए, यहाँ तक कि जब वे उन चीज़ों में जो उन्हें प्रदान की गई थीं ख़ूब मगन हो गए तो अचानक हमने उन्हें पकड़ लिया और अब हालत यह थी कि वे हर भलाई से निराश थे।।" (सूरह अन्आम आयत ४२ से ४४)

  इस तरह हर दरमियानी रास्ता अच्छा नहीं है। आपको कोई एक रास्ता चुनना ही होगा। अब फैसला आपके हाथ में है।

- अल्लाह तआ़ला कुरआ़न करीम में फरमाता है कि, "मोमिनों! इस्लाम में

पूरे पूरे दाखिल हो जाओ। और शैतान के पीछे ना चलो वह तुम्हारा दुश्मन है।" (सूरह बकरा आयत २०८)

इतने साफ अहकाम के बाद भी क्या आपको फैसला करने में देर लगेगी?

इस्लाम क्या है? :

- हज़रत मुआविया बिन हिदा (रज़ि.) अपने इस्लाम लाने का वाक्या बयान करते हुए कहते हैं कि मैं हज़रत मुहम्मद (स.) के पास मक्का पहुँचा। मैंने पूछा अल्लाह तआ़ला ने आपको क्या चीज़ देकर भेजा है। आप (स.) ने फरमाया, "मैं दीन के साथ भेजा गया हुँ।" मैंने कहा, "दीन इस्लाम क्या है? उसकी शिक्षाएं क्या हैं?" आप (स.) ने फरमायाः "इस्लाम यह है कि तुम अपने पूरे वजूद (अस्तित्व) को अल्लाह के सुपुर्द करो और अपनी हर चीज़ से दस्तकश हो जाओ (अल्लाह की मर्जी पर छोड़ दो), और नमाज़ कायम करो और ज़कात दो।"
(अल इस्तीयाब लाबीन अब्दुल बर, सफीना निजात, पेज१६२)

- हज़रत अबू मूसा अश्अरी (रज़ि.) बयान करते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमायाः "उस व्यक्ति की मिसाल जो अपने रब को याद करता है जिंदा आदमी की सी है, जो अपने रब को याद नहीं करता है वह मुर्दे की तरह है।" (बुखारी, मुस्लिम, सफीना निजात, पेज ३६०)

- हज़रत अनस (रज़ि.) फरमाते हैं कि एक आदमी हज़रत मुहम्मद (स.) के पास आया और पूछा की कयामत कब होगी? आप (स.) ने फरमाया, "तुम्हारा भला हो तुमने उसके लिए कुछ तैयारी की है?" उसने कहा "मैंने उसके लिए कुछ ज्यादा तैयारी तो नहीं की अलबत्ता अल्लाह और उसके रसूल (स.) से मुहब्बत रखता हुँ।" हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया कि "आदमी को उन्हीं लोगों का साथ नसीब होगा जिनसे वह मोहब्बत करता है।" हज़रत अनस (रज़ि.) कहते हैं कि "इस्लाम लाने के बाद लोगों को कभी इतनी खुशी नहीं हुई जितनी हुजूर (स.) की यह बात सुनकर लोगों को खुशी हुई।"
(मुस्लिम, बुखारी, सफीना निजात हदीस ४०५)

- हज़रत उबेदा मालेकी (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमायाः "ऐ कुरआ़न पढ़नेवालों! कुरआ़न को तकिया ना बनाओ, दिन और रात के समयकाल में उसको अच्छी तरह पढ़ना और उसके पढ़ाने को आम रिवाज देना। कुरआ़न के सिवा किसी दूसरी चीज़ की तरफ मायल ना होना और उसमें गौर और फिक्र करना ताकि तुम सफल हो। इस किताब के जरिए दुनिया के तलबगार ना होना, बल्कि हमेशा बाकी रहने वाले इनाम के तलबगार बनना।"
(मिश्कवात, सफीना निजात हदिस ३२६)

- अल्लाह तआ़ला किसी भी जान को उस की ताकत से ज्यादा तकलीफ नही देता। जो नेकी वह करे वह उसके लिए है, और जो बुराई वह करे वह उसपर है। (सूरह बकरा आयत २८६)

- "ऐ पैगंबर! मेरी तरफ से लोगों को कह दो ऐ मेरे बंदो! जिन्होंने अपनी जानों पर ज्यादती की है खुदा की रहमत से नाउम्मीद ना होना। खुदा तो सब गुनाहों को माफ कर देता है और वह तो माफ करने वाला मेहरबान है।" (सूरह जुमर आयत ५३)

- हज़रत नोमान बिन बशीर (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमायाः "तुम्हारे परवरदिगार ने फरमाया है कि मुझसे मांगो मैं तुम्हारी दुआ़ कबूल करूंगा।"
(अहमद, तिरमिजी, अबु दाऊद, निसाई, इब्ने माजा, मुन्तखब अबवाब जिल्द १ हदीस ३८१)

- (कुरआ़न करीम की आयात का अर्थ है कि अल्लाह तआ़ला के नेक बंदे इस तरह दुआ़ करते हैं।) "परवदिगार हमको दुनिया में भी नेअ्मत अता फरमा और आखिरत में भी नेअ्मत बख्शियो और दोजख के आज़ाब से सुरक्षित रख।" (सूरह बक़रा आयत २०१)

- हज़रत सोबान (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "तकदीरे इलाही (भाग्य) को दुआ़ के अलावा कोई चीज़ नहीं बदलती, और मां-बाप और रिश्तेदारों के साथ नेक सुलूक करने के अलावा कोई चीज़ उम्र को लम्बा नहीं करती, और इन्सान रोज़ी से महरूम (वंचित) कर दिया जाता है, उस गुनाह की वजह से जिसको वह अंजाम देता है।"
(इब्ने माजा, मुन्तखब अबवाब जिल्द १ हदीस ६६३)

ऊपर दी गई आयात और हदीस का अर्थ है किः

१. इस्लाम अल्लाह तआ़ला कि पूरी तरह आज्ञाकारी का नाम है।

२. दुनिया और आखिरत (परलोक) में कामयाबी के लिए हज़रत मुहम्मद (स.) से मुहब्बत और अल्लाह तआ़ला की इबादत बहोत जरूरी है।

३. लोगों को तकलीफ खुद उनके कर्मों से होती है। अल्लाह तआ़ला तो रहीम और करीम (दयालु और कृपावंत) है।

४. दुआ़ तकदीर(भाग्य) को बदल सकती है।

इसलिए दुनिया और आखिरत (परलोक) की कामयाबी के लिए इस्लाम में पूरी तरह दाखिल हो जाएं, सुन्नत (हज़रत मुहम्मद (स.) के तरीके) के मुताबिक जिंदगी गुज़ारें, गुनाहों से बचें, खूब दुआ़ मांगें। इसके सिवा सफलता का और कोई रास्ता नहीं है।

हम अपनी आर्थिक समस्याऐं कैसे सुलझाएं:

- जब हज़रत मुहम्मद (स.) के सहाबा कराम (रज़ि.) पर कोई मुसीबत आती तो वह हज़रत मुहम्मद (स.) से सलाह लेते। आप (स.) उन्हें उन समस्याओं का हल बताते। सहाबा कराम (रज़ि.) आप (स.) की नसीहतों पर अमल करके अपनी समस्या हल कर लेते। अगर हम भी हज़रत मुहम्मद (स.) की शिक्षाओं पर अमल करें ताकि हमारी समस्याऐं हल हो तो यकीनन फायदा होगा। मैंने जाती तौर पर अमल करके बड़ा फायदा उठाया है। मुझे यकीन है की आपको भी इससे फायदा होगा। सहाबा कराम (रज़ि.) की कुछ मिसालें निम्नलिखित हैं:

सूरह कदर की बरकत:

- एक बार देहाती इलाके से कोई व्यक्ति हज़रत मुहम्मद (स.) की सेवा में हाज़िर हुए और अपनी गरीबी की हालत बयान किया। हज़रत मुहम्मद (स.) ने उन्हें नसीहत फरमायी कि सूरह कद्र की तिलावत दस बार हर फर्ज नमाज़ के बाद करें। और फरमाया हर जुमा को अपने नाखून काटना। उस व्यक्ति ने ऐसा ही किया और मालदार बन गया।
(नफा खलायक पेज ३१६)

- इमाम वली अहमद (र.अ.) से किसी व्यक्ति ने गरीबी की शिकायत कि। उन्होंने कहा की सूरह कद्र बार बार पढ़ा कर।

(वज़ीफा करीमीया हुदा दिसंबर १९९७)

- सूरह कद्र को पढ़ने का सवाब एक चौथाई कुरआ़न के बराबर है।

(कनज़ुल अमाल)

इसलिए हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद १० बार सूरह कद्र पढ़ने की आदत डालें।

फरिश्तों की तस्बीह:

- हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर (रज़ि.) के मुताबिक हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "सुबहान अल्लाही व-बी-हमदिही" इस कायनात (सृष्टी) की हर मख्लूक (पैदा किए गए प्राणियों) की दुआ़ है। और इस आयत की तिलावत से उन्हें अल्लाह तआ़ला रिज्क अता फरमाता है। कायनात की हर मख्लूक अल्लाह की हम्द (प्रशंसा) और सना करती है। मगर इन्सान नहीं समझ सकता। (नसाई, हाकीम, तरगीब, बुज़ार)

एक बार एक सहाबी (रज़ि.) हज़रत मुहम्मद (स.) की सेवा में हाज़िर हुए और अर्ज किया, "ऐ अल्लाह के रसूल (स.)! दुनिया मेरी तरफ से पीठ फेरकर चली गयी। हज़रत मुहम्मद (स.) ने नसीहत फरमायी कि फरिश्तों की तस्बीह पढ़ा करो।" अर्ज किया "हुजूर (स.)! फरिश्तों की तस्बीह क्या है।" हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया "सुबह सादिक के बाद सूरज निकलने से पहले "سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ بِحَمْدِهٖ ، سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْم"

१०० बार पढ़ा करो।" यह सुनकर सहाबी चले गए और कुछ दिन के बाद आकर अर्ज किया की "हुजूर (स.) अल्लाह तआ़ला ने मुझे इतनी दौलत प्रदान की है कि मेरे घर में रखने की जगह ना रही।"

(मुहाहिबील दुनिया)

अर्श के खज़ाने का एक मोती:

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने हज़रत अबू ज़र गफ्फारी (रज़ि.) को नसीहत की के "لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَظِيْم"

अधिकता से पढ़ा करें की यह तस्बीह अल्लाह तआ़ला के खजानों में से एक है।

हज़रत मुहम्मद (स.) ने यह भी इरशाद फरमाया कि जो कोई इस तस्बीह को सौ बार पढ़ेगा वह ७० तरह की मुश्किलों और तक्लीफों से बचा रहेगा, और उन तक्लीफों में सबसे कम जो परेशानी है वह 'मुफ्लिसी' है। (नफा खलायक, पेज नंबर ३१५)

इस तस्बीह का एक अर्थ यह भी है कि नेकी करने की तौफीक और बुराई से बचने की तौफीक अल्लाह तआ़ला की कृपा से ही है। अगर इस तस्बीह का अर्थ दिल में बैठ जाए तो फिर इन्सान कभी अपनी नेकी पर घमंड नहीं करेगा। क्योंकि यह अपनी नेकी पर घमंड ही इन्सान को ले डूबता है।

दरूद शरीफ की बरकत:

- हज़रत अबु सईद (रज़ि.) के मुताबिक हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारी खुशहाली में कमी ना हो बल्कि बढ़ोतरी हो तो निम्नलिखित दरूद पढ़ें।"

- اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ.
وَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ. وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ.

(नफा खलायक, पेज नंबर ३२९, हसन हुसैन, पेज २३३, अबु याला)

आयतल कुर्सी की बरकत:

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जो आयतल कुर्सी को हर फर्ज नमाज के बाद पढ़ेगा तो मौत के फौरन बाद वह स्वर्ग में दाखिल होगा।"

(नसाई)

आयतल कुर्सी का दूसरा फायदा यह है कि उससे खुशहाली में बहुत बढ़ोतरी होती है। (नफा खलायक, पेज नंबर ३१४)

सूरह फातिहा की बरकत:

- हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि एक दिन हज़रत जिब्रईल (अ. स.) हज़रत मुहम्मद (स.) के पास बैठे हुए थे कि उन्होंने (यानी हज़रत जिब्रईल (अ.स.) ने) ऊपर की तरफ दरवाजा खुलने की आवाज़ सुनी। चुनांचे उन्होने अपना सिर ऊपर उठाया और कहा "यह आसमान का दरवाज़ा आज ही खोला गया है, आज के अलावा कभी नहीं खोला गया।" फिर उस दरवाज़े से एक फरिश्ता उतरा। हज़रत जिब्रईल (अ. स.) ने कहा, "यह फरिश्ता आज ही ज़मीन पर उतरा है, आज से पहले कभी नहीं उतरा है।" फिर उस फरिश्ते ने (हज़रत मुहम्मद (स.) को) सलाम किया और कहा: "खुश हों आप दो नूरों से, जो आप ही को दिए गए, आप से पहले और किसी नबी को नहीं दिए गए। वह दो नूर सूरह फातेहा और सूरह बकरा का आखरी हिस्सा है। आप उनमें से जो हुरूफ यानी कलमा पढ़ेंगे, वह आपको जरूर दिया जाएगा (यानी अज्र और सवाब मिलेगा या दुआ़ कुबूल की जाएगी।)"

(मुस्लिम, मुन्तखब अबवाब जिल्द १, हदीस २७७)

- किताब "आसान रिज़्क" में बयान किया गया है कि जो कोई सूरह फातेहा सुबह सूरज निकलने से पहले ४१ बार तिलावत करेगा उसे कम से कम मेहनत से दौलत हासिल होगी।

- हज़रत अब्दुल मलिक बिन उमैर (रज़ि.) रिवायत करते है कि रसूल अल्लाह (स.) ने फरमाया, "सुरह फातेहा हर बीमारी के लिए शिफा है।"

(दर्मी, बेहकी, मुन्तखब अबवाब जिल्द १, हदीस ३२१)

इसलिए हमें इस सूरह की हर रोज तिलावत करने की आदत बनानी चाहिए।

- मौलाना अब्दुल गनी फूलपूरी के मुताबिक, हज़रत हाजी इम्दाद उल्लाह (र.अ.) ने फरमाया, "जो बंदा नीचे लिखी गई आयत की सत्तर बार तिलावत करेगा कभी माली मुश्किल में गिरफ्तार नहीं होगा।"

(मआरिफूल कुरआ़न, सूरह शूरा का तर्जुमा)

اَللّٰهُ لَطِيْفٌۢ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ۝

"खुदा अपने बंदो पर मेहरबान है वह जिसको चाहता है रिज़्क देता है। और वह जोर वाला और जबरदस्त है।" (सूरह शूरा आयत १९)

उम्मते मुस्लिमा के लिए दुआ की बरकत:

- हज़रत अबू दरदा (रज़ि.) फरमाते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया, "जो मुसलमान बंदा अपने मुसलमान भाई के लिए गायबाना (उसकी अनुपस्थिती में) दुआ करता है, वह कुबूल की जाती है। और दुआ करनेवाले के सिर के करीब एक फरिश्ता निर्धारित कर दिया जाता है। जब वह अपने मुसलमान भाई के लिए भलाई की दुआ करता है तो वह निर्धारित फरिश्ता कहता है कि ऐ अल्लाह! इसकी दुआ कुबूल कर और यह भी कहता है कि तेरे लिए भी ऐसा हो।"

(मुस्लिम, मुन्तखब अबवाब जिल्द १, हदीस ३७६)

अगर हम खुदा से यह दुआ करें, "ऐ खुदा! दुनिया के तमाम नेक बंदो को खुशहाल बना दे, दौलतमंद बना दे तो फरिश्ते हमारे लिए दुआ करेंगे। और कहेंगे ऐ खुदा इस बंदे को भी खुशहाल और दौलतमंद बना दे।" अगर हज़ारों फरिश्ते हमारे लिए यह दुआ करेंगे तो यकीनन खुदा उस दुआ को कुबूल फरमाऐगा (और हमें खुशहाल बनाएगा) इसलिए हमें हर दुआ में हज़रत मुहम्मद (स.) की पूरी उम्मत के लिए अमन और खुशहाली की दुआ करनी चाहिए।

सलातुल हाजात की बरकत:

- अल्लाह तआला कुरआन करीम की सूरह बक़रा में आयत नंबर १५३ में फरमाता है: "मुसीबत के वक़्त ऐ इमानवालों! सब्र और नमाज़ के जरिए मदद चाहो।" इसलिए अगर हम दो रकात नमाज पढ़कर दुआ मांगें कि खुदा हमारी मदद फरमाऐ और हमारी खुशहाली में बढोतरी करे तो यह दुआ ज़्यादा असरदार होगी। और उसका बढ़िया परिणाम सामने आएगा।

- कुरआन करीम की 'सूरह फुरक़ान' में अल्लाह तआला फरमाता है: मुत्तकी (नेक) बंदो के बहोत से गुण हैं और वह खुदा का फ़ज़्ल इन शब्दो में मांगते हैं।

رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا ۝

"ऐ परवरदिगार! हमारी बीवियों की तरफ से दिल का चैन और औलाद की तरफ से आंख की ठंडक अता फरमा, और हमें परहेजगारों का इमाम बना।" (सूरह फुरकान आयत ७४)

इस आयत को दुआ की तरह बार-बार पढ़ने से खानदानी जिंदगी बेहद खुश्गवार हो जाती है, इसलिए हर दुआ में इसकी तिलावत करने की आदत ड़ालें।

सदका (दान) की बरकत:

हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया कि, "मुझे खुश करने के लिए समाज के निचले दर्जे के (गरीब) लोगों की सेवा करो, क्योंकि खुदा उनके कारण तुम्हें खुशहाली देता है।"

(मसनद अहमद ५/१६८, अबू दाऊद २५६१, तीरमिज़ी ७/१८३)

इसलिए अपनी खुशहाली बढ़ाने और हज़रत मुहम्मद (स.) को खुश करने के लिए हर महीना गरीबों को कुछ रकम का सदका (दान) ज़रूर करें।

पाकीजगी की बरकत:

हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया: "हमेशा पाक रहो (बा वजू रहो) उससे खुशहाली में बढ़ोतरी होती है।" (नफा ए खलायक, पेज ३३१)

क्योंकि अल्लाह तआला कुरआन करीम में फरमाता है "इसमें ऐसे लोग है जो पाक रहने को पसंद करते हैं और खुदा पाक रहने वालों को ही पसंद करता है।" (सूरह तौबा आयत १०८) अल्लाह तआला जिसको पसंद करता है उसे दुनिया और आखिरत दोनों जगह खुशहाल रखता है।

इस्तगफार (गुनाहों से माफी मांगने) का महत्व:

हज़रत नूह (अ.स.) ने अपनी कौम से कहा, "ऐ मेरी कौम! अपने रब से अपने गुनाह की माफी मांगो वह यकीनन माफ करने वाला है। वह तुम पर आसमान को खुब बरसता हुआ छोड़ेगा, और तुम्हें खुब पै दर पै माल और औलाद में तरक्की देगा। और तुम्हे बागात देगा, और तुम्हारे लिए नहरें निकाल देगा।" (सूरह नूह आयत १० से १२)

यानी गुनहगार अल्लाह तआला से माफी मांगे और अपने गुनाहों से खुलूस दिल से तौबा करें तो जब अल्लाह तआला तौबा कबूल करते हैं तो ना सिर्फ गुनाह माफ करते हैं बल्कि अपनी निअ्मत और रहमत (कृपा) की बारिश भी कर देते हैं।

हमारी आज की जिदंगी इस तरह है कि रोज सैकड़ों गुनाह करते हैं, मगर हमें पता भी नहीं चलता कि हम गुनाह कर रहे हैं। और हम उसे रोज मर्राह की जिंदगी का हिस्सा समझकर करते हैं, जैसे गैर महरम को देखना, गाना और संगीत सुनना, दूसरों की बुराई करना, झूठ बोलना वगैरा वगैरा। मगर यह सारी बातें तो हमारे नाम-ए-आमाल (कर्म-सुची) मे गुनाह ही लिखी जाएंगी। इसलिए अपने नाम-ए-आमाल को कोरा रखने और अल्लाह तआला की नेअ्मत और रहमत समेटने के लिए हमें रोज़ाना अल्लाह तआला से अपने गुनाहों की माफी मांगते रहना चाहिए।

इसलिए कम से कम दिन में १०० बार इस्तगफार पढ़ें।

- हज़रत अबू हूरैरा (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया "जिसे अल्लाह तआला नेअ्मत से नवाज़े वह

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ 'अलहमदुलिल्लाह' बार बार पढ़ा करे।

और जिसे दुख और गम ज्यादा सताये वह 'इस्तगफार' पढ़ा करें

और जिसे रिज़्क में तंगी हो वह

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ الْعَظِيمِ

'लाहौला वला कुव्वता इल्ला बिल्ला' खूब बार बार पढ़ा करें।"

(अद्दुआ, जिल्द ३, पेज १६०६, ज़ादे मोमिन, पेज३६४)

- हज़रत अब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया "जो इस्तगफार को लाज़िम पकड़ेगा (बहुत अधिकता से इस्तगफार पढ़ा करेगा) खुदा पाक हर तंगी और परेशानी से निजात देगा और हर रंज और गम से छुटकारा देगा। और ऐसी जगह से रिज़्क देगा जहाँ उसे गुमान भी न होगा।"

(अबु दाऊद, तरगीब जिल्द २, पेज ४६८, ज़ादे मोमिन, पेज ३६४)

सलाम की बरकत:

- हज़रत सोहेल बिन हाद (रज़ि.) के मुताबिक हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया "अपने घर में दाखिल होते हुए सलाम करो। चाहे वह घर खाली ही क्यों ना हो, उसके बाद कहो,

  صَلٰوةً وَّسَلَاماً عَلٰى رَسُوْلُ اللّٰهِ ، صَلَّى اللّٰهُ عَلَيهِ وَسَلَّمْ

  "सलातुं व सलामन अला रसूल अल्लाह, सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम" फिर सूरह इख्लास की तिलावत करें (सूरह नंबर ११२) जिससे तुम्हारी खुशहाली में इजाफा होगा।

  (अलक़ौलूल बदी, पेज १२४, हवाला ज़ादे मोमिन अज मौलाना मुनीर)

ऊपर लिखी गई इबादत कब और किस तरह करें? :

रूहानी (आध्यात्मिक) और माद्दी (भौतिक) खुशहाली के लिए निम्नलिखित कर्म जरूरी हैं।

१. सुबह सवेरे उठें।

मस्जिद में इबादत:

२. फज्र की सुन्नत घर पर अदा करें और फर्ज नमाज़ जमात के साथ मस्जिद में अदा करें। और सूरज निकलने तक मस्जिद में बैठें, यह हज़रत मुहम्मद (स.) की सुन्नत है। आप (स.) सूरज निकलने तक हमेशा मस्जिद में ठहरते थे।

मस्जिद में रहते हुए निचे लिखी हुई आयात की तिलावत करें।

३. आयतल कुर्सी की तिलावत (खालेदून तक) एक बार करें। इसे हर फर्ज नमाज़ के बाद दोहराएं।

४. सूरह कद्र की दस बार तिलावत करें। (इसे हर फर्ज नमाज़ के बाद दोहराएं)

५. ५१ बार दरूद शरीफ पढ़ें। इबादत की आध्यात्मिक ताकत में बढ़ोतरी के लिए दरूद शरीफ की तिलावत तस्बिहात पढ़ने से पहले और बाद में भी करें। दरूद शरीफ पढ़ने की मात्रा निश्चित नहीं है। आप अपनी सुविधा अनुसार कम या ज़्यादा कर सकते हैं। दरूद शरीफ शुरू और आखीर में पढ़ने की एक वजह यह भी है कि अल्लाह तआला दरूद शरीफ को ज़रूर कबूल फरमाता है। क्योंकी यह हज़रत मुहम्मद (स.) के लिए एक दुआ है। और यह उसकी शान के खिलाफ है कि शुरू और आखिर इबादत (दरूद शरीफ के पढ़ने) को तो कुबूल कर लें और बीच वाला छोड़ दें। इसलिए दरूद के साथ सारी इबादत कुबूल हो जाती है।

६. सूरह फातेहा की ४१ बार तिलावत करें। (अगर १०० बार करें तो और अच्छा है)।

७. १०० बार पढ़ें, لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَظِيْم

"लाहौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम।"

८. १०० बार पढ़ें, سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ بِحَمْدِهٖ ، سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْم

"सुबहानल्लाही व बिहमदही, सुबहानल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम।।"

९. ५१ बार दरूद शरीफ पढ़े जैसा पहले बयान किया गया है।

१०. "इस्तगफार" पढ़ें (यानी हम खुदा से अपने गुनाहों की माफी के लिए इल्तेजा/याचना करें।)। तौबा के शब्द अपनी सुविधा अनुसार तय करें। आप अरबी के बदले जब अपनी मातृ भाषा में खुदा से माफी मांगेंगे तो दिलसे बात निकलेगी जो प्रभावकारी होगी। वरना तो लोग Automatic mode में तस्बिह पढ़ते हैं। इस्तगफार भी आप अपनी ताकत के अनुसार जितनी बार चाहें दोहराएं। (हज़रत मुहम्मद (स.) रोजाना ७० बार दोहराते थे।)

११. सूरज निकलने के बाद इश्राक की नमाज़ अदा करें और अपने घर जाऐं। अगर तमाम आयात की तिलावत में बहोत ज्यादा समय खर्च होता है तो आप इस्तगफार की तिलावत मस्जिद जाते हुए या घर लौटते हुए करें। (ताकी समय की बचत हो)।

१२. वक़्त नष्ट किए बगैर नाश्ता करें। अखबारों की सिर्फ महत्वपूर्ण खबरों को पढ़ें। गैर जरूरी खबरें ना पढ़ें (मिसाल के तौर पर बलात्कार/अवैध लैंगिक संबंध, ड़कैती, राजनीतिक ड्रामा वगैरा) और अपने कारोबार की जगह चले जाएं।

१३. अपने कारोबार के मुकाम पर पहोंचने के बाद थोड़ी देर तक कुरआन करीम पढ़ें (अपनी सुविधा अनुसार)। और जो आयात तिलावत की है उनका सवाब रसूल अल्लाह (स.) को पहुँचाएं और तमाम उम्मते मुहम्मदी (स.) को पहुँचाएं।

अपना कारोबार ध्यानपूर्वक करें:

१४. एक ड़ायरी रखें और उसमें तमाम छोटे बड़े कामों को लिख लें।

१५. अत्यंत महत्वपूर्ण काम सबसे पहले करें।

अपने व्यापारिक कामों में हर किसी के लिए दरवाजा खुला ना रखें। सिर्फ कारोबार से संबंधित व्यक्ति से ही मुलाकात करें। कारोबार से असंबंधित लोग आपका समय नष्ट करेंगे। अपना काम कर्मचारियों में विभाजित करें। गैर महत्वपूर्ण काम न करें, यह काम कर्मचारियों से लें। वह महत्वपूर्ण काम करें जो आप कर सकते हैं। फुरसत के समय अपने कारोबार के भविष्य और Long Term योजनाओं पर सोचें।

समाजी जिंदगी किस तरह गुज़ारें:

- अपने इलाके की मस्जिदों, मदरसों और यतीम खानों की फेहरिस्त (सूची) बनाएं और हर जगह पाबंदी से हर महीने आर्थिक मदद करें।
- अपने दोस्तों का एक ग्रुप बनाएं, अपनी सोसायटी की विधवाओं और गरीब परिवारों की सूची बनाऐं। अपनी और दोस्तों की तरफ से हर महीना रूपया जमा करें और सूची में दर्ज तमाम गरीब घरों में राशन, दवाऐं, कपड़े, स्कूल फीस वगैरा बांट दिया करें।
- तमाम नमाजे वक़्त पर पाबंदी से अदा करें।
- अपने दोस्तों से अपनी व्यापार और अपनी आर्थिक जानकारियों पर बातचीत ना करें। क्योंकी बातचीत में कुछ बातों का ध्यान रखना जरूरी होता है। मिसाल के तौर पर आप भविष्य में कुछ महत्वपूर्ण काम शुरू करना चाहते हैं तो बात करने से पहले आप जरूर 'इन्शा अल्लाह' कहें। अगर आप को ज्यादा नफा (लाभ) मिले तो जरूर कहना चाहिए 'अलहमदुलिल्लाह'। अगर आपकी मशीनें और कारीगर अच्छे हैं तो

आप जरूर कहें 'माशाअल्लाह'। लैकिन आमतौर पर बातचीत के दौरान हम उन तस्बिह के शब्द भूल जाते हैं जिसके नतीजे में बहोत ज़्यादा नुकसान उठाते हैं। हम किसी महत्वपूर्ण काम को वक़्त पर और अच्छी तरह नहीं पूरा कर सकेंगे, अगर हमने उस काम का जिक्र करते हुए 'इन्शा अल्लाह' नहीं कहा होगा। अगर ज्यादा नफा पर 'अलहमदुल्लीलाह' न कहा गया तो भविष्य में यह घट जाएगी। अच्छी मशीनों और कारीगरों की कारकिर्दगी बयान करते वक़्त 'माशा अल्लाह' ना कहा गया तो वह भी खराब हो जाऐंगे। इसलिए बेहतरी इसी में है कि अपनी जुबान बंद रखें।

- हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) के मुताबिक हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अल्लाह का जिक्र किए बगैर ज्यादा बातें ना करें क्योंकी ऐसी बात से दिल सख्त हो जाता है। और जो बंदा सख्त दिल होता है वह अल्लाह तआ़ला से दूर हो जाता है।" (तिरमिज़ी)

- हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) कहते हैं कि रसूल अल्लाह (स.) ने फरमायाः "बंदा एक बात अपनी जुबान से निकालता है जो खुदा को खुश करने वाली होती है, बंदा उसको महत्व नहीं देता लैकिन अल्लाह उस बात की वजह से उसके दर्जे (श्रेणी) बुलंद करता है। इसी तरह आदमी खुदा को नाराज़ करने वाली बात बोल जाता है और उसको कोई महत्व नहीं देता, हांलाकि वहीं बात उसे नर्क में ले जा गिराती है।"

(बुखारी, सफिना निजात, हदीस नंबर २८१)

- हज़रत मुआज़ (रज़ि.) के मुताबिक हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "क्या मैं तुम्हें न सिखाऊं की सख्त दिल होने से कैसे काबू पाया जाऐं?" मैंने कहां, "हाँ! ऐ हज़रत मुहम्मद (स.)।" आप (स.) ने अपनी जुबान उंगलियों से पकड़ी और फरमाया, "इस पर काबू रखो।" मैंने अर्ज़ किया, "ऐ हज़रत मुहम्मद (स.)! क्या हम अपने कहे का हिसाब देंगे?" रसूल अल्लाह (स.) ने फरमाया, "तेरी माँ तुझपर रोए (यह एक कहावत है जो दोस्ती में कही जाती है।) क्या जुबान की फस्ल से बड़ी कोई चीज़ है जो बंदो को चेहरे के बल नर्क में गिरा देती है?" (तिरमिज़ी)

  इसका मतलब यह है कि जुबान हमारी दुनिया और आखिरत की बरबादी का बड़ा ज़रिया है इसलिए इसे बहोत सावधानी से इस्तेमाल करें।

  हज़रत मुहम्मद ने कहा, "जो चुप रहा वह मुक्ति पा गया। इसलिए चुप रहने की आदत बनाऐं।"

- आपका घर, आपके कारोबार का मुकाम और मस्जिद यही आपकी दुनिया है। यही वह मुकामात है जहाँ से आपको खुशहाली प्रदान होगी और उसका आनंद मिलेगा।

  इन तीनों मुकाम के अलावा चौथा मुकाम वह है जहाँ खुशहाली गंवांई (खोई) जाती है। वक़्त बरबाद किया जाता है। और गुनाह मोल लिए जाते है (उनमें गीबत का बड़ा हिस्सा है।)। और नर्क का दरवाजा अपने लिए खोला जाता है। उन मुकामात पर ज़ायज वजह के बगैर ना जाऐं।

- जल्द से जल्द हज अदा करें और अगर हज के दौरान मक्का मदीना में आप तमाम नमाजे जमात से अदा करें, मक्का मदीना में बाजार से दूर रहें और दोस्तों से बातों में वक़्त ना गंवाएं और हज के तमाम अरकान सही तौर पर अदा करें तो हज के बाद आपके कारोबार में चौगुना इजाफा होगा। (इन्शा अल्लाह)

- कोशिश करें कि अपने घर से तसवीरें (चित्र), फोटोग्राफ, प्रतिमा/मूर्ति (Statue) और संगीत उपकरण हटा दे। अगर मुम्किन हो तो टाईम टेबल बनाकर टेलीवीज़न (T.V) देखें। शुरू में सुबह और दिन में टेलीवीज़न (T.V) बिल्कुल ना देखे फिर धीरे धीरे शाम और रात में T.V देखना कम करें। फिर उसे बिल्कुल बंद कर दे।

  क्या यह संभव है? हां संभव है! आप T.V स्थायी (Permanent) तौर पर बंद कर सकते हैं। मैंने और हजारों लोगों ने यह किया है।

  मेरे घर में दो टी.वी. थे। एक निवासी कमरे (Hall) में और एक बेडरूम में था। और मैं उसका बड़ा शौकीन था। प्राइमरी स्कुल में मेरे बच्चों का परफोरमॅन्स (Result) बहोत अच्छा रहता था। मगर जैसे जैसे वह बड़े हुए उनकी दिलचस्पी टी.वी में बढ़ने लगी और उनका परफोरमॅन्स तेजी से घट गया। बच्चों का भविष्य संवारने के लिए मैंने घर के लोगों को आमादा किया की टी.वी. देखना बिल्कुल बंद कर दें। अब मेरे यहाँ टी. वी. नहीं है। मैं अखबारों से खबरे पढ़ लेता हुँ। मेरे बच्चे मनोरंजन के लिए कम्प्युटर और इंटरनेट इस्तेमाल करते है। अब हम Channel Surfing के मरीज़ नहीं हैं। और ना मेरा परिवार टी.वी. के स्क्रिन से चिपका रहता है। हमारी जिंदगी टी.वी. के बगैर बहुत आरामदायक और शांत है। आप भी यही करें। आपको पता चलेगा की बगैर टी.वी. के घर में कितना शांत माहौल रहता है और हम अपने परिवार के साथ कितना आनंदमय समय गुज़ारते है। टी.वी. हमारी जिंदगी के २ से ४ घंटे चुरा लेता है। जिसकी वजह से हमारे पास अपने परिवार के लिए भी वक़्त नहीं रहता।

- हज़रत हूरैज बिन अब्दुल्ला (रज़ि.) कहते हैं कि मैंने हज़रत मुहम्मद (स.) से अजनबी औरत पर अचानक निगाह पड़ने के बारे में पुछा, हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अपनी निगाह हटा लो।"

(मुस्लिम, सफीना निजात हदीस नंबर २६६)

- हज़रत मुहम्मद ने फरमाया "ऐ अली (रज़ि.)! परायी औरत पर दोबारा नज़र ना ड़ालो। पहली तो माफ है, दूसरी नज़र ड़ालना तुम्हारे लिए जायज़ नहीं है।" (मुस्लिम, सफीना निजात, हदीस नंबर २७०)

  टी.वी. पर गैर महरम औरतें और मर्द ही होते हैं। इसलिए टी.वी. देखना सही नहीं है।

पंज वक्ता नमाज़ अदा करने के फायदे:

- हाफिज़ इब्ने कईम अपनी किताब "ज़ादुल मआद" में फरमाते हैं, "नमाज दौलत को खींचती है, स्वास्थ की सुरक्षा करती है, बीमारियों को दूर करती है, दिल को गनी (मालदार) और रौशन करती है। चेहरा रौशन करती है, आत्मा को ताकत देती है, शरीर के अंगों को मजबूत बनाती है। काहिली (आलसीपन) दूर करती है। यह आत्मा का आहार है, खुदा की कृपा को यकीनी बनाती है। खुदा के जलाल (क्रोध) से बचाती है, शैतान को भगाती है और खुदाइ इनाम दिलाती है और आम तौर पर दुनिया और आखिरत (परलोक) में नुकसान से बचाती है और कामयाबी यकीनी बनाती है।"

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जिसने अपनी असर की नमाज़ गंवाई उसने अपना घरबार लुटा दिया।" (तिरमिज़ी १/४३)

- अल्लाह तआ़ला कुरआ़न शरीफ में फरमाता है, "तबाही है उन नमाज़ पढ़ने वालों के लिए जो नमाज़ की तरफ से गाफिल (लापरवाह) रहते है और जो दिखावा करते है।" (सूरह माऊन आयात ४ से ६)

  अच्छी तरह नमाज़ अदा करने का बड़ा इनाम है और भूलने की बड़ी खराबी है।

- बंदो को स्वर्ग में जाने के बाद भी एक बात का पछतावा होगा। वह यह कि उन्होंने दुनिया में अल्लाह तआ़ला की हम्द व सना (प्रशंसा) वक्त पर नहीं की (यानी वक्त पर नमाज़ अदा नहीं की)।

  (तिबरानी, हसन हुसैन पेज २६)

इश्राक की नमाज़ के फायदे:

- हज़रत मुहम्मद (स.) के मुताबिक अल्लाह तआ़ला ने फरमाया, "ऐ आदम की औलाद! मेरे लिए दिन की शुरूआत में दो रकात इश्राक की नमाज अदा करो और यह तुम्हारे लिए दिन के खात्मे तक काफी होगा।"(अबु दाऊद १/८३)

  (इसका मतलब यह है कि दिन के आरंभ में तुम अल्लाह की हम्द और सना (प्रशंसा) करो (यानी इश्राक की नमाज़ अदा करो)। तो वह तुम्हें दिन की समाप्ति तक नवाजेगा, सुरक्षा करेगा, इनाम देगा, और काम आसान करेगा।)

- हज़रत अनस (रज़ि.) के मुताबिक हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जो बंदा फजर की नमाज़ अदा करके और उसी मस्जिद में इबादत में मश्गूल रहें और सूरज निकलने के बाद इश्राक की नमाज़ अदा करें उसे हजे मबरूर (कबूल किया गया हज) का सवाब मिलता है।"

  (तिरमीज़ी, हसन हुसैन पेज २४)

- हज़रत अबू जर गफ्फारी (रज़ि.) के मुताबिक हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "हर व्यक्ति के शरीर में ३६० जोड़ है इसलिए हर व्यक्ति को दिनभर में ३६० नेकियां करनी चाहिए ताकी ३६० जोड़ नर्क की आग से सुरक्षित रहें। इसके बाद हज़रत मुहम्मद (स.) ने बहोत सी इबादते और कर्म गिनाए जिन्हें नेक कर्म समझा जा सकता है।" और आखिर में आप (स.) ने फरमाया, "और उन नेक कर्मों के बजाय दो रकात इश्राक की नमाज़ काफी है।" (सही मुस्लिम)

- हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) के मुताबिक हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जो बंदा बगैर नागा किए लगातार इश्राक की नमाज़ अदा करें तो उसके तमाम छोटे मोटे गुनाह माफ हो जाऐंगें। चाहे वह समुंदर की सतह की झाग के बराबर ही क्यों न हो।" (तिरमिज़ी, इब्ने माजा)

  इसलिए इश्राक की नमाज़ को अपनी रोजमर्राह जिंदगी का एक नियम बना लें।

- लोगों की मौज मज़ा की जिंदगी शाम से शुरू होती है और आधी रात तक रहती है। और इस तरह की जिंदगी में सब शामिल हैं, छोटे बच्चों से लेकर बुढ़ों तक रात को बारा बजे तक जागने के बाद सुबह फजर के वक़्त उठकर फजर की नमाज़ को बोझ की तरह उतारा जाता है। और फिर बहुत चाह, पसंद और नफ्स के हाथों मजबूर होकर ठाट से दो से तीन घंटा सोकर नींद पूरी की जाती है। और इसी कमजोरी की वजह से इश्राक की नमाज पढ़ना बहुत मुश्किल काम है। और उसका पढ़ना मुश्किल ही है इसलिए सिर्फ दो रकात नमाज पर एक हज मब्रूर का सवाब है। हज़रत मुहम्मद (स.) इशा के बाद बातचीत करने को नापसंद फरमाया है। अगर आप को हुज़ूर (स.) से मुहब्बत होगी तो ही आप इशा के बाद सोने और फजर के बाद जागते रहने की कोशिश करेंगे। वरना हज़रत मुहम्मद (स.) से मुहब्बत के सारे दावे तो अधिकतर सिर्फ जुबानी जमा खर्च ही होते है। और इंसान अपनी मनमानी जिंदगी ही गुज़ारता है।

- हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्ला (रज़ि.) कहते हैं कि " हज़रत मुहम्मद (स) ने हमें हिदायत फरमायी कि जब माल तोलें या नापें तो असल वजन या नाप से थोडासा ज्यादा दें।" (इब्ने माजाः २३००)

  (यह एक आम और बुनियादी कानून है, इसका मतलब यह है कि अपना माल बेचते वक़्त या अपनी सेवाएं पेश करते हुए अपने माल या सेवाओं की सही और स्पष्ट कीमत बतानी चाहिए। लैकीन कीमत वसूल करने के बाद या उजरत मिलने के बाद अपनी बताई हुई (वादा की हुई) मिकदार और खुसूसियत के मुताबिक नहीं बल्कि अपने वादे से कुछ ज्यादा माल या सेवाएं देनी चाहिए।)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "बंदा अपने ईमान और नेकी से संबधित जो जीवन शैली अख्तियार करेगा, वह उसी हालत और हैसियत में दुनिया से उठाया जाएगा।" (मुस्लिम)

  व्याख्याः इसका मतलब यह है कि अगर कोई बंदा एक मॉर्डन और गैर इस्लामी जिंदगी बसर करते हुए यह सोचता है कि वह बुढ़ापे में खालिस मज़हबी जिंदगी अपना लेगा तो उसकी यह सोच गलत है। क्योंकी बुढ़ापे में अपनी इच्छा शक्ति से, अपनी मौत से पहले कोई सच्चा मुसलमान नहीं बन सकता। वह बंदा उसी हालत में मरेगा जिस पर उसने जान बूझकर जिंदगी गुजारी है।

  इसलिए आइये हम सच्चा पक्का मुसलमान बनें और इस्लाम में पूरी तरह दाखिल होने की कोशिश करें।

▼▼▼▼▼▼▼

खुशहाली का आसान नुस्खा

हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमायाः "जो हमेशा पाक रहते हैं (यानी जो बा-वज़ू रहते हैं।) उनकी दौलत में इज़ाफा होगा।"

(नफा खलायक, पेज ३३१)

३७. सदके (दान) का महत्त्व

दान करना क्यों जरुरी है:

- ईमान धर्म की बुनियाद है, ईमान का यह मतलब है कि खुदा का अस्तित्व, स्वर्ग, नर्क, फरिश्तों और कयामत को बगैर देखे माना जाए, या उनके होने का यकीन किया जाए।

  अगर खुदा, स्वर्ग और नर्क नज़र आने लगें तो खुदा पर ईमान लाने का कोई फायदा नहीं होगा। ऐसा दो मौकों पर हो सकता है। पहला मरते वक़्त दूसरा अगर कयामत आ जाए तो। और ऐसे दोनों मौकों पर खुदा पर ईमान लाने का कोई फायदा ना होगा। इसलिए ऐसे चमत्कार और घटनाएं भी नहीं होंगे जिनसे खुदा का अस्तित्व, स्वर्ग और नर्क साबित हों।

- फर्ज कीजिए एक बच्चे के मॉ-बाप दोनों किसी घटना में मारे गए और खुदा उस अनाथ को रोज़ी देना चाहता है (क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने सारे प्राणियों को रोज़ी देने की जिम्मेदारी खुद ली है।) (सूरे हूद, आयत६) तो वह यह काम किस तरह करेगा? फरिश्ते उसके लिए दूध की बोतल लेकर आकाश से नहीं उतरेंगे। उसके बजाय अल्लाह तआ़ला उस बच्चे के करीबी रिश्तेदारों और प्रियजनों की आमदनी में बढ़ोतरी फरमाऐगा और उनके द्वारा उस बच्चे की परवरिश का इंतेजाम फरमाएगा।

  इसतरह समाज में अगर एक बूढ़ी औरत विधवा हो जाए और दुनिया में उसका और कोई सहारा भी ना हो तो उस के लिए भी अल्लाह आसमान से खाना नहीं उतारेगा, बल्कि समाज के मालदार लोगों की आमदनी से ही उसका खर्च पूरा होगा। क्योंकि हर मालदार आदमी की आमदनी में गरीबों का हिस्सा होता है और यह हिस्सा खुदा उतारता है। इसलिए कोई मालदार बगैर दान और खैरात किए अपनी सारी कमाई अकेले खा जाता है, तो वह उस अनाथ और विधवा के हिस्से की दौलत भी खा जाता है, जो अल्लाह तआ़ला ने उस मालदार की आमदनी में अनाथ और विधवा के लिए भेजा था। और यह गुनाह का काम है।

- किसी युद्ध में विजय के बाद जब माल बट रहा था उस समय हज़रत सअद बिन अबी वकास (रज़ि.) ने अपने बारे में इस विचार को प्रकट किया कि उन्हें माले गनीमत से उन लोगों के मुकाबले में ज्यादा हिस्सा मिलना चाहिए जो (बहादुरी और ताकत में) उनसे कम हैं। हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "दुश्मन के मुकाबले में तुम्हारी मदद नहीं की जाती और तुम्हें रोज़ी नहीं दी जाती मगर उन लोगों की दुआ़ और बरकत से जो तुम में कमज़ोर हैं।"
  (अहमद, अबू दाऊद, तिरमिज़ी, तर्जुमा हदीस जिल्द २, हदीस २३१)

- हज़रत अबु दर्दा (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "समाज के कमजोर लोगों की खिदमत करके मुझे खुश करो, क्योंकि अल्लाह उन्हीं की बदौलत तुम्हें दौलत देता हैं।"
  (अहमद, अबू दाऊद, तिरमिज़ी, तर्जुमानुल हदीस जिल्द २, हदीस २३१)

- हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) के मुताबिक हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "सदका (दान) देना हर मुस्लिम पर वाजिब (लाज़िम) है।"
  (बुखारी उर्दु ६६५)

- हज़रत मुहम्मद (स.) के देहांत के बाद एक कबीले ने ज़कात देने से इन्कार किया। हज़रत अबु बक्र सिद्दीक (रज़ि.) ने उस कबीले के खिलाफ ऐलाने जंग किया। और उसे शिकस्त दी। और उन्हें मज़बूर किया की २.५ प्रतिशत मुनाफा जकात में अदा करें जिसे खुदा ने गरीबों के लिए उतारा है और उन से जकात वसूल करके उसे गरीबों में बांट दिया।

- हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "खुदा की राह में देने से माल कम नहीं होता और जब कोई बंदा माल देने के लिए हाथ बढ़ाता है तो साइल (मांगने वाले) के हाथ में पहोंचने से पहले खुदा के हाथ में पहुंचता है।"
  (तिबरानी, सफिना निजात, हदीस ३४६)

अगर हम सदका (दान) ना करें तो क्या होगा?

अल्लाह तआ़ला लानत करता है उन लोगों पर जो अपनी कमाई का कुछ हिस्सा गरीबों में बाटते नहीं, ऐसी ही कुछ कुरआ़नी आयातें नीचे लिखी हैः

१. "जो लोग माल में, जो खुदा ने अपने फज्ल से उनको अता फरमाया है कंजूसी करते है। वह उस कंजूसी को अपने हक में अच्छा ना समझें। बल्कि उनके लिए बुरा है। वह जिस माल में कंजूसी करते हैं, कयामत के दिन उसका तौक बनाकर उनकी गर्दनों में ड़ाला जाऐगा। और आसमानों और जमीन का वारिस खुदा ही है। और जो अमल तुम करते हो खुदा को मालूम है।" (सूरह आले इमरान आयत १८०)

२. "और जो लोग सोना और चांदी जमा करते हैं और उसको खुदा के रास्ते में खर्च नहीं करते उनको उस दिन के बड़े अज़ाब (प्रकोप) की खबर सुना दो। जिस दिन वह माल नर्क की आग में खूब गर्म किया जाएगा। फिर उससे उन बखीलों (कंजूसों) की पेशानियां और पहलू और पीठें दागी जाएंगीं। और कहा जाएगा कि यह वही है जो तुमने अपने लिए जमा किया था। सो जो तुम जमा करते थे अब उसका मज़ा चखों।"
  (सूरह तौबा आयत ३४ से ३५)

३. "जो माल जमा करता है और उसको गिन-गिन कर रखता है, और ख्याल करता है कि उसका माल उसकी हमेशा की जिदंगी का मौजिब (कारण) है। हरगिज नही वह जरूर हुत्मा (नर्क की आग) में डाला जाऐगा और तुम क्या समझे हुत्मा क्या है? वह खुदा की भड़काई हुई आग है, जो दिलों पर जा लिपटेगी।" (सूरे हु-म-जा आयत ०२ से ०७)

सदका देने के फायदे:

- खुदा ने जो आमदनी गरीबों के लिए अता फरमायी है और जैसे उस माल को उसे रोकने की सज़ा बहोत सख्त है। उसी तरह सदका, जकात और खैरात देने का इनाम भी बड़ा है।

  अल्लाह तआ़ला ने अपने रहम और करम से हमें दौलत से सम्मानित किया है लैकिन वापस लेते हुए वह यह नहीं फरमाता कि तुम्हें जो दौलत अता की गई है उसे वापस करो। बल्कि यह फरमाता है कि मुझे कर्ज़ दो। तुम जो रूपया गरीबों को दोगे मैं यह समझूंगा कि तुमने मुझे कर्ज़ दिया

और मैं उसे कई गुना बढ़ाकर तुम्हें लौटा दूंगा और उसके साथ तुम्हें स्वर्ग में भी जगह दूंगा।

कुरआ़न करीम की वह आयात जिनमें सदके की फज़ीलत (बड़ाई) का बयान है वह नीचे लिखी हैं:

१. "और जो तुम जकात देते हो और उससे खुदा की रजामंदी तलब करते हो तो वह बरकत वाला है। और ऐसे ही लोग अपने माल को अल्लाह तआ़ला के पास बढ़ाते रहेंगे।" (सूरह रोम आयत ३९)

२. "कोई है जो खुदा को कर्ज़ दे कि वह उसके बदले उसको कई हिस्से ज्यादा देगा। और खुदा ही रोजी को तंग करता है। और वही उसे कुशादा (व्यापक) करता है और तुम उसी की तरफ लौटकर जाओगे।"
(सूरह बकरा आयत २४५)

३. "जो लोग खैरात करने वाले हैं, मर्द भी और औरतें भी। और खुदा को नेक नियत और खुलूस से कर्ज़ देते हैं उनको दो चंद (बढ़ा चढ़ा कर) अदा किया जाएगा और उनके लिए इज्ज़त का सिला (बदला) है।"
(सूरह हदीद आयत १८)

४. "अगर तुम खुदा को (इख्लास और नेक नियत से) कर्ज़ दोगे तो वह तुमको उसका दो चंद (बढ़ा चढ़ा कर) देगा और तुम्हारे गुनाह भी माफ कर देगा।"(सुरह तग़ाबुन आयत १७)

५. "तो जिसने खुदा के रास्ते में माल दिया और परहेजगारी की और नेक बात को सच जाना उसको हम आसान तरीके की तौफीक देंगे।"
(सूरह लैल आयत ५ से ७)

इसलिए अगर हम दौलतमंद बनना चाहते हैं तो अल्लाह तआ़ला और उसके गरीब बंदो के दरम्यान एक वास्ता बनें। यानी अल्लाह तआ़ला से माल लेकर उसके गरीब बंदो में दें। जैसे जैसे हमारे सदके और खैरात में इजाफा होगा। अल्लाह तआ़ला की रहमत माल और दौलत के रूप में हमपर उतरेगी। इन्शा अल्लाह!

व्यापार में आर्थिक सफलता को यकीनी कैसे बनाए?

जो कुछ मैंने ऊपर लिखा है वह सिर्फ नज़रयाती/वैचारिक नहीं है। बल्कि मैंने उसपर जाती तर्जुबा किया है और इस बात को सच पाया है कि सदका (दान) आमदनी बढ़ाता है। मेरा अमली तर्जुबा निम्नलिखित है:

- मैं हायड्रॉलिक प्रेस बनाता हूँ। उस प्रेस को बनाने के लिए मेरे पास २५ से ज्यादा मशीनें हैं। जिनमें ६ लेथ मशीनें हैं। मेरे वर्कशॉप में इतनी मशीनों के बावजूद चूंकी हुनरमंद ऑपरेटरों की कमी है, इसलिए मुझे ६० से ८० प्रतिशत हायड्रॉलिक प्रेस के सारे पुर्जे बनाने का काम बाहर के सबकॉन्ट्रक्टरों को देना पड़ता है। और मैं उन्हें हर महीने एक लाख रूपये से ज्यादा का बिल अदा करता हुँ। उससे ना सिर्फ मेरा नफा कम हुआ बल्कि मशीनें बनाने में देर भी होती है। एक मर्तबा मैंने अल्लाह तआ़ला से वादा किया की अगर मुझे अच्छे कारीगर मिले और प्रेस बनाने के लिए सारे पुर्जे बनाने का काम बाहर देने के बदले मैं ही अपनी लेथ मशीनें इस्तेमाल करूं, तो उस काम में जितना भंगार निकलेगा मैं उसे अल्लाह की राह में सदका (दान) करूंगा।

  इस वादे के बाद एक के बाद एक अच्छे ऑपरेटर मुझे मिलने लगे। अब मैं अपना ज्यादा तर काम अपने कारखाने में करता हूँ। मैं हर माह १५ से २० हजार रूपयों का भंगार बेचता हूँ और दीगर खर्चे अदा करने के बाद नए ऑपरेटरों को तनख्वा देकर भी हर माह ३० से ४० हजार रूपए बचा लेता हुँ। और जिस तरह मैंने अल्लाह से वादा किया, मैं हर माह १५ से २० हजार रूपया अल्लाह की राह में सदका करता हुँ। लैकिन सिर्फ मैं यह बात जानता हुँ की हर माह १५ हजार रूपए सदका नहीं कर रहा हुँ बल्कि ३० से ४० हजार हर माह बचा रहा हुँ। और इसके साथ अच्छी किस्म की मशीनें बना रहा हुँ और उनकी डिलीवरी वक़्त पर कर रहा हुँ।

  भंगार के रूपयों से मैं मुंबई में एक लड़कियों की अरबी क्लास चलाता हुँ जिस में ७० छात्राएं पढ़ रही हैं। और लड़कियों की सिलाई क्लास चलाता हुँ जिस में ४० छात्राएं सिलाई सीख रहीं हैं जहाँ उनसे कोई फीस नहीं ली जाती। और अपने वतन बलरामपुर में एक मदरसा चलाता हुँ जिसमें लगभग ५० बच्चे पढ़ते हैं।

- आप जो कारोबार कर रहें है अगर उसमें से कुछ भंगार जमा होता है तो उसे अपने नफा में ना मिलाएं बल्कि अल्लाह की राह में सदका करें। मुझे यकीन हैं कि जितना आप सदका करेंगे उससे कई गुना ज्यादा कमाएगे।

- अगर आप कारोबार के बजाए मुलाजिमत (नोकरी) करते हैं तब भी फीसबील अल्लाह सदका को अपने परिवार का एक अतिरिक्त सदस्य समझें और उसी हिसाब से खर्च करें। मिसाल के तौर पर अगर आपके परिवार में १० सदस्य हैं और अगर आप हर सदस्य पर ५०० रूपए हर महीना खर्च करते हैं तो आप आइंदा अपने परिवार के ११ सदस्य गिनें। ११ वा सदस्य 'फी-सबीलिल्लाह' (अल्लाह की राह में) है। आपको पता चलेगा की 'फी-सबीलिल्लाह' (अल्लाह की राह में) खर्च करने से आप पर कोई माली बोझ नहीं पड़ेगा बल्कि आप के गैर ज़रूरी खर्चे कम हो जाएंगे और आप 'फी-सबीलिल्लाह' (अल्लाह की राह में) जो कुछ सदका (दान) करेंगे उससे दुगनी कमाई आपको मिलने लगेगी। (इन्शा अल्लाह)

अपनी मुक्ति और गुनाहों से माफी के लिए सदका (दान) दिजिए:

सदका (दान) को गरीबों पर खर्च करने के महत्व का अंदाजा आप निम्नलिखित उदाहरण से लगा सकते हैं:

- हज़रत अबु बक्र सिद्दीक (रज़ि.) इस्लाम कुबूल करने से पहले मक्का के एक मालदार व्यापारी थे। इस्लाम कुबूल करने के बाद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक (रज़ि.) ने अपना माल गुलामों को आजाद कराने में खर्च कर दिया क्योंकी मुशरिकीने मक्का जो उनके मालिक थे उन पर बहुत अत्याचार करते थे। हिजरते मदीना के बाद आपके पास कारोबार के लिए ज्यादा वक़्त नहीं था। इसलिए आप की माली हालत मक्का की तरह ज्यादा मज़बूत नहीं थी। लैकिन कमज़ोर माली हालत के बावजूद आप हज़रत मुस्तह (रज़ि.) (एक गरीब सहाबी) की तमाम माली आवश्यक्ताएं पूरी करते थे।

  जब मुनाफिक अब्दुल्ला बिन उबी सलूल ने हज़रत आएशा (रज़ि.) पर आरोप लगाया तो हज़रत मुस्तह (रज़ि.) ने उस बात पर यकीन कर लिया और उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा (रज़ि.) के खिलाफ हज़रत

मुस्तह (रज़ि.) ने भी बातें कीं। अल्लाह तआ़ला ने कुरआ़न करीम में आयत नाजिल फरमाकर हज़रत आएशा (रज़ि.) को निर्दोष करार दिया।

इस घटना के बाद हज़रत अबु बक्र सिद्दीक (रज़ि.) हज़रत मुस्तह (रज़ि.) के रवय्ये से निराश हुए। क्योंकि उनकी तमाम तर आमदनी हज़रत अबु बक्र सिद्दीक (रज़ि.) के सदके (दान) पर थी। उसके बावजूद उन्होंने हज़रत आएशा (रज़ि.) की बदनामी में हिस्सा लिया। इसलिए हज़रत अबु बक्र सिद्दीक (रज़ि.) ने फैसला किया की हज़रत मुस्तह (रज़ि.) की भविष्य में कोई माली मदद नहीं करेंगे।

हज़रत अबु बक्र सिद्दीक (रज़ि.) के इस फैसले पर अल्लाह तआ़ला ने कुरआ़न करीम में निम्नलिखित आयत नाजिल फरमायीः

"और जो लोग तुम में साहिबे फजल (मालदार) और साहिबे वुसअत हैं, वह इस बात की कसम ना खाएं कि रिश्तेदारों और मोहताजों और वतन छोड़ जाने वालों को कुछ खर्च नहीं देंगे। उनको चाहिए कि माफ कर दें। और नज़रअंदाज़ करें। क्या तुम पसंद नहीं करते की खुदा तुमको बख्श दें? और खुदा तो बख्शने वाला मेहरबान है।" (सूरह नूर आयत २२)

इस आयत के अवतरण के बाद हज़रत अबु ब्रक्र सिद्दीक (रज़ि.) ने दोबारा हज़रत मुस्तह (रज़ि.) को रूपया देना शुरू कर दिया और वादा कर लिया की अपना दान कभी बंद नहीं करेंगे।

इस घटना से आप समझ सकते हैं कि गरीबों को सदका देने कि खुदा के नज़दीक कितना महत्त्व है।

आपको किसने दौलतमंद बनाया है?

हज़रत अबु हुरैरा (रज़ि.) के मुताबिक हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "बनी इसराईल में एक अंधा, एक कोढ़ी और एक गंजा था। अल्लाह तआ़ला ने फैसला किया कि तीनों की आजमाईश(परिक्षा) की जाए। अल्लाह तआ़ला ने एक फरिश्ता इन्सान के रूप में भेजा। फरीश्ते ने कोढ़ी से पुछा, "तुम्हारी क्या इच्छा है?" उसने कहा, "मेरी बीमारी का इलाज होना चाहिए क्योंकि उसकी वजह से लोग मुझसे नफरत करते हैं।" फरिश्ते ने उसके शरीर पर अपना हाथ फेरा और वह अच्छा हो गया। फिर फरिश्ते ने उससे पूछा, "तुम्हें किस प्रकार की दौलत चाहिए?" कोढ़ी ने जवाब दिया, "ऊंट!" तो फरिश्ते ने उसे एक गर्भवती ऊंटनी दी और कहा, "अल्लाह तआ़ला तुम्हें दौलत की निअ़मत से सम्मानित करे।"

इसी तरह फरिश्ता अंधे और गंजे के पास गया, उनका इलाज किया और उन्हें गर्भवती बकरी और गर्भवती गाय दी। अल्लाह तआ़ला ने उन्हें इतनी बरकत दी कि हर एक के पास जानवरों के बड़े रेवड (झुंड) जमा हो गए। आजमायिश (परिक्षा) के कुछ समय के बाद फरिश्ता एक गुमशुदा मुसाफिर बनकर उनके पास आया और कहा, "मैं एक मुसाफिर हुँ मेरा तमाम सामान खो गया है और मैं खुदा से दुआ़ करता हुँ कि वतन तक पहुँचने में मेरी मदद करें।" उसने कोढ़ी से कहा कि वह उसे एक ऊंट दे अल्लाह के नाम पर ताकि मैं अपने वतन पहुँच जाऊं। कोढ़ी ने उसकी मदद करने से इन्कार किया। फिर फरिश्ते ने कहा, "शायद मैं तुम्हे जानता हुँ तुम एक कोढ़ी थे। अल्लाह ने तुम्हारा इलाज किया, तुम गरीब थे अल्लाह ने तुम्हें दौलत दी।" कोढ़ी ने जवाब दिया "नहीं, यह दौलत खानदानी है और कई पीढ़ियों की विरासत है।"

फरिश्ते ने कहा, "अगर तुम झूठे हो तो खुदा तुम्हें तुम्हारी पहली हालत पर लौटा दे, यह कहकर वह वापस चला गया।" (और ऐसा ही हुआ यानी वह दोबारा कोढ़ी और गरीब हो गया।)

गंजे के साथ भी यही हुआ। उसने भी इन्कार किया और फरिश्ते ने उसे बददुआ दी। आखिर में वह अंधे के पास गया। अंधे ने कुबूल किया कि वह पहले अंधा था, अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा किया और फरिश्ते से कहा की जितनी बकरियां चाहे ले जाए। फरिश्ते ने कहा, "तुम अपनी दौलत अपने पास रखो, यह तुम तीनों की सिर्फ परिक्षा थी और अल्लाह तुम्हारे रवय्ये से खुश है और दोनों से नाराज़ है।"

(बुखारी उर्दू, पेज नंबर २७२)

- दुनिया में हजारों लोग हैं जो आपसे ज्यादा हुनरमंद है लैकिन वह आपकी तरह खुशहाल नहीं। यह सिर्फ अल्लाह की कृपा है जिसकी वजह से आप इतने दौलतमंद हैं। इसलिए अल्लाह का शुक्र अदा करें और अपनी दौलत के मुताबिक सदका (दान) करें। अपनी दौलत पर कभी घमंड ना करे। और कभी अल्लाह की नाशुक्री ना करें।

सदके के मुकाबले में कर्ज़ देना ज्यादा बरकत वाला है।

हज़रत अबु इमामा (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "एक आदमी स्वर्ग में दाखिल हुआ तो उसने स्वर्ग के दरवाजे पर लिखा देखा कि 'सदका का अज्र और सवाब १० गुना हैं और कर्ज़ देने का १८ गुना'।"

(मुअज्जम कबीर तीबरानी, मुआरिफूल हदीस जिल्द ७ पेज ६०)

इब्ने माजा ने इस हदीस को इस इज़ाफे के साथ रिवायत किया हैः

हज़रत मुहम्मद (स.) ने हज़रत जिब्राइल (अ.स.) से पूछा, "कर्ज में क्या खास बात है कि वह सदका (दान) से बेहतर है?" तो उन्होंने कहा, "वह जिसको सदका दिया जाता है उस हालत में भी सवाल करता है और सदका ले लेता है जबकी उसके पास कुछ होता है। और कर्ज मांगने वाला कर्ज जब ही मांगता है जब वह मोहताज और जरूरतमंद होता है।" (इब्ने माजा, मुआरिफूल हदीस जिल्द ७ पेज ६०)

इसलिए किसी जरूरतमंद को कर्ज़ देना, किसी फकीर को सदका (दान) देने की तुलना में ज्यादा इन्सानियत और सवाब का काम है।

कर्ज़ माफ कर दिया करो, स्वर्ग के हक़दार बन जाओगे

- हज़रत हुजैफा (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने बयान फरमाया, "तुम में से पहली किसी उम्मत में एक आदमी था, जब मौत का फरिश्ता उसकी रूह कब्ज करने आया (और कब्ज करने के बाद वह इस दुनिया से दूसरी दुनिया की तरफ चला गया) तो उससे पूछा गया कि तूने दुनिया में कोई नेक अमल किया था? जो तेरे लिए निजात (मुक्ति) का ज़रिया बन सके। उसने अर्ज किया मेरे ज्ञान में मेरा कोई ऐसा अमल नहीं है। उससे कहा गया कि अपनी जिंदगी पर नज़र डाल और गौर कर। उसने फिर अर्ज किया कि मेरे ज्ञान में मेरा ऐसा कोई अमल और कोई चीज़ नहीं सिवाय इसके कि मैं लोगों के साथ कारोबार और खरीद व फरोख्त का मामला किया करता था तो मेरा रवय्या उनके साथ दरगुजर और एहसान का होता था। मैं पैसे वालों और मालदारों को भी मोहलत दे देता था (की वह बाद में जब चाहे अदा करें) और गरीबों मुफ्लिसों को माफ भी कर देता था। तो अल्लाह तआ़ला ने उस व्यक्ति के लिए स्वर्ग में दाखिल होने का हुक्म

फरमा दिया।

मुस्लिम की एक और हदीस में इस तरह के अतिरिक्त शब्द मिलते हैं:

अल्लाह तआ़ला ने उस व्यक्ति से फरमाया कि, "एहसान और दरगुजर का जो मामला तू मेरे बंदो से करता था कि गरीबों मुफ्लिसों को माफ भी कर देता था। यह दयालू रवय्या मेरे लिए ज्यादा सजावार है और मैं उसका तुझ से ज्यादा हकदार हुँ (कि माफी और दरगुजर का मामला करूं) और अल्लाह ने फरिश्तों को हुक्म दिया की मेरे इस बंदे से दरगुजर करो। (यानी माफ कर दिया गया और बख्श दिया गया।)"

(बुखारी, मुस्लिम, मआरिफूल हदीस जिल्द ७ पेज ८६)

- हज़रत इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जिस आदमी का किसी दूसरे भाई पर कोई हक (कर्जा वगैरा) वाजिबुल अदा हो और वह उस कर्ज़दार को अदा करने के लिए देर तक मोहलत दे दे तो उसको हर दिन के बदले सदका का सवाब मिलेगा।"

(मस्नद अहमद, मआरिफूल हदीस जिल्द ७ पेज ८६)

- हज़रत अबू कतादा (रज़ि.) बयान करते हैं कि मैंने खुद हज़रत मुहम्मद (स.) से सुना, आप (स.) इरशाद फरमाते थे कि "जिस बंदे ने किसी गरीब तंगदस्त को मोहलत दी या (अपना हक, पूरा या कुछ हिस्सा) माफ कर दिया तो अल्लाह तआ़ला कयामत के दिन की तकलीफों और परेशानियों से उस बंदे को मुक्ती अता फरमाएगा।"

(मुस्लिम, मआरिफूल हदीस जिल्द ७ पेज ८८)

कर्ज़ लेने से जहाँ तक हो सके बचिए।

- हज़रत अबु मूसा अशअरी (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया कि, "उन बड़े बड़े गुनाहों के बाद जिन से अल्लाह तआ़ला ने सख्ती से मना फरमाया है (जैसे शिर्क और ज़िना वगैरा) सबसे बड़ा गुनाह यह है कि आदमी इस हाल में मरे कि उसपर कर्ज़ हो और उसकी अदाएगी का सामान छोड़ ना गया हो।"

(मस्नद अहमद, अबु दाऊद, मआरिफूल हदीस जिल्द ७ पेज ६२)

- हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "मोमिन बंदे की आत्मा उसके कर्ज़ के वजह से बीच में रूकी रहती है जब तक वह कर्जा अदा ना कर दिया जाए जो उसपर है।"

(मस्नद अहमद, तिरमिजी, अबु दाऊद, दारमी मआरिफूल, हदीस जिल्द ७ पेज ६२)

- हज़रत अबू कतादा कहते हैं कि एक आदमी ने हज़रत मुहम्मद (स.) से अर्ज किया, "या हज़रत मुहम्मद (स.)! मुझे बताए कि अगर मैं अल्लाह के रास्ते में सब्र और साबित कदमी के साथ और अल्लाह की रज़ा और सवाबे आखिरत तल्बी में जिहाद करूं और मुझे इस हालत में शहीद कर दिया जाए कि मैं पीछे ना हट रहा हुँ बल्कि पेश कदमी कर रहा हुँ तो क्या मेरी उस शहादत और कुर्बानी की वजह से अल्लाह तआ़ला मेरे सारे गुनाह माफ कर देगा?" आप (स.) ने फरमाया, "हां! अल्लाह तुम्हारे सारे गुनाह माफ फरमा देगा।"

  फिर जब वह आदमी आप (स.) से यह जवाब पाकर लौटने लगा तो आप (स.) उसको फिर पुकारा और फरमाया, "हां! तुम्हारे सब गुनाह माफ हो जाऐंगे सिवाय कर्ज़ के।" यह बात अल्लाह के फरिश्ते जिब्राईल अमीन (अ.स) ने बतलाई है। (मुस्लिम, मआरिफूल हदीस जिल्द ७ पेज ६४)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमायाः "जिस व्यक्ति ने लोगों का माल बतौर कर्ज़ लिया और उसे वापस करने की नियत रखता है और किसी वजह से वापस ना कर सका तो अल्लाह उसकी तरफ से अदा कर देगा और जिसने कर्ज़ लिया और नियत उसको वापस करने की नहीं है तो अल्लाह तआ़ला उस बुरी नियत की वज़ह से उसे बरबाद कर के रहेगा।"

(बुखारी, सफिना निजात, हदीस नंबरः १६६, मआरिफूल हदीस जिल्द ७ पेज ६६)

- हज़रत अब्दुल्ला बिन जाफर बिन अबी तालिब (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अल्लाह तआ़ला कर्ज़दार के साथ है जब तक की उसका कर्जा अदा ना हो, बश्रते की कर्ज़ किसी बुरे काम के लिये ना लिया गया हो।" (इब्ने माजा, मआरिफूल हदीस जिल्द ७ पेज १००)

- हज़रत जाबिर (रज़ि.) कहते है कि "मेरा हज़रत मुहम्मद (स.) पर कुछ कर्ज़ था। आप (स.) ने जब वह अदा फरमाया तो मेरी वाजबी रकम से ज्यादा अता फरमाया।" (अबु दाऊद, मआरिफूल हदीस जिल्द ७ पेज १०१)

  कर्जदार का अदाएगी ए कर्ज के वक़्त अपनी तरफ से कुछ ज्यादा रकम (बतौर हदिया या तोहफा) अदा करना जायज, बल्कि मुस्तहब (बहोत अच्छा) और सुन्नत है। (यह उन सुन्नतों में से है जिसको बतलाने और रिवाज देने की जरूरत है)। यह सूद नहीं है क्योंकी सूद तयशुदा होता है और उसका मुतालबा कर्ज देने वाले की तरफ से होता है। जब कि तोहफा, हदिया यह कर्ज लेने वाले की मर्जी और खुशी पर निर्भर होता है कि वह चाहे तो दे और ना चाहे तो ना दे।

- हज़रत अब्दुल्ला बिन रबीया (रज़ि.) कहते हैं कि उन्होंने बयान किया कि एक बार हज़रत मुहम्मद (स.) ने मुझसे ४० हजार कर्ज़ लिया। फिर आप (स.) के पास सरमाया आ गया तो आप (स.) ने मुझे अता फरमा दिया और साथ ही मुझे दुआ़ देते हुए इरशाद फरमाया कि "अल्लाह तआ़ला तुम्हारे अहल व अयाल और माल में बरकत दे।" कर्ज़ का बदला यह है कि अदा किया जाए और कर्ज़ देने वाले की तारीफ और शुक्रिया अदा किया जाए। (नसाई, मआरिफूल हदीस जिल्द ७ पेज १०४)

  इस तरह कुरआ़नी आयात और अहादीस से हमें पता चलता है किः

- सूद लेना, और दूसरों से लिया हुआ कर्ज़ अदा ना करना इस्लाम में हराम है और अल्लाह तआ़ला की नाराजगी का कारण है। सदका देना, कर्ज़ की अदाएगी में मोहलत देना, और कर्ज़ माफ कर देना यह सब नेक आमाल में शामिल है, और अल्लाह का फ़ज़्ल हासिल करने का जरिया है।

- इसलिए हमें जहाँ तक हो सके कर्ज़ लेने से बचने की कोशिश करनी चाहिए और सदका और खैरात करके अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए।

▼▼▼▼▼▼▼

मुसलमान कौन नहीं है?

हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, ''वह मुसलमान नहीं जिसे मुसलमानों की फिक्र न हो।'' (कनजुल आमाल, तरगीब व तरहीब)

३८. अल्लाह तआ़ला पर कब तवक्कल (भरोसा) करना चाहिए?

- हज़रत उमर बिन खत्ताब (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अगर तुम अल्लाह तआ़ला पर सही तवक्कल के साथ भरोसा करो तो वह तुम्हें रिज़्क अता फरमाएगा जिस तरह पक्षियों को अता करता है। वह सुबह खाली पेट जाते हैं और शाम में पेट भरकर वापस आते हैं।" (तिरमिज़ी)

- हज़रत जुबैर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "एक बंदे को उस वक्त तक मौत नहीं आती जब तक वह अल्लाह तआ़ला का निश्चित किया हुआ रिज़्क नहीं खा लेता।"
(अस्सुनन अल कुबरा ५/४३५)

- जैद इब्न साबित (रज़ि.) कहते हैं कि मैंने हज़रत मुहम्मद (स.) को इरशाद फरमाते सुनाः "जो व्यक्ति दुनिया को अपना उद्देश्य बनाएगा, अल्लाह उसके दिल का इत्मिनान व शांती छीन लेगा। और हर वक़्त माल जमा करने की लालच और एहतयाज (ज़रूरत) का शिकार होगा, लैकिन दुनिया का उतना ही हिस्सा उसे मिलेगा जितना अल्लाह ने उसके भाग्य में लिखा होगा। और जिन लोगों का उद्देश्य आखिरत होगा अल्लाह तआ़ला उनको मन की शांती और चैन प्रदान करेगा। और माल की लालच से उनके दिल को सुरक्षित रखेगा और दुनिया का जितना हिस्सा उनके भाग्य में होगा वह अवश्य मिलेगा।"
(तरगीब व तरहिब, जादे राह हदीस ११)

- पवित्र कुरआन की सूरह तलाक की आयत नंबर २ और ३ और उपर दी गई अहादीस से कुछ लोगों ने यह नतीजा निकाला कि अगर आपका अल्लाह तआ़ला पर तवक्कल (भरोसा) हो तो राहिबों (सन्यासियों) की तरह अगर कोई काम ना भी करें तो अल्लाह तआ़ला आप की सारी आवश्यक्ताएं पूरी करेगा। अब हम देखेंगे की यह अकीदा (आस्था) कितना सही हैः

- इन्सानों में अल्लाह तआ़ला पर तवक्कल (भरोसा) पैगंबर जितना करते थे उससे ज्यादा और कौन कर सकता है? इसलिए हज़रत मुहम्मद (स.) अल्लाह तआ़ला पर कितना तवक्कल (भरोसा) करते थे उसका हम अध्ययन करते हैं। तवक्कल के अध्ययन के लिए हम हज़रत मुहम्मद (स.) के हिजरत (स्थानांतरण) वाली घटना का अध्ययन करते है।

  मदीना हिजरत (स्थानांतरण) करते वक़्त हज़रत मुहम्मद (स.) ने वह तमाम पेशगी (अग्रिम) तय्यारी कर ली जो किसी इन्सान की मक्का से सुरक्षित रवानगी और मदीना में सुरक्षित आगमन के लिए जरूरी थी।

  हज़रत मुहम्मद (स.) के पेशगी (Precautionery) उपाय निम्नलिखित हैंः

१) हिजरत की खुफिया योजना बनाई।

२) हिजरत का वक़्त मुश्रिकीन की उम्मीद के खिलाफ (यानी रात) तय किया।

३) हज़रत अली (रज़ि.) को हुक्म दिया कि आप (स.) के बिस्तर पर सोएं ताकी हिजरत का पता ना चले।

४) तीन दिन छुपे रहने के लिए खाने का इंतेजाम किया और सात दिन सफर के लिए भी खाना साथ रखा।

५) वफादार रहनुमा(गाईड) का इंतेजाम किया।

६) ऊंटो का इंतेजाम उस वक़्त किया जब तीन दिन बाद खुफिया मुकाम से रवानगी होनी थी।

७) उस रास्ते का चुनाव किया जिस पर सफर बहुत कम होता है (ताकी कोई पीछा ना कर सके)।

  जब आप (स.) ने तमाम एहतियाती (उपाय) पूरे कर लिए जो किसी इन्सान के लिए संभव था, तो हज़रत मुहम्मद (स.) ने अल्लाह तआ़ला पर इतना तवक्कल फरमाया कि परिणामों से बेफिक्र हो गए। यह आप (स.) के बेमिसाल तवक्कल का प्रदर्शन था कि जब 'सूर' नामक गुफा को दुश्मनों ने घेर लिया और हज़रत अबु बक्र (रज़ि.) परेशान हो गए तो हज़रत मुहम्मद (स.) ने उन्हें यकीन दिलाया, "परेशान न हो अल्लाह तआ़ला हमारे साथ है।"

  हज़रत मुहम्मद (स.) की मिसाल से हमें सबक मिलता है कि पहले हमें अपना फर्ज बेहतरीन तरीके से अंजाम देना चाहिए, सिर्फ उसके बाद ही हम अल्लाह तआ़ला पर तवक्कल कर सकते हैं। जहाँ पर हमारी ताकत या पहोंच खत्म होगी वहाँ से अल्लाह तआ़ला की मदद शुरू होगी।

- इसमें कोई शक नहीं के अल्लाह तआ़ला हर पक्षी को रिज़्क (रोज़ी) अता करता है। लैकिन क्या आप जानते है उस रिज़्क को हासिल करने के लिए पक्षी को क्या करना पड़ता है?

१. पक्षी शहर के व्यस्त और रौशनी वाले इलाकों में भी जल्द सो जाते हैं। और जल्दी उठ जाते हैं (सूरज निकलने से एक घंटा पहले)

२. कुरआ़न की इस आयत के मुताबिक वह इबादत करते हैः "सातों आसमान और जमीन और जो लोग उनमें है सब उसी की तसबीह (प्रार्थना) करते हैं और मक्खलूकात (Creations) में से कोई चीज़ नहीं मगर उसकी तारीफ के साथ तस्बीह ना करती हो। लैकीन तुम उनकी तस्बीह को नहीं समझते, बेशक वह बुर्दबार (सहनशील) और गफ्फार है।" (सूरे बनी इस्राईल आयत ४४)

३. वह उन मुकामात पर सबसे पहले पहोंचने की कोशिश करते हैं जहाँ रिज़्क मिलने की उम्मीद हो।

४. खराब और खतरनाक मौसम में भी वह ६००० कि.मी. तक स्थानांतरण करते हैं।

५. आहार हासिल करने के लिए वह दिनभर परिश्रम करते हैं।

६. वह अपने झुंड में शांती से और मिलजुल कर रहते हैं।

७. वह अपने साथीयों को धोखा, फरेब नहीं देते ना उनका शोषण करते हैं।

८. वह अपने घोसलों में आराम से बैठना पसंद नहीं करते। ना अपनी

मर्ज़ी से कोई गलत काम करते है बल्कि आहार तलाश करने में लगे रहते हैं।

- अल्लाह तआ़ला की तरफ से पक्षियों की तरह मुफ्त रिज़्क खाने के लिए अगर इन्सान पक्षियों की तरह मेहनत भी करें और दूसरों से मिलजुल कर रहें तो यह दुनिया स्वर्ग बन जाए। मगर इन्सान स्वभाव से कामचोर है। वह अल्लाह के नाम पर बगैर मेहनत के रोटी तोड़ना चाहता है। इसलिए "अल्लाह पर तवक्कल" जैसे पवित्र शब्दों से अपनी कमज़ोरी को छुपाता है और काम ना करने का बहाना ढूंढता है।

- हज़रत अबु जुबियान (रज़ि.) कहते हैं कि मुझसे हज़रत उमर बिन खत्ताब (रज़ि.) ने फरमाया, "ऐ अबु जुबियान (रज़ि.)! तुम्हारी आमदनी कितनी है?" मैंने कहा "ढ़ाई हजार!" हज़रत उमर बिन खत्ताब (रज़ि.) ने उनसे फरमाया, "ऐ अबु जुबियान (रज़ि.)! खेती बाड़ी करो और मवेशी पालो। इसके पहले कि कुरेश के नौजवान तुम पर वाली हो जाएं, जिनके अतिये (आर्थिक मदद) की कोई कद्र और कीमत ना होगी।" (इरशादाते नबवी की रोशनी में निजामें माश्रत ईमाम बुखारी की किताब 'अल अदबुल मुफरद' का उर्दु तर्जुमा, जिल्द १ हदीस, रिवायत ५७६)

  इस रिवायत में गौर करने वाली बात यह है कि अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर (रज़ि.) एक मुसलमान को जिसकी उस वक़्त अच्छी आमदनी थी मगर भविष्य में खराब हो सकती थी, आप उसे अपनी आमदनी और संवारने के लिए कोशिश करने की सलाह दे रहें है।

- हज को जाते हुए यमन के लोग खाने का सामान साथ नहीं ले जाते थे। और उनकी पक्की श्रद्धा थी कि अल्लाह तआ़ला उन्हें खिलाऐगा (जैसा वह पक्षियों को खिलाता है।) लैकिन मक्का में जब वह भूख से बेताब हो जाते तो वह खाने के लिए भीख मांगते थे। अल्लाह तआ़ला ने यह तरीका पसंद नहीं फरमाया और निम्नलिखित आयत नाजिल फरमायीः

- "हज के महीने सबको मालूम हैं। जो व्यक्ति उन निश्चित महीनों में हज का इरादा करे, उसे सावधान रहना चाहिए कि हज के बीच में उससे कोई काम-वासना का कार्य, कोई बुरा काम, कोई लड़ाई-झगड़े की बात न होने पाए। और जो अच्छे कर्म तुम करोगे, उसे अल्लाह जानता है। **हज के सफ़र के लिए पाथेय (रास्ते का खर्च और खना) साथ ले जाओ**, और सबसे अच्छा पाथेय परहेज़गारी है। अतः ऐ अक़्लवालो, मेरी नाफ़रमानी से बचो।" (सूरे बक़रा आयत १९७)

- हज़रत औफ बिन मालिक (रज़ि.) रिवायत करते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने दो व्यक्तियों के दरम्यान फैसला फरमाया। जिसके खिलाफ फैसला हुआ था जब वह वापस जाने लगा तो उसने अफसोस के साथ حَسْبِيَ اللهُ وَ نِعْمَ الْوَكِيْل कहा (अल्लाह तआ़ला ही मेरे लिए काफी है और वह बेहतरीन काम बनाने वाले हैं।) यह सुनकर आप (स.) ने इरशाद फरमायाः "अल्लाह तआ़ला उचित उपाय ना करने पर नाराज होते हैं। इसलिए हमेशा पहले अपने मामलात में समझदारी से काम लिया करो, फिर उसके बाद अगर हालात ना-मवाफिक (प्रतिकूल/मुखालिफ) हो जाएं तो حَسْبِيَ اللهُ وَ نِعْمَ الْوَكِيْل पढ़ो (और उससे अपनी दिली तसल्ली कर लिया करों कि अल्लाह तआ़ला की जात ही मेरे लिए काफी है और वही उन हालात में भी मेरे काम बनाएगा।)"

  (अबु दाऊद, बा-हवाला मुन्तखब अहादीस पेज ७१)

- पवित्र कुरआन की एक आयात का अर्थ यह है कि अल्लाह तआ़ला पर भरोसा और तवक्कल का हरगिज यह मतलब नहीं कि दौलत कमाने और अपनी समस्याओं को हल करने के जो असबाब (सामग्री) और उपकरण अल्लाह तआ़ला ने आप को अता फरमाएं हैं उनको छोड़कर सिर्फ अल्लाह के भरोसे हाथ पर हाथ धरे बैठा रहें। बल्कि तवक्कल की हकीकत यह है कि अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अल्लाह की दी हुई ताकत और जो असबाब (सामग्री) उपलब्ध हैं उनको पूरा पूरा इस्तेमाल करें, मगर असबाब (सामग्री) पर ज्यादा भरोसा ना करो। अपनी ताकत के मुताबिक कोशिश करने के बाद नतीजे को अल्लाह के हवाले करके बेफिक्र हो जाओ।

  (सूरे मुज्जम्मिल, आयत नंबर ९ की तफ्सीर, बा-हवाला मआरिफूल कुरआ़न, जिल्द १ पेज ५९५)

  इसलिए अपने मामलात की फिक्र करें। अपनी आमदनी की फिक्र करें और अपनी पूरी ताकत और योग्यताएं खर्च करने के बाद अल्लाह तआ़ला पर भरोसा रखें। वह काम जो आप की ताकत और बस के बाहर होगा, इन्शा अल्लाह, अल्लाह तआ़ला उसमें आप की जरूर मद्द करेंगे।

▼▼▼▼▼▼▼

क्या आप पर भी आग हराम है?

- हज़रत अब्दुल्ला बिन मसऊद (रज़ी) से रिवायत है कि रसूल अल्लाह (स) ने इरशाद फरमाया, "क्या मैं तुम (लोगों) को ऐसे व्यक्ति के बारे में न बतलाऊं जो नरक (की आग) पर हराम कर दिया जाएगा या जिसपर नरक की आग हराम है। हर मानूस (जिसे हर कोई अपना समझे), बेआजार (जो किसी को नुकसान ना पहुँचाता हो), नरम खू (जो नर्म लहजे में बात करें), नर्म रौ (जिसके स्वभाव में नरमी हो)।"

  (तिरमिज़ी, बा-हावाला हदीस नबवी हदीस ३६८)

आखिरत में आप किसके साथ होंगे?

- हज़रत अनस (रज़ी) फरमाते है कि एक आदमी हज़रत मुहम्मद (स.) के पास आया और पूछा के कयामत कब होगी? आप (स.) ने फरमाया, "तुम्हारा भला हो तुमने इसके लिए कुछ तैयारी भी की है?" उसने कहा "मैंने इसके लिए कुछ ज्यादा तैयारी तो नहीं की, अलबत्ता अल्लाह और उसके रसूल (स.) से मुहब्बत रखता हुँ।" हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया "कि आदमी को उन्हीं लोगों का साथ नसीब होगी जिनसे वह मुहब्बत करता है। हज़रत अनस (रज़ी) कहते है की इस्लाम लाने के बाद लोगों को कभी इतनी खुशी नहीं हुई जितनी हुजूर (स.) की यह बात सुनकर लोगों को खुशी हुई।" (मुस्लिम, बुखारी, सफिना निजात हदीस ४०५)

  (या अल्लाह हमें हज़रत मुहम्मद (स.) से सच्ची मुहब्बत करने की तौफीक अता फरमा। आमीन।)

क्या आप इस तरह के बंदे है?

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जो बंदे हलाल रोज़ी पर गुज़ारा करते हैं और मेरी जीवन प्रणाली का अनुसरण करते हैं और दूसरों को तकलीफ नहीं पहुँचाते, वह स्वर्ग के हकदार हैं।" सहाबा कराम (रज़ी) को आश्चर्य हुआ (क्योंकि यह स्वर्ग में जाने का बहुत आसान रास्ता है।) और उन्होंने कहा, "या रसूल अल्लाह (स.)! इस ज़माने में ऐसे लोग बड़ी तादाद में हैं।" हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "मेरे बाद भी इस तरह के बंदे होंगे।"

  (तिरमिज़ी)

३६. मुसलमान की जिंदगी में सुबह का क्या महत्त्व है?

रात की नमाज़ की अहमियत:

- अल्लाह तआ़ला पवित्र कुरआ़न करीम में फरमाता है: "कयाम किया करो (नमाज़ के लिए खड़े रहा करो) मगर थोड़ी सी रात यानी आधी रात या उससे कुछ कम, या कुछ ज़्यादा और कुरआ़न को ठहर ठहर कर पढ़ा करो।" (सूरह मुज़म्मिल आयात नंबर २ से ४)

  शुरू में इस्लाम में रात की इबादत फर्ज थी, फिर अल्लाह तआ़ला ने इन्सानों पर रहम किया और इबादत के लिए सुबह सादिक से सूर्योदय तक के लिए मोहलत दे दिया। वह आयात इस तरह है:

  "वह (अल्लाह तआ़ला) जानता है कि तुम उसे हरगिज ना निभा सकोगे (यानी रात में नमाज़ के लिए खड़ा होना) तो उसने तुमपर मेहरबानी की लिहाज़ा जितना कुरआ़न तुम्हारे लिए आसान हो उतना ही पढ़ो।" (सूरह मुज़म्मिल आयात २०)

- सुबह का उठना इस्लाम में बहुत जरूरी है। अल्लाह तआ़ला कुरआ़न करीम में फरमाता है कि:

  "कुछ शक नहीं की रात का उठना दिल जमई (ध्यान लगाने) के लिए इन्तेहाई मुनासिब है, और उस वक़्त जिक्र भी खूब दुरूस्त होता है।"
  (सूरतुल मुजम्मिल आयात ०६)

- आम इन्सानों के लिए पांच वक़्त नमाज़ फर्ज है। लैकिन हज़रत मुहम्मद (स.) के लिए ६ वक़्त की नमाज़ें फर्ज थीं। छठे वक़्त की नमाज़ 'तहज्जुद' है। यानी सुबह 'सादिक' की नमाज़। अल्लाह तआ़ला पवित्र कुरआ़न में फरमाता है:

  "ऐ हज़रत मुहम्मद (स.)! रात के आखरी पहर तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने के लिए उठा करो। यह ज्यादती तुम्हारे लिए है, और अनकरीब खुदा तुम्हें मुकामे महमूद में खड़ा करेगा।" (सूरह बनी इस्राईल आयात ७६)

- अल्लाह तआ़ला ने पहले रात की इबादत फर्ज किया, फिर इन्सानों की कमजोरी देखकर छूट दे दी, मगर हज़रत मुहम्मद (स.) के लिए तहज्जुद की नमाज़ फर्ज ही रही। इस हकीकत से आप इस्लाम में रात के आखरी हिस्से की इबादत के महत्व का अंदाज़ा लगा सकते हैं।

फज्र की नमाज़ का महत्व:

- निम्नलिखित आयात में अल्लाह तआ़ला ने स्पष्ट तौर पर इन्सानों को हिदायत फरमायी है कि तुलू आफताब (सूर्योदय) से पहले और गुरूब आफताब (सूर्यास्त) से पहले इबादते इलाही में व्यस्त रहें।

- "तो जो कुछ यह कुफ्फार बकते है उसपर सब्र करो और आफताब के तुलू होने (सूर्योदय) से पहले और उसके गुरूब होने (सूर्यास्त) से पहले अपने परवरदिगार की प्रशंसा के साथ तस्बिह करते रहो।"
  (सूरह काफ आयात ३६)

- "ऐ मुहम्मद (स.)! सूरज के ढलने से रात के अंधेरे तक (जोहर, असर, मगरिब और इशा) की नमाज़ें और सुबह को कुरआ़न पढ़ा करो क्योंकि सुबह के वक़्त कुरआ़न का पढ़ना मौजिबे हुजूरे मलाइका है।" (यानी फरिश्तों के हाजिर होने का समय है।) (सूरह बनी इस्राइल आयात ७८)

- यूं तो तमाम नमाज़ों में कुरआ़न की तिलावत की जाती है लैकिन खास तौर पर फज्र की नमाज़ में अल्लाह ने हिदायत फरमायी कि "लंबी सूरतें पढ़ा करें क्योंकि फज्र की नमाज़ की बड़ी अहेमियत है।"

  बंदो की सुविधा के लिए हज़रत मुहम्मद (स.) ने अपने सहाबा कराम (रज़ि.) को हिदायत फरमायी कि नमाज़े इशा में उन सूरतों की तिलावत करें जो 'सुरह शम्स' और 'सूरह लैल' के बराबर हों जिनमें कुरआ़न करीम की छह सात आयात हों, क्योंकि दिन भर की कारोबारी व्यस्तता से लोग थक जाते है, लैकिन नमाज़ फज्र में आप (स.) ने हिदायत फरमायी कि ४० आयात तिलावत करें। (अबू दाऊद)

तुलू आफताब (सूर्योदय) के फौरन बाद इबादत का महत्व:

- हज़रत नईम बिन हमजा (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) फरमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला इरशाद फरमाता है, "ऐ इब्ने आदम (अ.स.)! मेरे लिए दो रकात नमाज़ (इशराक) अदा कर। जो दिन की शुरूआत में है और यह तुम्हारे लिए दिन के आखिर तक के लिए काफी होगी।" (अबू दाऊद, १८३। जिल्द नंबर १)

  इसका मतलब यह है कि अगर आप दिन की शुरूआत में अल्लाह तआ़ला को याद करते है यानी दो रकात इशराक पढ़ते है तो अल्लाह तआ़ला आप की सुरक्षा फरमाएगा और बरकत अता करेगा और दिन के खात्में (अंत) तक आपके सारे काम बनाएगा।

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जो नमाज़े फज्र अदा करके और वहीं मस्जिद में बैठा रहे, इबादत में व्यस्त रहे और नमाज़े इशराक अदा करे (तुलू आफताब के बाद) उसे इतनी बरकत होगी और सवाब मिलेगा जो एक हज मबरूर (वह हज जिसे अल्लाह तबारक ताला ने कुबूल फरमाया) के बराबर होगा।" (तिरमीज़ी)

- हज़रत अबु मालिक (रज़ि.) फरमाते हैं कि, हज़रत मुहम्मद (स.) इन अल्फाज में दुआ़ फरमाया करते थें: "ऐ अल्लाह! मेरे दिन के आगाज को नेक आमाल का हिस्सा बना, ताकि (जिससे) मुझे नेक आमाल की तौफीक हो जाए, ताकि सारा दिन अल्लाह की नुसरत और मदद मेरे साथ रहे।"(अबू दाऊद, मश्कवाहुल मसाबीह पेज नंबर २१२)

- हज़रत मुहम्मद (स.) का भी यह नियम था कि आप फज्र की नमाज़ के बाद मस्जिद में चार जानों (पलथी मारकर) बैठकर सूरज निकलने तक इबादत करते रहते और इशराक के बाद ही अपने घर तशरीफ ले जाते।
  (अबू दाऊद, मुन्तखब अबवाब हदीस ७६२)

- एक मर्तबा हज़रत मुहम्मद (स.) ने मुजाहिदीन की एक टुकडी 'नजद' रवाना फरमायी। मुजाहिदीन बहोत कम समय में विजयी होकर और बहुत सारा माल लेकर लौटे। लोगों को इस कम मुद्दत में विजय और माल मिलने पर आश्चर्य हुआ। हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "क्या मैं तुम्हें उन लोगों का हाल बताऊं जो इससे भी कम मुददत में इससे ज्यादा माल हासिल कर लेते हैं। यह वह लोग है जो मस्जिद में नमाज़े

(बाकी पेज १०८ पर)

४०. तरक्की के लिए नेक लोगों की संगत ज़रूरी है।

फर्ज कीजिए ६ लोग जंगल में सफर कर रहें है। उनमें से ५ के पास लंबी लाठियां हैं और एक के पास प्लास्टिक की मोटी चादर है। अगर उन लोगों को कई दिन जंगल में सफर करना हुआ तो निम्नलिखित दो तरीकों में से कौन सा तरीका उनके लिए ज्यादा सुरक्षित और आरामदेह रहेगा।

१. पहला तरीका यह है कि हर व्यक्ति किसी दूसरे की मदद के बगैर खुद अपनी सुरक्षा करे। यानी अकेला सफर करे, अकेले खाने का इंतेजाम करे, अकेले रात गुजारे, अकेले अपनी सुरक्षा करे, वगैरा वगैरा।

२. दूसरा तरीका यह है कि एक ग्रुप बना लें। हर एक अपनी एक ज़िम्मेदारी कुबूल कर ले। कोई खाने का इंतेजाम करे, कोई सुरक्षा पर ध्यान दे, कोई रहबरी पर ध्यान दे। सब अपनी लाठियों और प्लास्टिक की चादर से एक खेमा बनाकर रात गुज़ारें। वगैरा वगैरा।

इसमें कोई दो राय नहीं की दूसरा तरीका ही सुरक्षित और आरामदेह है।

हमें गौर इस बात पर करना है कि जब ६ लोग मिल गए तो सुरक्षा और आराम कितने गुना बढ़ा?

क्या ६ गुना?

नही!

बल्कि १०० गुना या उससे ज्यादा।

- किसी टॉर्च में एक बॅटरी हो तो अगर रौशनी दस फिट दूर तक जाती है। उसी टॉर्च में अगर दो बॅटरी लगा दो तो रौशनी कितनी दूर तक जाऐगी।

  २० फिट?

  नहीं!

  तकरीबन ४० फिट दूर तक रौशनी पहुँचेगी।

- इन्सानी दिमाग के साथ भी ऐसा ही होता है। एक इन्सान की सोच की जो ताकत है। जब दो या दो से ज्यादा लोग मिलकर उसी दिशा में सोचते हैं तो वह दुगनी और तिगुनी नहीं होती बल्कि एक गिरोह की सोच ज़माने को बदल देती है। इतिहास रचती है।

- मिसाल के तौर पर आज से १०० साल पहले मोटर कार बनाने वाली कम्पनियां सिर्फ चंद मोटर कारें ही बनाती थीं। जिनकी कीमत बहोत ज्यादा होती थी, और बहुत अमीर लोग ही उसे खरीद पाते थे।

  हेन्री फोर्ड एक बहुत कम पढ़े लिखे आदमी थे। वह इंजिनीयर नहीं थे। मगर जब उनकी दोस्ती वैज्ञानिक थॉमस एडीसन से और बुद्धिमान और कारोबारी लोग जैसे फायरस्टोन, जॉन ब्रुस और लोथर बरबैंक से हुई तो उन्होंने असंभव को संभव बनाया। वह खदानों से मिट्टी (कच्चा खनिज लोहा) खरीदते और उससे कारें इतनी सस्ती बनाकर बेचते कि मोटर कार खरीदना फिर आम आदमी की पहुँच तक हो गया।

  हेन्री फोर्ड खाम लोहे से लोहा बनाते फिर उस लोहे से मोटर कार के पुर्जे बनाते। इसी तरह मोटर कार में लगने वाली हर चीज़ वह बनाते। आज फोर्ड कम्पनी दुनिया की बड़ी कम्पनियों में से एक है। और यह महान सफलता बुद्धिमान लोगों के एक ग्रुप के सोचने का नतीजा है।

- मौजूदा दौर में हिंदुस्तान का अमीर तरीन व्यक्ति कौन है?

  मुकेश अंबानी!

  क्या वह हिंदुस्तान का अत्यंत बुद्धिमान इन्सान भी है?

  नहीं!

  वह एक आम इन्सानों की तरह ही है। मगर उसने और उसके पिता 'धीरूभाई अंबानी' ने इस हकीकत को समझ लिया था कि एक और एक २ नहीं बल्कि ११ होते हैं।

  उन्होंने ऐसे काबिल और बुद्धिमान लोगों को अपने पास नौकरी पर या (Profit Sharing) पर रख लिया। जो आने वाले १०० सालों का भी सही अंदाजा लगा सकते हैं और भविष्य के मुताबिक कारोबार शुरू करके उसे कामयाब बना सकते हैं।

  मिसाल के तौर पर प्लास्टिक के दाने बनाना, पेट्रोल रिफाइन करना, जमीन से गैस निकालना, बिजली पैदा करना वगैरा वगैरा। रिलायंन्स इंडस्ट्रीज में काम करने वाले हजारो अत्यंत बुद्धिमान और सख्त मेहनत करने वाले दिमागों ने ही मुकेश अंबानी को हिंदुस्तान का दौलतमंद इन्सान बना दिया।

- इसलिए किसी भी महान कामयाबी के लिए एक जैसा सोचनेवाला एक गिरोह का होना बहोत जरूरी है। चाहे वह कारोबार हो, राजनीति हो या दीनी काम हो।

- इस हकीकत को हज़रत मुहम्मद (स.) से बेहतर और कौन जान सकता है? इसलिए हज़रत मुहम्मद (स.) ने अपनी उम्मत को ५ चीजों का हुक्म दिया था। उसमें सबसे पहला हुक्म जमात (समूह) बनाने का था। वह ५ हुक्म निम्नलिखित हैं:

१. जमात (समूह) बनों, सामूहिक जिंदगी गुजारों।

२. तुम्हारे सामूहिक मामलात का जो जिम्मेदार हो उसकी बात गौर से सुनो।

३. उसकी आज्ञा का पालन करो।

४. हिजरत (स्थानांतरण) करो।

५. सच्चाई के लिए संघर्ष करो।

(मिश्कात, मस्नद अहमद, तिरमिजी, जादे राह हदीस नंबर १८८)

- अल्लाह तआ़ला पवित्र कुरआन में फरमाता है कि, "खुदा और उसके रसूल (स.) के हुक्म पर चलो और आपस में झगड़ा ना करना कि ऐसा करोगे तो बुज़्दिल (कायर) हो जाओगे और तुम्हारा इक्बाल (रोब) जाता रहेगा और सब्र (धैर्य) से काम लो कि खुदा सब्र करने वालों की मदद

करता है।" (सूरह अनफाल आयत ४६)

आपसी झगड़ा ना सिर्फ एक ग्रुप को बिखेर देता है बल्कि तरक्की की तरफ सोचने की दिमागी ताकत ही को बिल्कुल कमजोर कर देता है। अकेला चना भाड नहीं फोड़ता। अगर मुसलमानों को तरक्की करना है तो ग्रुप बनाना ही होगा।

- अब तक हमने पढ़ा कि लोग किस तरह बुद्धिमान लोगों की जमात (समूह) बनाकर कारोबार में बहुत कामयाब होते हैं। सिर्फ कारोबार में ही नहीं बल्कि जिंदगी के जिस क्षेत्र में भी आपको कामयाब होना है वहाँ पर भी आप जिन इन्सानों से मिलते हैं उनका भी आपको खयाल रखना होगा कि वह आपकी तरक्की में दिमागी तौर पर मदद करने वाले हों। उसकी वजह और तफ्सील निम्नलिखित है:

नेक लोगों की सोहबत (संगत) क्यों जरुरी है?

- विज्ञान के मुताबिक हर इन्सान अपने अतराफ में कंम्पन (Vibration) और शक्ती (Energy) (आध्यात्मिक किरणें) खारिज करता रहता है। और यह दूसरों से भी कंम्पन (Vibration) और शक्ती (Energy) (आध्यात्मिक किरणें) हासिल करता और ज़ज्ब भी करता रहता है।

- एक नेक खयाल, बुलंद हौसला, मुहब्बत और अमन और सुकून चाहने वाला और हर किस्म के सकारात्मक ज़ज्बात वाला व्यक्ति अपने माहौल में उसी तरह के कंम्पन या शक्ती (Energy) छोड़ता रहता है। दूसरे उन कंम्पन और शक्ती (Energy) को जज़्ब करते हैं। और उन में भी वैसे ही विचार और जज़्बात पैदा होते हैं।

  उसी तरह एक अपराधिक और नकारात्मक मानसिकता रखनेवाला इन्सान आसपास में वैसा ही कंम्पन और किरणें खारिज करता है और दूसरो में वैसे ही विचार और ज़ज्बात पैदा करता है।

- चूंकी बुलंद हौसला, सकारात्मक विचार जिंदगी और कारोबार में कामयाबी के लिए लाज़मी हैं। इसलिए जो लोग कारोबार में और जिंदगी में कामयाब होना चाहते हैं उन्हें लाजमी है की मुत्तकी, परहेजगार, बुलंद हौसला, उद्योगपति, धन की कद्र करने वाला और अमन और शांती चाहने वालों की ही सोहबत (संगत) में रहें और अपराधिक, भेदभाव करने वाला, नकारात्मक मानसिकता रखने वाले और खुले आम गुनाह करने वालों की सोहबत से दूर रहें।

- अल्लाह तआ़ला पवित्र कुरआन में फरमाता है, "और खुदा ने मोमिनों पर अपनी किताब में यह हुक्म नाजिल फरमाया है की जब तुम कहीं सुनो की खुदा की आयतों से इन्कार हो रहा है और उनकी हंसी उड़ाई जाती है तो जब तक वह लोग और बातें न करने लगें उनके पास मत बैठो वरना तुम भी उन्हीं जैसे हो जाओगे। कुछ शक नहीं की खुदा मुनाफिकों (ढोंगी मुसलमानों) और काफिरों सबको नर्क में इकठ्ठा करने वाला है।"(सूरे निसा आयत १४०)

- "और जब तुम ऐसे लोगों को देखो जो हमारी आयातों के बारे में बेहुदा बकवास कर रहें है तो उनसे अलग हो जाओ। यहाँ तक कि और बातों में व्यस्त हो जाएं। और अगर यह बात शैतान तुम्हें भुला दे तो याद आने पर ज़ालिम लोगों के साथ ना बैठो।" (सूरह इनाम आयत ६८)

- हज़रत हन्ज़ला बिन रबी उसेदी (रज़ि.) फरमाते हैं कि एक मर्तबा मुझसे हज़रत अबु बक्र सिद्दीक (रज़ि.) की मुलाकात हुईं, तो वह मुझसे पूछने लगे, "हन्ज़ला! तुम्हारा क्या हाल है?" मैंने कहा "हन्ज़ला तो मुनाफिक हो गया।" हज़रत अबू बक्र सिद्दीक (रज़ि.) ने कहा "सुबहान अल्लाह! हन्ज़ला! यह तुम क्या कह रहे हो?" मैंने कहाः "जब हम हज़रत मुहम्मद (स.) के पास होते हैं और जिस वक़्त आप (स.) हमें नर्क के आजाब (प्रकोप) से डराते हैं, और स्वर्ग की निअ़मतों की खुशखबरी सुनाते हैं, तो उस वक्त ऐसा महसूस होता है जैसे हम स्वर्ग और नर्क को अपनी आंखो से देख रहें है। मगर जब हज़रत मुहम्मद (स.) की सोहबत से अलग होते हैं, और अपनी पत्नियों, अपनी औलाद, और अपनी जमिनों और अपने बागात में व्यस्त होते हैं तो बहुत कुछ भूल जाते हैं।" हज़रत अबु बक्र (रज़ि.) ने फरमायाः "खुदा की कसम! हम भी उसी हालत को पहुँचे हुए हैं।" (यानी हमारा भी यही हाल है) उसके बाद मैं और हज़रत अबु बक्र (रज़ि.) दोनों चले यहाँ तक कि हज़रत मुहम्मद (स.) की सेवा में हाजिर हुए। फिर मैंने अर्ज कियाः "या रसूल अल्लाह! हन्ज़ला मुनाफिक हो गया है।" हज़रत मुहम्मद (स.) ने पुछा, "उसका सबब क्या है?" मैंने अर्ज कियाः "या हज़रत मुहम्मद (स.)! जब हम आपके पास होते हैं और आप हमें नर्क और स्वर्ग के हालात बताकर नसीहत करते हैं तो ऐसा महसूस होता है जैसे हम उनको अपनी आंखों से देख रहे हैं। मगर जब हम आपके पास से उठ जाते हैं और अपनी पत्नियों, अपनी औलाद और अपनी जमीनों और अपने बागात में व्यस्त होते हैं, तो हम नसीहत की बहुत सी बातें भूल जाते हैं।" यह सुनकर हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया, "कसम है उस ज़ात की जिसके कब्जे में मेरी जान है! अगर तुम पर हमेशा वही हालत छाई रहे जो मेरी सोहबत में और हालते जिक्र में तुमपर होती है तो यकीनन फरिश्ते तुमसे तुम्हारे बिछोनों पर और तुम्हारी राहों में मुसाफा कर (हाथ मिलाएं)। लैकिन ऐ हन्ज़ला यह वक़्त-वक़्त की बात है।" और आप (स.) ने यह आखरी बात तीन मरतबा बयान फरमायी।(मुस्लिम, मुन्तखब अबवाब जिल्द १: ४१६)

  यानी रूहानियत (Sprituality) की सर्वोच्च (उच्चतम) और तकवा (धार्मिकता) के जो विचार एक पैगंबर की सोहबत में हासिल होते हैं। वह सिर्फ पैगंबर की सोहबत में ही हासिल हो सकेंगे। पैगंबर से दूर हटते ही जैसे ही वह कंम्पन और किरणें (Energy) आप जज़्ब करना बंद कर देंगे तो आप की रूहानियत और दिमागी हालत भी अपने पहले वाली सतह पर आ जाएगी।

  अगर कोई इतना काबिल हो जाए की खुद से उच्चतम रूहानी (आध्यात्मिक) हालत पैदा करे तो वह इन्सान इतना मोहतरम (आदरणिय) और काबिल होगा कि फरिश्ते उससे मुसाफा करने (हाथ मिलाने) लगेंगे। इसलिए यह वक़्त वक़्त की बात है। आप जिस की सोहबत में होंगें। आप वैसा ही सोचेंगें।

- हज़रत शोएब (रज़ि.) बिन अबी रूहा कहते हैं कि "एक बार फज्र की नमाज में हज़रत मुहम्मद (स.) सूरह रोम की तिलावत कर रहे थे और आपको तिलावत में कुछ रूकावट महसूस हो रही थी।" नमाज़ खत्म करके आप (स.) ने फरमाया, "लोगों को क्या हो गया है? कि एक पैगंबर के पीछे नमाज पढ़ते हैं और अपनी सफाई का खयाल नहीं रखते।"
  (सूनन निसाई, मआरूफूल हदीस जिल्द २ हदीस २३)

  इसका अर्थ यह है कि फज्र की जमात में जो मुक्तदी (इमाम के पीछे

नमाज़ पढ़ने वाले नमाज़ी) थे उनमें से किसी ने सावधानी के साथ वजू वगैरा नहीं किया था। अधूरा वजू से उस व्यक्ति को शैतानी वसवसा (बहकावे) आ रहे थे। और यह दिमाग का बिखराव होना दूसरों की एकाग्रता (Concentration) पर असर ड़ाल रहा था।

इसी हदीस से हम दो सबक सीख सकते हैं।

१. नापाकी इन्सान के खयालात को बिखेरती रहती है या नापाक इन्सान (Concentrate) नहीं हो सकता।

२. एक इंसान के दिमाग में जिस तरह के खयालात होंगे वह दूसरों पर असर अंदाज होंगे। एक मुन्तशिर सोच और खयालात वाला व्यक्ति दूसरों की सोच और खयालात को भी मुन्तशिर कर देता है (बिखेर देता है)।

- इसलिए हज़रत मुहम्मद (स.) ने हमेशा नेक लोगों की सोहबत अख्तियार करने का हुक्म दिया है। हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) बयान करते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "हर व्यक्ति अपने दोस्त के मज़हब की पैरवी करता है। इसलिए तुम में से हर एक को यह तहकीक (खोज) कर लेना चाहिए कि वह किससे दोस्ती कर रहा।"
(अबू दाऊद, तिरमिजी)

- हज़रत अबू सईद खिदरी (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "तुम किसी मोमिन ही को अपना साथी बनाओ और मुत्तकी (अल्लाह से डरने वाले/नेक) आदमी के सिवा किसी और को खाना ना खिलाओ (फासिक और फाजिर आदमियों को खाने की दावत न दो)।"
(तरगीब व तरहीब बा-हवाला इब्ने हुबान, ज़ादे राह हदीस नंबर १७१)

- हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "मुत्तकी और नेक आमाल वाला दोस्त एक इतर फरोश (खुशबु बेचने वालों) की तरह हैं अगर आप उनसे कुछ भी न खरीदें तो भी आपको खुशबू तो मिलेगी। और बुरा दोस्त लोहार की तरह है जो भट्ठी जलाता है अगर वह आपके कपड़े गंदे न करे तब भी आप धुआं और आग से जरूर परेशान होंगें।" (बुखारी, अबू दाऊद, नसाई)

(यह खुश्बू वही रूहानी कंपन और किरणें हैं जो आप नेक लोगों की सोहबत में हासिल करेंगें अगर वह नेक व्यक्ति आप से कुछ बातचीत ना भी करें तब भी आपको उससे निकलने वाली खुश्बू या रूहानी किरणों या कंपन से फायदा होगा।)

- "अल्लाह तआ़ला पवित्र कुरआन में इरशाद फरमाता है:

''ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, ईमानवालों को छोड़कर अधर्मियों को अपना साथी न बनाओ। क्या तुम चाहते हो कि अल्लाह को अपने विरुद्ध स्पष्ट तर्क दे दो?'' (सूरह निसा आयत १४४)

इसलिए अगर हम कारोबार और आखिरत में कामयाब होना चाहते हैं तो हमारे लिए सिर्फ नेक लोगों की सोहबत लाज़मी है।

▼▼▼▼▼▼▼

(पेज १०५ से आगे... मुसलमान की जिंदगी में सुबह...?

फज्र वक़्त पर अदा करते हैं। और फिर नमाज़े इश्राक अदा करते हैं।"
(फजाइले आमाल, फजाइले नमाज़, पेज १६)

खुशहाली और सुबह का वक़्त:

- हज़रत सुखर गादमी (रज़ि.) के मुताबिक हज़रत मुहम्मद (स.) ने दुआ़ फरमायी:

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لِاُمَّتِیْ فِیْ بُكُوْرِهَا.

"ऐ अल्लाह! तू मेरी उम्मत के लिए उसके अव्वलीन वक़्त (Early Morning) में बरकत नाज़िल फरमा।"
(इमाम अहमद, तिरमिज़ी, इब्ने माजा, अबू दाऊद ३५०, सफर की शुरूआत, मुन्तखब अहादीस, पेज नंबर १७०)

यानी जो सुबह उठकर अल्लाह को याद करेगा वही अल्लाह तआ़ला की खुश्हाली वाली निअ़मत को पाएगा।

- हज़रत उमर बिन उस्मान बिन अफ्फान (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया कि, "सुबह सोने से रोज़ी कम होती है। फज्र की नमाज़ से तुलू आफताब (सूरज निकलने) तक सोना मना है, जबकी कोई शरयी उज़्र (उचित कारण) ना हो।" (मस्नद अहमद, जिल्द १, पेज ७३)

- हज़रत फातिमा (रज़ि.) ने फरमाया कि, "मैं सुबह के वक़्त सोई हुई थी जबकी हज़रत मुहम्मद (स.) मेरे करीब से गुजरे। आप (स.) ने मुझे जगाया और फरमाया, "ऐ मेरी प्यारी बेटी! खड़ी हो जाओ और अपनी रोज़ी अल्लाह तआ़ला से हासिल करो। गाफिल मत बनों, अल्लाह तआ़ला अलस्सबाह (प्रातःकाल) से तुलू आफताब (सूरज निकलने) तक रोज़ी बांटते है।" (बेहकी)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने सहाबा कराम (रज़ि.) को ना सिर्फ अलस्सबाह (प्रातःकाल) उठने और इबादत करने की हिदायत फरमायी बल्कि दिन के आरंभ में बरकत के नाजिल होने की वजह से अपना कारोबार भी सुबह ही शुरू करने की नसीहत फरमायी। और आप (स.) के एक सहाबी हज़रत सुखर (रज़ि.) ने फरमाया की कारोबार दिन के आरंभ में शुरू करने से उन्हें इतना मुनाफा हुआ की लोगों को मुझ पर ताज्जुब (आश्चर्य) होने लगा।

- हज़रत मुहम्मद (स.) इशा से पहले सोने और इशा के बाद फुजूल (बेकार) बाते करने को नापसंद फरमाते थें।
(मुत्तफिक अलैह, मरकाता, जिल्द २, पेज १२६)

- पुराने जमाने में लोग आधी रात तक कहानियां सुनाने में समय गवांते थे और रोजमर्राह की बेकार बाते करते थे। हज़रत मुहम्मद (स.) नमाज़े इशा के बाद ऐसी तमाम चीजों को पसंद नहीं करते थे। (तरगीब व तरहीब, हदीस बुखारी की तल्खीस) (इसलिए इशा के बाद टी.वी भी नहीं देखना चाहिए।)

इसलिए अगर आप अपने प्यारे रसूल हज़रत मुहम्मद (स.) को खुश करना चाहते हैं और खुशहाली चाहते हैं तो रात में जल्द सो जाएं और सुबह जल्द उठें। फज्र के बाद इश्राक तक इबादत करें और बगैर वक़्त बरबाद किए सुबह ही अपने कारोबार की शुरूआत करें।

▼▼▼▼▼▼▼

४१. कुछ आश्चर्यजनक वास्तविक्ताएं

नाम, मुकाम और दिशा का भी खुश्हाली पर असर होता है। लैकिन यह बुरे असरात क्यों होते हैं? इसपर हम चर्चा नहीं करेंगे। हम सिर्फ यह जानने की कोशिश करेंगे कि उनके बुरे असरात से कैसे सुरक्षित रह सकते है।

नाम:-

- हज़रत अब्दुल्ला बिन साएब (रज़ि.) कहते है कि हुदैबिया समझौता के साल जब कि समझौता और जंग की बातें चल रही थीं तो हज़रत उस्मान बिन अफ्फान (रज़ि.) ने आकर खबर दी कि सुहैल को मक्के वालों ने इस बात पर समझौता के लिए भेजा कि आप (स.) अपने साथियों के साथ इस साल वापस जाएं और अगले साल तीन दिन के लिए आएं, और जब कहा गया कि सुहैल (इसका अर्थ है "आसान") आए हैं तो आप (स.) ने फरमायाः "सुहैल आया है अल्लाह तआ़ला तुम्हारे मामले को भी सहल (आसान) करेगा।" (हदीस के रावी अब्दुल्ला बिन साएब (रज़ि.) के बारे में कहा गया है कि उन्होंने हज़रत मुहम्मद (स.) का ज़माना पाया था।)
(अल अदबुल मुफरिद, इरशादे नबवी (स.) की रौशनी में निजाम मआशरत, जिल्द २ पेज नंबर २३५)

(इसका मतलब है कि अच्छे नाम के प्रभाव समाज और उससे जुड़े लोगों पर भी अच्छे पड़ते हैं।)

- हज़रत अब्दुल हमीद बिन जुबैर बिन शिबा (रज़ि.) कहते हैं कि (एक दिन) मैं हज़रत सईद बिन मुसय्यब (रज़ि.) के पास बैठा था उन्होंने मुझसे यह बात बयान की कि मेरे दादा (जिनका नाम हुज़्न था) हज़रत मुहम्मद (स.) की सेवा में हाज़िर हुए, तो आप (स.) ने पुछा "तुम्हारा नाम क्या है?" उन्होंने कहाः "मेरा नाम हुज़्न (सख्त मिजाज) है।" आप (स.) ने (सुनकर) फरमाया, "(हुज़्न कोई अच्छा नाम नहीं है।) बल्कि तुम सहल हो (यानी में तुम्हारा नाम 'सहल' रखता हूँ।)" मेरे दादा ने कहाः कि मेरे बाप ने जो मेरा नाम रखा है मैं उसको बदल नहीं सकता। हज़रत सईद बिन मुसय्यब ने फरमाया, (उस नाम की वजह से) अब तक हमारे खानदान के मिज़ाज में सख्ती है।
(बुखारी, मुस्लिम, मुन्तखिब अबवाब जिल्द १, पेज ८५७)

- एक ज़मीन ऐसी थी जिसमें कोई चीज़ नहीं उगती थी, लोगों ने उसका नाम 'हज़रा' (बंजर जमीन) रख दिया था। हज़रत मुहम्मद (स.) ने उसका नाम बदलकर खिज़रा (हरी भरी और ताज़ा) रख दिया, थोड़े दिनों के बाद वह ज़मीन हरी भरी हो गयी।(जन्नत की कुंजी, पेज १७७)

- मैंने अपना कारोबार "हायड्रो इलेक्ट्रिक मशीनरी" के नाम से शुरू किया। जब मेरा कारोबार जम गया तो मैंने कॉपीराईट कानून के तहेत अपनी कम्पनी का नाम रजिस्टर करना चाहा। मगर रजिस्ट्रार ने इन्कार कर दिया। (क्योंकी 'हायड्रो इलेक्ट्रिक' पावर प्लॅनेट का नाम भी होता है।)

  इस लिए मैं ने अपनी कम्पनी का नया नाम 'हायड्रो शम्स मशीनरी' रख दिया। इसके बाद मेरी कंम्पनी की (प्रोडक्शन) पैदावर घट गयी और मशीनरी के पक्के ऑर्डर कॅन्सल हो गए। कारोबार जारी रखने के लिए मुझे कम्पनी का पुराना नाम रखने के सिवा कोई चारा नहीं था।

- मेरे दोस्त राजू कुमार ने अपनी कम्पनी का पुराना नाम "जाली ॲलॉइज" (Jolly alloys) बदलकर नया नाम "टॅक्सॉन इंटरप्राइजेस" (Texon Enterprises) रख लिया। क्योंकि टॅक्सॉन नया नाम लगता है। इस नाम से उसे अपने ग्राहको से पैसा वसूल करना मुश्किल हो गया। दिवालिया होने के बाद उसने दोबारा पुराना नाम "जाली ॲलॉइज" रखा और दुबारा उसका कारोबार चल निकला।

- किसी व्यक्ति या संस्था की कामयाबी और नाकामी में नाम का गहरा असर होता है। इसलिए खोज किए बिना अपने कारोबार के लिए कोई भी नाम ना रखें। पहले अच्छा नाम चुनें और अपना कारोबार शुरू करें। अगर मुनाफा हो तो वही नाम हमेशा के लिए रख लें। वरना नाम बदलते जाऐं यहाँ तक कि आप को कोई मुबारक/शुभ नाम मिल जाए।

ना मुबारक/अशुभ मकान:-

- हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) कहते हैं कि एक व्यक्ति ने हज़रत मुहम्मद (स.) से अर्ज कियाः "या हज़रत मुहम्मद (स.)! हम पहले एक घर में थे। अच्छी तादाद थी, हमारे सम्पत्ति (भेड, बकरी, ऊंट) भी ज्यादा थे। फिर उसको छोड़कर दूसरे घर में स्थानांतरित हो गए। यहाँ हमारे घर के सदस्य कम हो गए हमारी सम्पत्ति भी कम हो गई।" तो हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "उसको छोड़ दो यह मकान नामुबारक / अशुभ है।"
(अलअदब अलमुफरिद, इरशादे नबवी (स.) की रौशनी में निजामें मुआशरत जिल्द २ सफहा नंबर २३८)

- मेरी पुरानी कारोबारी जगह पर मेरे तीन वर्कशॉप हैं। उनके नंबर इस तरह हैं: (A/12) (A/13-1) (A/13-2)

  वर्कशॉप नंबर (A/12) का हाल यह है की जब भी मैं इस वर्कशॉप में कोई मशीन बनाता हूँ तो मशीन हर तरह से मुकम्मल होने के बावजूद उसकी डिलीवरी दो से तीन महीने देरी से होती है। अल्लाह तआ़ला के फज़्ल से मेरा (A/13-1) वर्कशॉप मेरे लिए मुबारक है और में इस वर्कशॉप में बैठता हुँ और मशीनें यहीं बनती हैं और बगैर देर किए डिस्पॅच (Dispatch) की जाती हैं।

  मैंने (A/13-2) नंबर का वर्कशॉप, जमाल तेजानी से खरीदा था। उसका रंग या पेंन्ट का बड़ा फायदेमंद कारोबार है। जमाल तेजानी ने यह वर्कशॉप पेंन्ट का गोदाम और साथ ही शोरूम जैसा बनाया था। लैकिन किसी वजह के बगैर वह उस वर्कशॉप का उपयोग नहीं कर सका। उसने उसे २ या ३ साल बंद रखा। चूंकि मैं उसका दोस्त और पड़ोसी था इसलिए उसने यह वर्कशॉप मुझे बेच दिया। उस वर्कशॉप को खरीदने के बाद मैंने उसे एक साल तक बंद रखा। फिर उसे इस्तेमाल करने के लिए मैंने ३२ K.V.A का एक जनरेटर लगाया और मशीनें जोड़ने के लिए उसमें पांच टन की क्रेन लगाई। लैकिन बगैर किसी वजह के वह वर्कशॉप हमेशा खाली पड़ा रहा।

इसलिए मेंने जनरेटर दूसरे वर्कशॉप में लगा दिया और उस जगह (A/13-2) को ऑफिस की तरह तैयार कर दिया। लैकिन कई वर्षों तक मैंने उस वर्कशॉप का दरवाजा १२ घंटे तक भी नहीं खोला। मेरा स्टाफ उसे एक स्टोर की तरह इस्तेमाल करता था। और वहाँ गैर जरूरी सामान भर दिया जाता था। इसलिए मकान या वर्कशॉप में भी अजीब असरात (प्रभाव) और खुसूसियात (विशेषताएं) होती हैं। इसलिए उन्हें इस्तेमाल करके उनके अस्रात का विश्लेषण कर लेना चाहिए और अगर अस्रात मुबारक/शुभ मालूम हों तो ही इस्तेमाल करें वरना अपनी तवानाई और वक़्त को तकदीर के खिलाफ लढ़ने में नहीं नष्ट करना चाहिए।

आखिर में वर्कशॉप नंबर (A/13-2) का क्या हुआ?

A/13-2 नंबर का वर्कशॉप १९९५ से २००९ तक बंद रहा इसलिए मैंने २०१० में उस वर्कशॉप को धार्मिक काम के लिए विशेष कर दिया। रमज़ान में वहाँ तरावीह की नमाज़ पढ़ने का इंतेजाम किया और आम दिनों में ४ वक़्त की अज़ान सुनने के लिए स्पिकर लगा दिया। इस्लाम की दावत के संबंध में लिखी गई किताबें टाईप करने के लिए उस जगह को विशेष कर दिया। इसके बाद उसके नकारात्मक असरात कम होना शुरू हो गए और अब मेरे स्टाफ के तीन लोग वहाँ बैठकर किताब को (Typing & Setting) करने का काम करते हैं। इस किताब को भी इसी जगह पर (Typing & Setting) कर के अंतिम रूप दिया गया है। धार्मिक काम करने की वजह से जगह के बुरे असरात कम होते हुए महसूस हो रहे हैं।

ना मुबारक सवारी:

- हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "नहूसत (दोष) घर में होती है या औरत में या घोड़े में होती है।"

  (अल अदबुलमुफरिद, इरशादे नबवी (स.) की रौशनी में निजामें मुआशरत जिल्द २ सफहा नंबर २३६)

- मेरे भतीजे यूसुफ खान ने अपने दोस्त से पूरानी सुमो कार नंबर (U.P. 75-B-8842) खरीदी थी। उसके दोस्त ने यह कार अपने गॅरेज में बगैर किसी वजह के बंद कर रखा था। खरीदने के बाद यूसुफ ने इस कार को टूरिस्ट कार बना दिया। लैकिन जो कुछ वह इस कार से कमा रहा था उसकी दुरूस्तगी और कायम रखने के लिए उससे ज्यादा खर्च कर रहा था। और आखीरकार एक दिन उसने कार को तेज चलाते हुए एक खड़ी हुई एस टी बस से टकरा दिया। उसके साथ बैठा हुवा अब्दुल्लाह की इस दुर्घटना में जगह पर मौत हो गई। यूसुफ का निचला जबड़ा टुट गया और उसकी जखमी गर्दन पर २० टांके लगे। अस्पताल से बाहर आने के बाद उसने इस कार की मरम्मत की और इसे अपने गॅरेज में फिर से खड़ी कर दिया।

  इस घटना के एक वर्ष बाद मैंने सोचा कि गॅरेज में रखने के बजाय मैं खुद इस कार का इस्तेमाल करूं। इसलिए मैंने इसे खरीद लिया और लखनऊ से मुंबई ले आया।

  तकरीबन देढ़ साल तक मैं इसे इस्तेमाल नहीं कर सका। इसकी वजह रजिस्ट्रेशन की समस्याएं थीं। मैंने इस कार के रजिस्ट्रेशन, ट्रान्सफर, टॅक्स और मरम्मत और आर.टी.ओ के दूसरे कामों के लिए ५० हजार रूपया खर्च किए मगर किसी न किसी वजह से इसे इस्तेमाल नहीं कर पाता था इसलिए थक हार कर आखिर में ७५ हजार रूपए का नुकसान उठाकर इसे बेच दिया। जिस व्यक्ति ने मुझसे यह कार खरीदी वह भी हादसे का शिकार हुआ। वह बच गया लैकिन उसके साथ बैठा व्यक्ति मर गया। उसने कार की दुबारा मरम्मत नहीं की बल्कि उसे एक भंगार वाले को बेच दिया।

  सन १९९० से २००८ के दरम्यान मैंने दस प्रकार की गाडीयां खरीदीं। दस गाडीयों में एक सुमो और एक मेटाडोर मैं आराम से इस्तेमाल नहीं कर सका और भारी नुकसान उठाकर उन्हें बेच दिया। इसतरह कोई गाड़ी आपके लिए नामुबारक/अशुभ और बदकिस्मत हो सकती है और आपको भारी नुकसान या हादसा पहुँचा सकती है। इसलिए अगर आप को एहसास हो कि कोई गाड़ी आपके लिए नामुबारक है तो तकदीर से लड़कर उसे हराने की कोशिश मत किजीए। आप खुद टूट जाएंगे, खैर इसी में है कि खामोशी से उसे आप बेच डालिए।

जीवन साथी का चुनाव:

- बहुत सी ऐसी आदतें होती हैं, जिन से हम गरीबी और मुफलिसी में यकीनन मुब्तिला हो जाते हैं। उन में से कुछ आदतें निम्नलिखित हैं:

१. इबादत में लापरवाही
२. अल्लाह तआ़ला की नाशुक्री
३. शरीर को नापाक रखना
४. घर को नापाक और गंदा रखना
५. अनावश्यक खर्च
६. झूठ, धोखाधड़ी और गुनाह का आदी होना
७. सूरज निकलने के बाद बहुत देर तक सोना
८. खाने पीने की चीज़ों का अपमान करना
९. धार्मिक किताबों का अपमान करना, वगैरा

आप के खानदान में अगर कोई इन बुरी आदतों का शिकार होगा तो सारे लोग तकलीफ उठाऐंगे, चाहे वह आपकी बीवी ही क्यों न हो। इसका मतलब यह है कि अगर आप मुत्तकी (नेक) भी हों, लैकिन आप की बीवी की खराब आदतों की वजह से अगर गरीबी आती है तो आप भी नेक होने के बावजुद उसके साथ तकलीफ उठाऐंगे। इसलिए गलत शादी में फंसने से पहले निम्नलिखित हदीस को याद रखना चाहिए:

- हज़रत अबु हुरैरा (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया, "औरत से ४ चीजों के वजह से शादी की जाती है:

१. उसके माल की वजह से
२. उसकी खानदानी शराफत की वजह से
३. उसकी खुबसूरती की वजह से
४. उसके दीनदार (धार्मिक) होने की वजह से

तुम हमेशा दीनदार को अहमियत दो (यानी दीनदार लड़की से ही शादी करो)। (बुखारी)

इसलिए अगर आपको चुनने का मौका मिले तो आप भी दीनदार लड़की से ही शादी करें। वरना उसकी गलत आदतों की वजह से आप भी गरीबी

के गड्ढे में गिर सकते हैं।

सिम्त (दिशा):

महान कवी अल्लामा इक्बाल ने फरमाया;

मीरे अरब को आई ठंडी हवा जहाँ से ।
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है ।।

उपर दिए गए शेर का मतलब है "जिस दिशा से मीरे अरब (अरब के बादशाह यानी हज़रत मुहम्मद (स.)) को ठंडी हवा आते हुए महसूस होती है, मेरा वतन उसी दिशा में है।"

हज़रत मुहम्मद (स.) हमेशा पूरब की तरफ रूख फरमा कर तशरीफ रखते थे। जब सहाबा कराम (रज़ि.) ने आप (स.) से दरयाफ्त किया कि "आप (स.) पूरब की तरफ रूख करके हमेशा क्यों बैठते हैं?" आप (स) ने फरमाया "मुझे इस दिशा से ठंडी हवा आती हुई मेहसूस होती है।"

- एक झोपडपट्टी वाले इलाके में जाइये और वहाँ की गलीयों में दोनों तरफ दुकानों और घरों का मुशाहिदा किजिए। आप को पता चलेगा कि जिन दुकानों और हॉटलों का रूख पूरब या दक्षिण की ओर हैं वह अच्छा कारोबार कर रही हैं और खुशहाल हैं। जबकी पश्चिम और उत्तर की ओर रूख वाली दुकाने अच्छा कारोबार नहीं कर रही हैं।

- ज़मीन के अतराफ चुंबकिय क्षेत्र, दक्षिण और उत्तर की दिशा में है। इसलिए अगर एक चुंबक को स्वतंत्र लटका दिया जाए तो अपने-आप दक्षिणी और उत्तरी दिशा अख्तियार कर लेगा। इस तरह एक ऊर्जा (Energy) की लहर दक्षिण पूरब से उत्तर पश्चिम की ओर भी बहती है।

  इसलिए वह दुकानें और व्यक्ति जिन की दिशा दक्षिण पूरब की तरफ हैं या दक्षिण या पूरब की तरफ हैं उन्हें अपने आप यह ऊर्जा (Energy) हासिल होती है। इस ऊर्जा (Energy) के प्रभाव से हौसला, सकारात्मक सोच, सुकून, ताकत, खुशहाली और उम्दा सोच हासील होती है।

- सूरज की रोशनी अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल की तरह है। अगर आप अपनी खिड़कियां पूरबी दिशा में खोलें तो आपको धूप मिलेगी। इससे आपका घर रौशन होगा। किटाणुओं का सफाया होगा। घर का वातावरण हरा भरा होगा। अगर किसी कमरे में सूरज की रौशनी नहीं पहुँच पाती तो उस कमरे में रहना असंभव नहीं होगा। लैकिन वातावरण बोझल, उदास, सुस्त और खाली खाली होगा। एक रौशन और एक अंधेरे कमरे से किसी एक कमरे का चयन करने का अगर आपको मौका दिया गया तो आप हमेशा रौशन कमरा चुनेंगे।

  इस तरह उत्तर या पश्चिम की सिम्त रूख करने से कोई दिवालिया नहीं होता लैकिन जब लोगों (ग्राहक) को चुनने की आज़ादी हो तो हमेशा ऊर्जा वाली दुकानों का रूख करते हैं। इसलिए पूरब और दक्षिण की सिम्त रूख वाली दुकानों का कारोबार हमेशा तरक्की करता है।

  इसलिए जायदाद के खरीदते वक़्त दक्षिण या पूरब का रूख या दक्षिण-पूरब की तरफ रूख वाली जगह खरीदीये। इसी सिम्त रूख करके अपने ऑफिस में बैठीये और अपनी मशीनों में कच्चा माल डालने की दिशा सिर्फ यही रखें ताकि मुफ्त में ऊर्जा मिले और कम मेहनत में ज्यादा खुशहाली आए।

Inertia *का असर:*

अगर आप खड़े खड़े बस में सफर करें तो जब बस आगे बढेगी आप पीछे की तरफ दबाव महसूस करेंगे। और अगर आप हॅन्डल को मजबुती से ना पकड़ें तो आप पीछे की तरफ गिर पड़ेंगे।

Inertia या जमूद प्राकृतिक ताकत है। और यह इन्सानियत के लिए फायदेमंद भी है। अगर आप जब बस रफ्तार बदल रही हो उस समय सावधानी बरतें तो इसकी तकलीफ से बचे रहेंगे।

इस तरह जमूद की ताकत रूहानी (Spritual) स्तर पर भी होती है। जब आप खुशहाल होना शुरू हों या जब आपके पास ज्यादा मात्रा में दौलत आने लगे तो मुम्किन है आप एक नकारात्मक ऊर्जा महसूस करें जो दुर्घटना, बीमारी, माल का नुकसान, खानदान की तरफ से परेशानी या साथियों से परेशानी वगैरा के रूप में जाहिर हों। यह ताकत आपको पीछली माली हालत पर बरकरार रखने की कोशिश करती है।

बस में गिरने से बचने के लिए आप उसकी छत में लगे हॅन्डल का सहारा लेते हैं। माली हालत बिगड़ने से बचाने के लिए आपको अल्लाह तआ़ला की रस्सी को मज़बुती से पकड़ना चाहिए। इसके अलावा आपके पास खुद को बचाने का कोई रास्ता नहीं है।

अल्लाह तआ़ला कुरआ़न करीम में फरमाता है:

- जो व्यक्ति अल्लाह तआ़ला पर ईमान ले आया उसने मज़बुत रस्सी को थाम लिया जो कभी टूटेगी नहीं और अल्लाह तआ़ला सुनने वाला, जानने वाला है। (सूरह बक़रा आयत नम्बर २५६)

  अपने ज़ाती मुशाहिदे/अध्ययन से मैंने पाया कि तरक्की करते वक़्त यह नकारात्मक दबाव जैसा एक व्यक्ति महसूस करता है वैसे ही एक कौम भी महसूस करती है। उदाहरण के तौर पर: हज़रत उमर फारूक (रज़ि.) की खिलाफत के दौर में मुस्लिम कौम ने दो बड़ी विश्व ताकतों यानी रोमियों और फारसियों को पराजित किया। रोमियों की २ लाख फौज को ६० हजार मुस्लिम मुजाहिदीन ने पराजित किया। उस जंग में सिर्फ ३ हजार मुजाहिदीन शहीद हुए। फारसीयों की देढ़ लाख फौज को ३० हजार मुस्लिम मुजाहिदीन ने पराजित किए और ३ से ५ हज़ार मुजाहिदीन शहीद हुए। उस विजय के बाद मुसलमानों की खुशहाली में बेपनाह इजाफा हुआ। मगर कुदरत के नकारात्मक प्रभाव भी जाहीर हुए। मिसाल के तौर पर दोनों आलमी ताकतों को पराजित करने के बाद २५ हजार मुस्लिम मुजाहिदीन को ताऊन (Plague) की बीमारी की वजह से उन्हें अपने बिस्तर पर ही मौत आ गयी। और उनके दारूल खिलाफा (Captial) मदीना में जबरदस्त कहत (अकाल) पड़ गया।

  'अकाल' का इलाज सिर्फ बारिश ही है और बारिश बरसाना अल्लाह तआ़ला के अेख्तियार में है। हज़रत उमर फारूक (रज़ि.) ने कहत से निजात पाने के लिए अल्लाह तआ़ला से रो रो कर इतनी दुआ़एं मांगी की रोने की वजह से उनके चेहरे पर आंसुओं के निशान बन गए। कुछ समय बाद अल्लाह तआ़ला ने अकाल से मुक्ति प्रदान की और मुस्लिम कौम खुश्हाल हो गयी, मगर जमुद के प्रभाव के बगैर नहीं।

- अल्लाह तआ़ला कुरआ़न करीम में फरमाता है, "ज़माने की कसम,

इन्सान नुकसान में है सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाऐ और नेक कर्म करते रहे और आपस में हक बात (सच्चाई) की नसीहत और सब्र की तलकीन करते रहें।" (सूरह असर मुकम्मल)

हमें जमूद के नकारात्मक असरात से बचने के लिए सब्र और इबादत से अल्लाह तआ़ला की मदद तलब करनी चाहिए। यही जमूद के नकारात्मक असरात से बचने का उचित रास्ता है।

▼▼▼▼▼▼▼

हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया

१. जब तुम में से कोई काम करे तो उसे पुख्ता (Perfect) तरीके से अंजाम दे।

२. अल्लाह के नजदीक बेहतरीन काम वह है जिसमें बाकायदगी हो।

३. किसी कौम की जुबान सीख लो उसके नुकसान से सुरक्षित हो जाओगे।

४. मोमिन वह है जिसे अपनी बदी से अफसोस हो और अपनी नेकी से खुशी हासिल हो।

५. आदमी की जन्नत उसका घर होता है।

६. (अल्लाह तआ़ला से) मालदारी और खुशहाली की उम्मीद रखना भी इबादत है।

७. अफसोस भी तौबा है।

८. इन्सान के इस्लाम पर अमल करने की खूबी यह भी है कि वह बेकार बातों को छोड़ दे।

९. तुम लोगों को अपनी दौलत से आकर्षित नहीं कर सकोगे। इसलिए उन्हें अपने अख्लाक से आकर्षित करो।

१०. इन्सान जिससे मुहब्बत करेगा कयामत में उसी के साथ होगा।

११. जिसका खाना बहोत होगा, उसकी बीमारी बहोत होगी। और जिसका खाना कम होगा उसकी दवा कम होगी।

१२. मुझे (हज़रत मुहम्मद (स.) को) संसार को बुलंद अखलाक सिखाने के लिए भेजा गया है।

१३. ईमान में वही कामिल तरीन (Perfect) मोमिन है जो इख्लाक (चरित्र) में सबसे बेहतर हो।

१४. जब किसी कौम का आदरनीय आदमी तुम्हारे पास आए तो तुम उसकी इ़ज़्ज़त करो।

१५. मेरी उम्मत के उलमा (इस्लामी विद्वान) की इज्ज़त करो। क्योंकी वह रूए ज़मीन के सितारे हैं।

१६. कर्मों (आमाल) का दारोमदार नियतों पर होता है।

१७. मुतकब्बिर (घमंडी) के साथ तकब्बुर (घमंड) करना सदका (नेक काम) है।

१८. मोमिन की नियत उसके कर्म से बेहतर है।(क्योंकी वह सोचता तो बहुत से अच्छे काम है। मगर कमजोरी की वजह से उतने कर नहीं पाता।)

१९. हम नबीयों को यह हुक्म दिया गया है कि हम लोगों के दिमागी स्तर के मुताबिक उनसे बातचीत किया करें।

२०. इन्सान की खूबसूरती उसकी जुबान में छुपी हुई है।

२१. ईमान ने विजय को कैद कर दिया है (यानी हमेशा ईमानी ताकत ही विजयी होती है।)।

२२. संकट (Crisis) का तेज़ी अेख्तियार करना उसका हल होना है। संकट! तेज़ी अेख्तियार कर तो तू खुल जाएगा।

२३. अल्लाह तआ़ला पर ईमान लाने के बाद सबसे बड़ी बुद्धि की बात लोगों का दिल रखना है।

२४. सलाह (परामर्श) कर लेने के बाद कभी कोई इंन्सान बरबाद नहीं होगा।

२५. आपसी दुश्मनी से बचो क्योंकि इससे खूबियां मर जाती हैं और ऐब (दोष) जिंदा हो जाते हैं।

२६. बदतरीन इन्सान उल्मा (विद्वान) है जब वह बिगड़ जाएं।

२७. वह व्यक्ति कभी तबाह नहीं होगा जिसने अपनी हैसियत पहचान ली।

२८. अगर तुम्हें एक दूसरे के भेद मालूम हो जाया करें तो तुम एक दूसरे के कफन-दफन में भी शरीक न हुआ करो।

२९. खुशामद मोमिन के अख्लाक में से नहीं सिवाय इसके कि यह इल्म की खातिर हो (यानि उस्ताद की खुशामद जायज़ है)।

३०. मोमिन आदमी भोला भाला और दान देने वाला होता है। और फाजिर (गुनहगार आदमी) कंजूस और कमीना होता है।

३१. सखी (दान देने वाला) जाहिल अल्लाह के नजदिक कंजूस आबिद (बहुत इबादत करने वाला) से ज्यादा महबूब है।

३२. मोमिन ऐब जू (लोगों में दोष ढूंडने वाला), लानत करने वाला, बेहुदा, बेशर्म नहीं होता।

३३. तुम गुमान से बचो कि गुमान सबसे ज्यादा झुठी बात है?

३४. तुम्हारे गुनहगार होने को इतना ही काफि है की तुम हर वक़्त झगडते रहो।

३५. औरत की मिसाल टेढ़ी पसली की तरह है। अगर तुम उसे सीधा करने लगो तो तुम उसे तोड़ दोगे। और अगर उसकी दिलदारी करोगे तो उससे फायदा उठाओगे। (जवामे कलम अजः डॉ. जहूर अहमद ज़ौहर, रोज नामा इन्कलाब २-२-२००५)

▼▼▼▼▼▼▼

४२. एक ही वक़्त में मुत्तकी और दौलतमंद बनना क्या मुमकिन है?

- आम तौर से मुसलमानों में यह बात मश्हूर है की हज़रत मुहम्मद (स.) के मुकददस साथी सहाबा कराम (रज़ि.) मुफलिस और गरीब लोग थे। और उन्होंने जान बुझकर अपने लिए गरीबी को पसंद कर रखा था। इसी लिए उन हज़रात ने रूहानी तरक्की की ऊंची मंजिले तय की थीं। यह गलत फहमियां ईसाइयों और यहूदियों के ज़रिए फैलाई गई है ताकि मुसलमान कारोबारी और राजनैतिक जिंदगी से अपने आप को दूर रखें। और उनके दिल में कभी कारोबारी और राजनैतिक वर्चस्व हासिल करने का विचार भी न आए। और इस तरह ईसाइ और यहूदी सारी दुनिया के तमाम माल व दौलत और राजनैतिक सत्ता के मालिक बने रहें।
- अल्लाह तआ़ला ने कुरआ़न करीम में माल और दौलत को "खैर" के नाम से याद किया है। बहुत सारे सहाबाऐं कराम (रज़ि.) के पास यह खैर बहुत ज्यादा मात्रा में थी। यानी बहुत सारे सहाबाएं कराम (रज़ि.) बहुत ही मालदार इन्सानों में से थे। उनमे से कुछ के हालात निम्नलिखित हैं:
- ***नोट :*** उस ज़माने में रूपया पैसा, दिरहम और दीनार के रूप में थे। आप सोना और चांदी के वज़न से इनकी मिकदार याद रखें ताकी आज के दौर में वह दिरहम और दीनार कितने कीमती होते हैं इसका आपको अंदाज़ा रहे।

  हज़रत मुहम्मद (स.) के ज़माने में साढ़े ५२ तोला चांदी २०० दिरहम, और साढ़े ७ तोला सोना १० दीनार के बराबर था। आज अप्रेल २०१२ में जब सोना ३०००० रूपया, और चांदी ५६० रूपया तोला है, एक दीनार २१००० रूपया और एक दिरहम १४८ रू. के बराबर है। आइये इस मालूमात से हम सहाबा ए कराम (रज़ि.) की दौलत का अंदाजा करने की कोशिश करते हैं।

हज़रत शेख अब्दुल कादिर जीलानी (रह.):

आप (रह.) बड़े बुजुर्ग वली और आबिद (तपस्वी) थे, और बगदाद (इराक) में कयाम फरमाते थे। एक मरतबा आप मस्जिद में बयान फरमा रहें थे। एक व्यक्ति आया और बुरी खबर लाया कि हज़रत अब्दुल कादिर जीलानी (रह.) का तिजारती जहाज (Merchant ship) समुंदर में डूब गया। आप कुछ पल खामोश रहे और फिर अपना बयान शुरू रखा। कुछ देर बाद दूसरा व्यक्ति खुशखबरी लाया कि पहली खबर गलत थी, उनका जहाज सुरक्षित है। किसी दूसरे व्यक्ति का जहाज डूबा है। आप एक पल खामोश रहे फिर अपना बयान जारी रखा। जब आपका बयान खत्म हुआ तो एक मुरीद ने पुछा कि बुरी और अच्छी खबर सुनने के बाद आप क्यों खामोश रहे? आपने जवाब दिया, "मैं अपने दिल पर गौर कर रहा था की बुरी और अच्छी खबर सुनने के बाद उसपर क्या असर हुआ। अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा किया की दिल पर कोई असर नहीं हुआ।"

मौजूदा दौर में समंदरी जहाज़ों के मालिक दुनिया में सबसे ज्यादा मालदार हैं। इसतरह उस ज़माने में भी वह समाज के सबसे ज्यादा दौलतमंद लोग थे। हम उनके तकवा का इस बात से अंदाजा लगा सकते हैं कि जहाज के डूबने और बचे रहने का उनपर कोई असर नहीं हुआ।

हज़रत अब्दुल कादिर जीलानी (रह.) ने बचपन ही में कुरआन, हदीस और दीनी ज्ञान हासिल कर लिया था। और शिक्षा पूरी करने के बाद २५ साल तक आप खंडहरों और उजड़े हुए घरों में रहे ताकि बगदाद में तनहाई (एकांत) नसीब हो और अल्लाह तआ़ला की इबादत होती रहे। विलायत हासिल करने के बाद आप ने जनता में सीधे सच्चे रास्ते पर चलने का प्रचार और रहनुमाई फरमाई। आप की खानखाह (आश्रम) में हज़ारों विद्यार्थी और इबादत गुज़ार रहते थे। जिसतरह आप ने अपनी जिंदगी नेक कर्मों में और ईश्वरीय संदेश पहूँचाने के लिए समर्पित कर दी। तो अल्लाह तआ़ला ने भी आप पर अपनी बरकतें नाज़िल फरमायीं और उन्हें बेहद माल और खुशहाली अता की, ताकि आप हज़ारों यतीमों (अनाथों) का पालन पोषण करें और उन बंदो को पनाह दें जो अकेले रहकर अल्लाह तआ़ला की इबादत करना चाहते हों।

- हज़रत सुलैमान (अ.स) और दाऊद (अ.स) ना सिर्फ पैगंबर थे बल्कि अपने देश के बादशाह भी थे। उन दोंनो पैगंबराने कराम के पास बेहद दौलत और सत्ता थी। फिर भी वह बेहद मुत्तकी (नेक) और इबादत गुजार थे इसलिए अल्लाह तआ़ला ने कुरआने करीम में दोनों की तारीफ फरमाईं।

  उपर बयान की गई रिवायात से हम यकीन के साथ कह सकते हैं कि एक साथ मुत्तकी (नेक) और मालदार होना संभव है।

  इस लेख की ज़्यादातर जानकारी मासीक पत्रिका ''नवाए हादी'' कानपूर से ली गयी है।

हज़रत इमाम अबू हनीफा (रह.):

हज़रत इमाम अबू हनीफा (रह.) एक आलिम, आबिद और इराक के बड़े दौलतमंद व्यक्ति थे। आप की मिल्किअत में कई कपड़े की दुकानें थीं। एक बार अपनी दुकानों का दौरा करते हुए एक खराब कपड़ा नज़र आया। आपने अपने कारोबारी पार्टनर हाफिज़ गयास को हिदायत की कि यह नाकिस कपड़ा बेचते हुए ग्राहक को इसका ऐब ज़रूर बता देना। दुसरे दिन आप दुबारा उस दुकान में गए और उस नाकिस (खराब) कपड़े के बारे में पूछा। हाफिज़ बिन गयास ने कहा, "अफसोस कपड़ा बेचते हुए यह ऐब (खराबी) मैं बताना भूल गया।" हज़रत इमाम अबू हनीफा (रह.) को बड़ी निराशा हुई। आपने उस दिन की तमाम आमदनी यानी ३० हज़ार दीनार का दान (Donation) दे दिया और हाफिज़ बीन गयास को अपने कारोबार से निकाल दिया।

- इस्लाम में ब्याज लेना हराम है। अगर आप किसीको कर्ज़ दें और कर्जदार से कोई नाज़ायज फायदा उठाएं तो वह भी ब्याज में शामिल होगा। इमाम अबू हनीफा (रह.) भी इस सिलसिले में इतने सावधान थे कि कर्जदार के मकान की छाया में भी खड़ा रहना पसंद नहीं करते थे।
- आप (रह.) ताबईन में से थे। यानी आपने सहाबा (रज़ि.) को ईमान को हालत में देखा था। आप मश्हूर सहाबी ए रसूल हज़रत अब्दुल्ला बिन

मसऊद (रज़ि.) के शागिर्दों के शार्गिद थे। इसीलिए आप (रह.) की तालीमात हज़रत अब्दुल्ला बिन मसऊद (रज़ि.) की तालिमात पर ही निर्भर हैं। आपने उम्मते मुस्लिमा की उस दौर में रहनुमाई फरमाई जब हदीस की किताबें जैसे बुखारी शरीफ, मुस्लिम शरीफ वगैरा नहीं लिखी गई थी और झूठी रवायत बहुत ज़्यादा आम थीं। हज़रत इमाम बुखारी (रह.) ने भी आपके शागिर्द जैसे मक्की बिन इब्राहीम (रह.) वगैरा से हदीसें सीखी हैं।

तक्वा (अल्लाह का ड़र) के साथ आपकी इबादतों का यह हाल था कि किताबों में लिखा है कि आपने ४० साल सारी रात इबादत की है। अल्लाह तआ़ला आप की कब्र पर रहमत की, बरकत की बारिश फरमाएं।

किताब "सीरत ए इमाम अबू हनीफा (रह.)" मुसन्निफ मुफ्ती अज़ीजुर्रहमान बिज्नोरी (रह.) ने इमामे आज़म (रह.) की मुक्कमल स्वानेह हयात (जीवनी) लिखी है। ज्यादा मालुमात के लिए यह किताब ज़रूर पढ़ें।

हज़रत उस्मान बिन अफ्फान (रज़ि.):

हमारे पास सही रिकार्ड नहीं कि हज़रत उस्मान बिन अफ्फान (रज़ि.) के पास कितने लाख या करोड़ दिरहम या दीनार थे। लैकिन तबूक की जंग के मौके पर उन्होंने जितनी दौलत का चंदा दिया उसी से हम अंदाज़ा लगा सकते हैं कि वह कितने बड़े मालदार थे। आप (रज़ि.) ने तबूक की जंग के मौके पर ६५० ऊंट, ५० घोडे, साज़ो सामान के साथ और १ हज़ार दीनार नकद दिए थे।

हज़रत उस्मान बिन अफ्फान (रज़ि.) उन १० सहाबा किराम (रज़ि.) (अश्रा मुबश्शिरा) में से थे। जिन्हें हज़रत मुहम्मद (स.) ने उनकी जिंदगी में ही जन्नत की बशारत (खुशखबरी) दी थी।

- एक बार एक व्यक्ति किसी दूसरे शहर से मदीना आया और हज़रत मुहम्मद (स.) से आर्थिक सहायता मांगी। हज़रत मुहम्मद (स.) ने उस व्यक्ति को हज़रत उस्मान बिन अफ्फान (रज़ि.) की सेवा में रवाना फरमाया और हिदायत फरमायी कि हज़रत उस्मान (रज़ि.) से अपनी हालत बयान करें, और उसे यकिन दिलाया की हज़रत उस्मान (रज़ि.) उसकी मदद् जरूर करेंगे। वह शाम के वक़्त हजरत उस्मान (रज़ि.) के घर पहुँचा। जब वह घर में दाखिल हुआ तो उसने देखा कि हज़रत उस्मान (रज़ि.) एक गुलाम को डांट रहे थे। क्योंकि उसने कमरे में दो चिराग रौशन कर दिए थे, जबकी रौशनी के लिए एक ही काफी था। मेहमान ने सोचा कि यह आदमी (हज़रत उस्मान बिन अफ्फान (रज़ि.)) जब ज्यादा तेल जलाने पर गुलाम को डांट रहे हैं, अगर वह रूपया बचाने के लिए इतनी एहतियात कर रहें हैं तो मेरी मदद् के लिए सखावत क्यों करेंगे?

  इसलिए उसने हज़रत उस्मान (रज़ि.) से कुछ तलब नहीं किया। दूसरे दिन वह हज़रत मुहम्मद (स.) की खिदमत में हाज़िर हुआ और हज़रत उस्मान (रज़ि.) के घर का हाल सुनाया। हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जो कुछ तुमने देखा वह एक मालिक और उसके गुलाम के दरम्यान का मामला था। तुम्हें परेशान होने की कोई जरूरत नहीं, तुम हज़रत उस्मान बिन अफ्फान (रज़ि.) से आर्थिक सहायता तलब करो।"

  दूसरे दिन फिर वह व्यक्ति हज़रत उस्मान (रज़ि.) की खिदमत में हाज़िर हुआ। अपने हालात सुनाए और आर्थिक सहायता तलब की। हज़रत उस्मान (रज़ि.) ने उसकी मांग के मुताबिक उसे माल अता किया और फिर उस रकम को यह कहकर दुगना कर दिया की यह जायद रकम उस एज़ाज़ (इज़्ज़त अफज़ाई) का जवाब है, जो हज़रत मुहम्मद (स.) ने दूसरे सहाबा कराम (रज़ि.) के मुकाबले में मुझे चुना है।

  हज़रत उस्मान (रज़ि.) गलत और बेजा खर्चों के बारे में सख्त एहतियात बरतते थे। लैकिन नेक कामों के लिए खर्च करने में हमेशा तैयार रहते। इसलिए अल्लाह तआ़ला ने उन पर बरकतों की बारीश फरमायी और उन्हें असीमित दौलत और खुशहाली अता फरमायी।

हज़रत अब्दुर रहेमान बिन औफ (रज़ि.):

- अब्दुर रहेमान बिन औफ जो आठवे मुसलमान थे बड़े दौलममंद और खुशनसीब ताजिर थे। उनके पास इतनी दौलत थी एक मरर्तबा उम्मुल मोमिनीन हजरत उम्मे सलमा की खिदमत में हाजिर होकर अर्ज किया मुझे खौफ है की दौलत की कसरत मुझे हलका ना कर दे। उन्होंने फरमाया उसको सर्फ कर दो। उसपर उन्होंने इस तरह अंमल किया की एक जमिन ४० हजार दीनार में फरोख्त करके इसकी किमत खैरात की। एक मरर्तबा एक पुरा तिजारती कारो जिसमें ७०० उंट पर सामान था। माआ उंट के सदका कर दिया। अपनी पूरी उमर में तिस हजार गुलाम आजाद किए और वफात के वक्त उमुहतुल मोमिनीन के इख्जात के एक बाग की वसीहत कर गए। जो ४ लाख में फरोख्त किया गया। ५० हजार दीनार खुदा की राह में खैरात किए और हर बदरी सहाबी के लिए चार चार लाख दीनार की वसीअत की। उस वक्त जितने असाहाबा बदर जिंदा थे। उन सबको वसीअत के मुताबिक पूरी रकम दी गयी। इतनी दौलत सर्फ करने के बाद भी बड़ा सरमाया छोड़ गए। सोने की इतनी बड़ी बड़ी सलाएं थी की उनको हथोडों से काटा गया और काटने वालों के हाथ में आबे पड गए। उनके इस्तेबाल और मवेशी खाने में एक हजार उंट उसी कदर घोडे और दस हजार बकरीयां थी। वफात के वक्त चार बीवीयां थी। उन चारों को तरक्की के आठवे हिस्से में ८०-८० हजार मिले। रसूल अल्लाह (स.) की जिंदगी में भी उन्होंने कारखैर में बहुत कुछ सर्फ किया था। और उनकी दौलत जिस कदर बढ़ती जाती थी उस कदर सदका और खैरात में इजाफा हो जाता था। चुनांचा एक मरर्तबा ४ हजार दुसरी मरर्तबा ४० हजार और तिसरी मरर्तबा ४ करोड दरहम खैरात किए। और पांच सौ उंट मुजाहिदीन की सवारी के लिए दिए। १५ हजार कैदीयों पर सर्फ किया। (महानामा दारूल उल्मा दिसंबर १९७३ बा हवाला अल इस्लाम वल हजरत अल गरिबत)

मक्का मदीना के पेशे

मक्का और मदीना में वह सब पेशा था जो किसी मत्ता मदन शहर में हो सकता हो और उस जमाने में यह जरूरी नहीं था की बच्चा बाप का ही पेशा इख्तियार करें। उस जमरने के काबिले जिक्र पेशा यह था। १) परचा (कपड़ा) फरोश २) गल्ला फरोश ३) अत्तर फरोश ४) तेल फरोश ५) शराब फरोश ६) चर्म फरोश ७) मवेशी फरोश ८) कसाब ९) दर्जी १०) बढ़ाई ११) लोहार १२) तीर साज १३) मग्नी (गवय्या) और १४) बैतार (चार पांव वाले जानवरों का इलाज करनेवाले) अब्नि कनीबा ने जौहरे इस्लाम के वक्त बाज सहाबा और कफर के पेशे इसतरह बताए

है। हज़रत अबु बकर सिद्दीक (रज़ि.) और हज़रत उस्मान (रज़ि.) कपड़े की तिजारत करते थे। हज़रत सय्यद बिन अबि वकास तिरसाज थे। हज़रत जुबैर (रज़ि.) गोश्त फरोश्त थे जबकी इनके वालदा अवाम ख्याती (दर्जी) का पेशा करते थे। हज़रत उमर व बिन अल आस कसाब थे। हज़रत उस्मान (रज़ि.) बिन तलाहा (कलिद बरदार काबा) दर्जी थे। हज़रत अबु सुफियान बिन हराब तेल और चमड़े की तिजारत करते थे। अकाबा बिन अबी वकास नजारी (बढाई) का काम करते थे।उम्मीया बिन खलिफा फल फरोश्त और काबा बिन अबी मुईद शराब फरोश्त था। (यह वकह कमीना है जिसने नबी करीम (स.) के गर्दन पर सजदे के हालत में उंट की वजडी रखा था।) अब्दुल्ला बिन जैद अन जानवर पालते और चौपाए फरोख्त करता था। आस बिन हसाम (अबु जहल का भाई) वालीद बिन मगैरा और हज़रत खबाब बिन (रज़ि.) अर्थ अहमगर (लोहार) थे। आस बिन वायल बैतार यानी जानवर का इलाज करता था। नासीर बिन हारिस रब्बाब पर गया करता था। अबु तालिब अत्तर फरोश्त थे। बाज वक्त गेहूं भी फरोख्त करते थे और हज़रत अब्बास (रज़ि.) बिन अब्दुल मुत्तलिब सुदी लेनदेन के अलावा मौसम हज में अत्तर भी फरोख्त करते थे। चुंकी मक्का मकर्रमा में खेती बाड़ी मुनकिन न थी इसलिए मक्का मुकर्रमा का हर बाशिंद किसी ना किसी कारोबार से जुड़ा था। (सिरतल मुन्तबा अज शहा मिस्बाउदीन शकील जिल्द अव्वल सफा नं ७८) उपर बयान किए गए कुछ हजरात के हाल मंदर्जाजेल है।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.):

'इमान लाने' के वक़्त हज़रत अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि.) के पास ४० हज़ार दीनार थे जिसका बड़ा हिस्सा आप (रज़ि.) ने इस्लाम के प्रचार में खर्च कर दिए। जो बची रकम थी वह आप (रज़ि.) ने तबूक की जंग के वक़्त हज़रत मुहम्मद (स.) की सेवा में पेश कर दिया। आप (रज़ि.) ने उस वक़्त १० हज़ार दीनार का चंदा दिया था। आप (रज़ि.) कपड़े के बड़े व्यापारियों में से थे।

हज़रत अबसुफियान (रज़ि.):

आप (रज़ि.) मक्का ए मुकर्रमा के बहुत ही मालदार लोगों मे से थे। आप का 'शाम' देश में बलकार के मुकाम पर 'नकनिस नामी' अपनी मिल्कियत का गांव था। आप (रज़ि.) जैतून का तेल और चमड़े के व्यापारी थे।

हज़रत हकीम (रज़ि.) इब्ने हज़ाम:

आप (रज़ि.) हज़रत खतिजा (रज़ि.) और हज़रत जुबैर (रज़ि.) के चचेरे भाई थे। एक मरतबा उन्होंने हज किया तो एक सौ कुर्बानी के जानवर साथ ले गए, और उनपर बेशकिमत ज़िरा (एक कीमती पर्दा) की झोली थी। और अरफा में एक सौ गुलाम खुदा की राह में आजाद किए जिनकी गर्दनों में चांदी की तखतियां थी और उनमें "हज़रत हकीम (रज़ि.) इब्ने हज्जाम की जानिब से खुदा की राह में आज़ाद" नक्श था। हज़रत हकीम (रज़ि.) ने एक हज़ार बकरियां कुरबान करके 'पवित्र काबा' पर चढ़ाईं। वह अपने ज़माने के बड़े फय्याज और पुरचश्म व्यापारी थे। व्यापार के लिए 'यमन' और दो मरतबा जाड़े और गर्मी में 'शाम' देश जाया करते थे। उन्होंने व्यापार के माध्यम से बड़ी दौलत हासिल की थी।

हज़रत साद बिन वक्कास (रज़ि.):

आप (रज़ि.) मदीने के बड़े दौलतमंदो में से थे। उन्होंने अपनी वफात के वक़्त ढ़ाई लाख दिरहम छोड़े थे। आप तीर बनाते और खजूर के पेड़ों की इस्लाह करते थे।

हज़रत अब्दुल्ला बिन अब्बास (रज़ि.):

आप (रज़ि.) भी बहुत दौलतमंद थे। उनके पिता हज़रत अब्बास जाहिलियत (अज्ञानता) के ज़माने में हाश्मी परिवार के सबसे बड़े दौलतमंद आदमी थे। उनका बैंक की तरह (Finance) का कारोबार था। हज़रत मुहम्मद (स.) ने हज्जतुल विदा के दिन उनके द्वारा दिए गए सारे कर्जों के ब्याज जो लोगों के ज़िम्मे बाकी थे माफ कर दिए थे।

हज़रत अब्दुल्ला बिन रबीआ (रज़ि.):

उनसे एक बार हज़रत मुहम्मद (स.) ने ४० हज़ार दीनार कर्ज लिया था। और वापस करते वक़्त बाल बच्चों और माल दौलत में बरकत की दुआ की थी। जाहिलियत (अज्ञानता) के ज़माने में एक साल सारा कुरैश कबीला चंदा करके 'पवित्र काबा' पर गिलाफ (Cover) चढ़ाता था। और दूसरे साल हज़रत अब्दुल्ला अकेले यह खिदमत अंजाम देते थे।

हज़रत तलहा (रज़ि.) बिन उबैदुल्ला:

आप (रज़ि.) अरब के ११ मश्हूर फय्याज दौलतमंदो में से थे। एक बार आप (रज़ि.) ने अपना एक बाग हज़रत उस्मान (रज़ि.) के हाथ सात लाख दिरहम में बेचा और यह पूरी रकम एक रात में मदीना वालों में बांट दी। अपनी वफात के वक़्त उन्होंने २० लाख दिरहम और २ लाख दीनार छोड़े थे।

हज़रत जुबैर (रज़ि.) बिन अवाम:

आप (रज़ि.) 'अश्रहतुल मुबश्शिरह' (वह १० सहाबा जिन को उनकी ज़िंदगी में ही स्वर्ग की खुशखबरी सुनाई गई) में से थे। आप (रज़ि.) भी दौलतमंद और फय्याज थे। आपके पास एक हज़ार गुलाम थे जो आपको खिराज (टॅक्स) देते थे। और आप यह सारी रकम सदका (दान) कर देते थे। आप (रज़ि.) की वफात के वक़्त आपके पास कुछ रिवायतों से ३ करोड़ ५२ लाख और कुछ रिवायतों से ५ करोड़ की रकम थी।

- सहाबा ए कराम (रज़ि.) ने दौलत का बड़ा हिस्सा व्यापार से हासिल किया था। हज़रत अबू तालिब (रज़ि.) इत्र (खुशबू) और कपड़े का व्यापार करते थे। हज़रत अबू बक्र (रज़ि.) हज़रत उमर (रज़ि.), हज़रत तलाह (रज़ि.), हज़रत अब्दुर रहेमान बिन औफ (रज़ि.) वगैरा कपड़े का व्यापार करते थे। हज़रत उत्बा (रज़ि.) का फरनीचर (निजारी) का कारोबार था। हज़रत उस्मान बिन तलहा (रज़ि.) और हज़रत जुबैर (रज़ि.) के पिता का गारमेंट (खयाती) का कारोबार था। हज़रत उमर बिन अलआस (रज़ि.) जानवर ज़बाह करते और चमड़े और खुश्बुजात (इत्र) बेचते थे। चूंकि मक्का मुकर्रमा में खेतीबाड़ी संभव ना थी इसलिए मक्का मुकर्रमा का हर निवासी किसी ना किसी कारोबार से जुड़ा था।

  (मासिक "नवा ए हादी" कानपुर, पेज ६०)

- ***हज़रत अनस (रज़ि.) बिन मालिक:***

  (२२३३) हज़रत उम्मे सलीम (रज़ि.) अनहा से (जो हज़रत अनस

के वालदा में) रिवायत है की उन्होंने अर्ज किया या रसूल अल्लाह यह अनस आपका खादीम है आप अल्लाह से उसके लिए दुआ फरमा दीजिए। आपने यह दुआ फरमायी खुदा या उस (अनस) के माल को ज्यादा कर उसकी औलाद बढ़ा और जो निअमते तुने अता कि है उनमें बरकत अता फरमा। हज़रत अनस फरमाते है की खुदा की कसम (आह हज़रत (स.) की दुआ की बरकत से) मेरा अमाल बहुत ज्यादा है और मेरी औलाद दूर कि औलाद आज शुमार में (१००) से ज्यादा है। हजरत अनस (रज़ि.) बचपन में नबी करीम (स.) की खिदमत करते थे जब आप जवान हुए तो अपने वक्त के आमिरतरीन इन्सानों में से थे।?

- हज़रत सुलैमान और दाऊद न सिर्फ पैगम्बर थे बल्कि अपने मुल्ख के बादशाह भी थे। वह दोनों पैगम्बर उन कर्म के पास बेहद दौलत और इख्तेदार था। फिर भी वह बेहद मुत्तकी और इबादत गुजार थे। इसलिए अल्लाह तआलाने कुरआन करीम में दोनों की तारीफ फरमाई।

उपर बयान की गई रिवायतों से हम यकिन के साथ कह सकते है की बैक वक्त मुक्त मुत्तकी और मालदार होनो मुनकिन है। (इस मजमुन का ज्यादातर मालुमात महानामा नवे हदीस जनवरी २०१२ कानपूर सफा ६० से लिया गया है।)

हज़रत मुहम्मद (स.):

४० साल की उम्र में हज़रत मुहम्मद (स.) के पास २५ हज़ार दीनार थे। जो कि तकरीबन ५२ करोड़ रूपये के बराबर है। उन्हे आपने इस्लाम की दावत में सर्फ कर दिया। मगर जब गज़वात का सिलसिला शुरू हुआ तो फिर शरिअत (इस्लामी कानून) के मुताबिक हर 'माल ए गनीमत' (जंग में दुश्मन सिपाहियों का छोड़ा हुआ सामान) का २०% (खमसा) मिलने लगा। उस 'माल ए गनीमत' को भी आप सारा का सारा तक्सीम कर दिया करते थे। मगर जो ज़मीन थी वह बाकी रही। मदीना और खैबर के पास आप (स.) की कई जमीनें थी जिसपर खेती होती थी और 'अज़्वाजे मुतहहरात' (हज़रत मुहम्मद (स.) की पाक पत्नियों) को साल भर का अनाज मिला करता था।

उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) (हज़रत मुहम्मद (स.) की पत्नियां) भी इतनी सखी (दान देने वाली) थीं कि सारा का सारा अनाज सदका कर देती थीं। हज़रत मुहम्मद (स.) के देहांत के बाद जब इस्लामी हुकूमत मज़बुत हुई तो उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) के पास लाखों के हिसाब से वजीफे और तोहफे आने लगे। मगर उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) सब का सब सदका (दान) कर दिया करती थी। हज़रत आएशा (रज़ि.) के कई ऐसे वाक्यात हैं कि आपने लाखों दीनार सदका कर दिया और आपने रोज़ा इफ्तार के लिए भी कुछ ना रखा।

तो हज़रत मुहम्मद (स.) और उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) के कई दिन तक खजूर और पानी पर गुज़ारा करने के जो वाक्यात हम पढ़ते हैं, आप हज़रात का वह हाल गरीबी की वजह से ना था बल्कि सखावत (अत्याधिक दान) की वजह से था।

नबी करीम (स.) के वालदा मोहतरमा :

नबी करीम (रज़ि.) के वालदा मोहतरमा हज़रत अब्दुल्ला बिन अब्दुल मुत्तलिब भी कामयाब ताजिर थे। आप का इंतेकाल एक तिजारती सफर में मदीना मुन्नवरा के करीब सिर्फ २५ साल की उम्र में हो गया था। मगर इस उमर में भी आपने जो कुछ कमाया था और जो कुछ तरक्की आपने अपने मोहतरमा बिवी के लिए छोड़ा था वह भी आपके कम उमरी के हिसाब से बहुत ज्यादा था आपके छोड़े हुए तरीके की तफसिल इस तरह है। एक खादीम उम्मे इमान (जिनका नाम बरकत था) और एक गुलाम सकरान बिन स्वालेह उनके अलावा पांच औराक उंट जो बड़ी आले नस्ल के होते है और उनकी खुराक दरख्त इराक (पीलु) के पत्ते में और भेड़ीयों का एक गल्ला भी वारीस में मिला।

शाअब बनी हाशिम के जिस मकान में आप की वालदा रहती थी वह आपके हिस्से में आया। इसके अलावा शहरे मक्का में हज़रत अब्दुल्ला की एक खयाती की दुकान भी थी। जहां कपड़े बिकता और सिलता था सामनी तिजारत में बहुत कुछ नकद और जिनस (चमडा और खजूर) भी आपके वालदा मोहतरमा ने छोड़ा जो कुरैश के दस्तुर के मुताबिक तिजारत में लगाया जाता और ऐसी मुनासिबत से मुनाफा तकसीम किया जाता (सिराते अहमद मुज्तबा अजशा मिस्बाउ दिन शकीअ जिल्द सफा नं ६४)

नबी करीम (स.) एक कामयाब ताजिर के बेटे थे। आप खुद भी एक अमिर और कामयाब ताजिर थे। इसलिए उम्मते मुसलमान को भी नबी करीम (स.) की इस माली कामयाबी और कामयाब तिजारत की सुन्नत पर अंमल करना चाहिए।

पांचवाँ भाग

मुसलमान कैसे तरक्की करें?

४३. गरीबी और भूखमरी के कारण

गरीबी और मुफ्लिसी (दारिद्रय) लाने वाले ८ अहम कारण निम्नलिखित हैं:

१. शिक्षा की कमी।
२. हराम (नाजायज़) माल खाना।
३. नमाजों से लापरवाई।
४. अल्लाह तआ़ला की नाशुक्री।
५. बुरे कर्म और गुनाह करना।
६. बददुआ़ लेना।
७. सूरज निकलने तक सोना।
८. अन्य विभिन्न (कई प्रकार के) कारण।

उपरोक्त आठ कारणों की व्याख्या नीचे दी जा रही है।

१. शिक्षा की अहमियत:

शिक्षा की अहमियत के दो बुनियादी वजुहात इसप्रकार हैं:

- इन्सान का मानसिक प्रशिक्षण, शिक्षा के बगैर पूरा नहीं होता। शिक्षा इन्सान में सही विचारधारा पैदा करती है। शिक्षा इन्सान की सही विचार-धारा की तरफ मार्गदर्शन करती है और सही कुव्वते फैसला (निर्णय शक्ति) पैदा करती है।

- शिक्षा की अहमियत की दूसरी वजह यह है कि ज्ञान हासिल करने के बाद ही आदमी इस योग्य होता है कि अपने आसपास की दुनिया के बारे में जाने। (मिसाल के तौर पर सिर्फ एक बी.कॉम ही ऊंची Accountancy की तकनीक समझ सकता है।)

- इस तरह शिक्षा इन्सान को इस योग्य बनाती है कि वह पिछले इतिहास का ज्ञान हासील करें और मौजुदा दौर के सायन्स और दूसरे ज्ञान हासिल करके, तमाम मालुमात और ज्ञान से परिपूर्ण होकर ज़माने के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलें।

  शिक्षा के बगैर इन्सान उन लोगों जैसा है जो बंद खिड़कियों वाले बंद कमरे में रहते हैं। और शिक्षा हासिल करके इन्सान उस कमरे में रहता है जिसकी खिड़कियां बाहरी दुनिया की तरफ खुली हुई हों।

  हर लिहाज से शिक्षा एक अहम जरिया है जिस से हम में सकारात्मक बदलाव पैदा होता है। जिनसे हम बेहतर इन्सान बनते हैं और अपनी कौम के लिए भी उपयोगी सिद्ध होते हैं।

- मौजुदा दौर में दुनिया में तमाम तरक्की शिक्षा पर ही निर्भर है। इसलिए एक नई पीढ़ी अगर एक इज्ज़तदार और बावकार (प्रतिष्ठित) जिंदगी गुज़ारना चाहती है तो ज्ञान हासिल करने के सिवा कोई चारा नहीं है।

- बगैर शिक्षा के आम तौर से इन्सान ऐसे छोटे व्यवसाय अेख्तियार करता है जिनसे काफी रूपया नही कमा सकता ना अपनी तमाम ज़रूरीयात पूरी कर सकता है और ना अपने बच्चों को उच्च शिक्षा दिला सकता है। और अशिक्षित बच्चे गरीबी का कारण बन जाते हैं। इस तरह पूरा परीवार गरीबी के समुंदर में डूब जाता है।

२. हराम कमाई:-

१. हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया: "लोगों! अल्लाह तआ़ला पाक है और वह सिर्फ पाक ही कबुल करता है। इस बारें में जो हुक्म अल्लाह तआ़ला अपने पैगंबरों को दिया है वही अपने सब मोमिन बंदो को दिया है।" पैगंबरों के लिए उनका इरशाद है कि "ऐ पैगंबरो! तुम खाओं पाक और हलाल गिज़ा (आहार) और अमल करो सालेह (नेक)।" और अहले ईमान को मुखातिब करके उसने फरमाया है कि, "ऐ इमान वालो! तुम हमारे रिस्क (रोज़ी) में से हलाल और तैय्यब (पवित्र) खाओ (और हराम से बचो)।" इसके बाद हज़रत मुहम्मद (स.) ने जिक्र फरमाया एक ऐसे आदमी का जो लम्बा सफर करके (किसी पवित्र स्थान पर) ऐसे हाल में जाता है कि उसके बाल बिखरे हुए हैं और शरीर और कपड़ों पर गर्द-गुबार (धूल-मिट्टी) है (अर्थात बहुत परेशान है), और वह आसमान की तरफ हाथ उठा उठाकर दुआ़ करता है, ऐ मेरे परवरदिगार! (मगर उसकी दुआ़ कुबूल नहीं होती है) और हालत यह है की उसका खाना हराम है उसका पीना हराम है, उसका लिबास (वस्त्र) हराम है और हराम आहार से उसका पोषण हुआ है, तो उस आदमी की दुआ़ कैसे कुबूल होगी?

(सही मुस्लिम, मआरिफुल हदीस, जिल्द :७, सफहा नंबर ७६)

२.हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अगर तुम्हारे कपड़ों की कीमत १० दिरहम है, और १० दिरहम में अगर १ दिरहम भी हराम का है तो अल्लाह तआ़ला तुम्हारी नमाज़ कुबूल नहीं करेगा।" (मस्नद अहमद)

३.हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अगर कोई हराम माल का एक निवाला खाए तो अल्लाह तआ़ला ४० दिन तक उसकी कोई नमाज़ कबूल नहीं करता।" (तरगीब हदीस नंबर २४८४)

४.अगर कोई बंदा अपनी हराम की कमाई की जायदाद या कारोबार से लगातार खाता रहे तो क्या आप समझते हैं कि अल्लाह तआ़ला उसकी नमाज़ कबूल करेगा? "नही!" ऐसा बंदा हमेशा समस्याओं में घिरा रहेगा, बीमारी, परेशानी, और आर्थिक समस्याओं में मुब्तला रहेगा। मुसलमानों की बड़ी तादाद इस अज़ाब में मुब्तला है।

५.माल उस वक़्त हराम हो जाता है, जब वह अल्लाह तआ़ला के आदेशों और हज़रत मुहम्मद (स.) की हिदायत के खिलाफ कमाया जाए। हमने इस विषय पर अध्याय "हमारे तिजारती उसूल क्या होने चाहीए?" में विस्तार से बहस की है। उसमें से कुछ उसूल हम फिर दौहराते हैं:

६.कुरआने करीम में इरशाद है जब अल्लाह तआ़ला किसी बंदे के माल में कमी करता है तब वह कहता है कि मेरे अल्लाह ने मुझे अपमानित किया, लैकिन यह सच नहीं है। (तुम्हार अपमानता का कारण तुम्हारे बुरे कर्म हैं।) क्योंकि:

"तुम किसी अनाथ की कद्र नहीं करते।"
"तुम गरीबों को खिलाने में हिम्मत अफ्जाई नहीं करते।"
"तुम गैर कानुनी तौर पर मौरूसी (पारिवारिक) जायदाद हथिया लेते हो।"
"तुम माल से बेहद मुहब्बत करते हो।"

(सूरह फज्र, आयात: १६ से २० का खुलासा)

उपरोक्त आयात की व्याख्याः

- अल्लाह तआ़ला ने इस कायनात कि हर मखलुक को रोज़ी देने की जिम्मेदारी ली है। फर्ज़ करो एक बच्चे के मां-बाप हादसे का शिकार हो जाते हैं। या एक औरत बुढ़ापे में विधवा हो जाती है और उसके पास कोई आमदनी का ज़रिया नहीं है तो अल्लाह तआ़ला उस अनाथ और विधवा को रोज़ी कैसे देगा? फरिश्ते खाने की थाली लेकर आसमान से नहीं उतरेंगे। अल्लाह तआ़ला उन्हे उनके पडोसियों और समाज के अन्य लोगों के जरिए रिज्क देगा। अल्लाह तआ़ला पड़ोसियों और अन्य लोगों की आमदनी में इज़ाफा करेगा और यह पड़ोसियों और अन्य लोगों की लाजमी जिम्मेदारी है कि वह अनाथ, विधवा और समाज के गरीब लोगों को खाना खिलाएं।

  हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अल्लाह तआ़ला तुम्हें गरीबों की वजह से खुशहाल बनाता है।"
(मस्नद अहमद, अबू दाऊद तिरमिज़ी, तर्जुमाने हदीस, हदीस नंबर २३१ का खुलासा)

  जो बंदे अनाथों और गरीबों को सदका (दान) नहीं देते वह धोखेबाज और चोर हैं, जो यतीमों और गरीबों का माल खाते हैं क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने उनकी आमदनी में गरीबों का हिस्सा भी भेजा था जो वह अकेले खा गऐ। अपनी कमाई अकेले खाने वाला इन्सान हमेशा परेशान ही रहेगा।

- अल्लाह तआ़ला ने जायदाद में औरतो का हिस्सा निश्चित फरमा दिया है। जायदाद के बटवारे के वक्त मां, बहन और बेटी को हिस्सा मिलना चाहिए। हिन्दुस्तानी रिवाज के मुताबिक बाप की तमाम जायदाद सिर्फ बेटों में तक्सीम की जाती है। अल्लाह तआ़ला का कानून रिवाजों से नहीं बदलता। यह लाजमी तौर पर मुकर्रर हैं और इसे कयामत तक कायम रहना है।

  अगर जायदाद में से मां, बहन और बेटी का हिस्सा नहीं दिया गया तो उनके हिस्से से कमाया हुआ माल 'हराम माल' कहलाऐगा और उसे खाने वाला गरीब हो जाएगा।

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने उस माल का बेचना ममनु (मना) करार दिया है। जिसके सही होने की आप ज़मानत (Guarantee) नहीं दे सकते। (या जिस माल की Guarantee आप नहीं दे सकते।) (इब्ने माजा २२६५)

  हज़रत मुहम्मद (स.) ने फल और बागों की पैदावार बेचना उस वक़्त तक मना फरमाया है जब तक उनकी मिकदार/मात्रा और मेअ़यार (गुण्वत्ता) साफ ना हा जाऐं। (इब्ने माजा २२६५)

  हज़रत मुहम्मद (स.) ने ग्राहक को धोखा देने से भी मना फरमाया है। (इब्ने माजा २२०३)

  उपरोक्त तरीके द्वारा कमाया गया माल 'माले हराम' होगा।

- "खुदा ब्याज को नाबूद यानी बेबरकत करता है।"
(सूरहे बक़रा आयत नंबर २७६)

  हज़रत मुहम्मद (स.) ने उन तमाम लोगों पर लानत की है जो ब्याज का लेन देन करते हैं, उदाहरणतः;

१. जो ब्याज खाते हैं।
२. जो ब्याज अदा करते हैं।
३. ब्याज दिलाने वाले दलाल।
४. जो ब्याज की रकम का हिसाब किताब लिखते हैं।

  जिन लोगों पर यह लानत की गई है वह हमेशा आर्थिक समस्याओं में मुब्तिला रहेंगे। ब्याज से कमाया हुवा माल,'हराम माल' है।
(तिरमिज़ी, मुस्लिम नंबर ६)

- अल्लाह तआ़ला कुरआ़न करीम में फरमाता है, "और यह कि वही दौलतमंद बनाता है और मुफलिस (गरीब) करता है।"
(सूरहे नज्म आयत ४८)

  हराम माल कमाकर अगर आप अल्लाह का गुस्सा मोल ले लें तो अगर अल्लाह तआ़ला आपको गरीब बनाएं तो कौन आपको खुशहाल बना सकता है?

  इसलिए आप जो भी कारोबार करते हैं और उससे जितनी भी आपको आमदनी हो अगर यह कारोबार और आमदनी हराम माल की हो तो आपके भाग्य में गरीबी ही आएगी। चूंकि ६५ प्रतिशत मुसलमान बाप की जायदाद में बहन का हक़ मार देते हैं। इसलिए शिक्षा की कमी के बाद ये हराम माल भी मुसलमानों की गरीबी का एक बड़ा कारण है।

इबादत से गफलतः-

- अल्लाह तआ़ला कुरआन में इरशाद फरमाता है, "फिर तबाही है उन नमाज़ पढ़ने वालों के लिए जो अपनी नमाज़ में गफलत बरतते हैं जो दिखावा करते हैं।" (सूरह माऊन आयत नंबर ४ से ५)

- "मैंने जिन्न और इनसानों को इसके सिवा किसी काम के लिए पैदा नहीं किया है कि वे मेरी बन्दगी करें। मैं उनसे कोई रोज़ी नहीं चाहता और न यह चाहता हूँ कि वे मुझे खिलाएँ। अल्लाह तो ख़ुद ही रोज़ी देनेवाला है, बड़ी शक्तिवाला और ज़बरदस्त है।।" (सूरह ज़ारियात आयत नंबर ५६)

- अल्लाह तआ़ला ने अपने आखरी पैगंबर हज़रत मुहम्मद (स.) के जरिए फरमाया, "ऐ मेरे बंदो! मेरी इबादत में व्यस्त रहो तो मैं तुम्हे आराम से रखुंगा, खुशहाल बनाऊंगा और तुम्हारे दिल सखावत से भर दुंगा। लैकीन अगर तुम हमारी इबादत से गाफिल हुए तो मैं तुम्हारा हाथ व्यस्त रखूंगा, और तुम्हारी गरीबी भी कभी दूर नहीं करूंगा।"
(इब्ने माजा ४१०, तिरमिज़ी २४६६ अन अबू हुरैरा)

- हकीम बिन हिजाम (रज़ि.) कहते हैं, हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया, "हकीम! यह माल बड़ा मनमोहक और रंगीन है। जो व्यक्ति इसे कुशादा ज़र्फी (बड़ा दिल कर के) और फयाजी से लेगा, वह इसमें बरकत मेहसूस करेगा। और जो व्यक्ति इसके हासिल करने में लालच और जल्दबाज़ी का प्रदर्शन करेगा। उसके माल में बरकत ना होगी।"
(बुखारी, मुस्लिम, तिरमिज़ी, तर्जूमाने हदीस जिल्द १, हदीस नंबर २०)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, जिसे सबसे ज़्यादा चिंता आखिरत की होगी अल्लाह तआ़ला उसके दिल को गनी कर देता है। और उसके उलझे हुए कामों को सुलझाकर उसके दिल को गनी कर देता है। और दुनिया उसके पास अपमानित व बेइ़ज़्ज़त होकर आती है। (यानी दुनीया का माल और दौलत जो उसके भाग्य में लिखा है बगैर किसी ज़्यादा परिश्रम के आसानी से उसके पास पहोंच जाता है।) और जो व्यक्ति

दुनिया के ऐश पर मर मिटने का फैसला कर चुका हो अल्लाह तआ़ला उस पर मोहताजी को मुसल्लत कर देता (थोप देता) है। (यानी वह महसूस करता है कि मैं लोगों का मौहताज हूँ।) अल्लाह तआ़ला उसके सुलझे हुए मामलात को बिखरा कर उलझा देता है। इसलिए वह दिल की शांती की निअ़मतों से वंचित हो जाता है और दुनिया की रोज़ी (ज्यादा नहीं बल्कि) उसे सिर्फ उतना ही मिलता है जितना उसके भाग्य में होता है।(तिरमिज़ी, तर्जूमाने हदीस जिल्द १, हदीस नंबर २२)

- मैंने मस्जिद में नमाज़ अदा करने वालों का विश्लेषण किया और निम्नलिखित निष्कर्ष निकालेः

  तकरीबन ५ प्रतिशत मुसलमान मस्जिद में ५ वक्त की नमाज़ पढ़ते हैं।

  ६० प्रतिशत मुसलमान हफ्ते में सिर्फ १ नमाज़ मस्जिद में पढ़ते हैं। यानी सिर्फ नमाजे जुमा।

  ५ प्रतिशत मुसलमान साल में सिर्फ ३ नमाज़ पढ़ते हैं। (यानी रमजान का जुमअतुल विदा, रमजान ईद और बक़रा ईद (ईदुल अजहा))

यानी आम तौर पर ६५ प्रतिशत मुसलमान नमाज़ से बेपरवाह रहते हैं, इसलिए ६५ प्रतिशत मुसलमान या तो गरीब होते हैं या तो कर्जदार हैं या कारोबारी घाटे में हैं या बेमकान हैं या बेरोजगार हैं वगैरा वगैरा। मुसलमानों की गरीबी की तीसरी बड़ी वजह नमाज़ से गफलत है। रोज़ाना की नमाजों से गाफिल रहना मुसीबतों को दावत देता है। ये ईश्वरीय नियम हैं जो बदल नहीं सकते। खुशहाल बनने के लिए इबादत को प्राथमिकता दें।

अल्लाह तआ़ला की नाशुक्री :-

अल्लाह तआ़ला ने कुरआने करीम में इरशाद फरमायाः

- "और जब तुम्हारे परवरदिगार ने तुमको आगाह किया कि अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं तुम्हे ज्यादा दूंगा और नाशुक्री करोगे तो याद रखो कि मेरा अज़ाब भी सख्त है।" (कुरआने करीम सूरह इब्राहीम ७)

अल्लाह तआ़ला ने कुरआने करीम में इरशाद फरमायाः

- "और रिश्तेदारों और मोहताजों और मुसाफिरों को उनका हक अदा करों और फ़ुजूल खर्ची से बचो और माल ना उड़ाओ।"
  (सूरहे बनी इस्राइल आयत २६)

- उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीका (रज़ि.) फरमाती हैं ताजदारे मदीना हज़रत मुहम्मद (स.) अपने हुजरे मे तशरीफ लाऐ, रोटी का टुकड़ा पड़ा हुआ देखा, उसे लेकर साफ किया और फिर खा लिया और फरमाया, "आएशा (रज़ि.) अच्छी चीज़ का ऐहतराम करो की यह चीज़ (यानी रोटी) जिस किसी कौम से भागी है लौट कर नहीं आई।"
  (सुनन इब्ने माजा)

- फर्ज कीजिए मैंने आपके जन्मदिन पर एक कीमती और खूबसूरत रूमाल का तोहफा आपको दिया। आप ने वह रूमाल लिया उससे नाक साफ किया और मेरे सामने उसे कुडेदान में ड़ाल दिया। जरा सोंचें कि इस बरताव से मेरे दिल पर क्या असर होगा? मैं कसम खाऊंगा कि आईंदा तोहफा तो क्या मैं आपके मांगने पर एक Tissue Paper भी नहीं दूंगा।

- अल्लाह तआ़ला ने आपको अच्छा स्वास्थ्य प्रदान किया, दौलत से सम्मानित किया और खुद मुख्तार जिंदगी प्रदान की। अगर आप उनकी निअ़मतों का इस्तेमाल भी अल्लाह तआ़ला की ही नाफरमानी में करें तो मुझे यकीन है की आप उन निअ़मतों को खो देंगे। और हो सकता है कि आप ना उन्हें दोबारा हासिल कर पाऐं।

  यह नाशुक्री भी मुसलमानों की गरीबी की एक वजह है।

गुनाहों को अंजाम देना :-

- अल्लाह तआला कुरआन करीम में फरमाता है, "और जिसने (हुकूक के वाजिबात से) कंजूसी कि और (बजाय खुदा से डरने के खुदा से) बेपरवाई अेख्तियार की। और अच्छी बात (यानी इस्लाम) को झुठलाया। तब हम उसे सख्ती में पहुचाएंगे।"(सूरह लैल आयत ८ से १०)

- "खुदा शरीरों के काम सवांरा नहीं करता।" (सूरह यूनुस आयत ८०)

- तीन प्रकार के लोग हमेशा गरीब रहेंगे।

१. मां-बाप का नाफरमान बच्चा।
२. ज़िना (बदकारी) करने वाली पत्नि।
३. वह लोग जो पड़ोसियों को तकलीफ पहोंचाते हैं।
(आसान रिज़्क, नफा अे खलायक)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया, "कोई शक नहीं है कि गुनाहों की वजह से खुदा इन्सान से उसकी रोज़ी छीन लेता है।"
  (इब्ने माजा, मस्नद अहमद २१८८१, मुन्तखब अबवाब ६३३)

- कुरआन करीम में कई आयातों में इरशाद है कि खुदा की नाफरमानी करने वाला इस दुनिया में और आखिरत में अपमानित होगा।

  इसलिए जहाँ तक संभव हो गुनाहों से बचें ताकी खुशहाली नसीब हो।

बद्दुआ :-

- न किसी को बददुआ दें, ना किसी की बददुआ लें। और ऐसी जगहों पर ना जाऐं जहाँ अल्लाह तआ़ला की नाफरमानी होती हो, और जहाँ अजाब आ चुका हो।
- हज़रत जाबीर (रज़ि.) कहते हैं की हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया, "अपने लिए बददुआ ना करो, ना अपनी औलाद के लिए बददुआ करो और ना अपनें माल (यानी गुलाम, लौंडियों, जानवरों और दूसरे माल व असबाब) के लिए बददुआ करो। कहीं ऐसा ना हो की तुम्हें अल्लाह की तरफ से वही घडी (पल) मिल जाएं जिनमें जो चिज़ मांगी जाती है वह तुम्हारे लिए कुबूल की जाती है।"
  (मुस्लिम, मुन्तखब अबवाब जिल्द १, हदीस नंबर ३८०)

- हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमायाः तीन व्यक्ति हैं जिनकी दुआ रद् नहीं होती। १) रोज़ेदार की दुआ जब वह इफ्तार करता है। २) और इन्साफ करने वाले सरदार की दुआ। ३) और अत्याचार से पीडित की दुआ। अल्लाह तआ़ला उसकी

दुआ को बादलों के उपर उठा लेता है और उसकी दुआ के लिए आसमान के दरवाजे खोल दिए जाते हैं। और परवरदिगार फरमाता है: "कसम है मेरी इज्जत की! मैं तेरी मदद जरूर करूंगा अगरचे कुछ मुद्दत के बाद हो (यानी तेरा हक जाया (नष्ट) नहीं करूंगा और तेरी दुआ रद् नहीं करूंगा अगरचे लम्बी मुद्दत गुज़र जाए)।"

(तिरमिज़ी, मुन्तखब अबवाब जिल्द १, हदीस नंबर ३६८)

इसलिए उन लोगों से आपका बरताव ऐसा हो कि उनके दिल से आपके लिए सिर्फ दुआ निकले। बददुआ कभी ना निकले।

- हज़रत मुहम्मद (स.) जब ऐसी जगहों से गुज़रते जहाँ ईश्वरीय प्रकोप भेजा गया हो तो अपने चेहरे मुबारक को ढांक लेते और आयते कुरआनी की तिलावत करते हुए उन मुकामात से तेज़ी से गुज़र जाते।

- हर इन्सान अपने बदन से Vibration और किरनें खारिज करता है। जब हम नेक लोगों से मिलते हैं तो हमारे दिल में नेक खयालात और भावनाएं पैदा होती हैं और जब हम मुजरिमों (अपराधियों) और बद्दुआएं लेने वाले लोगों से मिलते हैं तो हमारे दिल में बुरे खयालात और जज्बात पैदा होते है। जैसे हमारे खयालात होते है वैसे हमारे कर्म होते हैं। इसलिए हमें उन लोगों से दूर रहना चाहिए जो अल्लाह तआ़ाला की लानत के हकदार हैं। वरना हमारे दिल भी उन जैसे हो जाएंगे और हमपर भी लानत होगी।

सुबह देर तक सोना

- हज़रत उमर बिन उस्मान बिन अफ्फान (रज़ि.) उनके पिता से रिवायत करते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) का फरमान है कि सुबह का सोना रोजी से महरूम कर देता है। (मस्नद अहमद जिल्द १, सफहा ७३)

- हज़रत फातेमा (रज़ि.) कहती हैं कि मैं सुबह को सोयी हुई थी। हज़रत मुहम्मद (स.) मेरे पास से गुजरे तो आप (स.) ने मुझे हिलाकर फरमायाः "ऐ मेरी प्यारी बच्ची! खड़ी हो जाओ, परवरदिगार की रोज़ी के पास हाज़िर हो, गाफिलीन में से मत हो, अल्लाह तआ़ाला सुबह सादिक (भोर) और सूरज निकलने तक के दरम्यान लोगों को रोजियां तकसीम करता है।" (बेहकी)

- इमाम बुखारी (रज़ि.) ने अपनी किताब "अल अदबल मुफरिद" में लिखा है कि हज़रत ख्वात बिन जुबैर (रज़ि.) कहते हैं किः शुरू दिन का सोना फूहड पन है, और दरम्यान दिन का सोना आदत, और आखरी दिन का सोना हिमाकत (मुर्खता) है।

(इरशादात नबवी की रौशनी में जिल्द २, हदीस नंबर १२४२)

- हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "नर्क को मरगूबात नफ्स (मनपसंद चीज़ें) से ढांक दिया गया है और स्वर्ग को नापसंदीदा चीज़ों से।"

(बुखारी, मुस्लिम, तिरमीजी, तरर्जुमानुल हदीस, जिल्द १, हदीस नं. २४)

सुबह जल्दी उठना एक मुश्किल काम है। लैकिन आपको रोज़ी हासिल करने और जन्नत पाने के लिए अपनी मीठी नींद को कुर्बान करना ही होगा।

- हज़रत सुखरत गुम्बी कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमायाः "अल्लाह तआ़ाला ने मेरी उम्मत के लिए सुबह सवेरे में बरकत रखी है। ऐ अल्लाह मेरी उम्मत के लिए सुबह के वक़्त बरकतें नाजिल फरमा।" (अबू दाऊद ३५० बाबे आगाज़े सफर)

- और यह बात आप (स.) ने सिर्फ जिक्र या इबादत की हद तक नहीं फरमायी बल्कि हजरत सूखरत गुम्बी जो व्यापारी थे (और कारोबार की लाईन से परेशान थे) उनसे आप (स.) ने यह कहा की तुम सुबह सवेरे अपने व्यापार के काम को अंजाम दिया करो। वह सहाबी फरमाते हैं, हज़रत मुहम्मद (स.) का यह इरशाद सुनने के बाद मैंने इसपर अमल किया और सुबह ही अव्वल वक़्त में व्यापार का अमल शुरू कर दिया तो अल्लाह ने मुझे उसकी बरकत से इतना माल अता फरमाया की लोग मुझपर रश्क (Surprise) करने लगे।

- मुसलमानों में ज्यादातर लोग सूरज निकलने के बाद तक सोते रहते हैं। इसलिए उनकी गरीबी का एक सबब यह भी है।

ऊपर बयान किए गए गरीबी के कारण, गरीबी के अहम और स्पष्ट कारण थे। उनके अलावा भी बहुत से छोटे कारण हैं जो निम्नलिखित हैं:

गरीबी के विभिन्न कारण

- हज़रत आऐशा (रज़ि.) कहती हैं कि मैंने हज़रत मुहम्मद (स.) को यह फरमाते हुए सुना कि "जिस माल की ज़कात ना निकाली जाएं और वह उसी में मिली जुली रहें तो वह माल को तबाह करके छोड़ती है।"

(मिश्कात, सफीना ए निजात हदीस नं.६०)

- "जिस व्यक्ति ने लोगों का माल कर्ज के तौर पर लिया और उसे वापस करने की नियत रखता है, और किसी वजह से वापस न कर सका तो अल्लाह उसकी तरफ से अदा कर देगा। और जिसने कर्ज लिया और नियत उसको वापस करने की नहीं है तो उसकी बुरी नियत की वजह से अल्लाह उसे बरबाद करके रहेगा।"

(बुखारी, सफीना ए निजात हदीस नं. १६६)

- हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) के मुताबिकः हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमायाः अल्लाह तआ़ाला फरमाता है कि जब तक किसी कारोबार के दो साझीदार आपस में धोखेबाजी और बेईमानी ना करें तो मैं उनके साथ रहता हुँ (कारोबार में बरकत और तरक्की होती है)। लैकिन जब उन में से एक साझीदार अपने साथी से बेईमानी करता है तो मैं उनसे अलग हो जाता हुँ और शैतान आ जाता है (मैं अपनी रहमत और मदद का हाथ खींच लेता हुँ और शैतान आकर उनके कारोबार को तबाही की राह पर डाल देता है।) (अबू दाऊद सफीना ए निजात हदीस नं. २१२)

- हज़रत वासला (रज़ि.) के मुताबिक हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमायाः तू अपने भाई की मुसीबत पर खुश ना हो, वरना अल्लाह तआ़ाला उसपर रहम फरमाएगा और तुझे मुसीबत में मुब्तला कर देगा।

(तिरमिज़ी, सफीना ए निजात हदीस नं. २३८)

- हज़रत बेहज बिन हकीम (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमायाः "खराबी है उसके लिए जो झूठी बातें कहे लोगों को हसांने के लिए, खराबी है उसके लिए, खराबी है उसके लिए।"

(तिरमिज़ी, सफीना ए निजात हदीस नं. २४५)

(ऐसे लोग हमेशा आर्थिक परेशानी में मुब्तला रहेंगे।)

- हज़रत शरीद सलमी (रअ.) के मुताबीक हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "वह कर्ज़दार जो कर्ज वापस कर सकता हो वह अगर टाल मटोल करे तो जायज है कि समाज की निगाह में गिराया जाय और सज़ा दी जाएं।" (अबू दाऊद, सफीना ए निजात हदीस नं. १६६)

- हज़रत अब्दुल्ला बिन मसऊद (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स) ने फरमायाः "शैतान आदमी के भेस में लोगों के पास आकर झूठी बात कहता है फिर अहले मजलिस बिखर जाते हैं, तो उन में से कोई युं कहता है "एक आदमी जिसके चेहरे को में पहचानता हुँ, लैकिन नाम नहीं जानता,वह यह बात कह रहा था।"

(मुस्लिम,सफीना ए निजात हदीस नं. २६४)

इस हदीस में मुसलमानों को इस बात से रोका गया है कि कोई बात बिना तहकीक के ना कही जाए, ना फैलाई जाए। हो सकता जिसने वह बात कही हो वह शैतान हो। लिहाजा कहने वाले के बारे में तहकीक करो। बिला तहकीक बात फैलाने से समाज को भयंकर नुकसानात पहुँच सकते हैं। इसलिए अफवाहें ना फैलाए, अगर इससे फसाद (दंगा) बरपा होगा तो आप पर लानत होगी और लानत किया गया व्यक्ति तरक्की नहीं कर सकता।

गरीबी के अन्य कारण: आध्यात्मिक किताबों की शिक्षाएं

"नफाऐ खलायक" और सूफी अब्दुल रहेमान की किताब 'आसान रिज्क' के मुताबिक निम्नलिखित कारणों से खुशहाली कम होती है।

वह बरताव और विचारधारा जिससे गरीबी आती है :

१. लालच का ज़ज्बा
२. तकदीर (भाग्य) पर यकीन ना होना
३. इस्लामी शिक्षाएं भुला देना

वह कर्म जिनसे गरीबी आती है :

१. घर में मकड़ी के जाले रहने देना।
२. घर में कूड़ा करकट रखना।
३. घर के फर्श से गिरा हुआ खाना उठाना और एहतराम से उसे उसके स्थान पर न रखना।
४. घर के दरवाजे पर हाथ वगैरा धोना और गंदगी करना।
५. निकले (परोसे) हुए खाने को देर से खाना।
६. बरतन झूठे रखना।
७. सूरज डूबने पर भी चिराग (रौशनी) ना जलाना।
८. कपड़े से घर में झाडू देना। (पहनने वाले लिबास से)

शरीर की नापाकी की हालतें :

१. ग्लास के टूटे हुए हिस्से से पानी पीना। (बरतन के दराज़ में नुकसान दायक कोई चीज़ हो सकती है जो पानी को नापाक करती है।)
२. बासी खाना खाना।
३. बगल के अंदर के और नाभी के नीचे के बाल कैंची से तराशना। (उन्हें पूरी तरह ब्लेड से साफ करना चाहिए।)
४. जूते का तला देखना।
५. कुरते से हाथ और चेहरा पोंछना।
६. हाथ धोए बगैर खाना खाना।
७. फकीरों से खाना खरीदना।
८. नाखून का बड़ा होना।
९. दातों से नाखून तराशना।
१०. नापाकी की हालत में बगैर कुल्ली के खाना खाना।
११. नंगे पैर बाजार जाना। (गलीज जगह जाना)

गलत जीवन शैली :

१. सूरज के निकलने और डूबने के ज़रा पहले सोना।
२. सूरज के निकलने के बाद सोना।
३. ज़्यादा सोना।
४. अन्न का आदर ना करना।
५. खड़े होकर बालों में कंघी करना।
६. पेशाब करते हुए बात करना। (इससे फरिश्तों को तकलीफ होती है।)
७. अपनी दौलत पर घमंडित होकर दूसरों को सताना।
८. गैर जरूरी खर्च करना।
९. नंगे होकर पेशाब करना।

गैर इस्लामी जीवन शैली :

१. झूठी कसम खाना।
२. सूरज डूबने के बाद किसी फकीर को खाली हाथ लौटाना।
३. दीनी किताबों का आदर ना करना।
४. शिक्षकों का अदब ना करना।
५. माता-पिता की बेअदबी करना और उन्हें सताना।
६. चोरी करना।
७. नाजायज लैंगिक संबंध रखना।
८. रिश्तेदारों का आदर ना करना।
९. खड़े होकर पायजमा पहनना। (यह अमल सुन्नत के खिलाफ है।)
१०. लोगों से रूखेपन से मिलना।
११. झूठ का आदी होना।
१२. मेहमानों और बच्चों की इज्ज़त ना करना।
१३. माता-पिता का नाम लेकर पुकारना।
१४. काम की जगह ना महेरम (पराई आदमी/औरत) को देखना।
१५. घर में कुत्ता, शराब, फोटो और तस्वीर रखना।
१६. घर में संगीत बजाना और संगीत बजाने के सामान रखना।
१७. कुरआ़न की आयात याद करने के बाद भूल जाना।
१८. नमाज़ वक़्त पर ना पढ़ना।
१९. वजू करते हुए संसारिक बाते करना।
२०. पेशाबगृह में वजू करना।
२१. नमाज़ फज्र के बाद फौरन मस्जिद से बाहर आना।
२२. तिलावते कुरआ़न के बाद सजदा टालना।
२३. बगैर वजू के कुरआ़ने करीम को छूना।

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "सफाई आधा ईमान है। उपरोक्त तथ्यों से जाहिर होता है कि सफाई का खुशहाली पर भी गहेरा असर होता है। एक गंदा और नापाक आदमी ना धार्मिक हो सकता है और ना खुशहाल!"

▼▼▼▼▼▼▼

४४. मुसलमान गरीब क्यों हैं?

- ३०० वर्ष पहले हिन्दुस्तान में मारवाड़ी, गुजराती और मुसलमान व्यापार में छाएं हुए थे लैकिन वक़्त बदलने के साथ मारवाड़ी और गुजराती भी ज़माने के साथ बदल गए। व्यापारी उद्योगपति बन गए। उन्होंने हर प्रकार के उद्योग बिल्कुल नई टैक्नोलोजी के साथ कायम किए और उस मैदान पर काबिज रहे।

- ब्राम्हण भी साइन्स और कॉमर्स की उच्च शिक्षा प्राप्त करके हिन्दुस्तान के शासक बन गए। लैकिन विभिन्न कारणों से मुसलमान वक़्त के साथ नहीं बदले। न ही उन्होंने पर्याप्त शिक्षा प्राप्त की, ना अपने उदयोग को तरक्की दी। इसलिए धीरे-धीरे वह उन्नती की दौड़ से बाहर हो गए।

मुसलमान क्यों नहीं बदले?

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जब तुम्हें कोई चीज विरासत में मिले तो तुम्हें ऐहतियात से उसकी सुरक्षा करनी चाहिए।"(इब्ने माजा २२२३)

  इसका मतलब यह की अगर तुम्हें आबाई (बाप-दादा का) कारोबार और जायदाद मिले तो उसे तरक्की देने की कोशिश करें। या कम से कम उसे बाकी रखें या अगर आपको विरासत में तालीम मिले तो उसे नई पीढ़ी तक पहुँचाएं वगैरा।

- प्रमुख इस्लामी विद्वान और मुफक्किर इमाम गज़ाली (रह.) ने अपनी किताब 'अहयाउल उलूम' में लिखा है कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "ज्ञान प्राप्त करो और उसे प्राप्त करने के लिए अगर चीन तक जाना पड़े तो जाओ।" (जईफ/कमज़ोर हदीस)

- भविष्य की फिक्र करनेवाले सिर्फ कुछ मुसलमानों ने हज़रत मुहम्मद (स) की शिक्षाओं से सबक हासिल किया बाकी तमाम उम्मत आधुनिक शिक्षा और दीन के ज्ञान से ग़ाफिल रही बल्की कुछ लोगों ने संसारकि शिक्षा का विरोध भी किया। इसलिए वह वक़्त के साथ नहीं बदले और हिन्दुस्तान में दूसरी कौमों से ज़्यादा पिछड़ गऐ।

- सर सय्यद अहमद खाँ, हाजी साबू सिद्दीक, नवाब मीर उस्मान अली खाँ (हैदराबाद के नवाब) वगैरा ने कालेज और युनिवर्सिटियां कायम कीं। मौलाना मोहम्मद कासिम नानोतवी (रह.) और दीगर उलमा (इस्लामी विद्वानों) ने दारूल उलूम कायम किया। लैकिन यह सिर्फ कुछ ही दानिश्वर (बुद्धिजीवी) थे जिन्हें मुसलमानों की फिक्र थी। लैकिन अक्सर इस उम्मत में दानिश्वर (बुद्धिजीवी) और रहनुमाओं (मार्गदशकों) की कमी रही इसलिए मुसलमान बगैर चरवाहे के रेवड की तरह रहे।

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने उम्मते मुस्लिमा को किस प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने की हिदायत फरमायी है? आईये हम इसका अध्ययन करते हैं।

- बद्र की जंग के बाद कैदीयों से कहा गया कि वह फिद्या (माल) देकर आज़ादे हों। लैकिन कुछ कैदी और उनके परिवार के लोग इस योग्य नहीं थे की आज़ादी के लिए माल अदा करें। ऐसे कैदिओं के लिए हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया कि वह मुस्लिम बच्चों को शिक्षा दें और शिक्षा पूरी होने के बाद वह आज़ाद हो जाएंगे?

- ये कैदी तो इस्लाम के दुश्मन थे। वह मुस्लिम बच्चों को किस प्रकार की शिक्षा दे सकते थे? बेशक यह मजहबी शिक्षा नहीं थी, बल्कि पढ़ाई, लिखाई, हिसाब (गणित), इतिहास, और विज्ञान (Science) वगैरा की शिक्षा थी। (जो उस ज़माने के अनुसार थी।) जिसे इन्सान रोजमर्राह की जिंदगी (दैनिक जीवन) के लिए जरूरी समझता है। इससे यह भी सिद्ध होता है कि हर प्रकार का ज्ञान जो बच्चे की भविष्य में सम्मानित और खुश्हाल जिंदगी में मददगार हो वह उसका पैदाइशी हक है जो उसे हर हाल में मिलना चाहिए।

- तौरात पहले इब्रानी भाषा में थी। यहूदी अपने विवादों के समाधान के लिए हज़रत मुहम्मद (स.) की सेवा में उपस्थित होते थे। और आप (स) से इन्साफ और समाधान मिलने के बाद मुसलमानों को शक में डालने और गुमराह करने के लिए वह हज़रत मुहम्मद (स.) के निर्णयों पर बहस करते और तौरात से गलत संदर्भ (Reference) देते। ना तौरात गलत है ना हज़रत मुहम्मद (स.), इसलिए यहुदीयों की शरारतों से सुरक्षित रहने के लिए (जब वह तौरात के गलत संदर्भ (Reference) देते हैं) हज़रत मुहम्मद (स.) ने जैद बिन साबित (रज़ि) को हुक्म दिया की इब्रानी भाषा सिखें (ताकि तौरात सही समझ सकें)। तो हज़रत जैद बिन साबित (रज़ि.) ने बहुत कम मुद्दत में इब्रानी भाषा में महारत (कुशलता) प्राप्त की।

  इस घटना से सिद्ध होता है कि हमें हर उस ज्ञान में महारत (कुशलता) प्राप्त करना चाहिए जिससे हम मुस्लिमों के दुश्मनों की शरारतों से सुरक्षित रह सकें। और आज यह ज्ञान विज्ञान (Science) और टैक्नोलॉजी है।

- हज़रत आएशा सिददीका (रज़ि.) एक पैदाइशी मुसलमान थीं। इसका मतलब यह है कि उनकी पैदाइश के वक़्त उनके माता पिता दोनों मुसलमान थे। इस्लामी कानून का एक तिहाई हिस्सा हज़रत आएशा (रज़ि.) की बयान की गई हदीस पर आधारित है। हज़रत आएशा (रज़ि.) बहोत ही बुद्धिमान और विभिन्न ज्ञानों की विशेषज्ञ (Scholar) थीं, लैकिन कुछ ज्ञानों का संबंध इस्लामी शिक्षाओं से नहीं था। उदाहरणतः वह मानव इतिहास की विशेषज्ञ थीं। ऐसा विशेषज्ञ इन्सान हर परिवार और समाज के परिवारिक शिजरा/इतिहास से अवगत होता है। इसका मतलब यह है कि आप (रज़ि.) मक्का और मदीने के किसी कबीले और व्यक्ति की १० से २० पीढ़ियों की तफसिलात (विवरण) बयान कर सकती थीं। पुराने जमाने में ऐसे ज्ञान और सायन्स की बड़ी अहेमियत थी। उस सायन्स और ज्ञान की वजह से हम हज़रत मुहम्मद (स.) से हजरत इब्राहीम (अ.स.) तक के तमाम 'आबा व अजदाद' (पुर्खों) के नामों से वाकिफ हैं। इस सायन्स का इस्लामी ज्ञान से कोई संबंध नहीं था लैकिन हज़रत आएशा (रज़ि.) इसमे कुशलता रखती थीं। इसलिए मौजूदा दौर में सायन्स, टैक्नोलॉजी और जो ज्ञान हमारे लिए फायदेमंद हैं और गैर इस्लामी नहीं हैं उसे हमे जरूर हासिल करना चाहिए।

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने हिदायत फरमायी के ज्ञान हासिल करने के लिए अगर चीन जाना पड़े तो भी जाना चाहिए। क्योंकि ३०० वर्ष कब्ल मसीह से १२०० ईसवी तक चीन सायन्स और टैक्नॉलॉजी का बड़ा केंद्र

था। युरोप की तरक्की १२०० ईसवी के बाद हुई। आप को समझाने के लिए में इस अध्याय के आखिर में उनकी ईज़ादोत (आविष्कारों) की सुची लिख रहा हूँ। इंटरनेट पर आपको प्राचीन चीन की १०० से ज्यादा आविष्कारों का विवरण मिलेगा।

- हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) फरमाते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया, "हिकमत व दानाई की बात हकीम (मोमिन) की खोई हुई चीज़ है। लिहाजा जहाँ भी उसको पाएं वह उसका ज्यादा हकदार है।" (तिरमिज़ी, इब्ने माजा, मुन्तखिब अबवाब २०५)

हज़रत मुहम्मद (स.) पर जो सबसे पहले वही उतरी थी, वह आयत निम्नलिखित हैः اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّکَ الَّذِیْ خَلَقَ

"ऐ मुहम्मद (स.) अपने परवरदिगार का नाम लेकर पढ़ो जिसने (सृष्टि को) पैदा किया।" (सूरहे अल्क १)

इकरा का अर्थ है पढ़ो, इस तरह इस्लाम शिक्षा से शुरू हुआ है। हमें अपने दीनी ज्ञान के साथ सायन्स और टॅक्नॉलॉजी के साथ वह ज्ञान भी हासिल करना जरूरी है जिससे हम मुस्लिम तरक्की कर सकें।

दीन का ज्ञान कितना महत्व रखता है?

- हज़रत अनस (रज़ि.) फरमाते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया, "दीन का ज्ञान हासिल करना हर मुसलमान (मर्द और औरत) पर फर्ज (अनिवार्य) है" (इब्ने माजा, मुन्तखब अबवाब, जिल्द १, हदीस २०७)

दीन का ज्ञान हासिल करना हर मुस्लिम का कर्तव्य है। यह आपकी इच्छा या ख्वाहीश पर नहीं है।

आखरी रास्ताः

- सच्चर कमीशन की रिपोर्ट के अनुसार मुसलमानों की आर्थिक स्थिती भंगी और चमारों से भी खराब है। मुसलमान अगर गरीबी के गड्ढे से निकलना चाहते हैं तो उनके लिए बेहतरीन रास्ता शिक्षा हासिल करना ही है। और यह हज़रत मुहम्मद (स.) की शिक्षाओं के ऐन अनुसार है। इसलिए मुसलमानों की गरीबी का पहला और बुनियादी कारण ज्ञान की कमी और जिहालत (अज्ञानता) हैं उसका हल शिक्षा है।

खुशहाली का सफर कहाँ से शुरू किया जाएं?

- हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) के अनुसार हज़रत मुहम्मद (स.) ने "हज्जतुल विदा" के मौके पर फरमाया, "मैं अपने पीछे तुम्हारे लिए दो चीज़े छोड़ रहा हुँ। अगर तुम उन्हें मज़बूती से पकड़ोगे तो कभी गुमराह ना होगे। पहली चीज़ कुरआने करीम और दूसरी चीज़ मेरी सुन्नत (जीवनशैली) है।" (खुतबा विदा, बुखारी)

- कुरआने करीम और हज़रत मुहम्मद (स.) की शिक्षाएं हमें सीखाती हैं कि आर्थिक और रूहानी (अध्यात्मिक) तौर पर हम किस तरह तरक्की करें। अगर हम खुलूस से उनकी पैरवी करें तो यकीनन हम तरक्की करेंगें। यह किताब इसी लिए लिखी गई है कि इस्लामी तरीके से खुशहाली हासिल करने में आपका मार्गदर्शन करें। उनमें से कुछ महत्वपूर्ण शिक्षाएं निम्नलिखित हैं।

- हज़रत हारीस अश्अरी (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया कि, "मैं तुम्हें पाँच चीजों का हुक्म देता हुँ। जमाअत का। सुनने का। आज्ञाकारी का। हिजरत (स्थानांतरण) और जिहाद फी सबीलिल्लाह (अल्लाह की राह में कठिन परिश्रम करो।)"

इस हदीस में हज़रत मुहम्मद (स.) अपनी उम्मत को निम्नलिखित पांच चीजों का हुक्म देते हैंः

१. जमात (Group) बनो, जमाती (सामूहिक) जिंदगी गुजारो।

२. तुम्हारे इज्तेमाई (सामूहिक) मामलात का जो जिम्मेदार हो उसकी बात गौर से सुनो।

३. उसकी इताअत (आज्ञापालन) करो।

४. अगर हालात, रहने का मुकाम, हुकूमत की पॉलिसी वगैरा एक दीनदार जिंदगी के लिए उचित ना हो तो उचित जगह पर स्थानांतरण करने की कोशिश करें।

५. जिहाद यानी जद्दोजहद (कठिन परीश्रम)। अपने और तमाम मुसलमानों की जिंदगी में १०० प्रतिशत दीन लाने की जद्दोजहद (कठिन परीश्रम) करो। इस जमाने के सारे लोग हज़रत मुहम्मद (स.) के उम्मती हैं। उनतक भी इस्लाम पहुँचाने की कोशिश करो। (मिश्कात, मस्नद अहमद, तिरमिज़ी ज़ादे राह हदीस १८८)

- हज़रत अबू उमामा हली (रज़ि.) से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जिसने बहस और तकरार में उलझने को तर्क कर दिया, चाहे हक ही पर क्यों ना हो, मैं उसके लिए स्वर्ग के आसपास घर दिलाने का ज़ामिन हुँ, और जिस व्यक्ति ने झूठ को तर्क किया चाहे मजाक ही में क्यों ना हो मैं उसके लिए स्वर्ग के अंदर मकान दिलाने की ग्यारंटी लेता हूँ। जिस व्यक्ति के अखलाक अच्छे हों, मैं उसको स्वर्ग के अंदर आलूलइल्लीयीन (स्वर्ग में ऊंचा मुकाम) में मकान दिलाने का जामिन हुँ।" (अबू दाऊद हदीसे नबवी हदीस ३५३)

- अल्लाह तआ़ला ने कुरआ़न में इरशाद फरमाया कि, "मोमिन तो आपस में भाई-भाई हैं, तो अपने भाईयों में सुलाह (समझौता) करा दिया करो। और खुदा से डरते रहो ताकि तुमपर रहम कीया जाए।" (सूरह हुजुरात आयत १०)

- "और खुदा और उसके रसूल (हज़रत मुहम्मद (स.)) के हुक्म पर चलो और आपस में झगडा ना करना कि ऐसा करोगे तो तुम बुज्दिल हो जाओगे। और तुम्हारा रूअब जाता रहेगा। और सब्र से काम लो कि खुदा सब्र करने वालों का मददगार है।" (सूरह इन्फाल आयत ४६)

- "और देखो बेदील ना हो (दिल छोटा ना करो) और ना ही किसी तरह का गम करना। अगर तुम सच्चे मोमिन हो तो तुम ही गालिब (विजयी) रहोगे।" (सूरह आले इमरान आयत १३९)

उपरोक्त कुरआ़न की आयतें और अहादीस शरीफा को याद कर लें और खुलूस के साथ इनकी पैरवी करें।

- आप सुन्नी, देवबंदी, अहले हदीस या जो भी हों, अगर आप समझते हैं कि सिर्फ आप ही सही हैं, तो ठिक है आप इसकी पैरवी करते रहें। लैकिन दूसरों से हुज्जत (बहस) ना करें। इससे कड़वाहट बढ़ेगी और मुसलमानों का इत्तेहाद (एकता) कमजोर हो जाऐगा। इसलिए

मुसलमानों को ईश्वरीय आदेशों और हज़रत मुहम्मद (स.) के निर्देशों पर खुलूस से अमल करना चाहिए, और मुसलमानों का रवय्या सकारात्मक और शांतिपूर्ण होना चाहिए। और एक मजबुत जमात (समूह) बनने की कोशिश करनी चाहिए। मुसलमानों की समस्याऐं हिंसा या राजनैतिक सरपरस्ती से कभी हल नहीं होंगी।

कौन मुसलमानों की मदद कर सकता है?

मुसलमानों की मदद कोई नहीं कर सकता, क्योंकि अल्लाह तआ़ला कुरआ़न में इरशाद फरमाता है किः

- "खुदा उस निआमत को जो किसी कौम को हासिल है नहीं बदलता जब तक कि वह (कौम खुद) अपनी हालत को नहीं बदले। और जब खुदा किसी कौम के साथ बुराई का इरादा करता है तो वह फिर नहीं सकती। और खुदा के सिवा कोई उनका मददगार नहीं होता।"

(सूरह रअ़द आयत नं. ११)

इसका मतलब यह है कि खुदा किसी कौम की हालत खराब नहीं करता जब तक उस कौम के लोग खुद अपने गुनाहों और बुरे कर्मों से अपने ऊपर अपमानता और दारीद्रता लाज़िम ना करलें। इस तरह खुदा किसी कौम की हालत उस वक़्त तक नहीं दुरूस्त करता जब तक वह स्वयं तरक्की की कोशिश ना करें। और तरक्की सिर्फ अल्लाह और उसके रसूल हज़रत मुहम्मद (स.) के हुक्म पर चलकर हो सकती है।

- हज़रत अबू दरदा (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, अल्लाह तआ़ला फरमाता है कि "मैं ही अल्लाह हुँ, मेरे सिवा कोई माबूद (पूजने योग्य) व मालिक नहीं। मैं हुक्मरानों (शासकों) का मालिक हुँ और बादशाहों का बादशाह हुँ, दुनिया के बादशाहों के दिल मेरे मुठ्ठी में हैं। (और मेरा कानुन है की) जब मेरे बंदे मेरी आज्ञापालन और फरमांबरदारी करते है तो में उनके हुक्मरानों (शासकों) के दिलों को रहमत व मुहब्बत के साथ उन बंदो पर ध्यान आकर्षित कर देता हुँ। और जब बंदे मेरी नाफरमानी का रास्ता अख्तियार कर लेते है तो में उनके हुक्मरानों (शासकों) के दिलों को क्रोध और अजाब (प्रकोप) के साथ उन बंदो की तरफ मोड देता हुँ फिर वह उनको सख्त तकलीफें पहुँचाते हैं। लेहाज़ा तुम अपने को अपने हुक्मरानों (शासकों) के लिए बददुआ में मश्गूल ना करो। बल्कि मश्गूल करो अपने आप को मेरी याद में, और मेरी बारगाह में गिड़गिड़ाओ (खूब रोओ), ताकी मैं तुम्हारे लिए काफि हो जाऊं हुक्मरानों (शासकों) के अज़ाब से मुक्ति देने के लिए।"

(हलयतुल अवलिया बीनईमः मारूफुल हदीस जिल्द ७, सफा नं. २४६)

मुस्लिम कौम अपने बुरे कर्मों की वजह से दुनिया में अपमानता और रूसवाई (बदनामी) के अजाब में मुब्तिला है। इस कौम ने ईश्वरीय आदेशों और हज़रत मुहम्मद (स.) की शिक्षाओं को भुला दिया है। इसलिए अपमानता और मुसीबत उसपर मुस्सलत कर दी (थोपी) गयी है। और अल्लाह तआ़ला की रज़ा के बगैर ना कोई उनकी मदद कर सकता है ना उनको तरक्की दे सकता है, ना उनको खुशहाल कर सकता है और ना उन्हें दुनिया में सम्मानित स्थान दिला सकता है। इसलिए अगर मुस्लिम कौम तरक्की करना चाहती है तो पहले उसे अपने कर्म दुरूस्त करने होंगे। हज़रत मुहम्मद (स.) की हिदायत पर अमल करना होगा और अल्लाह तआ़ला को खुश करना होगा। अगर अल्लाह तआ़ला चाहेंगे तो ही इस कौम की हालत दुरूस्त होगी।

अल्लाह तआ़ला ने कुरआ़ने करीम में फरमाया है कि, "जो व्यक्ति नेक कर्म करेगा, मर्द हो या औरत, वह मोमिन भी होगा तो हम उसको दुनिया में पाक और आराम की जिंदगी से जिंदा रखेंगे और आखिरत में उनके कर्मों का निहायत अच्छा सिला (बदला) देंगे।" (सूरहे नहल आयत ९७)

अल्लाह तआ़ला सच्चे हैं। अल्लाह का कलाम सच्चा है। आज़मा के देख लो।

मुस्लिम कौम एकजूट होकर क्यों जिद्दोजहद (परिश्रम) नहीं कर सकती?

जवाब है, तखरीबी रहनुमाई (Destructive Leadership)।

तखरीबी रहनुमाई क्या है? इसे हम विस्तार से समझने की कोशिश करते हैं।

- कौनसी कौम दुनिया में सबसे ज्यादा परेशान की गई, लूटी गई है और बरबाद की गई हैं?

मुस्लिम?

नहीं!

यह यहुदी कौम है।

- पिछले २ हजार वर्षों से इस कौम को लगातार लूटा गया है बरबाद किया गया है और दरबदर की ठोकरें खाने पर मजबूर किया गया है। (उनकी शरारतों और बुरे कर्मों की वजह से) लैकिन ना वह सिर्फ बाकी रहे बल्कि दुनिया के हाकीम (शासक) बन गए। (वह अमरीका पर हुकूमत करते हैं और अमरीका दुनिया पर हुकूमत करता है, इसलिए वह अप्रत्यक्ष दुनिया के हाकिम हैं)।

उनकी कामयाबी का राज क्या है?

- मेरे व्यक्तिगत अध्ययन और नज़रिये के अनुसार उनकी सफलता का राज़ निम्नलिखित हैः

१. अपनी बरतरी (वर्चस्व) का पुख्ता अकीदा।
२. दूरअंदेशी (दूरदर्शिता)।
३. मालियात (Fianance) पर बेहतर काबु।
४. कौम में एकता।

- ***अपनी बरतरी (वर्चस्व) का पुख्ता अकीदाः*** यहुदीयों का पुख्ता अकीदा है कि वह खुदा के मेहबूब बंदे हैं। अगर उन्हें नर्क की सजा भी दी गई तो वह सिर्फ ४० दिन के लिए होगी। उसके बाद स्वर्ग में दाखिल होना उनका पैदाइशी हक है। और खुदा ने उनसे यह वादा भी किया है कि दुनिया में भी उनकी हुकूमत एक विशाल क्षेत्र पर होगी। जिसमें सऊदी अरब और इराक शामिल रहेंगे। यह पुख्ता अकीदा और भविष्य में कामयाबी की सकारात्मक उम्मीद उन्हें रिजाई, पक्के इरादे वाला, बहादुर और जिद्दी बनाती है। लगातार या अस्थाइ नाकामी की स्थिती में भी उनके हौसले बुलंद रहते हैं।

- दूरअंदेशी (दूरदर्शिता): दुनिया पर हुकूमत करने की उनके पास एक लिखित योजना है जो "प्रोटोकॉल" कहलाती है। उनके बुद्धिजीवी लोगों ने उसपर गौर फिक्र करके उसे लिखा है। और तमाम यहुदी उसपर खुलूस के साथ अमल कर रहे हैं।

(प्रोटोकॉल एक खुफिया दस्तावेज है इसे गलती से एक यहूदी औरत ने ज़ाहिर कर दिया। दुनिया में बहोत कम लोगों को इसका ज्ञान था। हिन्दुस्तान में "अर्रहमान प्रिंटर्स एन्ड पब्लिशर्स (कोलकत्ता), ने इस खुफिया दस्तावेज को पुस्तक के रूप में प्रकाशित कर दिया है।")

- यहूदीयों की ताकत उनकी आर्थिक ताकत है। दुनिया के अधिकतर बड़े बैंक उनके कंट्रोल में हैं। दुनिया के बड़े बड़े उद्योग उनके हैं। दुनिया के तकरिबन सारे बड़े T.V चॅनल्स उनके हैं। पिछले दो हजार वर्षों से वह दुनिया को कर्ज देते हैं। यहाँ तक कि बार बार लूटे जाने और बरबाद होने के बावजूद उन्होंने मालयात (Finanance) में अपना वर्चस्व बरकरार रखा है। इसलिए आज वह दुनिया को कर्ज देनेवाले (Financer) हैं। अधिकतर दुनिया उनकी कर्ज़दार है।

- कामयाबी के लिए दुनिया भर के यहूदी एकजुट हैं और अपनी कौम और अपने देश इस्रराईल की ताकत और खुश्हाली के लिए जददोजहद (कठोर परिश्रम) कर रहे हैं।

क्या मुस्लिम कौम में भी यहूदियों की तरह ४ गुण मौजूद हैं?

आइयें अध्ययन करते हैं:

अपनी बरतरी का पुख्ता अकिदाः- अल्लाह तआ़ला ने कुरआ़ने करीम में इरशाद फरमाया है,

"और देखो बेदिल ना हो और ना ही किसी तरह का गम करना, अगर तुम सच्चे मोमिन हो तो तुम ही गालिब (विजयी) रहोगे।"
(सूरह आले इमरान आयत १३९)

- "जो लोग तुम में से ईमान लाए और नेक काम करते रहे, उनसे खुदा का वादा है कि उनको देश का हाकिम (शासक) बना देगा, जैसा उनसे पहले लोगों को हाकिम (शासक) बनाया था। और उनके दीन को जिसे उसने उनके लिए पसंद किया है मज़बूत व पायदार करेगा, और खौफ के बाद उनको अमन बख्शेगा। वह मेरी इबादत करेंगे और मेरे साथ किसी चीज़ को शरीक ना बनाएंगे और जो उसके बाद कुफ्र करें तो ऐसे लोग बदकार हैं।" (सूरह नूर आयत ५५)

(इसका मतलब यह है कि जो अल्लाह तआ़ला पर ईमान रखेगा और उसके आदेशों की पाबंदी करेगा अल्लाह तआ़ला उसे दुनिया का शासक बना देगा।)

जब तौरात में यह वादा खुदा ने यहूदियों से किया था, तो उन्होंने उसपर यकिन किया था, और आज उसे ३००० साल बाद भी याद रखा। लैकिन तौरात के बाद जब कुरआ़ने करीम का अवतरण हुआ और खुदा ने यही वादा मुस्लिम कौम से किया ता इससे अक्सर मुस्लिम नावाकिफ (अनभिज्ञ) हैं।

वह कौम जो खुदा का वादा भी नहीं जानती या जिसे दुनियावी कामयाबी का पुख्ता यकिन ही नहीं है तो वह पुरउम्मीद, रजाई, हौसलामन्द और ज़िंदादी कैसे रह सकती है। वह तो अपनी कौम पर भी हुकूमत नहीं कर सकती।

हर मुस्लिम को जानना चाहिए कि कुरआ़ने करीम में क्या लिखा हुआ है? उसी सूरत में वह अल्लाह तआ़ला के वादों और आदेशों से वाकिफ होगा।

- दुरदर्शीः- मार्गदर्शक और दानिश्वर (बुद्धिजीवी) किसी कौम की मानसिक प्रशिक्षण में बड़ा अहम किरदार अदा करते हैं। इस दौर में मुस्लिम कौम में कोई प्रसिद्ध और प्रभावी मार्गदर्शक नहीं है। उलमा को नाएबे रसूल कहा गया है। इसलिए उलमा के तबके को ही मार्गदर्शक समझा जा सकता है। इस्लाम में इस बात का इंतेजाम किया है कि आम लोग अपने मार्गदर्शक (इमाम) से बराहरास्त हर हफ्ते मिलें। मगर चूंकि उलमा में दुरदर्शीता और एकता की कमी है इसलिए इस इस्लामी इतेंजाम से भी कोई फायदा नहीं हो रहा है।

- जुमा के दिन इमाम का खुत्बा (भाषण) तकरीबन ३० से ४५ मीनट होता है। और ९० प्रतिशत मुसलमान मर्द इसे सुनते हैं। होना तो यह चाहिए था की खुत्बें में कुरआ़न की शिक्षा का जिक्र होता, हज़रत मुहम्मद (स.) की सुन्नतों (आचरण) का जिक्र होता और दुनिया और आखिरत की तरक्की के लिए चिंता की जाती। मगर उसके उलट अधिकतर मस्जिदों में खुत्बे का अहम विषय मसलक (पंथ) होता है। और हर इमाम एडी चोटी का जोर लोगों के दिमाग में सिर्फ यही एक बात जहननशीन कराने के लिए लगाता है कि उसके मसलक के अलावा सारे मसलक गलत हैं। सारे नर्क में जाने वाले हैं। गैर मुस्लिमों से ज्यादा नुकसान इस्लाम को खुद उन मुसलमानों से है जो दूसरे मसलक के हैं। क्योंकी गैर मुस्लिमों से सिर्फ जान का खतरा है, मगर दूसरे मसलक के मुसलमानों से ईमान जाने का खतरा है। इसलिए काफिरों से ज्यादा तुम दूसरे मसलक के मुसलमानों से नफरत करो, उनको बायकॉट करो, और उनसे किसी तरह का मेलजोल ना रखो।

- कुरआ़न करीम में इरशाद है कि "तमाम मुस्लिम एक दूसरे के भाई हैं" और हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया "जो कल्मा पढ़ेगा वह आखिरकार स्वर्ग में जरूर दाखिल होगा।" लैकिन हर जुमा को उलमा लोगों को कुरआ़न और हदीस की इस शिक्षा के बिल्कुल खिलाफ शिक्षा देते हैं।

- जब हर जुमा को या हर मौके पर आम मुसलमान यह ज़हरीला इंजेक्शन लेते रहेंगे, तो वह दुरदर्शी और एकजुट कैसे हो सकते हैं? यह नामुम्किन है।

उलमा का तबका क्यों मुस्लिम आवम को गुमराह करता है?

- हज़रत अनस (रज़ि.) फरमाते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया, "दीन का ज्ञान हासिल करना हर मुसलमान (मर्द और औरत) पर फर्ज है और नाअहलों (Non-compitent) को ज्ञान सिखाना ऐसा है जैसे सुवरों को जवाहिरात (आभुषणों), मोतियों और सोने का हार पहनाना।" (इब्ने माजा, मुन्तखब अबवाब जिल्द १, हदीस २०७)

- इमाम कौमी मार्गदर्शक की तरह होता है, जब एक गैर जिम्मेदार और नाअहल (अयोग्य) व्यक्ति (जिसमें ज़हानत और दूरदर्शीता की कमी है) मजहबी शिक्षा हासिल करके मार्गदर्शक बन जाता है। तो उसे शिक्षा भी दूरदर्शी और अक्लमंद नहीं बनाती। ऐसा व्यक्ति ही मसलक की बुनीयाद पर नफरत फैलाता है ताकि लोगों में उसकी प्रसिद्धी हो। ऐसे आलीम के लिए हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया कि वह ऐसा सुअर है

जिसके गले में जवाहारात (आभुषणों) के हार (शिक्षा की डिग्रीयों के हार) पड़े हों। यानी ज्ञान और शिक्षा (हीरे जवाहिरात के आभुषणों) के हार पहनकर भी वह कमीने तो कमीने ही रहे।

नफरत फैलाने वालों की यह समस्या कैसे हल की जाएं?

- इस समस्या का हल आसान नही। शिक्षा को कंट्रोल करके हम उसपर काबु नहीं पा सकते। क्योंकि हर बच्चा शिक्षा हासिल करने के लिए आज़ाद है। लैकिन खुत्बे (भाषण) के स्टेज पर उसे काबू में किया जा सकता है।

- खतीबों की अक्सरियत (बहुमत) को मस्जिद या दारूलउलूम (मदरसों) से तनख्वाह मिलती है। मस्जिदों और मदरसों पर ट्रस्टियों का कंट्रोल होता है। ट्रस्टियों को मुस्लिम समाज से आर्थिक मदद मिलती है।

- शिक्षित और रौशन दिमाग वाले लोगों को आगे बढ़कर सोचना चाहिए की मुस्लिम समाज में आपसी नफरत किसी तरह कम हो और मस्जिदों में मस्लकी बहस कभी नहीं होनी चाहिए। और ट्रस्टियों को जतलाना चाहिए की अगर खतीब (वक्ता) मसलक के मस्ले पर जहर उगालना बंद ना करेगा तो समाज से आर्थिक मदद नहीं मिलेगी। और अगर ट्रस्टि यह बात न मानें और खतीबों का नफरत फैलाने का सिलसीला जारी रहे तो समाज को जागृत करना चाहिए की ऐसी मस्जिद और मदरसे की आर्थिक मद्द बंद कर दें।

- ट्रस्टों के सदस्य आम तौर पर ज्यादा तालीम याफ्ता (सुशिक्षित) नहीं होते अधिकतर आम व्यापारी तब्के से होते हैं। अगर उनपर सही राजनैतिक और समाजी दबाव डाला जाए तो वह सही बात मान लेते हैं। खतीब, ट्रस्टियों का हुक्म मानने से इन्कार नहीं कर सकते। इसतरह ट्रस्टियों के जरीए उनपर काबु पाया जा सकता है।

- मुस्लिम कौम में जो एकता नहीं है, और वह दुनिया पर हुकूमत करने का जो सोच भी नहीं सकती, उसकी बड़ी वजह खतीबों का गलत मार्गदर्शन है। और यह मुसलमानो की कामयाबी और खुशहाली के रास्ते का सबसे बड़ा रोड़ा है। और तखरीबी रेहनुमाई के मस्ले के वजह से ही मुस्लिम कौम में दुरदर्शी नहीं आ सकती ना ही वह एक दूसरे की मद्द के लिए एकजुट हो सकती है। और ना ही खुशहाली के लिए जददोजहद (परिश्रम) कर सकती है।

  संक्षिप्त में मुस्लिम कौम की गरीबी के दो मुख्य कारण हैं:

१. शिक्षा की कमी।
२. रहेनुमाई (Destructive Leadership)

मुस्लिम कौम को फौरी तौर पर क्या करना चाहिए?

- हज़रत अबू दरदा (रज़ि.) रिवायत करते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "सुनो! क्या में तुम्हे नमाज़, रोज़ा और सदका से ज्यादा महत्वपुर्ण चीज़ ना बताऊं?" लोगों ने अर्ज़ किया जरूर बताईंये। हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "आपसी एकता सबसे बेहतर है, क्योंकि आपस की नाइत्तेफाकी (असहमती) (दीन को) मूंडने (काटने) वाली है यानी जैसे असतुरे से बाल एकदम साफ हो जाते है ऐसे ही आपस की लढ़ाई से दीन खत्म हो जाता है।" (तिरमिज़ी)

- विभिन्न फिरकों (मसलकों) में आपसी दोस्ती और योगदान नमाज़, रोज़ा और ज़कात से ज्यादा अहम है। इसलिए कोई मस्लक वाले किसी दूसरे मसलक वालें को ना बिद्अती कहें ना काफिर कहें। हर एक को अेख्तियार है कि वह अपने फिरके या मसलक को सही समझे और उसकी पैरवी करे, लैकीन उसे यह हक नहीं कि दूसरों की आलोचना करे और उनसे नफरत करे।

- हज़रत उबादा बिन सामित (रज़ि.) कहते हैं कि हम लोगों ने हज़रत मुहम्मद (स.) से बैत की (वचन दिया) की हर हालत में अल्लाह और हज़रत मुहम्मद (स.) और उन लोगों की जिनको अमीर (शासक) मुकर्रर किया गया हो, बात सुनेंगे और आज्ञापालन करेंगे, चाहे तंगी की हालत में हो या मालदारी, और खुशी की हालत में भी और नापंसदी की हालत में भी। और उस हालत में भी अमीर की बात मानेंगे जब कि दूसरों को हमारे मुकाबले में प्राथमिकता दी जाती है। और इस बात पर हमने आप (स.) को वचन दिया कि जो लोग ज़िम्मेदार होंगे उनसे शासन और पद छीनने की कोशिश नहीं करेंगे। अलबत्ता उस सूरत में जबकि अमीर से खुला हुआ कुफ्र सरजद हो रहा हो। उस वक़्त हमारे पास इस बात की दलील होगी कि हम उसकी बात को न मानेंगे। (और हालात साजगार हों तो पद से हटा दें)। और उस बात पर भी हमने आप (स.) को वचन दिया की जहाँ कही भी होंगे हक बात कहेंगे, अल्लाह के सिलसिले में किसी मलामत करने वाले से नहीं डरेंगे।
  (मुस्लिम, बुखारी तरगीब और तहरीब, ज़ादे राह हदीस नं. १६२)

- हज़रत अनस (रज़ि.) के अनुसार हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अपने अमीर (शासक) की आज्ञापालन करो चाहे तुम्हारा अमीर काला हब्शी (Negro) ही क्यों न हो।" (बुखारी उर्दु १६६६)

  इसका मतलब यह है की जिसे तुम नापसंद करते हो अगर वह तुम्हारा नेता (Leader) बन जाए तो यह तुम्हारी मज़हबी ज़िम्मेदारी है कि उसका हुक्म मानों।

- मुस्लिम कौम में कुछ ही बुद्धिजीवी और मार्गदर्शक हैं लैकिन मुस्लिम मार्गदर्शक अप्रसिद्ध/अपरिचित और बेइक्तेदार (सत्ताहीन) हैं क्योंकी कोई उन्हें अहमियत नहीं देता। कोई उनकी नहीं सुनता, कोई उनकी पैरवी नहीं करता, कोई उनकी इज़्ज़त नहीं करता, इसलिए प्रभावी नेता/लीडर और बुद्धिजीवी मार्गदर्शक भी बेफायदा हो जाता है।

  हज़रत मुहम्मद (स.) ने उबादा बिन सामीत (रज़ि.) और दीगर सहाबा कराम (रज़ि.) स ऊपर बयान किए गए ६ वादे लिए। क्योंकि आज्ञापालन के इस उसूल के बगैर एक मजबूत जमाअत नहीं बनाई जा सकती। हर मुस्लिम को एक दीनदार, दूरदर्शी और एतेदाल पसंद (उदारवादी) मार्गदर्शक को पहचानना चाहिए और फिर ६ वादों पर अमल करना चाहिए। सिर्फ इसी सूरत में एक मजबूत और खुशहाल कौम का निर्माण हो सकता है। जमीअतुल उलमा ए हिंद यह जमात १७६० से मुसलमानों की हिफाज़त के लिए कोशिश कर रही है। यहाँ तक कि गदर से पहले इस ने अंग्रेज़ों से जंग तक किया था। आज भी फसाद और बेगुनाह मुस्लिम नवजवान जिन को आतंक से जुड़े इल्ज़ाम में फंसाया जाता है उन का कानूनी मुकदमा यही जमात लड़ती है, और सच्चे दिल से मुसलमानों की सेवा करती है। इस जमात के लीडर के बारे में मुसलमानों को संजीदगी से सोचना चाहिए।

४५. विज्ञान और तंत्रज्ञान का ज्ञान हासिल करने हम ६०० ई. में कहाँ जाते?

चीन के कुछ बहोत मशहूर आविष्कार (Invention) निम्नलिखीत हैं:

१. लिखना: चीन ने 1700 BC में लिखना सिखा और 1200 BC इस कला को कामिल (Perfect) बना दिया।

२. चुंबकीय कंपास: इस का आविष्कार चीन ने 500 BC किया।

३. चीन ने समुद्री नाव बनाई और रडार का आविष्कार किया जिसकी मदद से उन्होंने 100 AD में हिन्दुस्तान का सफर किया।

४. चीन ने कोयला से लोहा साफ करने का तरीका 400 BC में आविष्कार किया।

५. चीन ने 221 BC में महान दीवार निर्माण की।

६. चीनी 'ताउबु' ने 600 AD में प्रोसिलीन का आविष्कार किया।

७. Canal Lock : ६०० AD में चीनीयों ने यलो दरिया को 'यंग ज़ी दरया' से नहर के द्वारा मिला दिया। Canal Lock के जरिए वह पानी की सतेह बुलंद करते ताकी जहाज़ नहर में उपर तक जा सकें।

८. सड़कें और होटलें और पोस्ट सिस्टम: 700 AD में चीनीयों ने सड़के बनायीं (राष्ट्रीय राजमार्ग की तरह) मुसाफिरो के कयाम के लिए होटलें बनायी और पोस्ट सिस्टम (डाकखाना) शुरू किया।

९. गन पावडर: 200 AD में चीन ने ज्वलनशील पदार्थ का निर्माण किया। और 900 AD में उसे हथियार के तौर पर इस्तेमाल किया।

१०. मॅकनिकल क्लॉक: 750 AD में घडी आविष्कार की।

११. चेचक का टीका: 1000 AD में चीन में टीका (Innoculation) का नजरिया दरयाफ्त किया और 1600 AD में इसे बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया। युरोप ने 1800 AD में इस तरीके को अपनाया।

१२. अबास्कस (Calculating machine):100 AD में चीन ने इसे बनाया। १३०० ई. इसे कामिल (Perfect) बना लिया और लोग इसे प्रयोग करने लगे।

१३. चरखा (Spining Wheel): रेशम का धागा बनाने के लिए 1500 BC में चीन ने चरखा बनाया। युरोप ने उसका इस्तेमाल 1400 AD में किया। (२६०० वर्ष बाद)

१४. मुतहर्रिक टाईप (ब्लॉक के जरिए किताबों की छपाई): चीन ने इस टाईप को 700 AD में अविष्कार किया और 960 AD उसका आम प्रयोग किया। युरोप ने 1400 AD में उसे तरक्की दी।

१५. कागज़ी नोट (Paper Currency): चीन में कागजी नोट का प्रयोग 900 AD से ही शुरू हो गया था। मुसलमानों ने उसका प्रयोग 1200 AD में किया और युरोप ने इसे 1400 AD में प्रयोग किया।

१६. ॲक्युपंक्चर: इसका जिक्र पहले हवाइंग डी पंचीग में हुआ और दूसरी और तिसरी सदी कब्ल मसीह में इसे बनाया गया।

१७. Bellows: (Hydrolic Powered) का अविष्कार हान पीढ़ी (202 BC, 220 BC) के दरम्यान हुई।

१८. सिविल सर्विस के इम्तेहानात: हान पीढ़ी (202 BC, 220 BC) सियाउलीन सिस्टम से सिफारिश के जरिए सरकारी अफसरों की नियुक्ति की जाती थी यही उस दौर का खास तरीका था।

१९. आहार की कमी से होने वाली बीमारी और उनका सही आहार से इलाज: चौथी सदी ए.डी. (Warrinstates 221-430 BC) में शुरू हुआ।

२०. Drawloom: पहला ड्रालुम कपड़ा, चीनी रियासत 'चू' से आया। (४०० BC)

२१. गैस सिलेंडर: हान पीढ़ी (202 BC, 220 BC) के दौर में डीप बोर होल ड्रैनींग (Drilling) का प्रयोग हुआ। चीन ने बांस की पाईपलाईन से कुदरती गॅस घरैलु चुल्हों तक पहुंचाई।

२२. रौटरी फैन: दस्ती और पानी की ताकत से चलने वाला: हान पीढ़ी (202 BC, 220 BC) एअर कंडीशनिंग के लिए अविष्कार किया।

२३. नूडल्स: 2005 AD में लाजीया (कचीया कल्चर) के मुकाम पर खुदाई के दौरान 1900/2400 BC ज़माने के नूडल्स मिले जो गेहुं के बजाए बाजरे के आटे से बनाए गए थे।

२४. रेशम: चीन में पाया जाने वाला बहुत पुराना रेशम, चीन के न्यूलेथिक दौर का है उसका जमाना 630 BC का है।

२५. चॉप स्टिक: ज़हू ऑफ शांग पहला चीनी था जिसने हाथी के दांत से ग्यारवी सदी BC में चॉप स्टिक बनाऐ।

२६. कोजो (फुटबॉल): कोजो यानी फुटबॉल का जिक्र पहली बार चीन की दो इतिहास की किताबों में मिलता है। "ज़िहान गोसे" जिसे तीसरी BC पहले तरतीब दिया गया।

२७. डायबिटिस की पहचान और इलाज: हवांग बी नचींग ने हान पीढ़ी के दौर में (202 BC, 220 BC) इस बीमारी की खोज की। मरीज वह थे जो शक्कर बहुत खाते थे और चरबीदार खाने भी प्रयोग करते थें।

- यह चीन की कुछ खोजें हैं, तमाम की सूची बनाने के लिए हमें एक अलग किताब की ज़रूरत होगी। मुक्कमल मालुमात के लिए इंटरनेट पर संपर्क करे। (www.chinahistoryforum.com)

500 AD से लेकर 1000 BC तक चीन विज्ञान और तंत्रज्ञान का एकमात्र केंद्र था। हज़रत मुहम्मद (स.) का जमाना 600 AD है। हज़रत मुहम्मद (स.) के जमाने में किसी को अगर विज्ञान और तंत्रज्ञान सीखना हो तो वह कहाँ जाकर सीखता?

इमाम गज़ाली (रह.) ने अपनी किताब 'अहयाअुल उलूम' में हज़रत मुहम्मद (स.) की एक हदीस नकल की है। वह इस तरह है। "ज्ञान हासिल करो और ज्ञान हासिल करने के लिए अगर चीन भी जाना पड़े तो वहाँ जाओ।"

हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "हिकमत (ज्ञान) मोमिन की मिल्कियत है। इसे वह जहाँ से मिले प्राप्त करे।" अगर मुसलमान हज़रत मुहम्मद (स.) की चीन वाली हदीस पर यकीन रखते और विज्ञान और तंत्रज्ञान के मैदान में भी तरक्की करने की कोशिश करते तो आज सऊदी हुकूमत को अपनी और हरम शरीफ की हिफाज़त के लिए अमेरिका की शरण लेने की जरूरत ना पड़ती।

▼▼▼▼▼▼▼

४६. कर्ज़ के जाल से कैसे मुक्ति पाएं?

चार कारण हैं जिनकी वजह से कोई बंदा कर्ज़ के जाल में फंसता है?

१. खुदा का गज़ब (प्रकोप)।
२. परिक्षा।
३. गलत फैसला।
४. भाग्य।

- खुदा के गज़ब (प्रकोप) के करण एक बंदा माल और दौलत खो देता है और कुछ समय या हमेशा के लिए कर्ज़दार बन जाता है।

- परिक्षण (आज़माइश) में बंदा कुछ समय के लिए माल और दौलत खोता है और कर्ज़ के जाल में गिरफ्तार हो जाता है। अल्लाह तआ़ला इस आज़माइशी दौर में उस बंदे के किरदार (चरित्र) पर नज़र रखता है। परिक्षा में कामयाबी के बाद वह बंदा अपनी पिछली हालत पर लौट आता है या अगर परिक्षा में सफल हुआ तो और ज़्यादा खुशहाल हो जाता है।

- गलत फैसले से बंदा धार्मिक शिक्षाएं भूल कर खतरनाक फैसले करता है। परिणाम स्वरूप माल का नुकसान और कर्ज़ का बड़ा भार उठाता है।

- भाग्य के अनुसार अगर किसी बंदे के भाग्य में सिर्फ आराम वाली जिंदगी तो है मगर ज्यादा माल दौलत और जायदाद नहीं है, और अगर ऐसा आदमी ज्यादा माल कमाने के लिए बैंक वगैरा से बड़ा कर्ज़ लेता है, और उसे किसी कारोबार में लगाता है या अपनी कम्पनी का पैदावार बढ़ाने में खर्च करता है ताकि दूसरों की तरह वह भी मालदार बन जाए तो भी ऐसे भाग्य वाला व्यक्ति मालदार नहीं बनेगा। वह हमेशा कर्ज़दार रहेगा मगर हमेशा कर्ज़ अदा करता रहेगा। इसलिए वह अपमानित होने से तो बचेगा मगर कर्ज़ से कभी छुटकारा नहीं पाएगा। इस प्रकार के लोगों की अक्सरियत व्यापारियों में होती है।

- अब हम कर्ज़ के चारो कारणों का विस्तार से अध्ययन करेंगे और उनसे बचने का रास्ता मालूम करेंगे।

१. खुदा का हल्का गज़ब (प्रकोप):

आबिदा एक घरेलू औरत है। वह घर के खर्च से काफी रकम बचा लेती है। एक बार उसने बगैर किसी खास वजह के अपने ससुर की खिदमत करने से इन्कार कर दिया और अपने पति को मजबूर किया कि वह अपने बाप की स्वयं खिदमत करें। अपने रिश्तेदारों के सामने उसने अपने पति की बेइज्जती भी की। उसके पति ने कोई प्रतिक्रिया जाहिर नहीं की और सब्र व सुकून से अपना फर्ज अदा करता रहा।

इस घटना के कुछ दिनो पश्चात आबिदा के भाई ने उसके सामने एक व्यापारिक योजना रखी। उसने व्यापार के सुनहरे सपने दिखाए और बड़े मुनाफे का लालच देकर कहा कि आबिदा दो लाख की पूंजी इस कारोबार में लगाए। आबिदा के पास एक लाख रूपया था इसलिए उसने १ लाख रूपया अपनी सहेली से कर्ज़ लिया और अपने भाई को यह कहकर दिया कि मुनाफा बराबर से बांटा जाएगा।

उस कारोबार में मुनाफा के बजाए नुकसान हुआ। आबिदा का १ लाख रूपया डूब गया और उसपर एक लाख रूपये का कर्ज़ बाकी रहा। दो लाख रूपयों का नुकसान एक घरेलू औरत के लिए बड़ा सदमा था वह बहोत निराश हो गई, और परेशान रहने लगी और कर्ज़ की वक़्त पर अदाएगी ना होने से अपमानित भी होती रही।

इस्लामी कानून के अनुसार बहू पर ससुर की खिदमत करना फर्ज़ नहीं है। लैकिन अडयल स्वभाव की वजह से पति का अपमान करना और ऐश व आराम की जिंदगी के लिए एक बड़े मकान में बगैर किसी खास वजह के ससुर की कोई खिदमत ना करना और ससुर के काम पति से करवाना यह आबिदा का गलत कदम या गुनाह था। उसे अपनी गलती का एहसास कर्ज़ में डूबने के बाद हुआ।

किसी से माफी मांगे बगैर उसने अपना रवय्या बेहतर बनाया। पति और ससुर से अच्छा बर्ताव शुरू किया। वह दीनदार (धार्मिक) भी हो गई। उसके बाद उसकी हालत बेहतर होने लगी और तीन साल में उसने अपना कर्ज़ अदा कर दिया।

खुदा के हल्के गज़ब (प्रकोप) की यह एक मिसाल है।

- कुरआ़ने करीम में इरशाद है, "और हमने तुम से पहले बहोत सी उम्मतो की तरफ पैगंबर भेजे। फिर उनकी नाफरमानियों के सबब उन्हें सख्तियों और तकलीफों में पकड़ते रहे ताकि आजिज़ी (अल्लाह से माफी मांगते) करते रहें मगर उनके तो दिल ही सख्त हो गए थे और जो काम वह करते थे उसे शैतान उनको उनकी नज़रों में अच्छा कर दिखाता था। जब उन्होंने उस नसीहत को जो उनको की गई थी भुला दिया था तो हमने उनपर हर चीज़ के दरवाजे खोल दिए। यहाँ तक कि उन चीज़ों से जो उनको दी गई थी खूब खुश हुए, तो हमने उनको पकड़ लिया और वह उस वक़्त मायुस होकर रह गए।" (सूरह अल-अनआ़म आयत ४२-४४)

  आबिदा की सज़ा आर्थिक नुकसान के रूप में थी। और जैस-जैसे उसने अपना रवय्या सही किया और दीनदार (धार्मिक) बनती गयी धीरे धीरे उसकी सज़ा भी कम होते होते खत्म हो गयी।

खुदा का भारी गज़ब (ईश्वरीय प्रकोप):

- उमर शरीफ अपने मालदार माता-पिता का एकलौता बेटा था। चूंकी उन्हें कोई आर्थिक समस्याऐं नहीं थीं और उनका सम्बंध समाज के इज्जतदार खानदान में होता था इसलिए उमर शरीफ की शादी कम उम्र में ही हो गई। उसके पिता की मृत्यु हो गयी। और उमर शरीफ अपना खानदानी व्यापार कामयाबी से चलाने लगा। शादी के १५ साल बाद वह एक खूबसूरत लड़की से मुहब्बत करने लगा और अपने होश खो बैठा। उसने अपनी नेक और पारसा बीवी को तलाक दे दी। अपने बच्चो और अपनी माँ को छोड़ दिया और नई बीवी के साथ नए फ्लैट में रहने लगा।

  दूसरी शादी तक उसका कारोबार कामयाब और जमा हुआ था। और उसका भविष्य रौशन था लैकिन दूसरी शादी के बाद यह सब बदल गया।

अपने कारोबार को बढ़ाने के लिए उसने बैंक से ७० लाख रूपया कर्ज़ लिया और मुझसे एक नई मशीन खरीदी। १९९७ ई. के बाद ५ साल तक आर्थिक मंदी रही इस दौरान उमर शरीफ अपने कर्ज़ की किस्तें अदा नहीं कर सका। दो साल तक बाकायदा किस्तें अदा नहीं हुईं तो बैंक का सब्र खत्म हो गया और बैंक ने उसकी फैक्टरी नीलाम कर दी। ७० लाख के कर्ज़ के लिए उसने अपनी ३ करोड की फैक्टरी गंवा दी। अब वह ज़िल्लत की जिंदगी गुजार रहा है।

उमर शरीफ से बहोत सारी गलतियां हुईं। मिसाल के तौर पर उसने अपनी नेक बीवी को बिला वजह तलाक दे दिया, अपने बच्चों और माँ को छोड़ दिया। बैंक से ब्याज वाला कर्ज़ लिया और जब कर्ज़ के जाल में फंस गया तो दो साल तक ना अपनी गलतियां सुधारीं ना ही खुदा की तरफ रूजू हुआ। इसलिए उसपर खुदा का भारी गज़ब हुआ और यह कर्ज़ उसके लिए माल और दौलत (जायदाद) की बरबादी और हमेशा के लिए गरीबी और मुफलिसी का कारण बन गया।

- कुरआने करीम में अल्लाह तआ़ला फरमाता है, "और जब तुम (यानी बनी इस्रराईल) ने कहा कि मूसा (अ.स.) हमसे एक ही खाने पर सब्र नहीं हो सकता तो अपने परवरदिगार से दुआ कीजिए की तरकारी, ककडी, गेहूं, मसूर, प्याज वगैरा जो जमीन से उगती हैं हमारे लिए पैदा कर दे। उन्होंने कहा कि भला उमदा चीजें छोड़कर उनके बदले घटिया चीज़ें क्यों चाहते हो? अगर यही चीजें चाहते हो तो किसी शहर में जा उतरो, वहाँ जो मांगते हो मिल जाएगा। और आखिरकार जिल्लत, रूसवाई, मोहताजी, बेनवाई उनसे चिमटा दी गई और वह खुदा के गज़ब (प्रकोप) में गिरफ्तार हो गए। यह इसलिए की खुदा की आयतों से इन्कार करते थे और उसके नबियों (पैगम्बरों) को नाहक कत्ल कर देते थे। यानी यह इसलिए कि नाफरमानी किए जाते और हद से बढ़े जाते थे।" (सूरह बक़रा आयत ६१)

  उमर शरीफ हद से बढ़ गया था। उसे ना अपनी गलतियों का एहसास था ना दीनदारी अेख्तियार की, इसलिए जिल्लत, रूसवाई और गरीबी उसे चिमटा दी गई।

  नेकी करने और बुराई से बचने की ताकत सिर्फ अल्लाह तआ़ला की दया और कृपा से होती है। इसलिए इस किस्म की गलती और गुनाह से बचने के लिए हज़रत मुहम्मद (स.) निम्नलिखित दुआ़ पढ़ते रहे।: "ऐ अल्लाह! मैं आपकी शरण चाहता हुँ ऐसे काम करने से जिनसे आप नाराज़ हों। मैं गरीबी और फाका (भुखमरी) से और दुनिया और आखिरत की रूसवाई (बदनामी) से आपकी शरण चाहता हुँ।"

  यह दुआ़ आप (स.) तवाफ के समय पढ़ा करते थे।

२. परिक्षा (आज़माइश):

- अल्लाह तआ़ला कुरआ़न में फरमाता है, "क्या तुम यह खयाल करते हो कि युं ही स्वर्ग में दाखिल हो जाओगे और अभी तुमको पहले लोगों की सी मुश्किलें तो पेश आई ही नहीं। उनको बड़ी बड़ी तकलीफें पहुँचीं और वह तकलीफों में हिला हिला दिए गए। यहाँ तक कि पैगंबर और मोमिन लोग जो उनके साथ थे सब पुकार उठे कि कब खुदा की मदद आएगी? देखो खुदा की मदद बहोत जल्द आना चाहती है।"(सूरह बक़रा :२१४)

- "और हम किसी कद्र खौफ, भूख, माल, जानों और मेवों के नुकसान से तुम्हारी आज़माइश करेंगे तो सब्र करने वालों को खुदा की खुश्नूदी की खुश्खबरी सुना दो। उन लोगों पर जब कोई मुसीबत वाकेअ़ होती है तो कहते हैं कि हम खुदा ही का माल हैं और उसी की तरफ लौट कर जाने वाले हैं। यही लोग हैं जिनपर उनके परवरदिगार की मेहरबानी और रहेमत है और यही सीधे रास्ते पर हैं।" (सूरह बक़रा आयत ५४-५७)

- अल्लाह तआ़ला जब परिक्षा लेते हैं तो कभी कभी माली नुकसान होता है और इन्सान भारी कर्ज़ के बोझ के नीचे दब जाता है। लैकिन आज़माइश और परिक्षा सिर्फ थोड़ी मुद्दत के लिए होती है। और अगर आप परिक्षा में पास हो गए तो आज़माइश के बाद और ज्यादा खुशहाली और माल और दौलत जमा हो जाता है।

- माली नुकसान अल्लाह के गज़ब से भी होता है। तो हम यह कैसे पता करें कि कौनसा नुकसान आज़माइश है और कौनसा नुकसान अल्लाह के गज़ब से है?

  उलमा (धार्मिक विद्वान) कहते हैं कि आज़माइश में बंदे की सोचने की ताकत कायम रहती है। वह पुरसुकून होकर अपने होश और हवास के साथ सोच सकता है। जबकि खुदा के गज़ब में सबसे पहले सही सोच खत्म हो जाती है। और अपने गलत फैसले से ही बंदा गरीबी के गड्ढे में जा गिरता है और कर्ज़ के जाल में फंस जाता है।

- अल्लाह तआ़ला कुरआ़न करीम में फरमाता है, "जो व्यक्ति नेक कर्म करेगा, मर्द हो या औरत वह मोमिन भी होगा तो हम उसे पाक और आराम की जिंदगी से जिंदा रखेंगे और उनके आमाल का निहायत अच्छा सिला (बदला) देंगे।" (सूरह नहल आयत ९७)

  इसलिए एक नेक बंदा हमेशा के लिए कभी कर्ज़दार नहीं रहेगा।

३. गलत फैसला:

- अल्लाह तआ़ला कुरआ़न में फरमाता है, "खुदा किसी व्यक्ति को उसकी ताकत से ज्यादा तकलीफ नहीं देता। जो अच्छे कर्म करेगा उसको उनका फायदा मिलेगा जो बुरा करेगा तो उसे उनका नुकसान पहुँचेगा।"
  (सूरह बक़रा आयत २८६)
- अक्सर हम अपने गलत फेसलों की वजह से कर्ज़ के बोझ तले दब जाते हैं। यह कर्ज़ का बोझ ना तो अल्लाह तआ़ला का गज़ब (प्रकोप) होता है ना आज़माइश बल्कि हमारी ही गलतियों का अंजाम होता है।

- माली मामलात में हम गलतियां अपने गलत अकीदों (सोच) की वजह से करते हैं। हमारे कुछ अकीदे निम्नलिखित हैं:

गलत अकीदे:

१. ब्याज लेना और देना सिर्फ गुनाह है। इससे खुशहाली और गरीबी पर कोई असर नहीं पड़ता।

२.अगर एक अच्छे स्थान पर एक विशाल और एक अच्छी दुकान हो। और उसमें बेचा जानेवाला माल अच्छा हो तो आप उस दुकान से अच्छी कमाई प्राप्त कर सकते हैं, चाहे आपकी तकदीर कैसी ही हो। इसी तरह एक कारोबार जिसमें दूसरे लोग अच्छा पैसा कमा रहे हैं अगर हम भी वह कारोबार करें तो अच्छा माल कमा सकते हैं। इसमें तकदीर या भाग्य का कोई दखल नहीं है।

३.मज़हब एक अलग चीज़ है। कारोबार और पैसा कमाना एक अलग चीज़ है। कारोबार या दौलत कमाने में या खुश्हाल होने में मज़हब या अल्लाह का कोई हाथ नहीं है। इन्सान अपनी सोच, समझ, अकलमंदी, योग्यता, हुनर और होशियारी वगैरा से कामयाब होता है।

अकीदे की इस्लाह (सुधारणा) कैसे करें?:

अकीदा नंबर १ की इस्लाहः

- किसी भी प्रकार का ब्याज वाला लेन देन आपकी कमाई से बरकत खत्म कर देगा। और आप कर्ज़ में डूबे रहेंगे। इसकी वजह यह है कि अल्लाह तआ़ाला ने ब्याज वाले लेन देन पर सख्त पाबंदी लगाई है।

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने उन तमाम लोगों पर लानत की है जो ब्याज का लेन देन करते हैं। जैसे;

१. जो ब्याज लेते हैं।
२. जो ब्याज अदा करते हैं।
३. ब्याज दिलाने वाले दलाल।
४. जो ब्याज की रकम का हिसाब किताब लिखते हैं। (तिरमिज़ी, मुस्लिम)

जिन लोगों पर यह लानत की गई हैं वह हमेशा माली समस्याओं में घिरे रहेंगे। ब्याज से कमाया हुआ माल 'माल ए हराम' है।

- "खुदा ब्याज को नाबूद यानी बेबरकत करता है और खैरात की बरकत को बढ़ाता है और खुदा किसी नाशुक्रे गुनहगार को दोस्त नहीं रखता।"
(सूरह बक़रा आयत २७६)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अल्लाह तआ़ाला ने उन सब बंदो पर लानत की है जो ब्याजी लेन देन में मस्रूफ (व्यस्त) हैं।" (तिरमिज़ी, मुस्लिम)

- हज़रत अब्दुल्ला बिन मसऊद (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स) ने फरमाया, "अगर ब्याजी लेन देन और ब्याजी कारोबार के द्वारा बड़ा माल कमा लिया जाए तो भी आखिरकार वह व्यक्ति माली खसारे (घाटे) में मुब्तिला होगा।" (तरगीब व तरहीब, इब्ने माजा, हाकिम)

- अगर आपने ब्याजी कर्ज़ लिया है तो माली नुकसान और कर्ज़ का बोझ आपकी तकदीर का हिस्सा है। ब्याज लेना देना सिर्फ गुनाह ही नहीं है इससे बरकत भी खत्म होती है, इन्सान कर्ज़दार भी हो जाता है।

अकीदा नंबर २ और ३ की इस्लाह :

- अल्लाह तआ़ाला कुरआ़न में फरमाता है, "और अगर खुदा अपने बंदो के लिए रिज़्क (रोज़ी) में फरागी (बढ़ोतरी) कर देता तो लोग ज़मीन में फसाद करने लगते। इसलिए वह जिस कद्र चाहता है अंदाज़े के साथ नाज़िल करता है। बेशक वह अपने बंदो को जानता है और देखता है।"
(सूरह शूरा आयत २७)

- "और अगर खुदा तुमको कोई तकलीफ पहुंचाए तो उसके सिवा उसको कोई दूर करने वाला नहीं। और अगर तुमसे भलाई करनी चाहे तो उसकी कृपा को कोई रोकने वाला नहीं। वह अपने बंदो में से जिसे चाहता है फायदा पहुंचाता है।" (सूरह यूनुस आयत १०७)

- "क्या यह लोग तुम्हारे पालनहार की रहमत को बांटते हैं? हमने उनमें उनकी मईशत (अर्थव्यवस्था) को दुनिया की जिंदगी में तक्सीम (विभाजित) कर दिया और एक दुसरे पर दर्जे बुलंद किए ताकि एक दूसरे से खिदमत लें और जो कुछ यह जमा करते हैं तुम्हारे परवरदिगार की रहेमत उससे कही बेहतर है।" (सूरह बक़रा आयत ४३)

उपरोक्त आयातें इस बात को सिद्ध करती हैं कि खुशहाली, माल और दौलत, समाज में आप मालिक है या मज़दूर इन सबका फैसला खुद अल्लाह तआ़ाला करता है। इसलिए कारोबार में तर्जुबा, जहानत, होशियारी चालाकी वगैरा से ज्यादा अहम अल्लाह तआ़ाला की कृपा है। इसलिए अगर अल्लाह तआ़ाला चाहेंगे तो ही बंदा खुशहाल और मालदार होगा वरना बेहतरीन दुकान पर बेहतरीन माल भी बेचे तब भी नुकसान ही होगा।

लोग गलत फैसले किस तरह करते हैं? :

लोग कभी कभी निम्नलिखित गलत फैसला करते हैंः

१. कारोबार बढ़ाने के लिए ब्याजी कर्ज़ ले लेते हैं।
२. पुराना कारोबार बंद करके नया कारोबार शुरू करते हैं।
३. कारोबार में तरक्की के लिए सिर्फ दुनियावी अस्बाब का सहारा लेते हैं। कभी अल्लाह तआ़ाला की मदद को तलाश नहीं करते।

ब्याजी कारोबार से बेबरकती होती है और अल्लाह तआ़ाला की लानत होती है इसलिए मुनाफा नहीं होता है। यह बात तो समझ में आयी मगर पुराना कारोबार खत्म करके नया कारोबार क्यों नहीं शुरू करना चाहिए?

आइये! इसका जवाब हम हदीस शरीफ की किताबों में ढूंढते हैं।

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "किसी भी पेशे या ज़रिया ए आमदनी से कोई अपनी रोजी हासिल करता है तो उस रोजी को बदलना नहीं चाहिए ना उसे अपनी मर्ज़ी या फैसले से छोड़ना चाहिए, उस समय तक जब तक कि उस रोज़ी में अपने आप कोई बदलाव ना आए या, उसमें खराबी आऐ ,या उससे ज़रूरत के अनुसार कमाई ना हो।"
(कन्ज़ुल आमाल ६२८६, अतहाफिज सआदतुल तावीन ४/२८७)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जो लोग भौतिक खुशहाली के लिए अथक परिश्रम करते हैं उन्हें दरमियानी रास्ता अेख्तियार करना चाहिए, क्योंकि जिस मक्सद के लिए बंदे को पैदा किया गया है वह मक्सद हासिल करना अल्लाह तआ़ाला उस बंदे के लिए आसान कर देता है।"
(इब्ने माजा २२१८)

- अल्लाह तआ़ाला ने हर बंदे को इस दुनिया में किसी ना किसी मक्सद के लिए पैदा फरमाया है और उसे उस मक्सद को पूरा करने के लिए योग्यता प्रदान की है ताकि वह अपना फर्ज कामयाबी से अदा करे। एक बच्चा, अपने स्वभाव के अनुसार बचपन ही से किसी पेशे या कारोबार की तरफ आकर्षण महसूस करता है और बाद में उसे अपनी रोज़ी का ज़रीया (माध्यम) भी बना लेता है। कुछ समय तक वह उससे रोज़ी को हासिल भी करता है। लैकिन अपनी जिंदगी में कभी वह मालदार और प्रसिद्ध लोगों से प्रभावित हो जाता है। और उनकी रोजी, या व्यापार या उनका पेशा अेख्तियार करने की कोशिश करता है ताकि वह भी बड़ा

मालदार बन जाऐं। लैकिन यह सोच या कदम गलत है। हर एक को अपना पहला पेशा कायम रखना चाहिए और उसके साथ साथ अपनी पसंदीदा रोजी भी शुरू करनी चाहिए। अगर दूसरी रोजी से काफी आमदनी होने लगे, उसी स्थिति में पहला पेशा कम किया जा सकता है। वरना पहले पेशे को कभी तर्क ना करें वरना नुकसान होगा और कर्ज़ का बोझ सर पर आ पड़ेगा।

४. तकदीर (भाग्य):

- अल्लाह तआ़ला कुरआन करीम में फरमाता है, "अल्लाह तआ़ला ही दौलतमंद बनाता है और मुफ्लिस (गरीब) करता है।"

(सूरह नज्म आयत ४८)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया कि वह जो अल्लाह तआ़ला के हाथ में है आप उसे बगैर अल्लाह तआ़ला को खुश किए हासिल नहीं कर सकते।(बेहकी)

यानी माल व दौलत सिर्फ अल्लाह तआ़ला के हाथ में है उसे आप सिर्फ और सिर्फ अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी से ही हासिल कर सकते है।

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जिसे सबसे ज्यादा चिंता आखिरत की हो अल्लाह तआ़ला उसको गनी (मालदार) कर देता है और उसके उलझे हुए कामों को सुलझाकर उसके दिल को गनी (मालदार) कर देता है। और दुनिया उसके पास ज़लील व अपमानित होकर आती है।(यानी दुनिया का माल जो उसके भाग्य में लिखा है बगैर किसी ज्यादा मेहनत के आसानी से उसके पास पहुँच जाता है)। जो व्यक्ति दुनिया के ऐश पर मर मिटने का फैसला कर चुका हो अल्लाह तआ़ला उसपर मोहताजी थोप देता है। (यानी वह महसूस करता है कि मैं लोगों का मोहताज हुँ) और अल्लाह तआ़ला उसके सुलझे हुए मामलों को खराब करके उलझा देता है। इसलिए वह मन की शांति की निअ़मत से वंचित हो जाता है। और दुनिया का रिज्क (ज्यादा नहीं बल्कि) उसे सिर्फ उतना ही मिलता है जितना उसके भाग्य में होता है।"

(तिरमिज़ी, तर्जुमाने हदीस जिल्द १, हदीस नंबर २२)

इसलिए कोई फैसला करने से पहले अपने भाग्य पर नज़र रखें। और अगर रिज्क में बरकत चाहते हों तो जिसके हाथ में रिज्क है उसे खुश करने की कोशिश करें।

- ***अल्लाह तआ़ला से माल और दौलत हासिल करने के लिए हम क्या करें?***

१. अपने ईमान और विचारों को बेहतर बनाएं।

२. अपनी इंतेजामी अहलियत (प्रबंधन योग्यताओं) में इजाफा करें। (अख्लाक को बेहतर बनाऐं।)

३. अच्छे कर्म करें, कामयाबी के लिए इस्लामी तरीका अपना लें (इस किताब में इस्लामी तरीके की तफ्सील है।)

ऊपर दी गई हिदायतों पर अमल किए बगैर आप की माली हालत वैसी ही रहेगी जो आपके भाग्य में है।

- मान लिजिए ऊपर दी गई हिदायतों को नजरअंदाज करके आपने कोई बड़ा कारोबार शुरू किया। आपने बैंक से १०० करोड़ रूपया कर्ज़ लिया और कोई उद्योग शुरू किया और अपना माल (उत्पाद) बेचना शुरू किया। आपको कर्ज़ लेने और कारोबार बढ़ाने से कोई नहीं रोकेगा, क्योंकि यह सौ प्रतिशत आपके हाथ में है। लैकिन

(ग्राहक से वसूल होने वाली रकम)-(बैंक और सप्लायर को अदा की जाने वाली रकम) = नफा

यह मसावात (Equation) आपके अेख्तियार में नहीं है।

- अगर आप के भाग्य में खुशहाली नहीं है तो आपके खर्च इतने ज्यादा होंगे कि आपकी अदाएगी की जिम्मेदारी आपकी आमदनी से हमेशा ज्यादा होगी। सप्लायर को देने वाली रकम ग्राहक से मिलने वाली रकम से हमेशा ज्यादा रहेगी और आप हमेशा कर्ज़दार रहेंगे।

- इस तरह का कर्ज़ आम तौर पर व्यापारी लेते हैं जो ज्यादा नफा की लालच में, जरूरत से ज्यादा रूपया लोगों से या बैंक से कर्ज़ लेकर कारोबार में लगा देते हैं और सारी जिंदगी कर्ज़ चुकाते रहते हैं। और कर्ज़ के बोझ तले दबे रहते हैं।

- हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) कहते हैं की हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "खर्च में दरमियानी रास्ता अेख्तियार करना आधी मईशत/अर्थव्यवस्था (Economy) है और लोगों से मेलमिलाप करना आधी अकलमंदी है।" (बेहकी, मुन्तखिब अबवाब जिल्द १ हदीस ११३१)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "मश्वरा (Taking openion) में खैर का हिस्सा है।"। (मिश्कात)

(खैर यानी खुशहाली) यह मश्वरा (Taking openion) बुजूर्गों और उलमा (धार्मिक विद्वानो) से करना चाहिए।

इसलिए पहले खुद को बेहतर बनाएं और खुलूस से अल्लाह तआ़ला की इबादत करें और जिंदगी में दरमियानी रास्ता अेख्तियार करें। सही लोगों से सलाह लें और कर्ज़ से बचते रहें।

कर्ज़ के जाल से रुहानी तौर पर कैसे निकलें?

१. हमने उन कारणों का अध्ययन किया जिनसे लोग कर्ज़दार हो जाते हैं। अब हमें यह देखना है कि कैसे कर्ज़ से आज़ाद हों?

२. अल्लाह तआ़ला के प्रकोप से अगर आप कर्ज़ का शिकार हों तो सबसे पहले आप अपने अख्लाक दुरूस्त करें और खुदा के सामने गिड़गिडाएं, रोएं, माफी मांगे, तौबा करें।

३. कर्ज़ के जाल में अगर आप आजमाइशी तौर पर फंसे हैं तो सब्र करें, इबादत में व्यस्त रहें और सिराते मुस्तकिम पर सख्ती से कायम रहें।

४. गलत फैसले की वजह से अगर कर्ज़दार हों तो अल्लाह से दुआ़ करें कि वह आपकी माली मदद करें। और रोज़ी में बरकत वाली आयात और तस्बिहात को पाबंदी से पढ़ें।

- हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जो आदमी लोगों से (कर्ज़) माल ले और उसकी नियत और इरादा अदा करने का हो तो अल्लाह तआ़ला उसे अदा करा देगा। (यानी अदाएगी में उसकी मदद फरमाएगा। और अगर जिंदगी में वह अदा न

कर सका तो परलोक में उसकी तरफ से अदा फरमाकर उसको छोड देगा।) और जो कोई किसी से कर्ज़ ले और उसका इरादा ही मार लेने का हो, तो अल्लाह तआ़ला उसको नष्ट और तबाह कर देगा (यानी दुनिया में भी उस बदनियत आदमी को ज़लील होना होगा और आखिरत में उसके लिए वबाले अज़ीम होगा)।"

(सही बुखारी, मुआरूफुल हदीस जिल्द ७ सफहा ६६)

इसलिए हमेशा ईमानदार रहें और कर्ज़ लौटाने की सच्ची नियत रखें ताकि खुदाइ मदद मिले।

५.अध्याय "गरीबी और मफ्लिसी (भुकमरी) के कारण" दुबारा पढ़ें और उन कामों से बचें जो गरीबी का कारण हैं क्योंकि तह (बाल्टी के निचले भाग) का सूराख बंद किए बगैर आप बालटी में पानी नहीं भर सकते। इसतरह गरीबी लाने वाले कामों से बचे बगैर आपको अल्लाह से बरकत नहीं मिलेगी और उस बरकत के बगैर आपका कर्ज़ कम नहीं हो सकता।

६.हर महीने सदका (दान) करें और हर साल ज़कात अदा करें और ज़कात का जो हिसाब करें उससे थोड़ा ज़्यादा दें। अगर आपने मौरूसी (खानदानी) जायदाद में से मां और बहन का हिस्सा नहीं दिया तो उनका हिस्सा फौरन अदा करें और दूसरों की भी वह तमाम चीज़ें वापस कर दें जो आपने नाज़ायज तरीके से दबा रखी हैं।

कर्ज़ से आजाद होने कि ख़ास दुआएं निम्नलिखित हैं।

१. हज़रत अबू सईद खिदरी (रज़ि.) कहते हैं कि "एक बार हज़रत मुहम्मद (स.) के सहाबी हज़रत अबू उमामा (रज़ि.) मस्जिद में बे वक्त बैठे थे, जो कि नमाज़ का वक़्त नहीं था। हज़रत मुहम्मद (स.) ने उनसे पूछा कि वह इस वक़्त क्यूं बैठे हैं? उन्होंने जवाब में कहा कि मैं परेशानी और कर्ज़ में मुब्तला हुँ, मन की शांति के लिए मस्जिद में बैठा हुँ। हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया कि मैं तुम्हे ऐसी दुआ सिखाऊं जो तुम्हें परेशानी और कर्ज़ से मुक्ति दे? फिर आप (स.) ने फरमाया कि निम्नलिखित दुआएं पढ़ें"

١. اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحَزَن

''अल्लाहुम्मा इन्नी अऊजु बिका मिनल हम्मे वल हिज़्ने''

''ऐ अल्लाह में तेरी पनाह (शरण) में आता हुँ परेशानी से और दुख से''

٢. وَاَعُوْذُبِکَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْکَسَلِ

''व अऊजु बिका मिनल अज्ज़े वल कस्ले''

''आजिज़ (मजबूर) हो जाने से और काहिली (आलस्य) से।''

٣. وَاَعُوْذُبِکَ مَنَ الْجُبْنِ وَالْبُخْلِ

''व अऊजु बिका मिनल जुब्ने वल बुख्ले''

''बुज़्दीली (कायरता) और कजूंसी से।''

٤. وَاَعُوْذُبِکَ مَنْ غَلَبَةِ الدَّیْنِ وَ قَهْرِ الرِّجَالِ.

''व अऊजु बिका मिन ग़-ल-बतित दैनि व क़ह-रिर्रिजाल''

''कर्ज़ के बोझ से और इससे कि लोग मुझपर कहर (प्रकोप) ढाएं।''

(तिरमिज़ी, निसाई, हसन हुसैन)

इस दुआ की तिलावत के बाद बहोत कम समय में अबू उमामा (रज़ि.) की समस्याओं का समाधान हो गया।

हर नमाज़ के बाद इस दुआ को पढ़ा करें।

२.जामे तिरमिज़ी (हदीस की किताब) के अनुसार हज़रत मुहम्मद (स.) मुश्किलात के जमाने में निम्नलिखित तसबिह पढ़ा करते थे।

یَا حَیُّ یَاقَیُّوْمُ بِرَحْمَتِکَ اَسْتَغِیْث

''या हय्यो या कय्यूमो बि-रह-मतिका अस्तगीस''

अर्थः "ऐ अबदी खुदा! जो कायनात का मुन्तजिम (प्रबंधक/व्यवस्थापक) है, मैं तुझसे तेरे रहम की दुआ करता हुँ।"

३.हज़रत साद बिन अबी वकास (रज़ि.) के अनुसार हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "हज़रत यूनुस (अ.स.) की दुआ हर परेशानी और मुसीबत का बेहतरीन इलाज है।" (इब्ने सीना हसन हुसैन सफा २१०)

لَااِلٰهَ اِلَّااَنْتَ سُبْحٰنَکَ اِنِّیْ کُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ

''ला इलाहा इल्ला अन्ता सुब्हा-नका इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़लिमीन''

अर्थः "यानी इबादत के लायक तेरे सिवा कोई नहीं (ऐ खुदा!) और तू हर ऐब (दोश) से पाक है और वाकई मैं एक गुनहगार आदमी हुँ।"

४.हज़रत अली (रज़ि.) के अनुसार हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "निम्नलिखित दुआ तुम्हारा कर्ज़ कम कर देगी चाहे वह पहाड़ के बराबर ही क्यों न हो।" (तिरमिज़ी दावते कबीर, बेहकी, मुआरिफुल हदीस सफहा २३४)

इसलिए लोगों का कर्ज़ अदा करने के लिए यह दुआ हर फर्ज़ नमाज़ के बाद पढ़ें: اَللّٰهُمَّ اکْفِنِیْ بِحَلَالِکَ عَنْ حَرَامِکَ

وَاَغْنِنِیْ بِفَضْلِکَ عَمَّنْ سِوَاکَ.

''अल्लाहुम्मक-फिनी बि-हलालिका अन हरामिका वग-निनी बि-फज़्लिका अम्मन सिवाक''

अर्थः "यानी ऐ खुदा! तू मेरे लिए रिज्के हलाल के द्वारा काफी हो जा और अपने फजल (कृपा) से हमें गरीबी और मोहताजी से आज़ाद फरमा।"

५.हज़रत अब्दुल्ला बिन मसऊद रावी (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया, "जो व्यक्ति हर सुबह में सूरेह वाकया पढ़ता है वह कभी फाका (भूकमरी) की हालत को नहीं पहुँचता।" और हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) ने अपनी लड़कियों को हुक्म दिया करते थे कि वह हर सुबह में यह सूरह पढ़ा करें।"

(बेहकी, मुन्तखिब अबवाब जिल्द १ हदीस ३३२)

६.हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) फरमाते हैं कि एक बार मैं हज़रत मुहम्मद (स.) के साथ कहीं जा रहा था तो हज़रत मुहम्मद (स.) ने एक परेशान और मजबूर बंदे को देखा। आप (स.) ने उसे पूछा, "तुम्हारी इतनी बुरी हालत क्यों है?" उसने जवाब दिया "बीमारी और माली संकट की वजह से मेरी हालत इतनी बुरी है।" हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "मैं तुम्हे कुछ आयात सिखाऊंगा, तुम उनकी तिलावत करो इससे तुम्हारी हालत बेहतर हो जाएगी।" कुछ साल बाद हज़रत मुहम्मद (स.) ने उस बंदे को बेहतर हालत में देखा। आप (स.) उसे देखकर खुश हुए और उस बंदे ने कहा "आप ने जो आयात मुझे सिखाई हैं मैं उनकी बिला नागा तिलावत कर रहा हुँ।"

(मुआरिफुल कुरआ़न जिल्द ५ सफहा ५३१, बिखरे मोती जिल्द १, पेज नं. ८६-६०)

वह आयात निम्नलिखित हैं:

تَوَكَّلْتُ عَلَى الْحَيِّ الَّذِىْ لَا يَمُوْتُ.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّ لَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ''

فِى الْمُلْكِ وَ لَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِىٌّ'' مِّنَ الذُّلِّ وَ كَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا

अर्थः "यानी मेरा खुदा पर ईमान है जो अज़ली व अबदी (अमर) है, जिसे कभी मौत नहीं आऐगी। सब तारीफें अल्लाह के लिए हैं। ना ही इस महान कायनात के इंतेजाम में ना उसका कोई बेटा है और ना ही कोई शरीक/सहभागी। उसे किसी और की मदद की कभी ज़रूरत नहीं। हमें हमेशा उसकी हम्द व तहमिद (प्रशंसा) करनी चाहीए।

७. रोज़ाना की इबादतों का और तसबिहात का नियम इस तरह बनाएं।

१. आयातल कुर्सी (हर फर्ज नमाज़ के बाद)।

२. सूरह कद्र (१० बार हर फर्ज नमाज़ के बाद)।

३. सूरह फातिहा (४१ बार हर रोज़) (अगर १०० बार पढ़ें तो और फायदा होगा।)

४. لاحول ولا قوة اِلّا باللّٰهِ العلى العظيم

''ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अज़ीम'' (१०० बार हर रोज़)

५. سبحان الله وبحمده ،سبحان اللهِ العظيم

''सुब्हानल्लाहि व बि-हम्दिही, सुब्हानल्लाहिल अज़ीम''

(१०० बार हर रोज़ सूरज निकलने से पहले)।

६. इस्तगफार (अल्लाह से अपने गुनाहों पर माफी मांगना) दौहराएं (१०० बार हर रोज़)।

७. रोज़ाना कम से कम १०० बार कोई भी दरूद पढ़ें।

इन आयतों की तिलावत से दौलत में इज़ाफा होता है। इस तरह बिलावास्ता (Indirectly) कर्ज़ कम होता है।

८. कर्ज़ कम करने की बहोत सी आयतें और दुआएं हैं। कृपया किताबः आसान रिज्क (लेखकः सुफी अब्दुल रहेमान, प्रकाशकः फरीद बुक डिपो, दिल्ली) का अध्ययन करें। यह किताब वेबसाईट www.freeeducation.co.in पर भी मौजूद है। (मुफ्त पढें और डाऊनलोड करलें)। यह किताब उर्दू, रोमन उर्दू और हिंदी में मौजूद है।

▼▼▼▼▼▼▼

मुसलमान क्यूं सताए जाते हैं?

- हज़रत अबू दरदा (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स) ने फरमाया, "अल्लाह तआ़ला फरमाता है कि मैं ही अल्लाह हूँ, मेरे सिवा कोई माबूद (पूजने लायक) व मालिक नहीं। मैं शासकों का मालिक हूँ, और बादशाहों का बादशाह हूँ, दुनिया के बादशाहों के दिल मेरे हाथ में हैं (और मेरा कानून है कि) जब मेरे बंदे मेरी आज्ञापालन व फर्मांबरदारी करते हैं तो मैं उनके शासकों के दिलों को रहमत (दया) और शफ्फकत (मुहब्बत) के साथ उन बंदो पर मुतवज्जे कर देता हूँ और जो बंदे मेरी नाफरमानी का रास्ता अेख्तियार कर लेते हैं तो में उनके शासकों के दिलों को क्रोध और आज़ाब के साथ उन बंदो की तरफ मोड़ देता हूँ फिर वह उनको सख्त तकलिफें पहूँचाते हैं। इसलिए तुम अपने को शासकों के लिए बददुआ में व्यस्त ना करों बल्कि व्यस्त करो अपने को मेरी याद में, और मेरी बारगाह में रोने और गिड़गिड़ाने में ताकि मैं तुम्हारे लिए काफि हो जाऊं शासकों के अज़ाब से मुक्ति देने के लिए।"
  (हुलयतुल औलिया अबी नयीम, मारूफुल हदीस जिल्द ७, पेज नं. २४६)

- अल्लाह तआ़ला कुरआ़न करीम में फरमाता है, "जो व्यक्ति नेक कर्म करेगा चाहे वह मर्द हो या औरत (शर्त यह है कि) मोमिन भी होगा तो हम उसको दुनिया में पाक (और आराम) की जिंदगी से जिंदा रखेंगे। और (आखिरत में) उनके कर्मों का बहोत ही अच्छा सिला (बदला) देगें।" (सूरह नहल आयत ६७)

मोमिन बनकर देखीए आपको कोई नहीं सताऐगा।

४७. दौलत की रूहानी (अध्यात्मिक) खराबियां

बदनसीब सालबा :

- सालबा नाम का एक व्यक्ति बहोत गरीब था। उसने हज़रत मुहम्मद (स) से निवेदन किया कि उस की खुशहाली के लिए दुआ फरमाएं। हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "तुम्हारी गरीबी तुम्हारी मगफिरत (माफी) के लिए अच्छी है।" लैकिन सालबा ज़िद करता रहा और वादा किया कि खुशहाल होने के बाद वह नेक काम करता रहेगा और सखावत के साथ सदका (दान) अदा करता रहेगा। आखिरकार हज़रत मुहम्मद (स.) ने उस से पूछाः "तुम्हें दौलत किस रूप में चाहिए?" उसने जवाब दिया, "मुझे बड़ी संख्या में बकरियां चाहिएं।" इसलिए हज़रत मुहम्मद (स.) ने दुआ फरमायी कि ''ऐ अल्लाह! इसे बड़ी संख्या में बकरियां प्रदान करें।'' चूंकि पैगंबर (स.) की दुआ कभी रद नहीं होती, इसलिए उस सहाबी (रज़ि.) की खुशहाली में इज़ाफा होने लगा। बहोत कम मुद्दत में उसके रेवड में इतना इज़ाफा हुआ कि उसे मदीने में रिहाइश जारी रखना मुश्किल हो गया। इसलिए वह एक वादी में हिजरत कर गया जहाँ उसके जानवरों को मुफ्त चारा मिलता था। लैकिन इस हिजरत की वजह से वह हज़रत मुहम्मद (स.) की सोहबत से महेरूम (वंचित) हो गया और हज़रत मुहम्मद (स.) की इमामत में जो नमाज़ें अदा करता था वह निअ्मत भी छिन गयी। मस्जिदे नबवी में नमाज़ की सआदत गंवा दी।

  जब कोई व्यक्ति मालदार होता है तो उसे इस्लामी कानून के मुताबिक २.५ प्रतिशत ज़कात अदा करना ज़रूरी है। इसलिए हज़रत मुहम्मद (स.) ने एक व्यक्ति को सालबा से ज़कात लाने के लिए भेजा।

  सालबा को माल और दौलत से इतनी मुहब्बत थी कि उसको यह बात बुरी लगी और उसने ज़कात वसूल करने वाले की बेइज़्ज़ती की और हज़रत मुहम्मद (स.) के बारे में कुछ अनुचित शब्द इस्तेमाल किए। जब हज़रत मुहम्मद (स.) को उसके बेहुदा रवैये और गुस्ताखाना कल्मात का ज्ञान हुआ तो आप (स.) ने उससे ज़कात लेने से इन्कार फर्मा दिया।

  सहाबा (रज़ि.) पूरे खुलूस से अपने महेबूब पैगंबर (स.) के आमाल हस्ना (बेहतरीन कर्मों) की पैरवी करते थे। इसलिए आप (स.) की वफात (देहांत) के बाद किसी खलिफा ने सालबा से जकात वसूल नहीं किया। जकात अदा करना हर मुस्लिम पर फर्ज है। जकात अदा नहीं करने वाला इस्लाम से खारिज हो जाता है।

  कुरआने करीम में ऊपर बयान की गई घटना का संदर्भ इस तरह दिया गया हैः

- "और उनमें कुछ ऐसे हैं जिन्होंने खुदा से अहद (प्रतिज्ञा) किया था कि अगर वह (अल्लाह) हमको अपनी मेहरबानी से माल अता करेगा तो हम ज़रूर खैरात (दान) किया करेंगे और नेक कर्म करने वालों में हो जाएंगे। लैकिन खुदा ने अपनी कृपा से उनको माल दिया तो उसमें कंजूसी करने लगे। और अपने अहद (प्रतिज्ञा) से मुंह मोड़ कर फिर बैठे। तो खुदा ने उनको इसका अंजाम यह किया कि उस रोज़ तक के लिए जिसमें वह खुदा के रूबरू हाज़िर होंगे उनके दिलों में निफाक (एक अल्लाह पर श्रद्धा ना होना) डाल दिया कि उन्होंने खुदा से जो वादा किया था उसके खिलाफ किया और इसलिए कि वह झूठ बोलते थे।" (सूरह तौबा आयत ७५-७७)

  इसलिए दौलत की मुहब्बत ने सालबा को आखिरत की कामयाबी से महरूम (वंचित) कर दिया।

दौलत इन्सानों को नुकसान क्यूं पहुंचाती है?

- दौलत इन्सानों को दो कारणों से नुकसान पहुंचाती हैः पहला कारण है दौलत से मुहब्बत और दूसरा कारण है नफ्से अम्मारा (बुराई के लिए पुरोत्साहित करने वाला प्राकृतिक स्वभाव)।

- दौलत से मुहब्बत का कारण यह है कि इन्सान की पैदाइश कुछ इस तरह हुई है कि वह दौलत, औरत, जायदाद, और अच्छी सवारी को बेहद पसंद करता है, और उसे हासिल करने की कोशिश करता है।

- कुरआने करीम में निम्नलिखित आयतें इस हकीकत पर इस तरह रौशनी डालती हैं।

  "पसंदीदा चीज़ों की मुहब्बत लोगों के लिए सजावट कर दी गई हैं (लोगों के दिल में बसी हुई हैं), जैसे औरतें, बेटे, सोने और चांदी के जमा किए हुए खज़ाने और निशान वाले घोड़े और चौपाए और खेती और दुनिया की ज़िंदगी का सामान और लौटने का अच्छा ठिकाना अल्लाह ही के पास है।" (सूरह आले इमरान आयत १४)

  दौलत, औरत, जायदाद और अच्छी सवारी की ही मुहब्बत की वजह से आज यह दुनिया इतनी रंगीन है। इन जज़्बात के बगैर तो लोग सन्यासियों की तरह जिंदगी गुजारते। इसलिए इस दुनिया को कायम करने के लिए यह जज़्बात बेहद ज़रूरी हैं। इसलिए अल्लाह तआ़ला ने यह जज़्बात इन्सानों में रखे हैं। लैकिन इन जज़्बात के साथ अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को अच्छी और बुरी चीज़ों में फर्क करने वाली बुद्धि (अक्ले सलीम) दी और कुरआ़न और अपने पैगंबरों के द्वारा दीन (धर्म) का ज्ञान प्रदान किया ताकि वह सही और गलत के फर्क को समझे और सही रास्ते पर ही चले। जब इन्सान शरीअत (इस्लामी कानून) और दीन (इस्लाम धर्म) से असंबंधित या बेपरवाह हो जाता है तो उसी वक़्त यह दौलत से मुहब्बत वाले जज़्बात उसे नुकसान पहुंचाते हैं।

- दौलत से नुकसान होने की दूसरी वजह नफ्से अम्मारा हैः नफ्से अम्मारा इतना ज़्यादा खतरनाक है कि पैगंबर हज़रात भी इससे भयभित रहते थे। मिसाल के तौर पर कुरआ़ने करीम में हज़रत यूसुफ (अ.स.) के शब्द दर्ज हैं। जो नफ्से अम्मारा के खतरनाक होने की तरफ इशारा करते हैं:

  "और मैं अपने नफ्स को पाक साफ नहीं कहता, क्यूंकि नफ्से अम्मारा इन्सान को बुराई ही सीखाता है, मगर यह कि मेरा पालनहार बख्शनेवाला मेहरबान है।" (सूरह यूसुफ आयत ५३)

- हम नफ्स के बारे में कुछ और मालूमात हासिल करते हैं ताकि हम नफ्से अम्मारा को बेहतर तरीके से समझ सकें।

- नफ्स वास्तव में दिल की चाह है और उसके तीन प्रकार हैं:

  नफ्से अम्मारा, नफ्से लव्वामा और नफ्से मुतमइन्ना

  नफ्से अम्मारा के प्रभाव में लोग खुशी, सुरूर, मज़ा, आराम, लज़्ज़त (Excitement) चाहते हैं। जायज़ तरीके से तो यह चीज़े मुफ्त में हासिल होती नहीं। इसलिए लोग अधिकतर इसे गलत तरीके से गैर-शरई (गैर-इस्लामी) तरीके से हासिल करते हैं।

  नफ्से लव्वामा के प्रभाव में लोग समझदारी वाली जिंदगी गुजारना चाहते हैं। वह दीन (धर्म) और दुनिया के मुताबिक सही और गलत को समझते हैं और सही रास्ता अेख्तियार करना चाहते हैं।

  नफ्से मुतमइन्ना के प्रभाव में वह अल्लाह तआ़ला और दीन से मुहब्बत करते हैं और यह मुहब्बत उनके तमाम जज़्बात पर गालिब (हावी) रहती है। वह अल्लाह और उसके दीन के लिए सब कुछ कुर्बान करने के लिए तैयार रहते हैं।

- नफ्स को समझने के लिए हम घोड़े के बच्चे की जिंदगी का अध्ययन करते हैं।

  घोड़े का बच्चा जैसे वह आज़ाद पैदा होता है वैसे ही वह आज़ाद रहना चाहता है। ना वह किसी को अपने उपर बैठने देगा और ना आपका कोई हुक्म मानेगा। वह सिर्फ खाना पीना और आज़ाद घूमना चाहता है। यह चाह नफ्से अम्मारा की चाह की तरह है।

  घोड़े का बच्चा जब कुछ बड़ा होगा तो वह खुद भी समझदार होगा। और आप भी जब इसे सज़ा या इनाम के द्वारा प्रशिक्षण देंगे तो वह एक कारआमद और उमदा सवारी साबित होगा। यह सही और गलत की समझ और अपने कर्तव्य पूरे करने की चाह नफ्से लव्वामा की चाह की तरह है।

  अगर आप अपने घोड़े से मुहबत करें और उसका पुरा खयाल रखें और घोड़ा भी आप की मुहब्बत का एहसास करे तो फिर वह जानवर खतरे के वक़्त अपने आप को कुर्बान करके आपकी सुरक्षा करेगा या आपका हुक्म मानेगा। यह जान से ज़्यादा मुहब्बत या हुक्म मानने की चाह नफ्से मुतमइन्ना की चाह की तरह है। जैसे एक आज़ाद घोड़े के बच्चे को लगातार नियंत्रित किया जाए, प्रशिक्षण दिया जाए, सज़ा दी जाए तो आखिर में जॉनिसार भी सिद्ध होता है। इसी तरह अपनी चाह पर शरीअत के मुताबिक कंट्रोल किया जाए, अपनी खुशी और आराम के खिलाफ सुबह उठकर अल्लाह की इबादत की जाए। लगातार दीन पर चलने की कोशिश की जाए, ज्ञान हासिल किया जाए, तो इन्सान का नफ्स या उसकी चाह नफ्से अम्मारा से नफ्से मुतमइन्ना की तरफ बदलने लगती है। मगर जब एक नफ्स मज़बूत होता है तो दूसरा मर नहीं जाता बल्कि जिंदा रहता है और ज़रा सी गफलत की जाए तो फिर मजबूत हो जाता है। इन्सान ज़रासा भी दीन से गाफिल होकर मौजमज़े करने लगता है तो फिर उसका नफ्से अम्मारा मज़बूत हो जाता है और अल्लाह से बगावत और गुनाह की तरफ उभारता है।

दौलत किसे नुकसान पहुंचाती है!

हज़रत मुहम्मद (स.) के सहाबा बहोत सीधे स्वभाव के थे। वह इस बात से आश्चर्य व्यक्त कर रहे थें कि जब दौलत अल्लाह तआ़ला की कृपा और वरदान है तो वह नुकसान क्यूं पहुंचाएगी? हज़रत अबू सईद खिदरी (रज़ि.) कहते हैं कि एक सहाबी ने हज़रत मुहम्मद (स.) से सवाल किया "ऐ अल्लाह के रसूल (स.)! क्या भलाई (जो अल्लाह की कृपा है) अपने साथ बुराई भी लाएगी?" हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "हकीकत यह है कि भलाई अपने साथ बुराई नहीं लाती।" दौलत से नुकसान क्यूं होता है इस बात को अच्छी तरह से समझाने के लिए हज़रत मुहम्मद (स.) ने बहार के मौसम (बसंत ऋतु) में खूब उगने वाली घास और उसे खाने वाले जानवरों की मिसाल दी। और फरमाया, "बहार के मौसम में जो घास उगती है (वह जानवरों के लिए फायदेमंद होती है मगर वह किसी जानवर को पेट फुलाकर मार देती है या मरने के करीब भी कर देती है। कुछ जानवर जो बहोत ही ज़्यादा खाते जाते हैं वह ज़्यादा खाने की वजह से मरने के करीब हो जाते हैं। मगर वह जानवर जो पेट भरने पर रूक जाते हैं, फिर जुगाली करते हैं, फिर पाखाना पेशाब खारीज करते हैं और जब पेट खाली होता है तो फिर खाते हैं उनको इस घास से नुकसान नहीं होता।) इसके बाद हज़रत मुहम्मद (स) ने फरमाया, "बेशक यह माल बड़ा हराभरा और मीठा है इसलिए जो व्यक्ति इसे नाजायज़ तरीके से हासिल करता है वह उस जानवर की तरह है जो ज़्यादा खाने से मरने के करीब हो जाता है। नाजायज़ तरीके से कमाया हुआ माल उस कमाने वाले व्यक्ति के खिलाफ कयामत में गवाही देगा। (और तबाही का कारण बनेगा।)।"

(बुखारी, मुस्लिम मुन्तखब अबवाब, जिल्द १, हदीस १२२०)

यानी जो जायज और नाजायज को नज़रअंदाज करके बे-इंतेहा दौलत कमाना चाहते हैं, दौलत सिर्फ उन्हीं को नुकसान पहुंचाती है।

अपनी आखिरत की कामयाबी को खतरे में मत डालों!:

सहाबा कराम (रज़ि.) सारी उम्मत के लिए एक मिसाल या दीन सिखाने वाली खुली किताब थे और चूंकि आम इन्सानों में दौलत नफ्से अम्मारा को ताकतवर बनाती है और इंसानी फितरत (स्वभाव) को अल्लाह और उसके आदेशों से बागी बनाती है इसलिए इस खतरे से बचाव के लिए हज़रत मुहम्मद (स.) ने सहाबा कराम (रज़ि.) को हिदायत फरमाई कि सादा और रूहानी जिंदगी गुजारें और माद्दि (भौतिक) जिंदगी में उलझ न जाएं और दौलत समेटने के कभी न खत्म होने वाले चक्कर में ना फसें। उनमें से कुछ अहादीस (आदेश) निम्नलिखित हैं।

१. हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अगर कोई आदमी अपनी ज़रूरत से ज़्यादा मकान बनाता है, तो उसकी मौत के बाद वह मकानात और इमारतें उसे तकलीफ का बाईस होगीं।" (शोअ़बुल इमान १०३०६)

२. हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जो लोग दुनिया में बहोत माल और दौलत रखते हैं वह आखिरत में नादार (गरीब) होंगे मगर वह व्यक्ति (आखिरत में गरीब और नादार न होगा बल्कि बहोत सी नेकियां और भलाईयां अपने साथ लिए होगा।) जिसे अल्लाह तआ़ला बहोत सा माल दे और वह उसे अपने दाऐं बाऐं आगे पीछे देता रहे और बराबर उसे नेक कामों में खर्च करता रहे।" (बुखारी, तर्जुमानुल हदीस जिल्द १, हदीस ६)

३. हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया "अगर तुम्हारे पास कम माल और दौलत है लैकिन तुम्हारी ज़रूरीयात के लिए काफी है वह उस ज़्यादा दौलत से बेहतर है जो तुम्हें अल्लाह की इबादत से गाफिल (बेपरवाह) कर दे।"(मस्नद अहमद हदीस का खुलासा)

४.जैद इब्ने साबित (रज़ि.) कहते हैं कि मैं ने हज़रत मुहम्मद (स.) को इरशाद फरमाते सुना "जो व्यक्ति दुनिया को अपना लक्ष्य बनाएगा, अल्लाह उसके दिल का इत्मिनान और शांति छीन लेगा। और वह हर वक्त माल जमा करने की हिर्स और लालच का शिकार होगा, लैकिन दुनिया का उतना हिस्सा ही उसे मिलेगा जितना अल्लाह ने उसके लिए तय किया है। और जिन लोगों का लक्ष्य आखिरत होगा, अल्लाह तआ़ाला उनको मन की शांति और इत्मिनान नसीब फरमाऐगा और माल की लालच से उनके दिल को सुरक्षित रखेगा और दुनिया का जितना हिस्सा उनके भाग्य में होगा वह अवश्य मिलेगा।"

(तरगिब व तरहीब, ज़ादे राह हदीस ११)

५.हज़रत अब्दुल्ला इब्न उमर (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने मेरे कंधे को पकड़कर फरमाया, "ऐ अब्दुल्ला! तुम दुनिया में इस तरह रहो जैसे कि तुम अन्जान मुसाफिर हो बल्कि रास्ता चलने वाले की तरह दुनिया में रहो और अपने आप को मुर्दों में गिंती करो।"

(मस्नद अहमद, ज़ादे राह हदीस २६४)

६.हज़रत माज बिन जबल (रज़ि.) कहते हैं कि जब उन्हें हज़रत मुहम्मद (स.) ने यमन भेजा तो उनको यह नसिहत फरमायी कि, "अपने आप को आराम पसंदी और तनआसानी से बचाना क्यूंकि अल्लाह तआ़ाला के खास बंदे आराम और आसायिश की जिंदगी नहीं गुज़ारते।"

(अहमद मुन्तखब अबवाब, जिल्द २ हदीस १३१७)

७.हज़रत अब्दुल्ला बिन मसऊद (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया, "तुम लोग जायदाद और ज़मीन मत बनाओ वरना तुम्हारे अंदर दुनिया की लालच आ जाएगी।"

(मस्नद अहमद ज़ादे राह हदीस २६७)

८.हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया, "दो लालच करने वाले कभी सैर नहीं होते, एक ज्ञान की लालच रखने वाला कभी ज्ञान से सैर नहीं होता, और दूसरा दुनिया की लालच रखने वाला, कभी दुनिया से उसका पेट नहीं भरता।"

(बेहकी मुन्तखब अबवाब, जिल्द अव्वल, हदीस २४३)

(इसलिए कभी दुनिया की लालच नहीं करनी चाहिए।)

९.हज़रत आऐशा (रज़ि.) कहती हैं मुझसे हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "ऐ आऐशा (रज़ि.) अगर तुम मेरे साथ जन्नत में रहना चाहती हो तो उतनी दुनिया तुम्हारे लिए काफि होनी चाहिए जितना सामान किसी मुसाफिर के पास होता है और खबरदार दुनिया के तलबगार मालदारों के पास मत बैठना, और कपड़ा पूराना हो जाऐ तो उसे मत उतार फेंको बल्कि रफू करके पहनो।"

(तरगिब व तरहीब तिरमिज़ी, ज़ादे राह हदीस २६५)

१०. हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) कहती हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "बंदा कहता है मेरा माल ऐसा है, हालांकि वह अपने माल से तीन फायदे हासिल करता है। १) उसे खाकर खत्म कर देता है। २) पहनकर पुराना कर देता है। ३) अल्लाह की राह में देकर आगे भेज देता है। इसके सिवा जो कुछ भी है वह (मरने के बाद) अपने वारिसों के लिए छोड़कर चला जाएगा।"(मुस्लिम, मिश्कात तर्जुमानुल हदीस जिल्द १, हदीस नं.६५)

११. हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अल्लाह की कसम! आखिरत के मुकाबले में दुनिया की हकीकत सिर्फ इतनी है जैसे कोई समंदर में उंगली ड़ालकर देखे के वह कितना पानी लेकर लौटती है।"

(मुस्लिम, तिरमिज़ी तर्जुमानुल हदीस ५)

दौलत मोमिनों के लिए आजमाईष (परिक्षा) है:

हज़रत काब बिन आयज (रज़ि.) कहते हैं मैंने हज़रत मुहम्मद (स.) से सुना कि आप फरमाते हैं, "हर नबी की उम्मत, किसी ना किसी फित्ने में मुब्तिला रही है और मेरी उम्मत माल और दौलत के फितने में मुब्तिला होगी।" (तिरमिज़ी तर्जुमानुल हदीस, जिल्द १, सफहा ४८)

हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "दुनिया बड़ी स्वादिष्ट और रंगीन है। अल्लाह तआ़ाला तुम्हें दुनिया में शासक बनाकर देखना चाहता है कि तुम कैसे काम करते हो? तुम (दुनिया की रंगीनियों से) बचो और औरतों के फित्ने से बचो। बनी इस्राईल सबसे पहले औरतों के फितने में ही मुब्तला हुए थे।" (मुस्लिम, तिरमिज़ी तर्जुमानुल हदीस, जिल्द १, हदीस १७)

क्या होगा जब मुस्लिम दौलत से मुहब्बत करेंगे?

१.हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "खुदा की कसम! मुझे तुम्हारी यह फिक्र नहीं है कि तुम मुफ्लिस (बहोत गरीब) हो जाओगे बल्कि मुझे फिक्र इस बात की है की तुम भी बहोत सारा माल और दौलत हासिल करोगे जैसा की पिछली कौमों ने हासिल किया था। और वह उसी वजह से तबाह बर्बाद हुईं कि उन्होंने माल की ज़्यादती की चाह में आपस मे मुकाबला किया। और तुम भी उसी वजह से बर्बाद होगे।"

(तिरमिज़ी, मुस्लिम)

२.हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जब तुम दुनिया से मुहब्बत और मौत से नफरत करने लगोगे तो गैर-मुस्लिम कौमें तुम पर टूट पड़ेंगी।"(अबू दाऊद, तर्जुमानुल हदीस, जिल्द १ हदीस ३)

३.हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया, "जब तुम लोग ईना के साथ खरीद फरोख्त करने लगोगे, बैलों की दुम पकड़ लोगे, खेती बाडी में मग्न रहोगे, और दीन के लिए मेहनत करना और जानी और माली कुर्बानी देना छोड़ दोगे तो अल्लाह तुमपर ऐसी जिल्लत और गुलामी थोपेगा जो तुमसे कभी नहीं हटेगी जब तक तुम अपने दीन की तरफ नहीं पलटोगे।"

(अबू दाऊद, ज़ादे राह हदीस २०६)

(हदीस में 'ईना' का शब्द आया है, जिसके विभिन्न रूप हैं, संक्षिप्त में यह समझीए शरई बहानों के सहारे ब्याज वाला कारोबार करने का नाम अरबी में 'ईना' है।)

हज़रत मुहम्मद (स.) ने अपने लिए कौन सी जीवनशैली को पसंद फरमाया?

हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "मुझे दुनिया से क्या दिलचस्पी? मेरी और दुनिया की मिसाल ऐसी समझो जैसे कोई मुसाफिर गर्मी के ज़माने में किसी पेड़ की छांव में थोड़ी देर के लिए सो लेता है, फिर उस पेड़ और उसके छांव को छोड़कर अपनी मंज़िल की तरफ चल देता है।"(मस्नद अहमद, ज़ादे राह हदीस २६३)

मक्का में ४० साल की उम्र में हज़रत मुहम्मद (स.) के पास २५ हज़ार दीनार थें। जिनकी कीमत आज के दौर में ५५ किलो सोना के बराबर है।

और वह एक कामयाब व्यापारी भी थे लैकिन जब अल्लाह तआ़ला ने ''वही'' भेजी तो हज़रत मुहम्मद (स.) ने इस्लाम के प्रचार के लिए तमाम दौलत खर्च कर दी। हिजरत के बाद मदीने में जो रकम आप (स) के पास आती वह आप (स.) गरीबों में तक्सीम फरमा देते। इस वजह से आप (स.) की पाक पत्नियों को कई महीने तक खाना पकाने का सामान नहीं मिलता था। और उनका गुज़ारा खजूर और पानी पर होता था। आप (स.) की रिहाईश का कमरा ज़्यादा से ज़्यादा १२ X १५ मुरब्बा फिट (वर्ग फिट) था और उसमें ऐशो आराम का कोई सामान न था। वफात (देहान्त) से पहले आप (स.) ने अपनी ज़िराबक्तर को एक यहुदी के पास गिरवी रखी और कर्ज़ लिया (संभव है किसी गरीब सहाबी (रज़ि.) की मदद के लिए)। हज़रत उमर फारूक (रज़ि.) हज़रत मुहम्मद (स.) की सादगी को याद करके अक्सर आंसू बहाते थे। नबुवत के बाद आप (स.) को माले गनीमत का २० प्रतिशत हिस्सा (खमसा) मिलता था मगर आप (स.) वह सारा का सारा माल ज़रूरतमंदो में बांट देते थे और खुद आप (स.) ने अपने लिए इंतेहाई सादा जीवन शैली को पसंद किया।

अल्लाह तआ़ला अपने महबूब बंदों की मदद और सुरक्षा कैसे फरमाता है?

हज़रत कतादह बिन नोमान (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया, "जब अल्लाह तआ़ला किसी बंदे को दोस्त रखता है तो उसको दुनिया से इस तरह बचाता है जिस तरह तुम में से कोई व्यक्ति अपने मरीज़ (बीमार) को पानी से बचाता है।"

(अहमद मुन्तखब अबवाब हदीस १३०५)

व्याख्याः एक जखमी को पानी से दूर रखा जाता है ताकी उसके जख्म सडने ना लगें। इसी तरह अल्लाह अपने महेबुब बंदे को ज़्यादा दौलत से महेफुज रखता है और दीगर दुनियावी मामलात से दूर रखता है। ताकी परलोक में उसकी कामयाबी यकीनी हो जाऐं।

दौलत कमाते वक़्त किन बातों का ख़याल रखें?

१.अल्लाह तआ़ला कुरआन करीम में फरमाता है "अगर तुम बड़े बड़े गुनाहों से जिनसे तुमको मना किया जाता है उनसे अपने आप को बचाते रहो तो हम तुम्हारे छोटे गुनाह माफ कर देंगे। और तुम्हें इ़ज़्ज़त के मकानों में दाखल करेंगे।" (सूरह निसा आयत ३१)

(या अल्लाह हमें गुनाहों से बचने की तौफिक दें।)

२.अल्लाह तआ़ला कुरआन करीम में फरमाता है "ऐ लोगो! जो इमान लाऐ हो, मैं बताऊं तुमको वह व्यापार जो तुम्हे दर्दनाक आज़ाब से बचा दे। ईमान लाओ अल्लाह और उसके रसूल हज़रत मुहम्मद (स.) पर, और जिहाद करो अल्लाह की राह में अपने मालों से और अपनी जानों से। यही तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो।" (सूरह सफ आयत १० से ११)

(या अल्लाह तेरे रास्ते में जानो माल लगाने की तौफिक दे।)

३.इब्न मसऊद (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "तुम दुनिया को इस तरह हासिल न करो की उसमे व्यस्त हो जाओ।"

(तिरमिज़ी, तर्जुमाने हदीस जिल्द १, हदीस २६)

इसका मतलब यह है की हम ऐसे तरीके से व्यापार ना करें जिसमें हम इबादत के लिए और अपने परिवार के लिए वक़्त ना निकाल सकें।

४.हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "दो भुखे भेड़ीयें जिन्हें बकरियों को फाड़ खाने के लिए छोड़ दिया गया हो (अपना पेट भरने के लिए अगर वह बकरियों पर टूट पड़ते है लैकिन) उस व्यक्ति की तरह तबाही नहीं मचाते जो, माल जमा करने और इ़ज़्जत और दौलत हासिल करने की लालच में मुब्तिला होने की वजह से दीन का हुलिया बिगाड़ कर रख देता है।" (मिश्कात, तिरमिज़ी, तर्जुमाने हदीस जिल्द १, हदीस २५)

व्याख्याः इसमें कोई शक नहीं कि दो भूखे भेड़िये अपना पेट भरने के लिए कई भेड़ों को मार ड़ालेंगे। लैकिन वह भेड़ों के पूरे झुंड का सफाया नहीं करेंगे। लैकिन यह दोनों जज्बे यानी दौलत की लालच और सत्ता की हवस इतनी खतरनाक है कि वह तमाम धार्मिक श्रद्धाओं का सफाया कर देते हैं और इन जज़्बों का शिकार बंदा अपनी आखिरत की जिंदगी मुकम्मल तौर पर तबाह कर लेता है इसलिए इन दो जज़्बों पर पूरी तरह काबू रखना चाहिए या उन्हें तर्क करना चाहिए।

५.हज़रत अबू ज़र गिफ्फारी (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जो लोग दुनिया में बहोत माल और दौलत रखते हैं वह आखिरत में नादार (खाली हाथ/गरीब) होंगे मगर वह व्यक्ति (आखिरत में गरीब और खाली हाथ/पिछड़ा नहीं होगा, बल्कि बहोत सी नेकियां और भलाईयां उसके पास होंगी।) जिसे अल्लाह तआ़ला बहोत सा माल दे और वह उसे अपने दाएं बाएं और आगे पीछे देता रहे और उसे बराबर नेक कामों में खर्च करता रहे।"

(बुखारी, तर्जुमाने हदीस जिल्द १, हदीस ६)

(इसलिए जितना मुनकिन हो सके खैरात करें)

६.हज़रत अबु मुसा (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जो व्यक्ति दुनिया से प्यार करता है वह अपनी आखिरत को ज़रूर नुकसान पहुंचाता है और जो व्यक्ति आखिरत से मुहब्बत करता है वह अपनी दुनिया को ज़रूर बिगाडता है। लोगो! दायमी (हमेशा रहने वाली) को आरजी (अस्थायी) पर प्राथमिकता दो।"

(मिश्कात, तर्जुमाने हदीस जिल्द १, हदीस ११)

७.हज़रत अबू हुरैरा (रजी.) कहते हैं, हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "कौन है जो मुझसे यह बातें लेकर उनपर अमल करे या ऐसे आदमी को बताए जो उसपर अमल करे?" मैंने अर्ज़ किया "ऐ अल्लाह के रसूल (स.) मैं तैयार हूं।" आप (स.) ने मेरा हाथ पकड़ा और पांच बातों को गिना, आप (स.) ने फरमायाः

अ. हराम से बचते रह तू सबसे ज़्यादा आबिद होगा।

ब. अल्लाह तआ़ला ने जो कुछ तेरी किस्मत में लिखा है उसपर राज़ी और संतुष्ट हो और सबसे ज़्यादा गनी (मालदार) होगा।

क. अपने पड़ोसी से नेक बर्ताव कर तू मोमिन होगा।

कृ. तू लोगों के लिए वह रवय्या पसंद कर जो तुझे अपनी ज़ात के लिए पसंद है। तू मुसलमान होगा।

इ. ज़्यादा ना हसो इससे दिल मुर्दा होता है।

(मिश्कात, तर्जुमाने हदीस जिल्द १, हदीस २८)

८.अपने पवित्र जीवन के आखरी दिनों में हज़रत मुहम्मद (स.) ने सहाबा कराम (रजी.) को मस्जिदे नबवी में बुलवाया और उनसे निम्नलिखित शब्दों में संबोधित फरमाया, "अल्लाह तआ़ला ने मुझे तमाम दुनिया के

(बाकी पेज १४० पर)

४८. अल्लाह तआ़ला के लिए बंदे माल दौलत से ज़्यादा महत्व रखते हैं

अल्लाह के नज़दीक दुनिया की क्या हैसियत है?

रौशनी की एक किरण, एक सेकंड में ३ लाख कि.मी. का सफर तय करती है। इस रफ्तार से अगर रौशनी कई लाख साल सफर करे तब भी वह इस कायनात (ब्रह्माण्ड) की आखरी हद तक नहीं पहूँच सकती है। यानी अल्लाह तआ़ला की यह कायनात इतनी विशाल है। अल्लाह तआ़ला की इस महान कायनात के मुकाबले में ज़मीन एक प्रमाणू (Atom) या एक सुक्ष्म कण के बराबर भी नहीं या मच्छर के पर के बराबर भी नहीं है।

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अल्लाह की कसम! आखिरत के मुकाबले में दुनिया की हकीकत सिर्फ इतनी है जैसे कोई समंदर में उंगली डाल कर देखे कि वह कितना पानी लेकर लौटती है।"
(मुस्लिम तिरमिज़ी, तर्जुमाने हदीस जिल्द १, सफहा नं.२६)

- हज़रत मुहम्मद (स.) का एक गांव (जो कि मदीना के आसपास में ऊंचाई पर स्थित था) से आते हुए (मदीना तैय्यबा के) बाज़ार से गुज़र हुआ। कुछ लोग आप (स.) के साथ थे। आप (स.) ने छोटे कान वाले एक बकरी के मुर्दा बच्चे को पड़ा देखा तो उसे कान से पकड़कर उपस्थित लोगों से सवाल किया, "तुम में से कौन है जो इसे एक दिरहम में लेना पसंद करेगा।" उन्होंने अर्ज़ कियाः "हुज़ूर (स.)! हम तो इसे किसी कीमत पर लेना पसंद नहीं करते, यह हमारे किस काम आऐगा?" हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "(नहीं बल्कि) तुम इसे अपने लिए पसंद करते हो।" उन्होंने अर्ज़ किया, "खुदा की कसम! अगर यह जिंदा भी होता तो दोष वाला होने की वजह से खरीदने का कोई सवाल ही न था, अब तो यह कानों के दोष के अलावा मुर्दा भी है।" हज़रत मुहम्मद (स.) ने (उसकी तरफ इशारा करते हुए) फरमाया, "खुदा की कसम! अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक दुनिया इससे ज़्यादा मामूली और बेवज़न है जितना यह मुर्दा बच्चा तुम्हारी नज़र में बेवजन और मामूली है।"
(मुस्लिम अन जाबिर बिन अब्दुल्ला, तर्जुमाने हदीस जिल्द १, सफा नं. २५)

जब अल्लाह के नज़दीक दुनिया और दौलत की कोई हैसियत नहीं तो उसने उन्हें क्यो पैदा किया?

- अल्लाह तआ़ला कुरआ़न करीम में फरमाता है, "वही तो है जिसने सब चीज़ें जो ज़मीन में हैं तुम्हारे लिए पैदा कीं। फिर आसमानों की तरफ ध्यान दिया तो उनको ठिक सात आसमान बना दिया और वह हर चीज़ से खबरदार है।" (सूरह बक़रा आयत २९)

- "और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब को अपने हुक्म से तुम्हारे काम में लगा दिया। जो लोग गौर करते हैं उनके लिए इस में (कुदरते खुदा की) निशानियां हैं।" (सूरह जाशिया आयत १३)

और इस तरह अल्लाह तआ़ला ने दुनिया और उसमें हर प्रकार की दौलत इन्सानों के लिए पैदा की।

अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन और आसमानों की हर चीज़ इन्सानों की खिदमत में क्यूं लगा दी?

- हज़रत उमर बिन खत्ताब (रज़ि.) के अनुसार कुछ लोग हज़रत मुहम्मद (स.) की अदालत में लाए गए।

उनमें एक औरत भी थी जो किसी को तलाश कर रही थी। जब कैदीयों में उसे एक बच्चा नज़र आया तो उसे अपनी गोद में उठा लिया, अपने सीने से लगा लिया और उसे अपना दूध पीलाया। बच्चे से माँ की मुहब्बत देखकर हज़रत मुहम्मद (स.) ने सहाबा कराम (रज़ि.) से पूछा, "क्या तुम समझते हो की कभी यह औरत अपने बच्चे को आग में फेकेगी?" सहाबा कराम (रज़ि.) ने जवाब दिया, "खुदा की कसम! जब तक यह उसकी गोद में है (कब्जे में है) यह इसे कभी आग में नहीं फेकेगी।" इस बात पर हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अल्लाह अपने बंदो पर इससे ज़्यादा मेहरबान है जितनी मेहरबान यह माँ अपने बच्चे पर है।" (बुखारी उर्दु १६४५, मुस्लिम)

अल्लाह अपने बंदो से उनकी माँ से ६६ प्रतिशत ज़्यादा मुहब्बत करता है। इसलिए आरामदेह जिंदगी के लिए उसने अपने बंदो को दुनिया और उसकी तमाम दौलत प्रदान की।

अल्लाह तआ़ला ने अपने मेहबूब बंदों (अशरफुल मख्लूकात) को क्युं पैदा फरमाया?

- अल्लाह तआ़ला कुरआ़ने करीम में फरमाता है, "और मैंने जिनों और इन्सानों को इसलिए पैदा किया कि मेरी इबादत करें"
(सूरह ज़ारियात आयत ५६)

- लाखों फरिश्ते हैं जो अल्लाह तआ़ला की इबादत में लगातार व्यस्त हैं। फिर अल्लाह तआ़ला ने जिनों और इन्सानों को अपनी इबादत के लिए क्यूं पैदा फरमाया?

क्यूंकि फरिश्ते ऐसे रूप में पैदा किए गए हैं कि उनमें गुनाह की कोई ख्वाहिश नहीं। वह अल्लाह तआ़ला की नाफरमानी कभी सोच ही नहीं सकते। वह ऐसी कोई बात नहीं करेंगे जिसे अल्लाह तआ़ला ने मना फरमाया हो। फरिश्ते खाना भी नहीं खाते। जब वह कमज़ोरी महसूस करते हैं तो अल्लाह तआ़ला का नाम लेते हैं और उसकी प्रशंसा या तारीफ से ताकत हासिल करते हैं।

उसके विपरीत इन्सान प्राकृतिक तौर पर शरीर (दृष्ट) सिद्ध हुआ है। उसकी हवस की प्यास कभी नहीं बुझती। वह गुनाह से प्यार करता है। वह अपनी औकात से ज़्यादा दौलत हासिल करने के लिए हर चीज़ को कुर्बान कर देता है, हर नियम भुला देता है। और जब ऐसा व्यस्त बंदा अल्लाह तआ़ला की इबादत के लिए वक़्त निकालता है तो यह बड़ी बात है। इसलिए अल्लाह तआ़ला अपने बंदो की इबादत को फरिश्तों की इबादत से ज़्यादा पसंद करते हैं।

अल्लाह तआ़ला कैसा महसूस करता है जब उसके बंदे उसकी इबादत करते हैं?

कुरआ़ने करीम में इन्सान को पैदा करने का निम्नलिखित अंदाज में

बयान किया है:

- "फिर तनिक उस समय की कल्पना करो जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा था कि "मैं धरती में एक ख़लीफ़ा बनानेवाला हूँ।" उन्होंने निवेदन किया : "क्या आप धरती में किसी ऐसे को नियुक्त करनेवाले हैं जो उसकी व्यवस्था को बिगाड़ देगा और रक्तपात करेगा? आपकी तारीफ़ और प्रशंसा के साथ तसबीह और आपकी पवित्रता का वर्णन तो हम कर ही रहे हैं।" अल्लाह तआला ने कहा: "मैं जानता हूँ, जो कुछ तुम नहीं जानते।"
(सूरह बक़रा आयत ३०)

- हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्ला (रज़ि.) बयान करते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक अरफा का दिन तमाम दिनों से बेहतर है। इस दिन अल्लाह तआ़ला आसमान से दुनिया पर खास तौर से ध्यान आकर्षित होकर फरिश्तों के सामने हाजियों की हालत पर गर्व करता है, फरिश्तों से इरशाद फरमाता है, देखो! मेरे बंदे परेशान हाल धूप में मेरे सामने खड़े हैं। यह लोग दूर दूर से यहाँ आए हैं। मुझसे मेरी रहेमत की उम्मीद और तलब उन्हें यहाँ लायी है, हालांकि उन्होंने मेरे अज़ाब को नहीं देखा। इस गर्व व पसंदीदगी के बाद लोगों को नर्क से आज़ाद करने का हुक्म दिया जाता है। अरफा के दिन इस कदर लोग बख्शे जाते हैं कि उतने किसी दिन नहीं बख्शे जाते।"
(इब्ने हब्बान, जन्नत की कुंजी, सफहा १२४)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "बंदा गुनाह करने के बाद माफी मांगने के लिए जब अल्लाह की तरफ पलटता है तो अल्लाह को अपने बंदे के पलट आने पर उस व्यक्ति से ज़्यादा खुशी होती है जो किसी रेगिस्तान में सफर कर रहा था। एक जगह ज़रा दम लेने के लिए उतरा और दरख्त के नीचे लेटा, थका हुआ था नींद आ गयी। थोडी देर बाद आंख खुली तो ऊंटनी गायब, उसके ऊपर कजावा में खाना और पानी है। स्थिती यह है कि रेगिस्तान में खाना और पानी कहाँ, और सफर की अकेली माध्यम ऊंटनी ठहरी और वह गायब है। बेचारे ने इधर उधर छान मारा मगर ऊंटनी ना मिली आखिरकार मायूस होकर उसी पेड़ के नीचे मरने के लिए लेट गया। जब दूसरी तरफ करवट ली तो देखता है की ऊंटनी पास खड़ी है। तो बहुत खुश होकर वह खुदा का शुक्र अदा करना चाहता है। कहना यह चाहता था ऐ अल्लाह मैं तेरा शुक्र अदा करना चाहता हूँ तू मेरा रब है मैं तेरा बंदा हूँ। लैकिन बहोत ज़्यादा प्रसन्नता में उस की जुबान से यह शब्द निकल गए: ए अल्लाह मैं तेरा रब हूँ और तू मेरा बंदा है। हज़रत मुहम्मद (स.) फरमाते हैं जब कोई बंदा गुनाह करने के बाद शरमिंदा होता है और तौबा करता है, तो अल्लाह तआ़ला को उस ऊंटनी वाले मुसाफिर से ज़्यादा खुशी होती है।" (बुखारी, मुस्लिम, सफिना ए निजात, हदीस नं.३५५)

अल्लाह तआ़ला अपने महेबूब बंदो को किस तरह इनाम देगा?

अल्लाह तआ़ला ने अपने इबादत गुजार बंदो के लिए जन्नत बनाई है और उसे खुबसूरती से संवारा है, जन्नत इतनी खुबसूरत है कि कोई बंदा उसकी कल्पना भी नहीं कर सकता।

जन्नत की कुछ विशेषताएं निम्नलिखित हैं: (कुरआ़ने करीम सूरह रहमान और दूसरी सूरतों के अनुसार)

१. जो बंदे खुदा के सामने खड़े होने से डरते है उन्हें दो जन्नते मिलेंगी।
२. उनमें हर प्रकार के पेड़ और निअ़मतें होंगी।
३. दोनों जन्नतों में चश्मे (Fountain) होंगे।
४. जन्नत में शराब (पवित्र शराब) दूध और शहद की नहरें होंगी।
५. जन्नत का हर फल व मेवा दो प्रकार का होगा।
६. जन्नत में बैठने और आराम करने की बेहतरीन सहुलतें होंगी। खुबसूरत और आंखो को भले लगने वाले तकिये और बहुत मोटे कालीन होंगे। जन्नत में फल करीब होंगे जिन्हें हासिल करना आसान होगा।
७. जन्नत के मकान, महलों की तरह होंगे जो कीमती पत्थरों से बनाएं हुए होंगे। जन्नत की दासियाँ बहुत खुबसूरत होंगी जिन्हें हूर कहा गया है।
८. जन्नत की जिंदगी अबदी (अमर) होगी।
९. अल्लाह तआ़ला की कृपा, इनाम और सम्मान हमेशा के लिए होगा।
१०. जन्नत का हर बंदा हमेशा जवान रहेगा। (ज़्यादा से ज़्यादा ३३ वर्ष का होगा)।

कम से कम अब तो जाग जाओ:

- अल्लाह तआ़ला ने यह दुनिया और इसकी दौलत अपने बंदो के लिए बनाई है ताकि इन्सान अल्लाह तआ़ला के हुक्म के अनुसार दुनिया में पाक और शांतिपूर्ण जिंदगी गुज़ार सकें।

- अल्लाह तआ़ला ने इन्सान के लिए आखिरत में एक इंतेहाई खुबसूरत ऐशोआराम की जन्नत भी बनाई है। जो बंदे उसके आदेशों की इस दुनिया में पाबंदी करते हैं यह जन्नत उन्हीं के लिए है।

- अगर कोई बंदा खुदा को नाराज़ करके इस दुनिया की दौलत समेटने में अपनी ६० साल की उम्र गंवाता है तो वह बड़े नुकसान में है। क्योंकि ऐसा करके वह आकिबत (परलोक) की अमर और जन्नती जिंदगी गंवा देता है।

- अबदी जिंदगी, ख्याली नहीं है जिस ज़मीन पर हम चलते हैं वह ४५० करोड साल पूरानी है। जो पेट्रोल हम इस्तेमाल करते हैं वह ६ करोड़ साल पुराना है। हम अब तक नए सितारे और नई कहकशाएं (आकाशगंगा/Galaxy) तलाश कर रहें हैं जो कई बिलियन साल पुरानी हैं।

- तो अगर आप अबदी (हमेशा वाली) जिंदगी की सही कल्पना नहीं कर सकते तो बस उस मिट्टी की अमर (आयु) की ही कल्पना कीजिए जिस पर आप चलते हैं, यानी ४५० करोड साल। इस मुद्दत को आप उंगलीयों पर नहीं गिन सकते। इसलिए यह मुद्दत भी आपके लिए अबदी (अमर) है।

इसलिए फैसला करें की निम्नलिखित में आपके लिए कौनसी बात लाभदायक है:

१. ६० साल की मुनज़्जम (प्रबंधित) और सिपाही की तरह Disciplined और मज़्हबी जिंदगी और आखिरत की हमेशा रहनेवाली ऐश व आराम की जिंदगी।

२.धरती पर आज़ाद और ऐश व आराम वाली ६० साला अस्थाई जिंदगी। और आखिरत की कष्टदायक नर्क की हमेशा वाली जिंदगी।

एक बेवकूफ भी पहली जिंदगी (१) को ही कुबूल करेगा लैकीन हम कुछ ज़्यादा ही बेवकूफ हैं। हम हर बात जानते हैं लैकीन हम उसे गंभीरता से कुबूल नहीं करते, जब तक कि हम अपनी मौत को नज़रों के सामने न देख लें।

अल्लाह तआ़ला हमारी हालत का कुरआ़ने करीम में इस तरह जिक्र फरमाता हैः

"दौलत ज़्यादा से ज़्यादा समेटने की जद्दोजहद (Struggle) में आखिरकार तुम अपनी कबरों में पहोंच गए। अब तुम्हें हकीकत का अंदाज़ा होगा। अब तुम्हें हकीकत ऐसी नज़र आएगी कि तुम उस पर यकीन करोगे। जब खुदा तुम्हें जहन्नम (नर्क) में डालेगा तब तुम जहन्नम (नर्क) की सज़ा का यकीन करोगे। फिर खुदा तुम से अपनी निअ्मतों का हिसाब लेगा।" (सूरह तकासुर का खुलासा)

- प्यारे भाईयो और बहनों! अल्लाह तआ़ला ने कायनात (ब्रह्माण्ड) को पैदा करने से पहले इन्सानी आत्माओं को पैदा फरमाया। मिसाल के तौर पर एक बार हज़रत मुहम्मद (स.) ने हज़रत जिबरील (अ.स.) से पूछा कि उनकी उम्र कितनी है? जिबरील (अ.स.) ने जवाब दिया कि ७० हज़ार साल के बाद एक सितारा (नूर) आस्मान पर प्रकट होता है और मैंने उसे ७० हज़ार बार देखा (यानी ४६० करोड़ साल)। हज़रत मुहम्मद (स.) ने जवाब दिया यही वह नूर था जिस से मैं और इन्सानी आत्माओं की पैदाइश की गई। (यह एक ज़ईफ/अप्रमाणिक रिवायत है)। विज्ञान के अनुसार धरती लगभग ४५० करोड़ साल पूरानी है। जिबरील (अ.स.) की उम्र ४६० करोड़ साल है और इन्सानी रूह की पैदावार उससे पहले हुई। इसलिए हमारी आत्माऐं इस धरती से ज़्यादा उम्र की है। यानी हम ४५० साल करोड से ज़्यादा समय से मौजूद हैं और यकिनन हम इस मुद्दत से ज़्यादा मरने के बाद भी मौजूद रहेंगे।
- भविष्य में हमारी शांतिपूर्ण जिंदगी की निर्भरता इस धरती पर हमारी कुर्बानीयों और मुनज़्ज़म (प्रबंधित) मज़हबी जिंदगी पर है। इसलिए हमें अपने लम्बे माजी (Past) और भविष्य की जिंदगी से आगाह रहना चाहिए और उसी के अनुसार अपनी मौजूदा जिंदगी जो कि माजी (Past) और भविष्य के मुकाबले बहोत कम है इसकी सुधारणा करनी चाहिए।
- अल्लाह तआ़ला ने यह दुनिया और इसकी दौलत हमारी सहूलत और आराम के लिए पैदा की है। दुनिया और दौलत कमाने के लिए हमें खुदा को भूलना नहीं चाहिए। बल्कि हमें अपने निर्माता से मुहब्बत करनी चाहिए। और खुलूस से सिर्फ उसीकी इबादत करनी चाहिए और उसके तमाम आदेशों का आज्ञापालन करना चाहिए।

अल्लाह तआ़ला हमें तौफीक अता फरमाए कि हम उसे समझें और उसकी हिदायत की पैरवी करें। आमीन.....! ▼▼▼▼▼▼▼

(पेज १३७ से आगे... दौलत की रुहानी खराबियां

लिए नबी बना कर भेजा है। इसलिए तुम एक दूसरे से मतभेद ना करो। (एकजूट रहो और ताकतवर बनो) और ज़मीन में फैल जाओ और अरब के अलावा दुनिया के दूसरे इलाकों में आबाद लोगों तक मेरा पैगाम पहुंचाओ।" (सिरते इब्ने हश्शाम २७६/४)

(इसलिए हमारी दौलत का एक हिस्सा दीन के प्रचार में ज़रूर खर्च हो।)

दौलत से सख्त मुहब्बत करने वालों को चेतावनी:

कुछ कुरआ़न की आयात जिनमें दौलत का ज़खीरा करने वाले लालची बंदो को चेतावनी दी है वह निम्नलिखित हैः

१."और तुम्हारी निगाहें उनमें (गुज़रकर और तरफ) न दौड़ें कि तुम दुनिया की ज़िंदगी की सजावटों के चाहने वाले हो जाओ और जिस व्यक्ति के दिल को हमने अपनी याद से गाफिल कर दिया और वह अपनी ख्वाहीश की पैरवी करता है और उसका काम हदसे बढ़ गया है उसका कहा न मानना।" (सूरह कहफ आयत २८)

२."और कई तरह के लोगों को जो हमने दुनिया की जिंदगी में आराइश की (दिल को आकर्षित करने वाली) चीज़ों से नवाज़ा है ताकी उनकी आजमाईश (परिक्षण) करें और उनपर निगाह ना करें। और तुम्हारे परवरदिगार की अता फरमायी हुई रोज़ी बहोत बेहतर और बाकी रहनेवाली है।"(सूरह ताहा आयात १३१)

३.अल्लाह तआ़ला ने कुरआ़न में अपने ऐसे बंदो को चेतावनी दी है कि जो अपनी दौलत और खुशहाली को अल्लाह के आदेशों से ज़्यादा मुहब्बत करते हैः

"कह दो कि अगर तुम्हारे बाप बेटे और भाई और औरतें और खानदान के आदमी और माल जो तुम कमाते हो और व्यापार जिसके बंद होने से डरते हो और मकानात जिनको पसंद करते हो, खुदा और उनके रसूल (स.) से और खुदा की राह में जिहाद करने से तुम्हें ज़्यादा पसंद हों तो ठहरे रहो यहाँ तक कि खुदा अपना हुक्म (यानी अज़ाब) भेजे। और खुदा नाफरमान लोगों को हिदायत नहीं दिया करता।"

(सूरह तौबा आयात २४)

४."दौलत ज़्यादा से ज़्यादा समेटने की जद्दोजुहद (कोशिश) में आखिरकार तुम अपने कब्रों में पहूंच जाते हो। अब तुम्हें हकीकत का अंदाजा होगा। अब तुम्हें हकीकत ऐसी नज़र आएगी कि तुम उसपर यकीन करोगे। जब खुदा तुम्हें नर्क में डालेगा तब तुम्हें यकिन आएगा कि नर्क हकीकत है। फिर खुदा तुम से अपनी निअ्मतों का हिसाब लेगा।"

(सूरह तकासुर का खुलासा)

५.''तबाही है हर उस व्यक्ति के लिए जो (आमने-सामने) लोगों पर ताने मारने और (पीठ पीछे) बुराइयाँ करने का अभ्यस्त है, जिसने माल इकट्ठा किया और उसे गिन-गिनकर रखा। वह समझता है कि उसका माल हमेशा उसके पास रहेगा। हरगिज़ नहीं, वह व्यक्ति तो चकनाचूर कर देनेवाली जगह में फेंक दिया जाएगा। और तुम क्या जानो कि क्या है वह चकनाचूर कर देनेवाली जगह? अल्लाह की आग, ख़ूब भड़काई हुई, जो दिलों तक पहुँचेगी। वह उनपर ढाँककर बन्द कर दी जाएगी (इस हालत में कि वे) ऊँचे-ऊँचे सुतूनों में (घिरे हुए होंगे)। (मुकम्मल सूरे हुमजह)

६."और जो व्यक्ति हज़रत मुहम्मद (स.) का विरोध करेगा इसके बाद की सच्चाई उसपर ज़ाहिर हो चूकी थी और मुसलमानों का रस्ता छोड़कर दूसरे रस्ता हो लेगा। तो हम उसको जो कुछ वह करता है करने देंगे और मरने के बाद उसको नर्क में दाखिल करेंगे और वह बूरी जगह है जाने की।"(सूरह नीसा आयत ११५)

▼▼▼▼▼▼▼

४६. अल्लाह तआ़ला के प्रिय बंदे कैसे बनें?

अल्लाह हिंसा को पसंद नहीं करता।

अल्लाह तआ़ला कुरआ़न करीम में फरमाता हैः

- "इसी कारण इसराईल की सन्तान के लिए हमने यह आदेश लिख दिया था कि ''जिसने किसी इनसान को क़त्ल के बदले या ज़मीन में बिगाड़ फैलाने के दन्ड के सिवा किसी और वजह से क़त्ल कर डाला उसने मानो सारे ही इनसानों को क़त्ल कर दिया और जिसने किसी की जान बचाई उसने मानो सारे इनसानों को जीवन-दान दिया।" मगर उनका हाल यह है कि हमारे रसूल निरन्तर उनके पास खुले-खुले निर्देश लेकर आए फिर भी उनमें अधिकतर लोग धरती में ज़्यादतियाँ करनेवाले हैं।"(सूरह माएदा आयत ३२)

- "और मुल्क में तालिबे फसाद ना हो, क्योंकि खुदा फसाद करने वालों को दोस्त नहीं रखता" (सूरह कसस आयत ७७)

- "और अगर खुदा लोगों को एक दूसरे से ना हटाता रहता तो सन्यासियों के सोमअे (आश्रम) और ईसाइयों के गिर्जे और यहूदियों के इबादत खाने और मुसलमानों की मस्जिदें जिन में खुदा का बहोत सा ज़िक्र किया जाता है बर्बाद हो चुकि होतीं। और जो शख्स खुदा की मदद करता है खुदा उस की ज़रूर मदद करता है। बेशक खुदा तवाना और ग़ालिब है।" (सूरह हज आयत ४०)

- हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "दुश्मन से जंग की ख्वाहिश ना करो। लैकिन अगर जंग शुरू हो जाए तो सब्र करो।" (बुखारी, किताबुल जिहाद ५६)

- अब्दुल्ला बिन अबी अफी (रज़ि.) ने उमर बिन उबेदुल्ला (रज़ि.) को लिखा कि एक बार जंग के मोर्चे पर हज़रत मुहम्मद (स.) ने शाम तक दुश्मन के हमले का इंतेजार फरमाया लैकिन दुश्मन ने हमला नहीं किया। सूरज डूबने के बाद हज़रत मुहम्मद (स.) ने अपनी फौज को संबोधित किया और कहा, "जंग की ख्वाहीश ना करो और अमन और खुशहाली की दुआ़ करो, लैकिन जब तूमपर हमला हो तो सब्र से इंतेजार करो और बहादुरी से लढ़ो।" (बुखारी, १५६/५६)

- हज़रत अबू सईद (रज़ि.) फरमाते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) से पूछा गया कि कौनसा बंदा बेहतर और कयामत के दिन अल्लाह के नज़दीक बुलंद दर्जे वाला है? आप (स.) ने इरशाद फरमाया, "अल्लाह को बहोत ज़्यादा याद करने वाले मर्द और औरतें।" अर्ज़ किया गयाः "या रसूल अल्लाह! क्या यह अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वालों से भी बेहतर और बुलंद दर्जे वाला है?" आप (स.) ने इरशाद फरमायाः "अगर कोई व्यक्ति कुफ्फार और मुश्रकीन पर अपनी तलवार चलाऐं यहाँ तक कि वह तलवार टूट जाए; और वह खून से रंगीन हो जाए (यानी शहीद हो जाए।) फिर भी अल्लाह तआ़ला को याद करने वाले का दर्जा उस व्यक्ति से बेहतर है।" (अहमद, तिरमिज़ी, मुन्तखब अबवाब जिल्द १, हदीस ४२८)

- हज़रत अबू बक्र सिद्दीक (रज़ि.) कहते हैं कि एक व्यक्ति ने हज़रत मुहम्मद (स.) से सवाल किया कि, "सबसे ज़्यादा बाईज्जत (सम्मानित) व्यक्ति कौन है?" (इसका मतलब यह है कि कौनसा व्यक्ति कयामत के दिन के मुताबिक कामयाब और इज्ज़तवाला है?) हज़रत मुहम्मद (स.) ने जवाब में फरमाया, "जिस बंदे ने लंबी उम्र पायी और नेक कर्म किए।" फिर उस व्यक्ति ने सवाल किया, "सबसे ज्यादा बुरा आदमी कौन है?" (इसका मतलब यह है कि कौनसा व्यक्ति खसारे में रहेगा और यौमुल हिसाब में सज़ा पाएगा?) हज़रत मुहम्मद (स.) ने जवाब में फरमाया, "जिस बंदे ने लंबी उम्र पायी और बुरे कर्म करता रहा।"

(मस्नद अहमद, मआरिफुल हदीस ८२)

- हज़रत उबेद बिन खालिद (रज़ि.) कहते हैं कि दो व्यक्ति मदीना आकर मुसलमान हो गए। हज़रत मुहम्मद (स.) ने उन दोंनो का एक अन्सारी सहाबी के साथ रहने का इंतेजाम फरमाया फिर यह हुआ की उनमें से एक साहब (करीबी ही ज़माने में जिहाद में शहीद हो गए) फिर एक ही हफ्ते बाद या उसके करीब दूसरे साहब का भी देहांत हो गया। (यानी उनकी मृत्यु किसी बीमारी से घर ही पर हुई), तो सहाबा (रज़ि.) ने उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी, हज़रत मुहम्मद (स.) ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ने वाले उन असहाब से दरयाफ्त किया कि आप लोगों ने (नमाज़े जनाज़ा) में क्या कहा (यानी मरनेवाले भाई के हक में तूमने अल्लाह से क्या दुआ़ की?) उन्होंने अर्ज़ किया कि हमने उसके लिए यह दुआ़ की कि अल्लाह तआ़ला उसकी मगफिरत फरमाए, उसपर रहेमत फरमाए और (उनके जो साथी शहीद होके अल्लाह तआ़ला के कुर्ब व रज़ा का वह मकाम हासिल कर चुके जो शहीदों को हासिल होता है, अल्लाह उनको भी अपने फज़्ल और कृपा से उसी मकाम पर पहुंचाए) अपने उस भाई और साथी के साथ कर दे। (ताकि जन्नत में उसी तरह साथ रहें जिस तरह यहाँ रहते थे।) यह जवाब सुनकर हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "फिर उसकी वह नमाज़ें कहाँ गयी जो उस शहीद होने वाले भाई की नमाज़ों के बाद (यानी शहादत की वजह से उनकी नमाज़ों का सिलसिला खत्म हो जाने के बाद) उन्होंने पढ़ीं। और दूसरे वह नेक काम कहाँ गए जो उस शहीद के आमाल के बाद उन्होंने किए, या आपने यूं फरमाया कि, उसके वह रोज़े कहां गए जो उस भाई के रोज़े के बाद उन्होंने रखें। (रावी/वर्णनकर्ता को शक है की नमाज़ के बाद हज़रत मुहम्मद (स.) ने आम कामों का जिक्र किया था, या रोजों का जिक्र फरमाया था।)" उसके बाद हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "उन दोनों के मकामात में उससे भी ज़्यादा अंतर है जितना की ज़मीन और आसमान के दरम्यान अंतर है।"

व्याख्याः हज़रत मुहम्मद (स.) के इरशाद का मतलब यह था कि तूमने बाद में मरने वाले उस भाई का दर्जा पहले शहीद होने वाले उस भाई से कमतर समझा, इसी वास्ते तूमने अल्लाह से दुआ़ की कि अल्लाह तआ़ला अपने फज़्ल और करम से उसको भी उस शहीद भाई के साथ कर दे, हालांकि बाद में मरने वाले भाई ने शहीद होनेवाले भाई की शहादत के बाद भी जो नमाजें पढ़ीं, और जो रोज़े रखे और जो दूसरे नेक काम किए, तुम्हें मालुम नहीं कि उनकी वजह से उसका दर्जा पहले शहीद होने वाले उस भाई से ज़्यादा बुलंद हो चुका है, यहाँ तक की दोनों के मकामात और दर्जात में ज़मीन और आसमान से ज़्यादा फर्क और अंतर है। (अबू दाऊद, निसाई, मआरिफुल हदीस जिल्द २, हदीस ८३)

- एक दूसरी हदीस जिसमें अब्दुल्ला बिन शद्दाद (रज़ि.) कहते हैं कि कबीला बनी अज्रा में तीन आदमी हज़रत मुहम्मद (स.) की खिदमत में हाजिर हुए और इस्लाम लाए। (और हज़रत मुहम्मद (स.) की खिदमत में ठहरने का इरादा किया।) तो आप (स.) ने (सहाबा कराम (रज़ि.) से) फरमाया, "इन नए मुस्लिम मुसफिरों की खबरगीरी मेरी तरफ से कौन अपने ज़िम्मे ले सकता है?" हज़रत तलहा (रज़ि.) ने अर्ज़ किया कि मैं अपने ज़िम्मे लेता हूँ। चुनांचा यह तीनों उनके पास रहने लगे उसी समय हज़रत मुहम्मद (स.) ने एक लश्कर किसी जगह के लिए रवाना फरमाया तो उन तीनों साहबों में से एक उस लश्कर में चले गए और वहाँ शहीद हो गए, फिर आपने एक और लश्कर रवाना फरमाया तो एक दूसरे साथी उसमें चले गए, और वह भी जाकर शहीद हो गए। फिर (कुछ दिनों बाद) उनमें से जो तीसरे बाकी बचे थे उनका देहांत बिस्तर पर ही हो गया। (हदीस के रावी अब्दुल्ला बिन शद्दाद) कहते हैं कि हज़रत तलहा (रज़ि.) ने जिक्र किया मैंने ख्वाब में उन तीनों साथियों को स्वर्ग में देखा, और यह देखा कि जो सहाब सबसे आखिर में अपने बिस्तर पर प्राकृतिक मौत से मरे, वह सबसे आगे हैं और उनके करीब वह साथी है जो उनके पहले शहीद हुए थे, और उनके करीब वह साथी थे जो सब से पहले शहीद हुए थे, इस ख्वाब से मेरे दिल में संदेह और खल्जान पैदा हुआ, (क्योंकि मेरा ख्याल था के शहीद होने वाले उन दो साथियों का दर्जा इस तीसरे साथी से बुलंद होगा जिसका देहांत बिस्तर पर प्राकृतिक मौत से हुआ) पस मैंने हज़रत मुहम्मद (स.) से उस ख्वाब और अपने उस एहसास और खल्जान का जिक्र किया, आप (स.) ने इरशाद फरमाया, उसमें तूमको क्या बात ऊपरी और गलत मालूम होती है, (तूमने उनके दर्जात की जो तरतीब देखी वही होना चाहिए और जो तीसरा साथी अपने दो साथीयों की शहादत के बाद कुछ समय जिंदा रहा और नमाज़ें पढ़ता रहा, और अल्लाह का जिक्र करता रहा उसी को सबसे आगे और बुलंद तर होना ही चाहिए, क्योंकि) अल्लाह के नज़दीक उस मोमिन से कोई बेहतर नहीं जिसको ईमान और इस्लाम के साथ लम्बी उम्र मिले जिसमें वह अल्लाह की तसबीह (सुबहान अल्लाह का जिक्र) तकबीर (अल्लाहु अकबर का जिक्र) और तहलील (सुबहान अल्लाह का जिक्र) करें।

व्याख्याः इससे पहली हदीस की व्याख्या में जो लिखा जा चुका है उसीसे इस हदीस की भी व्याख्या हो जाती है। अल्लाह तआ़ला, अगर समझ दे, तो उन दोनों हदीसों में उन जज़्बाती और बातूनी लोगों के लिए बड़ा सबक है, जो जिहाद और शहादत की सिर्फ बातों और झूठी तमन्नाओं में अपना समय गुज़ारते हैं। हालांकि जिहाद और शहादत का कोई मैदान उनके सामने नही होता, और नमाज़, रोज़ा, और जिक्र तिलावत वगैरा नेक कामों के जरिए ऊंची से ऊंची दीनी तरक्कियों का जो अवसर अल्लाह तआ़ला की तरफ से उनको हर वक्त मिला हुआ है उसकी कद्र नहीं करते और उन चीज़ों को मामुली और छोटे दर्जे कि चीज़े समझकर उनसे फायदा नहीं उठाते, बल्कि कभी कभी तो इन नेक कामों को तन्ज़ व ताना का निशाना बनाकर अपनी आखिरत खराब करते हैं।

- ऊपर लिखी हुई "कुरआ़न की आयात और हदीस से हम यह समझ सकते हैं कि ना ही खुदा हिंसा पसंद फरमाता है और न उसके रसूल (स.) हिंसा पर अमल करने का निर्देश देते हैं और हक (सच्चाई) के लिए जान देने वाला (शहीद) लम्बी उम्र वाले और खुलूस से खुदा की इबादत करने वाले से बेहतर नहीं है। इसलिए हमेशा शांतिपूर्ण रहने की कोशिश करनी चाहिए। और लंबी उम्र तक जिंदा रहने की कोशिश करनी चाहिए ताकि ज़्यादा से ज़्यादा नेक कर्म करके अपने दर्जात को बुलंद कर सकें।"

इन्सानियत सबसे बड़ी इबादत है:

- हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "सारी मख्लूक (प्राणी) अल्लाह का परिवार है और अल्लाह तआ़ला को सबसे ज्यादा वह पसंद है जो उसकी मख्लुक से नेक सुलूक करता है।" (मिश्कात, तर्जुमानुल हदीस, जिल्द २, हदीस २३६)

- हज़रत अबू हूरैरा (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अल्लाह तआला कयामत के दिन फरमाएगा, ऐ आदम के बेटे! मैं बीमार था तूने मेरी आयादत नहीं की।

  वह अर्ज़ करेगा, ऐ मेरे रब! मैं कैसे आपकी अयादत करता आप तो सारी कायनात के रब हैं। अल्लाह तआ़ला फरमाएगा, क्या तू नहीं जानता मेरा फलाँ बंदा बीमार था। अगर तू उसकी अयादत करता तो मुझे उसके पास पाता।

  ऐ आदम के बेटे! मैंने तूझसे खाना तलब किया था तूने मुझे न खिलाया।

  वह अर्ज़ करेगा, ऐ मेरे रब! मैं कैसे आपको खाना खिलाता, हालांकि आप तो पूरी कायनात के परवरदिगार हैं।

  अल्लाह तआ़ला फरमाऐगा, क्या तू नहीं जानता कि मेरे फलाँ बंदे ने तूझसे खाना तलब किया था और तूने उसे खाना नहीं खिलाया। क्या तू नहीं जानता कि अगर तू उसे खाना खिलाता तो उस खाने को मेरे यहाँ पाता।

  ऐ आदम के बेटे! मैंने तूझ से पानी मांगा था और तूने मुझे पानी न दिया।

  वह अर्ज़ करेगा, ऐ मेरे परवरदिगार! मैं आपको कैसे पानी पिलाता हालांकि आप सारी कायनात के रब हैं।

  अल्लाह तआ़ला फरमाएगा, मेरे फलाँ बंदे ने तूझसे पानी मांगा था लैकिन तूने उसे पानी न पिलाया। अगर तू उसे पानी पिला देता तो उस पिलाए हुए पानी को मेरे यहाँ पाता। (तर्जुमानुल हदीस, जिल्द २, हदीस २४५)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "एक आदमी को रास्ता चलते हुए बड़ी प्यास लगी फिर वह एक कुंवे के करीब पहूँचा। कुंवे की तह में उतरकर अपनी प्यास बुझायी और बाहर आया। इस दौरान उसने देखा एक प्यासा कुत्ता गीली मिट्टी चाट रहा था। उसने अपने दिल में कहा कि कुत्ता अपनी प्यास की अधिकता से तड़प रहा है। जैसा मैं तड़प रहा था। इसलिए वह दुबारा कुवें में उतरा। अपने जूते में पानी भरा। अपने दातों से उस जूते को पकड़कर कुंए से बाहर आया और कुत्ते की प्यास बुझायी। अल्लाह तआ़ला को यह अदा (काम) पसंद आयी और उस बंदे को माफ कर दिया। यह सुनकर लोगों ने अर्ज़ किया, "ऐ अल्लाह के रसूल (स.)! क्या हमें जानवरों की खिदमत पर भी इनाम (सवाब) है?" हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "हर तर (Wet) के कलेजा वाले (जानदार/प्राणी) की खिदमत पर इनाम मिलेगा।" (यानी हर जानदार की खिदमत पर सवाब (इनाम) मिलेगा।)

  (बुखारी जिल्द ३, किताब ६४६ नं./ ४३)

इन्सानियत और खिदमते खल्क (जनसेवा) इस्लाम की बुनियादी शिक्षाओं में से हैं। ना कि हिंसा और अशांति जैसा कि कुछ गैर-मुस्लिम नेता ज़ाहिर करते हैं। इसलिए हमें अपने कर्म से दुनिया के सामने इस्लाम की सही तसवीर (छवि) पेश करनी चाहिए, ताकि लोग इस्लाम के करीब हों और हम खुद भी दीनी और दुनियावी मार्ग पर तरक्की करें।

अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मुहम्मद (स.) को रसूल बनाकर क्यों भेजा?

- हज़रत इब्राहीम (अ.स.) तमाम अरब देशों और यूरोप के लिए पैगंबर थे। इसलिए उन इलाकों के तमाम लोग उन्हें पैगंबर स्विकार करते थे।

  हज़रत इस्माईल (अ.स) भी पैगंबर थे और मक्का में कयाम फरमाते थे। इसलिए अरब के तमाम बाशिंदे हज़रत इस्माईल (अ.स) की शिक्षाओं से वाकिफ (अवगत) थे। मक्का के लोग शिर्क (बुतों की पूजा) तो करते थे मगर हज़रत मुहम्मद (स.) के जन्म से पहले भी वह एक खुदा की इबादत करते थे, हज भी करते थे और हिरा नामक गुफा में एकांत में सिर्फ एक खुदा की इबादत और ऐतकाफ (कहीं ठहर कर सिर्फ इबादत में ध्यान लगाना) भी करते थे। इसलिए अरब वासी बल्कि तमाम दुनिया के लोग जानते थे कि इस कायनात का कोई अकेला निर्माता व मालिक है जो खुदा कहलाता है। मिसाल के तौर पर अल्लाह तआ़ला कुरआ़न शरीफ में फरमाता हैः

  "इनसे (गैर-मुस्लिमों से) कहो, बताओ, अगर तुम जानते हो कि यह ज़मीन और इसकी सारी आबादी किसकी है? ये ज़रूर कहेंगे अल्लाह की। कहो फिर तुम होश में क्यों नहीं आते? इनसे पूछो, सातों आसमानों और महान सिंहासन का मालिक कौन है? ये ज़रूर कहेंगे अल्लाह। कहो, फिर तुम डरते क्यों नहीं? इनसे कहो, बताओ अगर तुम जानते हो कि हर चीज़ पर प्रभुत्व किसका है? और कौन है वह जो पनाह देता है और उसके मुक़ाबले में कोई पनाह नहीं दे सकता? ये अवश्य कहेंगे कि यह बात तो अल्लाह ही के लिए है। कहो, फिर कहाँ से तुमको धोखा लगता है?" (सूरह मोमिनून आयत ८४ से ८६)

  यह आयात इस बात को साबित करती हैं कि लोग अल्लाह को अच्छी तरह से पहचानते हैं। तो फिर अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मुहम्मद (स.) को क्यूं भेजा?

- हज़रत इमाम मालिक (र.ह.) के मुताबिक हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अल्लाह तआ़ला ने मुझे पैगंबर नियुक्त किया है ताकि मैं दुनिया को बेहतरीन अख्लाक (चरित्र) की शिक्षा दूं" (मुअत्ता)

  बेहतरीन किरदार (चरित्र) के साथ साथ हज़रत मुहम्मद (स.) की बुनियादी शिक्षा यह थी कि यानी अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं। (शिर्क ना करो और सिर्फ एक खुदा की इबादत करो।)

  आप (स.) ने फरमाया, "कलमा पढ़ लो कामयाब हो जाओगे।"
  (मस्नदे अहमद, निसाई)

  इसलिए इस जिंदगी और आखिरत में कामयाब होने के लिए सबसे पहले हमारा ईमान कामिल (उत्तम) होना चाहिए और हमारे अख्लाक (चरित्र) भी बेहतरीन होने चाहिएं।

- अल्लाह तआ़ला कुरआ़न करीम में फरमाता है, "(ऐ पैगंबर (स.)! लोगों से) कह दो की अगर तूम खुदा को दोस्त रखते हो तो मेरी पैरवी करो खुदा भी तूम्हें दोस्त रखेगा और तूम्हारे गुनाह माफ कर देगा और खुदा बख्शने वाला मेहरबान है।" (सूरह आल इमरान आयत ३१)

  हज़रत मुहम्मद (स.) ने खालिस इस्लाम और बेहतरीन अख्लाक की तालीम दी है। इस एक रास्ते के सिवा और कोई रास्ता नहीं है जिसे अेख्तीयार करके कोई अल्लाह का मेहबूब बन सकता है। इसलिए आइये इस पर अमल करें।

हज़रत मुहम्मद (स.) की पैरवी कैसे करें?

१. अल्लाह तआ़ला के आदेशों को जानने के लिए कुरआ़ने करीम की तिलावत करें। अगर आप मौलाना मुफ्ति मुहम्मद शफी साहब (र.अ.) की तफसीरे कुरआ़न 'मआरिफुल कुरआ़न' पढ़ें तो आपको कुरआ़ने करीम की मुक्कमल मालूमात हासिल होगी।

२. हदीस शरीफ का अध्ययन करें ताकि आपको हज़रत मुहम्मद (स.) के अकवाल (कथन) और आमाल (कर्म) का इल्म हो।

३. उनपर अमल करने कि पूरी कोशिश करें।

४. मैंने व्यपारिक जिंदगी से संबधित हज़रत मुहम्मद (स.) के कई निर्देश इस किताब में एकत्रित कर दिए हैं। इसलिए कम से कम व्यपारिक जिंदगी में तो उनकी पैरवी करें।

५. मौलाना मन्जूर नोमानी की किताब 'मआरिफुल हदीस' का अध्ययन करें ताकि जिंदगी के हर क्षेत्र में हज़रत मुहम्मद (स.) की क्या सुन्नत है उसकी हमें ज़्यादा से ज़्यादा जानकारी हो।

- अल्लाह तआ़ला हज़रत मुहम्मद (स.) और उनके सहाबा (रज़ि.) पर रहमतें नाज़िल फरमाए, जिन्होंने हमें इन्सानियत का सबक सिखाया। अल्लाह तआ़ला उन तमाम इमामों पर रहेमत का नुजूल फरमाए जिन्होंने कड़ी मेहनत करके हमारे लिए कीमती और अहम दीनी किताबें लिखीं। अल्लाह तआ़ला हमें बुद्धि अता फरमाए ताकि उसके आदेशों को समझें और उनपर अमल करें। अल्लाह तआ़ला पूरी दुनिया को दीने हक के ज्ञान की तौफिक अता फरमाए। और उसपर अमल करने की समझ दे। अल्लाह तआ़ला हज़रत मुहम्मद (स.) की पूरी उम्मत को दुनिया और आखिरत में कामयाब बनाए। आमीन।

▼▼▼▼▼▼▼

५०. कुछ कुरआ़नी आयतें जो आपकी परेशानी दूर कर सकती हैं।

- हज़रत अबू जर (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया, "बेशक मैं एक ऐसी आयत जानता हूँ कि अगर लोग (सिर्फ) उसी आयत पर अमल करें तो उनको वही एक आयात काफी हो जाए।"
(अहमद, इब्ने माजा, दारमी, मुन्तखब अबवाब जिल्द २, हदीस १३६०)

उस एक आयात का खुलासा निम्नलिखित है:

"जो व्यक्ति अल्लाह से डरता है खुदा उसके लिए (हर मुश्किल से) छुटकारे का रास्ता पैदा कर देता है, और उसको ऐसी जगह से रोज़ी देता है जहाँ वहम और गुमान भी नहीं होता।" (सूरह तलाक आयत २ और ३)

- उपरोक्त आयतों को बेहतर तौर पर समझने के लिए मैं उस से अगली आयात भी दर्ज कर रहा हूँ। अगर आप उन्हें समझ लें, उनपर यकीन रखें, उन्हें याद करें और बार-बार दोहराएं तो उनकी बरकत और आपकी नई इमानी ताकत से आपकी जिंदगी वास्तव में बदल सकती हैं।

وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۙ

"जो व्यक्ति अल्लाह से डरता है तो खुदा उसके लिए (हर मुश्किल से छुटकारे का) रास्ता पैदा करेगा।"

وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ؕ

"खुदा मोमिन को ऐसे जराए से रिज़्क प्रदान करता है कि जहाँ से वहम और गुमान भी न हो।"

وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ؕ

"खुदा मोमिन की हर ज़रूरत को पूरा करता है।"

اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ؕ

"खुदा अपने काम को जो वह करना चाहता है ज़रूर पूरा कर देता है।"

قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَیْءٍ قَدْرًا ۝

"खुदा ने हर बंदे का भाग्य, निश्चित कर दिया है, घटनाएं उसके अनुसार पेश आती हैं।"

इन आयतों से कैसे फायदा उठाएं?

१. परेशानी के समय इन आयतों का खुलासा बार-बार ज़बान से दौहराएं और इन आयतों के पैगाम पर यकीन रखें। अगर एक मरतबा आपने अपने दिल में मान लिया कि "खुदा आपको बेहरान (संकट, परेशानी, मुसिबत) से बचाने के लिए कोई रास्ता बनाएगा तो आपके दिल को सुकून और रूह को करार (शांति) मिलेगा। और इस तरह आपकी मानसिक परेशानियां और दबाव तेज़ी से खत्म होगा।"

२. अपनी दुआ़ में एक बार इस आयत की तिलावत करें और खुदा से नम्रतापूर्ण निवेदन करें की वह अपने वाअ्दे के अनुसार आपको हर परेशानी से दूर करने का रास्ता निकाले। बार-बार इस आयत की तिलावत करें और बार-बार निवेदन करें। अगर आपने खुलूस से दुआ मांगी तो आपके दिल को यकिन आ जाऐगा और आपको मुश्किल से बचने की तरकीब और योजना समझ में आ जाएगी। उस तरकीब और योजना को फौरन लिख लें। क्योंकी बेहरानी हालत में दिमाग में उलझाव पैदा हो जाता है। इसलिए मुम्किन है कुछ समय बाद आप फिर परेशान हो जाएं या अल्लाह तआ़ला की तरफ से मुश्किलों का जो हल बताया गया है वह आप फिर से भूल जाएं।

३. व्यापारिक मंदी के दौरान या ऑडर की कमी के वक़्त उपर लिखी हुई ५ आयातों की रोज़ाना १०० बार तिलावत करें और हवा में फूंक दें। जो व्यापार या ऑर्डर आपके भाग्य में थे, लैकिन रूहानी वजह या किसी और कारण से आपको मिलने में देर हुई वह फौरन आप तक पहुँचेंगे। (इस बयान के लिए मेरे पास कोई हवाला (संदर्भ) नहीं है क्योंकि यह मेरे पढ़ने में नहीं आया है। अलबत्ता एक बुज़ुर्ग ने मुझे ऐसी हिदायत की। मैं ने उसपर अमल किया और उसे सच पाया।)

४. शैखुल ईस्लाम हज़रत फरीदुद्दीन (र.अ.) के अनुसार जो बंदे दौलत और इज्जत चाहते हैं उन्हें हर फर्ज़ नमाज़ के बाद तीन बार दरूद शरीफ, तीन बार सूरे इख्लास, और तीन बार ऊपर दी गई पांच आयातें, फिर तीन बार दरूद शरीफ पढ़कर खुदा से दुआ़ करनी चाहिए। इन्शा अल्लाह खुदा आपको दौलत और शोहरत (प्रसिद्धि) से सम्मानित करेगा। और गरीबी से आपको बचाएगा। (नफाए खलायक ३१७)

५. इन आयात से आपको गैब से इम्दाद मिलेगी। इन आयतों में अजीम फलसफा कूज़े में दरया की तरह है। अगर आप इन आयतों की तालीम पर यकीन रखें और याद रखें तो आपका यकीन और ईमान पुख्ता होगा और आप जिंदगी में कभी परेशान न होगें।

परेशानियों और मुसिबतों पर कैसे काबू पाया जाए?

खंदक की जंग में २५ हजार दुश्मन फौजियों ने मदीने का घेराव कर लिया था। लगभग १ महीने तक उन्होंने खंदक पार करने की कोशिश की ताकि शहर में दाखिल हों, लैकिन ३ हज़ार मुजाहिदीन ने शहर का दिफा (बचाव) किया। और दुश्मन को पीछे ढकेलते रहे। दुश्मन की तादाद मुजाहिदीन से ८ गुना ज़्यादा थी और उनके पास हथियार भी ज़्यादा थे। कुछ मुसलमान ज़रूर परेशान थे। हज़रत अबू सईद खिद़री (रज़ि.) फरमाते हैं, "हम में कुछ लोग हज़रत मुहम्मद (स.) की खिदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, ए अल्लाह के रसूल (स.)! ऐसे मुश्किल वक्त के लिए कोई खास दुआ़ है जिसके द्वारा हम खुदा से मदद तलब कर सकते हैं? क्योंकि हम बहुत परेशान हैं।" हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "हां एक दुआ़ है जिसके द्वारा खुदा की मदद मांगे।"

اَللّٰهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِنَا وَ آمِنْ رَوْعَاتِنَا.

अर्थः- "ऐ खुदा! हमें सुरक्षित रख और हमारी परेशानियों को जुरअत (हिम्मत) और अमन से बदल दे।"

हज़रत अबू सईद खिदरी (रज़ि.) फरमाते हैं कि, "जैसे हमने इस आयात की तिलावत शुरू की, खुदा ने एक तेज हवा भेजी जिसने दुश्मन

के सिपाहियों का सफाया करके उन्हें बिखेर दिया। और हमें आराम और मानसिक शांति प्राप्त हुई।"

(रवाह अहमद ३/३, बा-हवाला मुन्तखब अहादीस, सफहा नंबर ६८८)

- हज़रत अनस (रज़ि.) के अनुसार जब भी हज़रत मुहम्मद (स.) परेशान होते तो निम्नलिखित दुआ फरमातेः

يَا حَيُّ يَاقَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ

अर्थः- "ऐ अबदी खुदा! जो कायनात को चलाता है मैं तुझसे तेरे रहम की दरख्वास्त करता हूँ।" (हकिम इब्ने सिना, हिसने हसीन, सफहा नंबर २०६)

पछताना बंद करें?

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अल्लाह से वह मांगो जिसमें तुम्हारा फायदा हो। अल्लाह पर ईमान रखो और कभी बुज्दिल (पस्त हिम्मत, कमज़ोर) मत बनो। अगर कुछ गलत हो जाए या कोई चीज़ खो जाए तो यह मत कहो "अगर में ऐसा करता तो यह नुकसान न होता।"(अपने सोचे समझे सही अमल पर न पछताओ।) पछताने के बजाए यह कहो "जो कुछ हुआ उसका फैसला अल्लाह ने किया है और अल्लाह वही करता है जिसका वह फैसला करता है।" (क्योंकि "अगर" का शब्द शैतान के लिए दरवाज़ा खोलता है और वह हमें गलत रास्ते पर चलाता है।)" (मुस्लिम)

- बड़े पानी के जहाज़ों मे उपरी खोल से बिल्कुल लगे हुए जो अंदर की तरफ कमरे होते है उनके दरोदिवार और दरवाज़े भी फौलाद के होते हैं। अगर कोई चीज़ ऊपरी खोल से टकराकर उसमें छेद करती है तो जहाज़ में पानी घुसने लगता है। लैकिन अंदरूनी कमरों के दरवाज़े भी फौलादी होते हैं और अंदर से वॉटरप्रुफ होते हैं। इसलिए केबिन के दरवाज़े जो छेद के करीब हैं, फौरन बंद कर दिए जाते हैं। अगर वह मज़बूती से सही तौर पर बंद रहे तो पानी सिर्फ उसी एक केबिन में भरकर रूक जाता है और जहाज़ सुरक्षित रहता है और समंदर में डूबे बगैर अपनी मंजिले मक्सूद (इच्छित पड़ाव) पर पहूँच जाता है।

  डेल कार्नेगी ने अपनी सुप्रसिद्ध किताब 'How to stop worrying and start Living' में उन फौलादी दरवाज़ों की मिसाल दी है और लिखा है कि "अगर आप अपने भूतकाल और भविष्य को ऐसे ही वॉटर प्रुफ और फौलादी दरवाज़ों से बंद करदें तो सिर्फ उसी वक़्त आपकी जिंदगी का जहाज़ मंज़िले मक्सूद (इच्छित पड़ाव) तक सुरक्षित पहुँचेगा।" वरना भूतकाल/अतीत पर पछतावे का बोझ और आने वाले कल के शेखचिल्ली की तरह खूबसूरत ख्वाबों का नाकाबिले बरदाश्त (असहनिय) बोझ आपके जिंदगी के जहाज़ को डूबो देगा।

  इसलिए न माज़ी (भूतकाल/अतीत) पर पछताऐं ना दिन में आने वाले कल के सपने देखें। बल्कि सिर्फ हाल पर पूरी तवज्जो दें।

  अगर आज आपने अपने गुज़र रहे वक़्त का बेहतरीन इस्तेमाल किया तो आपका भविष्य अपने आप संवर जाएगा।

परेशानियों के असबाब से बचें:

- परेशानियों के आम तौर दो कारण होते हैंः कड़वे भूतकाल/अतीत को याद करना और समाज के दिगर मालदार लोगों के मुकाबले में अपनी नाकामियों पर मायूस हो जाना। पहले सबब पर हम बातचीत कर चुके हैं। दूसरे सबब के सिलसिले में एक हदीस पढ़ेंः

  हज़रत आएशा (रज़ि.) कहती हैं मुझसे हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "ऐ आएशा! अगर तुम मेरे साथ स्वर्ग में रहना चाहती हो तो इतनी दुनिया तुम्हारे लिए काफी होनी चाहिए जितना सामान किसी मुसाफिर के पास होता है। और खबरदार दुनिया के तलबगार मालदारों के पास मत बैठना और कपड़ा पुराना हो जाए तो उसे मत उतार फेंकों बल्कि पेवंद लगाकर पहनो।"

  (तरगिब व तरहीब, बा-हावाला तिरमिज़ी, ज़ादे राह हदीस २६५)

  दुनिया के तलबगार और मालदार लोगों के पास बैठना आपकी निराशा में इज़ाफा करेगा और आपको गुनहागार और दुखी कर देगा। इसलिए ऐसे मालदारों की सोहबत में रहने से बचिए, जो माल की लालच में मुब्तला रहते हैं।

- अगर आपकी बीवी और बच्चे आपकी परेशानी का सबब हैं तब दुआ करते हुए कुरआने करीम की सूरे फुरकान की आयत नं. ७४ की मुसलसल तिलावत करें। वह आयत इस तरह हैः

رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ۝

"ऐ परवरदिगार हमको हमारी बीवीयों की तरफ से (दिल का चैन) और औलाद की तरफ से आंख की ठंडक अता फरमा। और हमें परहेजगारों का इमाम बना।"(सूरह फुरक़ान आयत ४७)

- अगर जिंदगी की कठिन समस्याएं आप को चारों तरफ से घेरे हुए हैं तो निम्नलिखित दुआ हर नमाज़ के बाद मांगें। (इस सिलसिले में एक हदीस देखें।)

  हज़रत अबू सईद खिदरी (रज़ि.) कहते हैं कि एक मरतबा हज़रत मुहम्मद (स.) के सहाबी हज़रत अबू उमामा (रज़ि.) मस्जिद में बेवक़्त बैठे हुऐ थे हज़रत मुहम्मद (स.) ने उन्हें पूछा कि वह इस वक्त मस्जिद में क्यों बैठे हैं जों की नमाज़ का वक़्त नहीं है? उन्होने जबाब में कहा मैं परेशानी और कर्ज़ मे मुब्तला हूँ। मानसिक शांति के लिए मैं मस्जिद में बैठा हूँ। आप (स.) ने फरमाया, क्या मैं तुम्हें ऐसी दुआ बताऊं जो तुम्हारी सारी परेशानियों को दूर कर दे और कर्ज़ को कम करदे? "फिर आप (स.) ने निम्नलिखित दुआ पढ़ी।" (बुखारी तिरमिज़ी, निसाई, हिसने हसीन)

  اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحَزَنِ

  १. ''अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ु बिका मिनल हम्मे वल हिज़्ने''
  ''ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह में आता हूँ परेशानी से।''

  وَاَعُوْذُبِکَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْکَسَلِ

  २. ''व अऊज़ु बिका मिनल अज्ज़े वल कस्ले''
  ''और दुखों से परेशान हो जाने से और काहीली से।

  وَاَعُوْذُبِکَ مَنَ الْجُبْنِ وَالْبُخْلِ

  ३. ''व अऊज़ु बिका मिनल ज़ुब्ने वल बुख्ले''
  ''बुज्दिली (कायरता) और कंजुसी से।''

(बाकी पेज १५७ पर)

५१. जिंदगी में कैसे खुश रहें?

अल्लाह तआ़ला पर भरोसा (तवक्कल) रखो:-

- जब हमें अल्लाह तआ़ला पर भरोसा होता है तो हमें भीतरी शांती और यकीन प्राप्त होता है।

  कुरआ़न की निम्नलिखित आयत से इस बात की ताईद (पुष्टि) होती है, जिसमें अल्लाह तआ़ला फरमाता है:

- "उस (विरोधी) गिरोह का पीछा करने में कमज़ोरी न दिखाओ। अगर तुम तकलीफ़ उठा रहे हो तो तुम्हारी तरह वे भी तकलीफ़ उठा रहे हैं। और तुम अल्लाह से उस चीज़ा की उम्मीद रखते हो जिसकी वह उम्मीद नहीं रखते। अल्लाह सब कुछ जानता है और वह गहरी समझवाला है।"

  (सूरह निसा आयत १०४)

  (चूँकि मोमिन को अल्लाह से जन्नत की उम्मीद है और दुनिया में मदद की उम्मीद है। इसलिए उन उम्मीदों की बिना पर एक मोमिन को रंजो गम एक काफिर के मुकाबले में कम होती है।)

- अध्याय "कुछ आयतें जो आपकी परेशानी दूर कर सकती हैं।" में हमने पढ़ा कि अगर हम सूरह तलाक की आयत नं. २ और ३ याद रखें और उनके अर्थ पर यकीन रखें तो हमें अंदरूनी ताकत और मानसिक शांति हासिल होता है।

  इस आयत में इस बात का बयान है कि अगर हम खुदा का खौफ करें और उसके लागू किए गए फरायज़ (कर्तव्य) पूरे करें तो खुदा हमारे लिए मुश्किलात से निकलने का रास्ता बनाएगा।

  चूँकी अल्लाह तआ़ला पर यकीन परेशानियों को बेहद कम कर देता है और हमें सुकून और भरोसा अता कर देता है। इसलिए जिंदगी में खुश रहने की पहली शर्त है कि हमारा अल्लाह तआ़ला पर पूरा यकीन हो।

अल्लाह तआ़ला को याद करते रहें:-

- "और अगर कोई कुरआन ऐसा होता कि उस (की तासीर) से पहाड़ चल पड़ते या ज़मीन फट जाती या मुर्दों से कलाम कर सकते तो (यही कुरआन उन औसाफ से मुत्तसिफ होता) मगर बात यह है कि सब बातें खुदा के अेख्तियार में हैं।"(सूरह रअद आयत ३१)

  यानी कुरआ़न शरीफ में ऐसी तासीर (प्रभाव) तो है मगर अल्लाह तआ़ला किसी मस्लेहत के तहत उसे जाहिर होने नहीं देता।

- "और सुन रखो कि खुदा की याद से दिल आराम पाते हैं।"

  (सूरह रअद आयत २८)

- "लोगो, तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से उपदेश आ गया है। यह वह चीज़ है जो दिलों के रोगों को चंगा करने के लिए है।"

  (सूरह यूनुस आयत ५७)

- आंखें देखने के लिए, कान सुनने के लिए और जुबान चखने के लिए बनायी गयी है। आप कान से नहीं खा सकते है या संगीत का मज़ा जुबान से नहीं ले सकते। अगर आप कान सुनने के लिए उपयोग करेंगे तो आपको आवाज़ से खुशी होगी। आंखो से देखें और जुबान से स्वादिष्ट आहार चखें तो खुशी होगी।

  इसी तरह अल्लाह तआ़ला ने इन्सानों (इन्सानी रूह) और जिनों को अपनी इबादत के लिए पैदा किया।(सूरह जारियात आयत ५६)

  चूँकि आत्माएं अल्लाह तआ़ला की इबादत के लिए पैदा की गई हैं और ऊपर लिखी हुई आयत इस बात को साबित करती है कि कुरआ़न की आयतों में जबरदस्त ताकत और शिफा (आरोग्य) है और अल्लाह तआ़ला की याद से ही दिल सुकून पाते हैं। इसलिए जब आत्माएं इबादत करेंगी तो ही उन्हें जिंदगी की सही खुशी और सुकून हासिल होगा। जैसे कान आहार से आनंद नहीं उठा सकता। उसी तरह आत्मा दुन्यावी तरक्की से सुकून और राहत नहीं पा सकती।

  इसलिए ज़ेहनी सुकून और दिल का करार हासिल करने के लिए मुसलसल इबादत और खुदा की हम्दोसना करनी चाहिए।

अपने से निचले स्तर के लोगों को देखो, ऊंचे स्तर के लोगों को मत देखो:-

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया "उन लोगों को देखो जो तुमसे निचले स्तर के हैं ना कि उन्हें देखो जो तुमसे ऊंचे स्तर के है।(दुनीयावी तौर पर) क्योंकि इस तरह खुदा की दी हुई निअ़मत की नाकद्री ना करोगे।"

  (बुखारी, मुस्लिम)

  जब तुम्हें अंदाजा होगा कि इस दुनिया में बहुत सारे ऐसे इंन्सान हैं जिनके पास न इतनी दौलत है, ना सहेत, ना फुरसत ना वह तमाम निअ़मतें हैं जिनसे अल्लाह ने तुम्हें नवाज़ा है तो तुम खुद को खुशनसीब समझोगे, तुम अपनी निअ़मतों की कद्र करोगे और अच्छा एहेसास तुम्हारे दिल का दुख मिटा देगा और तुम्हारी खुशियों में बढ़ोतरी करेगा।

मसनून (हज़रत मुहम्मद (स.) द्वारा मान्यता प्राप्त) दुआ़एे मांगें:-

- मुस्तकबिल को सवांरने के बेहतरीन तरीकों में से एक तरीका यह है कि उन दुआ़ओं को मांगा जाए जो हज़रत मुहम्मद (स.) अल्लाह तआ़ला से मांगते थे। उनमें से कुछ मसनून दुआ़एें निम्नलिखित हैं:

  اَللّٰهُمَّ اَصْلِحْ لِیْ دِیْنِیَ الَّذِیْ هُوَعِصْمَةُ اَمْرِیْ، وَاَصْلِحْ لِیْ دُنْیَایَ الَّتِیْ فِیْهَا مَعَاشِیْ وَاَصْلِحْ لِیْ آخِرَتِی الَّتِیْ فِیْهَا مَعَادِیْ ، وَاجْعَلِ الْحَیَاةَ زِیَادَةً لَیْ فِیْ کُلِّ خَیْرٍ، وَالْمَوْتَ رَاحَةً لِیْ مِنْ کُلِّ شَرٍّ. (رواه مسلم)

  अर्थ:- ऐ खुदा! मेरे लिए मज़हब (दीन, ईमान) का रास्ता सही बना। जिससे मुझ से गुनाह अंजाम ना पाएं। मेरी जिंदगी मेरे लिए सही बना (जिसमें मेरा रिज़्क शामिल है)। मेरी आखिरत की जिंदगी सही बना क्योंकि मुझे वहीं वापस जाना है। और मेरी जिंदगी मेरे लिए हर पल बेहतर बना और मौत मेरे लिए तमाम बुराइयों से बचने का ज़रिया बना। (रवाह मुस्लिम)

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने अल्लाह तआ़ला का फज्ल (कृपा) इन शब्दों में तलाश फरमाया है:

اَللّٰهُمَّ رَحْمَتَکَ اَرْجُوْ فَلَا تَکِلْنِیْ اِلٰی نَفْسِیْ طَرْفَةَ عَیْنٍ، وَاَصْلِحْ لِیْ شَاْنِیْ کُلَّهُ ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ .(رواه ابو داؤد باسناد صحیح)

अर्थः- ऐ खुदा! मुझपर रहम फरमा। एक पल के लिए भी मुझे खुद पर भरोसा करने वाला मत बना। और मेरे लिए तमाम मामलात सही कर दे और कोई बुत इस लायक नहीं कि उसकी तेरे सिवाय इबादत की जाएं।
(अबू दाऊद)

अगर कोई दुआ दिल के खुलूस, आजिज़ी और बहुत चाह के साथ मांगी जाए तो अल्लाह तआला उस दुआ को ज़रूर कुबूल करता है। दुआओं की कुबूलियत की एक निशानी या असर यह है कि जिंदगी में अमन और खुशी महसूस होने लगती है।

करीबी रिश्तेदारी, खुषी का पहला ज़रिया है:-

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "किसी ईमानवाले मर्द को किसी ईमानवाली औरत (उसकी बीवी) से नफरत नहीं करनी चाहिए क्योंकि अगर वह उसकी एक बुराई को पसंद नहीं करता तो यकीनन उसकी दूसरी खूबी को पसंद करेगा।" (मुस्लिम)

- हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया, "तुम में से बेहतरीन आदमी वह है जो अपनी बीवी के लिए बेहतर हो, और मैं तुम में का सबसे बेहतर हूँ अपनी बीवियों के लिए।" (इब्ने माजा, इब्ने अब्बास, जादे राह हदीस ३२१)

- अल्लाह तआला कुरआन में फरमाता है कि अल्लाह के नेक बंदे अल्लाह से इस तरह दुआ करते हैं;

رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ۝

"और वह जो (खुदा से) दुआ मांगते है कि ऐ परवरदिगार हमको हमारी बीवियों की तरफ से (दिल का चैन) और औलाद की तरफ से आंख की ठंडक अता फरमा और हमें परहेजगारों का इमाम बना।"
(सूरह फुरकान आयत ७४)

यह दुआ खानदानी जिंदगी बेहतर बनाती है और खुशियों में इजाफा करती है।

- खानदान या घर के सदस्य और खानदानी जिंदगी खुशियों का सबसे अहम ज़रिया है। उनके लिए दुआ भी करें। बीवी बच्चों के साथ और घर में खुशगवार माहौल के लिए अमली कोशिशें भी करें।

जैसा आपका अमल होगा वैसे ही आपके जज़्बात होंगे।:-

- अगर आप उम्दा लिबास पहनें, इत्र लगाएं, बालों को कंघी से अच्छा सवारें, और अच्छा व्यक्तित्व (Personality) बनाएं तो खुद-बखुद अपने आप को खुश और चुस्त महसूस करेंगे। अगर आप अपनी गंदी और निराश व्यक्तित्व (Personality) बनाऐंगे तो आप खुद-बखुद दुखी और निराश हो जाएंगे, क्योंकी जैसा आपका अमल होगा वैसे ही आपके जज़्बात होंगे।

- हज़रत जुबैर (रज़ि.) कहते हैं कि एक दिन हज़रत मुहम्मद (स.) मुलाकात के लिए हमारे यहाँ तशरीफ लाए। तो आप (स.) की नज़र एक परेशान हालत वाले व्यक्ति पर पड़ी जिसके सर के बाल बिल्कुल बिखरे हुए थे। तो आप (स.) ने फरमाया, "क्या यह आदमी ऐसी कोई चीज़ नहीं पा सकता था जिससे अपने सर के बाल ठीक कर लेता?" (और उस सभा में) आप (स.) ने एक आदमी को देखा जो बहोत मैले कुचैले कपड़े पहने हुए था, तो इरशाद फरमाया, "क्या इसको कोई चीज़ नहीं मिल सकती थी जिससे यह अपने कपड़े धो कर साफ कर लेता?"
(मस्नद अहमद सुनन निसाई, मुआरिफुल हदीस जिल्द ६, पेज २९८)

हज़रत मुहम्मद (स.) उलझे हुए बाल और गंदे लिबास को पसंद नहीं फरमाते थे। इसका मतलब यह है कि हमें हमेशा अच्छा लिबास पहनना चाहिए और अच्छा व्यक्तित्त्व (Personality) रखना चाहिए।

- ऐसी ही एक हदीस इमाम मालिक (रह.) ने अपनी किताब 'मूअत्ता' में बयान की है अता बिन यस्साल के हवाला से;

- अबुल हौस ताबयी (रह.) अपने पिता (मालिक बिन फज़ला (रज़ि.)) से रिवायत करते हैं कि मैं हज़रत मुहम्मद (स.) की खिदमत में हाज़िर हुआ और मैं बहुत मामूली और घटिया किस्म के कपड़े पहने हुए था। तो आप (स.) ने मुझसे फरमायाः "क्या तुम्हारे पास कुछ माल और दौलत है?" मैंने कहा कि "हाँ! (अल्लाह का फज़्ल है)" आप (स.) ने पूछा कि "किस किस्म का है?" मैंने कहा कि "अल्लाह ने मुझे हर किस्म का माल दे रखा है, ऊंट भी हैं, गाय बैल भी हैं, भेड़ बकरियां भी हैं, घोड़े भी हैं, गुलाम दासियां भी हैं।" आप (स.) ने फरमाया, "जब अल्लाह ने तुमको माल और दौलत से नवाज़ा है तो फिर अल्लाह के इनाम और एहसान और उसके फज़्ल और कृपा का असर तुम्हारे ऊपर नज़र आना चाहिए।"
(मस्नद अहमद सुनन निसाई, मुआरिफुल हदीस जिल्द ६, पेज २९६)

- हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर बिन आस (रज़ि.) कहते हैं हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "इजाज़त है खूब खाओ पिओ, दूसरों पर सदका (दान) करो, और कपड़े बनाकर पहनों। शर्त यह है कि अिस्राफ (फिजूल खर्चे) और नियत में गर्व और घमंड (दूसरों पर बरतरी/वर्चस्व जताना) ना हो।"
(मस्नद अहमद सुनन नीसाई, सुनन इब्ने माजा, मआरिफुल हदीस, जिल्द ६, सफहा २९८)

- जिंदगी में हमेशा खुश रहने के लिए हमेशा उम्दा लिबास पहनें और इत्र लगाऐं। हमेशा मुस्कुराए और मज़बूत इरादों वाले की तरह बरताव करें और बहादुर बनें। परिवार के सदस्यों को भी इसपर चलने की हिदायत करें। आप का आहार और लिबास (वस्त्र) आप की आमदनी के अनुसार होना चाहिए इससे आपकी जिंदगी में खुशी आऐगी।

लोग अपने घरों में आम तौर पर सस्ते पुराने कपड़े पहनते हैं (खास तौर पर औरतें) और सादा आहार और बासी खाना खाकर रूपया बचाने की कोशिश करते हैं। इससे जिंदगी में खुशी कम हो जाती हैं। अपने पुराने कपड़े और बचा हुआ खाना गरीबों में बांटे इससे खुदा आप पर ज़्यादा महेरबान होगा। अपनी आमदनी के अनुसार अच्छा खाएं और अच्छा पहनें इससे आपकी खुशी बढ़ेगी।

दूसरों के काम आना:-

- हज़रत अबू उमामा बाहली (रज़ि.) फरमाते हैं कि (एक दिन) हज़रत मुहम्मद (स.) के सामने दो आदमियों का ज़िक्र किया गया। जिनमें से एक आबिद था दूसरा आलिम (विद्वान) (और आप (स.) से पूछा गया

कि इन दोनों में बेहतर कौन है?) हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया, "विद्वान को आबिद पर ऐसी बरतरी/वर्चस्व प्राप्त है जैसी मुझको तुम में सबसे मामूली व्यक्ति पर बरतरी/वर्चस्व प्राप्त है।"

फिर हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया, "बेशक अल्लाह तआ़ला और उसके फरिश्ते और आसमान वाले और ज़मीन वाले, यहाँ तक कि अपने बिलों में चींटियां और यहाँ तक कि मछलियां, सबके सब उस व्यक्ति के लिए भलाई की दुआ़ करते हैं जो लोगों को भलाई (यानी धार्मिक ज्ञान) की शिक्षा देने वाला है।"

(तिरमिज़ी, मुन्तखब अबवाब जिल्द १, हदीस २०३)

- हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमायाः "विधवा औरत और गरीब की खबरगीरी करने वाला उस व्यक्ति की तरह है जो खुदा की राह में कोशिश करे।"(यानी जो व्यक्ति विधवा औरत और गरीब की देखभाल और खबरगीरी करता है और उनकी ज़रूरीयात को पूरी करके उनके साथ अच्छा बर्ताव करता है, उसका सवाब उस सवाब के बराबर है जो खुदा की राह मे जिहाद और हज करने वाले को मिलता है।) और मेरा गुमान है कि उन्होंने यह भी कहा था "विधवा औरत और गरीब की खबरगीरी करने वाला उस व्यक्ति की तरह है जो नमाज़ और इबादत के लिए रातों को जागा करता है और रात को जागने में सुस्ती नहीं करता ना किसी खराबी और नुकसान को गवारा/बर्दाश्त करता है और उस रोज़ेदार की तरह है जो कभी अफ्तार नहीं करता।"

(बुखारी मुस्लिम, मुन्तखब अबवाब जिल्द १ हदीस १०१६)

जिस पर अल्लाह की रहमत होती है उसपर अल्लाह तआ़ला की तरफ से सकीनत (सुकून/शांति) भी उतरती है। इसलिए अगर हम समाज और गरीबों की खिदमत में व्यस्त रहते हैं तो उसकी बरकतों की वजह से हमारे अमन व शांति और खुशियों में बढ़ोतरी होगी।

अपने दुश्मन को नज़रअंदाज करो:-

- एक बार एक व्यक्ति हज़रत अबू बक्र सिदद्ीक (रज़ि.) पर हज़रत मुहम्मद (स.) की मौजूदगी में नाराज़ हो रहा था। हर मलामत (बुरा-भला कहना) पर हज़रत मुहम्मद (स.) मुस्कुराते और हज़रत अबू बक्र सिदद्ीक (रज़ि.) खामोश रहते और सब्र करते। आखिरकार हज़रत अबू बक्र सिदद्ीक (रज़ि.) का सब्र छूट गया। और आपने उस व्यक्ति को जबाब दिया तो फौरन हज़रत मुहम्मद (स.) खड़े हो गऐ और बाहर चले गएं। बाद में हज़रत अबू बक्र सिदद्ीक (रज़ि.) ने हज़रत मुहम्मद (स.) से सवाल किया, "ऐ अल्लाह के रसूल (स.)! वह व्यक्ति मुझे मलामत (बुरा-भला कहना) कर रहा था और आप (स.) खामोश रहे और मुस्कुराते रहे और जब मैंने जवाब दिया तो आप (स.) बाहर चले गऐ?" फिर हज़रत मुहम्मद (स.) ने जवाब दिया, "जब तक तुम सब्र करते रहें, एक फरिश्ता तुम्हारी तरफ से जवाब देता रहा इसलिए मैं मुस्कुरा रहा था। लैकिन जैसी ही तुमने जवाब दिया, फरिश्ता वहाँ से चला गया और वहाँ एक शैतान आ गया, इसलिए मैं वहाँ से चला गया।"

(मिश्कात)

जब तक हम शांत और साबिर (धैर्यवान) रहते हैं, हम अल्लाह की सुरक्षा में होते हैं और हमारा दुश्मन नाकाम रहता है। क्योंकि वह हमारा वक़्त और ताकत बर्बाद करके हमें कोई नुकसान नहीं पहुँचाता। मगर जैसे ही हम उसे महत्त्व देते हैं, जज़्बाती और जोशीले हो जाते हैं, अपना समय उसके खिलाफ सोचने में बर्बाद करते हैं वगैरा, वह कामयाब होकर खुश हो जाता है। इसलिए सब्र करने की कोशिश करें। इससे आपके मानसिक शांति, खुशी और सवाब में बढ़ोतरी होगी।

सब्र करें और कोशिश जारी रखें।:-

कुरआने करीम की एक आयत का अर्थ है कि;

- "अगर अल्लाह अपने सब बन्दों को खुली रोज़ी दे देता तो वे ज़मीन में सरकशी का तूफ़ान खड़ा कर देते, मगर वह एक हिसाब से जितनी चाहता है उतारता है, यक़ीनन वह अपने बन्दों की ख़बर रखनेवाला है और उनपर निगाह रखता है।" (सूरह शूरा आयत २७)

- अल्लाह तआ़ला जानता है कि हमारी दुनिया और आखिरत के लिए हमारे पास कितनी दौलत होनी चाहिए। अल्लाह तआ़ला बस उतनी ही दौलत हमें देता है।

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा कि किसी तस्बीह के पढ़ने से रिज़्क में बरकत होगी, तो वह सौ प्रतिशत होगी ही। इसमें कोई शक की गुँजाइश नहीं है और अगर हमें उस तस्बीह के पढ़ने से रिज़्क में बरकत नहीं हो रही है तो या तो हम साथ में कोई गुनाह भी कर रहे हैं, या फिर मौजूदा माली हालत ही हमारी दुनिया और आखिरत में कामयाबी के लिए ज़रूरी है। ज़्यादा दौलत की वजह से सालबा की तरह हमारी भी आखिरत खराब हो सकती है।"

- इसलिए अंदरूनी खुशी के लिए दिल की गहराइयों से अल्लाह तआ़ला की तरफ से दी गई इस माली व्यवस्था को समझते हुऐ सब्र कर लीजिए। मगर ज़्यादा माल और दौलत के लिए कोशिश करते रहिये। हज़रत याकूब (अ.स.) पैगम्बर थे। हज़रत यूसुफ (अ.स.) के बिछड़ने के बाद वह लगातार दुआ़ भी मांगते रहे और गम में रोते भी रहे। मिस्र फिलस्तीन से कोई बहुत दूर नहीं था, और बाप बेटे आसानी से मिल सकते थे। मगर किसी कारण से अल्लाह तआ़ला ने उनकी दुआ़ उस वक़्त कुबूल किया जब बेटा बादशाह बन चुका था।

इसी तरह हो सकता है कि आप की दुआ़ और तस्बीह पढ़ने का फल भी आपको किसी अहम मौके पर मिलेगा। और अगर इस जिंदगी में ना भी मिले तो हर दुआ़ और तस्बीह का बदला अल्लाह तआ़ला ने आखिरत में देने का वादा किया है।

ख़ुशहाली को आने वाली कई पीढ़ियों तक कैसे बरकरार रखें?:-

- कुरआने करीम में हज़रत मूसा (अ.स) और हज़रत खिज़र (अ.स) की मुलाकात का दिलचस्प जिक्र ''सूरह कहफ'' में आयत नंबर ६० और आयत नंबर ८२ के दरम्यान बयान किया गया है। जिसे आप सब जानते हैं। उस घटना का संक्षिप्त और महत्वपूर्ण हिस्सा निम्नलिखित हैः

१. हज़रत खिज़र (अ.स) ने एक अच्छी कश्ती में कुछ नुक्स (दोष) पैदा कर दिया था।

२. एक लड़के को कत्ल कर दिया था।

३. गांव में एक गिरती दिवार को सीधा कर दिया था।

हज़रत खिज़र (अ.स) ने इन तीनों कामों की वजह हज़रत मूसा (अ.स)

को यह बतायी कि वह जो नाव थी गरीब लोगों की थी जो दरया में मेहनत करके यानी नाव चलाकर गुज़ारा करते थे। और उनके सामने की तरफ एक बादशाह था जो हर अच्छी नाव को जबरदस्ती छीन लेता था। तो मैंने चाहा उसे ऐबदार (दूषित) कर दुँ ताकि वह उसे कब्ज़ा ना कर सके। और वह जो लड़का था उसके मां-बाप दोनों मोमिन (मुस्लिम) थे। हमें अंदेशा हुआ कि वह बड़ा होकर बदकिरदार (चरित्रहीन) होगा कहीं उनको सरकशी (बगावत) और कुफ्र में ना फंसा दे। तो हमने चाहा की उनका परवरदिगार उसकी जगह उनको और बच्चा अता फरमाए जो नेक नियत और मुहब्बत में ज़्यादा करीब हो। और तीसरे काम की वजह का बयान कुरआने करीम की आयतों में इस तरह है।

وَاَمَّاالْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلٰمَيْنِ يَتِيْمَيْنِ فِى الْمَدِيْنَةِ وَكَانَ
تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا وَكَانَ اَبُوْ هُمَاصَالِحًا ۚ فَاَرَادَرَبُّكَ
اَنْ يَّبْلُغَآ اَشُدَّهُمَاوَيَسْتَخْرِ جَاكَنْزَهُمَا صلے
رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۚ وَمَافَعَلْتُهٗ عَنْ اَمْرِىْ.

"और उस दीवार का मामला यह है कि यह दो अनाथ लड़को की है जो शहर में रहते हैं। उस दीवार के नीचे उन बच्चों के लिए एक ख़ज़ाना गड़ा है और उनका बाप एक नेक आदमी था। इसलिए तुम्हारे रब ने चाहा कि ये दोनों बच्चे बालिग़ (बड़े) हों और अपना ख़ज़ाना निकाल लें। यह तुम्हारे रब की दयालुता के आधार पर किया गया है। मैंने कुछ अपने अधिकार से नहीं कर दिया है। यह है वास्तविकता उन बातों की जिनपर तुम सब्र से काम न ले सके।" (सूरह कहफ आयत ८२)

कुरआन की व्याख्या करने वाले विद्वानों ने लिखा है दो यतीम/अनाथ लड़के जो शहर में रहते थे गांव में उनका पुराना मकान था जो खराब हालत में वीरान था और जिसकी दिवारें गिरने वाली थीं। अगर वह गिर जाती तो दीवार के नीचे दफन खज़ाना ज़ाहिर हो जाता और लोग उसे लूट लेते। अल्लाह तआला ने अपने खास बंदे के द्वारा उसे सुरक्षित कर दिया और इसी हकीकत की तरफ मैं आपका ध्यान आकर्षित कराना चाहता हूँ। यानी एक नेक इन्सान का खज़ाना अगर लावारिस भी पड़ा हो तो अल्लाह तआला गैब से मदद् भेज कर उसकी सुरक्षा करता है और उसकी औलाद तक वह माल दौलत पहुँचा देता है।

यानी हलाल से कमाई हुई नेक इन्सान की दौलत कभी बर्बाद नहीं होगी। इस हकीकत को हमेशा याद रखना चाहिए।

- हज़रत अबू बक्र (रज़ि.), हज़रत उमर (रज़ि.), हज़रत उस्मान (रज़ि.) और हज़रत अली(रज़ि.) के बाद इतिहासकारों ने पांचवा खलीफा हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ को माना है। एक रात उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ अपने कमरे में बैठे हुकूमत से जुड़े कुछ दस्तावेज़ देख रहे थे। इतने में उनकी पत्नी तश्रीफ लायीं जो की शादी के पहले एक राजकुमारी थीं, और हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ से कुछ ज़ाती मामलात पर बातचीत करना चाहती थी।

  हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रज़ि.) ने कहा कि पहले इस चिराग को बुझा दें यह हुकूमत के तेल पर जल रहा है। अपना चिराग जलाऐं फिर बातचीत करते हैं। यह हाल हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रज़ि.) के तकवे (नेकी) का था। वह सहाबा कराम के अख्लाक का एक जीता जागता नमूना थे। जब उनका इन्तेकाल हुआ तो उनके बच्चों को विरासत में सिर्फ कुछ दिरहम मिले। यानी हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रज़ि.) ने अमीरूल मोमिनीन (खलीफा या गवर्नर) होने के बावजूद बैतुल माल (हुकूमत के खज़ाने) से कुछ लेने के बदले अपना भी सब कुछ उम्मत के लिए लुटा दिया और दुनिया से खाली हाथ विदा हुए और अपने बाल बच्चों के लिए सिर्फ खुदा का सहारा छोड़ा था। (हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रज़ि.) सम्मानित और मालदार खानदान से थे। खलीफा होने से पहले मदीना और कई जगह के गवर्नर थे और वह एक अमीर इन्सान थे)।

  उनके कुछ समय बाद सुलेमान बिन मलिक खलीफा हुए। उसने बैतुल माल को अपनी ज़ाती मिल्कियात समझा और खूब माल और दौलत समेटा। जब उसका इंतेकाल हुआ तो उसकी औलादों में करोड़ों के हिसाब में माल और दौलत बटी। जब हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रज़ि.) की औलादें बड़ी हुईं तो उन में हर एक उच्च शिक्षित नेक और दीनदार अमीर तरीन इन्सान और कहीं ना कहीं के गवर्नर थे।

  और जब सुलेमान बिन मलिक की औलादें बड़ी हुईं तो सबके सब शराबी जुआरी और ज़माने के बहुत ही बुरे इन्सान थे। रिवायतों में है कि वह मस्जिदों के दरवाज़े पर भीख मांगते थे।

  इसलिए हमें याद रखना चाहिए के नेक इन्सान का हलाल तरीके से कमाया हुआ माल कभी बर्बाद नहीं होता और अगर उस नेक इन्सान ने अपनी औलादों के लिए माल ना भी छोड़ा हो तब भी अल्लाह तआला उसकी आनेवाली कई पीढ़ियों को खुशहाल और ज़माने में सम्मानित रखते हैं। हराम तरीके से कमाया हुआ माल कभी बाकी नहीं रहता। वह माल खुदबखुद ज़ाया हो ही जाता है। उस हराम माल से परवरिश पाने वाली पीढ़ियां भी नाकाम, गरीब और गुमराह होती हैं।

▼▼▼▼▼▼▼

"वही तो है जो तुमको जंगल और दरिया में चलने फिरने और सैर करने की तौफीक देता है। यहाँ तक की जब तुम कश्तियों में (सवार) होते और कश्तियां पाकीजा हवा (के नर्म नर्म झोकों) से सवारों को लेकर चलने लगतीं और वह उनसे खुश होते हैं। तो नागहां ज़न्नाटे की हवा चल पड़ती है और लहरें हर तरफ से उनपर (जोश मारती हुई) आने लगती हैं और वह ख्याल करते हैं कि (अब तो) लहरों मे घीर गए तो उस वक़्त खालिस खुदा ही की इबादत करके उससे दुआ मांगने लगते हैं कि (ऐ खुदा!) अगर तु हमको इससे निजात बख्शे तो हम (तेरे) बहोत ही शुक्रगुजार हों। लैकिन जब वह उनको नीजात दे देता है तो मुल्क में नाहक शरारत करने लगते हैं। लोगो! तुम्हारी शरारत का वबाल तुम्हारी ही जानों पर होगा। दुनिया की जिंदगी के फायदे उठा लो। फिर तुमको हमारे पास ही लौट कर आना है उस वक़्त हम तुमको बताएंगे जो कुछ तुम किया करते थे।" (सूरे यूनुस आयत २२-२३)

----------x---------x-------x--------x-------x---------

किसी मुसीबत से निजात के बाद आप अल्लाह तआला का कितना शुक्र अदा करते हैं?

५२. अपनी आत्मा की बैटरी कैसे चार्ज करें?

- कुछ लोग इस तरह शिकायत करते हैं की मैं सख्त मेहनत करना चाहता हूँ। लैकिन में यह कर नहीं पाता। में थक जाता हूँ या काम में ढ़ील देता हूँ। अपना काम कल पर टाल देता हूँ। मैं आम तौर पर निराश, थका-मांदा, बुझा हुवा, परेशान और गैर-मुतहर्रिक (निष्क्रिय) रहता हूँ। चुस्त और तंदुरूस्त (Energetic) रहने के लिए क्या करूं।

- ऊपर लिखी हुई स्थितियां आम हैं। क्यूंकि कायनात (ब्रम्हाण्ड) में कई ताकतें हैं जो इन्सान की कमज़ोरी और तबाही के लिए लगातार काम करती हैं। उनसे सूरक्षित रहने और खुशहाली की तरफ बढ़ने के लिए आपको अपने अंदर रूहानी उर्जा को जज़्ब करने और उसको बरकरार रखने का हुनर सीखना होगा।

- निम्नलिखित तरीके से आप अपने अंदर रूहानी उर्जा पैदा कर सकते हैं। जो आपको सुबह से शाम तक थके बगैर काम करने की ताकत देती रहेगी।

चार्ज होने का तरीका

- हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर (रज़ि.) के मुताबिक हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "सुबहान अल्लाही व बिहम्दीही " (जिसका मतलब है अल्लाह तआ़ला तमाम दोषों से पाक है। और तमाम तारीफें अल्लाह के लिए ही हैं।) हर मख्लूक (प्राणी) की दुआ़ और इबादत है। और इस तस्बिह की तिलावत (पठन) से उन्हें अल्लाह तआ़ला की कृपा यानी रोजमर्राह की रोज़ी प्राप्त होती है। हर मख्लूक (प्राणी) अल्लाह तआ़ला की हम्द व सना (प्रशंसा) करती है, मगर इन्सान उसे समझ नहीं सकता।
(निसाई, हकीम, तरगीबे बजार)

  इसलिए कायनात की हर मख्लूक यानी सितारे, सूरज, चांद, ज़मीन, पहाड़, हवा, दरिया वगैरा वगैरा अल्लाह तआ़ला की इबादत के द्वारा अपना रिज्क (रोज़ी) पाते हैं। लैकिन रिज्क के इस्तेमाल के बाद हम उनका फुज़ला (मल/पैखाना) नहीं देखते। क्योंकि उनका रिज्क उर्जा की शक्ल में होता है ना कि माद्दी (पदार्थ की) शक्ल में। इस तरह फरिश्ते आहार नहीं खाते बल्कि जब उन्हें भूक लगती है तो अल्लाह तआ़ला की हम्दोसना (प्रशंसा) करके उर्जा हासिल करते हैं।

- यह हकीकत इस बात को सिद्ध करती है कि अल्लाह तआ़ला के जिक्र में उर्जा है, और जो भी सही तरीके से अल्लाह तआ़ला की तसबीह पढेगा उसकी रूह उर्जा हासिल करेगी।

हर तसबीह पढ़ने वाला (Energetic) *क्यों नहीं होता?*

- लकड़ी से आग पैदा की जा सकती है। मैंने एक ऐसा व्यक्ति देखा है जो ६० सेकंड में लकड़ी के दो टुकड़े आपस में रगड़ कर आग पैदा कर सकता है। लैकीन मैं अगर लकड़ी के दो टुकड़े साठ मिनट तक रगडू तो भी आग पैदा नहीं होती। लकड़ी रगडकर आग पैदा करने की कुछ तकनीक है। इसी तरह दुआ़ और इबादत से उर्जा हासिल करने की भी कुछ तकनीकें हैं।

- उर्जा हासिल करने की पहली शर्त यह है कि हम इबादत में जो तिलावत (पठन) कर रहें है उनपर हमारा पूरा ध्यान कायम रहे। हम जिन आयात की तिलावत कर रहे हैं उनका अर्थ हमें मालूम होना चाहिए, और आदर की भावना और नम्रता से हमें उन्हें ज़बान से सही तलफ्फुज/उच्चारण के साथ अदा करना चाहिए।

- अपनी आंखे बंद कर लें और काबा की तरफ रूख करें।

- अल्लाह तआ़ला हर चीज़ देखता है और यह जानता है कि आप क्या सोचते हैं या क्या तिलावत (पठन) करते हैं। इस हकीकत को याद रखें और आयात की तिलावत इस यकिन से करें की आप बराहेरास्त (प्रत्यक्ष रूप से) अल्लाह तआ़ला से मुखातिब (संबोधित) हैं।

- गहरी सांस अंदर खींचें फिर दो सेकंड रूक कर धीरे-धीरे सांस छोड़ें। आपको जितना वक़्त सांस लेने में लगा उससे ज्यादा वक़्त सांस छोड़ते हुए लगना चाहिए।

- जब सांस छोड़ना शुरू करें तो धीरे-धीरे तस्बीह या आयात या दरूद शरीफ भी पढ़ें।

- एक सांस छोड़ते वक़्त आप एक तस्बीह या आयत पढ़ सकते हैं। या अगर कोई बड़ी आयत या दरूद शरीफ हो तो एक सांस छोड़कर दूसरी सांस भी ले सकते हैं। मगर धीरे-धीरे सांस छोड़ते वक़्त ही पढ़ने का कार्य करें।

- इस सांस वाले कार्य को करते वक़्त चमड़े की कोई चीज़ ना पहनें। जैसी की घड़ी का पट्टा, कमर का पट्टा, पाकिट वगैरा। मुर्दा जावनरों की चमड़ी सारी उर्जा जज़्ब कर लेती है। प्लास्टिक या धातु की वस्तुएं पहन सकते हैं।

- इबादत में आजिज़ी और विनम्रता पाने के लिए इबादत करते वक़्त आप कल्पना करें कि आपने दुआ़ के लिए हाथ उठा रखा है, मगर हकीकत में दुआ़ की तरह हाथ उठाना ज़रूरी नहीं है।

- आंख खोलकर इबादत करने से आपको सवाब (पुण्य) वगैरा तो मिल जाऐगा मगर दिनभर लगातार काम करने के लिए जो एनर्जी और उर्जा आपके शरीर और रूह को चाहिए वह उर्जा आंख बंद करके इबादत के बगैर मिलना मुश्किल है।

चेतावनी (Warning):

- कुरआ़ने करीम की आयात है कि "और क्या हो जाता अगर कोई ऐसा कुरआन उतार दिया जाता जिसके ज़ोर से पहाड़ चलने लगते, या ज़मीन फट जाती, या मुरदे क़ब्र से निकलकर बोलने लगते? (कुरआने करीम में इस तरह की शक्ति है मगर वह ज़ाहिर नहीं होता क्यूंकि अल्लाह तआला ने उसे इस की इजाज़त नहीं दी है।) बल्कि सारा अधिकार ही अल्लाह के हाथ में है।" (सूरह रअ्द आयत ३१)

- बेशक कुरआ़न और अल्लाह तआ़ला की तसबीह के आयात में

जबरदस्त ऊर्जा और ताकत है। अगर आप लगातार एक तसबीह या एक आयत एक मुकर्रर मिकदार में एक ही जगह ४० दिन तक पढ़ते रहें तो मुअक्किल या रूह हाज़िर हो जाते हैं।

- उन रूहों को गैर-शरई (गैर-इस्लामी) काम, गंदगी और गुनाह के काम पसंद नहीं होते इसलिए उनके हाज़िर हो जाने के बाद आमिल (तपस्वी) को बहुत ज़्यादा सावधानी से जिंदगी गुज़ारनी होती है जो कि बहुत मुश्किल है। इसलिए कभी कभी मुअक्किल या रूहों और आमिल की रस्साकशी में आमिल पागल हो जाते हैं। इसलिए कोई आयत या कोई तस्बिह एक ही वक़्त मुकर्रर मिकदार में ४० दिन हरगिज़ ना पढ़ें। वक़्त बदलने, मिकदार बदलने, या एक दिन नागा करने से इस तरह के मुअक्किल वाले असरात नहीं होते हैं। इसलिए इस बात को हमेशा याद रखें।

- पहले तो शैतान या नफ्से अम्मारा आप पर हावी होगा और आपको नमाज़ और इबादत करने नहीं देगा। आप किसी तरह शैतान और नफ्स को शिकस्त देकर रूहानियत के एतबार से एक दर्जे तक पहुंच गए तो फिर आपको नमाज़ और इबादत में मज़ा आएगा और बगैर इबादत किए आपको चैन नहीं आऐगा। यह बहुत खतरनाक चरण है।

  हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जो दीन (धर्म) से ज़ोर आज़मायी (मुकाब्ला) करेगा वह हार जाएगा।" आप (स.) ने दरमियानी रास्ता अेख्तियार करने के लिए कहा है। इसलिए दरमियानी रास्ते पर चलते रहें।

  ज्यादा तसबीहात पढ़कर मैंने लोगों को पागल होते देखा है। मैं खुद भी बहुत तकलीफ उठा चूका हुँ। इसलिए जाती तर्जुबे से आपको दरमियानी रास्ते की सलाह दे रहा हुँ।

  इसलिए दिन भर लगातार काम करने की एनर्जी बगैर इबादत के हासिल नहीं हो सकती, मगर इबादत में आपने अेतेदाल (बीच की राह) का खयाल न किया तो नुकसान भी हो सकता है, इसलिए हर काम सोच समझ कर करें।

- अगर आपके पास बहोत समय है और दिल और ज़्यादा इबादत करना चाहता है तो क्या करें?

  एक बार हज़रत अबि बिन काब (रज़ि.) ने हज़रत मुहम्मद (स.) से अर्ज़ किया, "या रसूल अल्लाह! मैं अपनी रोजमर्राह की इबादत में एक चौथाई वक़्त आप पर दरूद भेजने पर खर्च करता हूँ। क्या यह उचित है?" हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "और ज़्यादा भेजोगे तो तुम्हारे लिए बेहतर होगा।" फिर हज़रत अबि बिन काब (रज़ि.) ने अर्ज़ किया, "या रसूल अल्लाह! अगर मैं अपनी इबादत का आधा वक़्त आप पर दरूद भेजने पर खर्च करूं तो क्या यह मेरे लिए बेहतर होगा?" आप (स.) ने फरमाया, "ज़्यादा करो तो तुम्हारे लिए अच्छा होगा।" फिर हज़रत अबि बिन काब (रज़ि.) ने अर्ज़ किया, "या रसूल अल्लाह! अगर मैं अपनी इबादत का तीन चौथाई हिस्सा आप पर दरूद भेजने पर खर्च करूं तो क्या यह मेरे लिए अच्छा होगा?" आप (स.) ने फरमाया, "अगर ज्यादा करोगे तो तुम्हारे लिए अच्छा होगा।" फिर हज़रत अबि बिन काब (रज़ि.) ने अर्ज़ किया, "या रसूल अल्लाह! अगर मैं अपनी इबादत का पूरा वक़्त आप पर दरूद भेजने पर खर्च करूं तो क्या यह मेरे लिए अच्छा होगा?" आप (स.) ने फरमाया, "हां यह तुम्हारे लिए अच्छा होगा।" फिर हज़रत अबि बिन काब (रज़ि.) ने कहा, "मैं ऐसा ही करूंगा।" (मुन्तखब अबवाब, तिरमिज़ी)

  अगर आपका दिल भी खूब इबादत करना चाहे तो जितना चाहे दरूद शरीफ पढ़ें। आप हर तरह से खुशहाल, तंदुरूस्त और दुनिया और आखिरत में तरक्की करेंगे। लैकिन दूसरी तस्बिहात पढ़ने के लिए एक कामिल उस्ताद की सरपरस्ती ज़रूरी है।

- जब आप किसी इबादात या नमाज़ के लिए तैयार हों तो पहले यह तिलावत करें;

  اَعُوْذُبِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْم

  अऊज़ों बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम

  ''मैं पनाह मांगता हूँ अल्लाह की शैतान मरदूद से''

  क्यूंकि अल्लाह तआला कुरआन करीम में फरमाता है;

  فَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝

  "फिर जब तुम कुरआन पढ़ने लगो तो फिटकारे हुए शैतान से अल्लाह की पनाह माँग लिया करो" (सूरह नहल आयत ९८)

- फिर पढ़ें; بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

  ''बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम''

  ''शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान और रहम करने वाला है।''

- फिर पढ़ें; رَبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ ۝ وَاَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ ۝

  रब्बी अऊज़ो बिका मिन ह-म-ज़ातिश शैतान। व अऊज़ों बिका रब्बी अंयह-जुरून।

  ''पालनहार, मैं शैतानों की उकसाहटों से तेरी पनाह माँगता हूँ, बल्कि ऐ मेरे रब, मैं तो इससे भी तेरी पनाह माँगता हूँ कि वे मेरे पास आएँ''
  (सूरह मोमिनून आयत ९७, ९८)

  ऊपर दी गई तीनों आयातें पढ़ने से दिमाग में शैतानी वसवसे नहीं आते। अगर इनके पढ़ने के बाद भी आपका दिमाग भटकता रहता है तो सूरह नास, सूरह फलक और आयतल कुर्सी पढ़कर अपने ऊपर दम कर लिया करें। फिर इबादत करें।

- ज़्यादा माल और खुशहाली हासिल करने के लिए फ़ज्र की सुन्नत घर पर अदा करें और फर्ज़ नमाज़ मस्जिद में अदा करें। नमाज़े फ़ज्र के बाद मस्जिद में एक जगह आराम से बैठें और आंखे बंद कर लें, गहरी सांस लें और धीरे से उसे खारीज करें और निम्नलिखित तस्बीहात इसी तरतीब (क्रम) से तिलावत करें।

१. ५१ बार दरूद शरीफ पढ़ें।

२. १०० बार سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ بِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ

सुब्हानल्लाहि व बि-हम-देही सुब्हानल्लाहिल अज़ीम

(यानी तमाम तारिफें अल्लाह तआ़ला के लिए हैं। और वह महान है)

३. १०० बार لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

लाहौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलीय्यिल अज़ीम

(यानी कोई बंदा खुद को गुनाह से महफ़ूज़ नहीं रख सकता और नेक अमल नहीं कर सकता बगैर अल्लाह की मदद के जो अजीम है।)

४. ४१ बार सूरे फातेहा (१०० बार पढ़ने से और ज़्यादा फायदा होगा।)

५. ५१ बार दरूद शरीफ पढ़ें।

- इसके बाद नमाज़े इशराक अदा करें फिर अपने घर जाएं।
- १०० बार इस्तगफार पढ़ें।
- हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "मैं दिन में ७० बार अल्लाह से इस्तगफार करता हूँ।"(बुखारी उर्दू २०१७)
- मैं घर से मस्जिद जाते हुए इस्तगफार करता हूँ। आप अपनी सहूलत से इसको पढ़ें। (मैं वक़्त बचाने के लिए चलते हुए इस्तगफार पढ़ता हुँ)।
- मुकर्रर वक़्त पर तमाम नमाज़ें अदा करें, पाक रहने की कोशिश करें (यानी वजू से रहें) और हर गुनाह से बचें।
- अगर ऊपर दिए गए तरीके से आपने इबादत की तो इन्शा अल्लाह सारा दिन ताकत, तंदुरूस्ती, सुकून कुछ अहम काम करने का जोश और एनरजेटीक रहेगें। १०० बार सूरे फातिहा पढ़ने से पीठ का दर्द, निराशा और कई बीमारियां कुछ दिनों में ही ठीक हो जाती हैं।

हम इबादत के वक़्त एकाग्र (Concentrate) *क्यों नहीं हो पाते? :-*

- अगर आप मन को एकाग्र (Concentrate) करने में मुश्किल महसूस करते हैं और लगातार शैतानी वसवसें आपके दिमाग में आते ही रहते हैं तो सबसे पहले गंदे बालों पर ध्यान दें। अगर पीछले १५ दिन से ज़्यादा दिनों तक आपने उन्हें साफ नहीं किया तो साफ कर लें। अगर बाल साफ करने के बाद भी आपके मन को एकाग्रता (Concentration) ना आए तो अपने शरीर की तमाम तावीज़ और अंगुठियां उतार दें, घर में से तस्वीरें और मूर्तियां वगैरह निकाल दें। सफेद और सादा कपड़ा पहनें। इतनी सारी पेशकदमियों के बाद भी आप मन को एकाग्र (Concentrate) न कर सकें तो अपनी जीवन शैली के बारे में गौर करें। संभव है आपसे ऐसी गलतियां हो रही हैं जिनका आपको ज्ञान न हों। अपनी जीवन शैली में लोग ज़्यादातर ३ गलतियां करते हैं:

अ) हराम माल खाते हैं।

ब) ज़्यादा तर फर्ज़ नमाजों से गाफिल (लापरवाह) रहतें हैं। अगर पांच वक्त की नमाज़ों में सिर्फ एक या दो नमाज़ें अदा करेंगे और रूहानी ताकत की आशा रखेंगे तो ऐसा होना संभव नहीं।

स) बाज़ औकात एक बंदा अल्लाह के गजब का लगातार शिकार रहता है। क्यूंकि वह मां-बाप का अपमान करता है। उनसे गाफिल (बेपरवाह) रहता है। कुरआ़ने करीम, अहादीसे शरीफा की तिलावत नहीं करता, अपने घर में कुत्ता रखता है, फोटोग्राफ और संगीत के उपकरण रखता है। इन हालात में भी इबादत में मन को एकाग्र (Concentrate) करना बेहद मुश्किल है। तो पहले अपनी जिंदगी को शरीअत के दायरे में लाए फिर आपको इबादत में मज़ा आएगा।

नज़र लगना (बुरी निगाह) :-

हज़रत हसन बसरी (रह.) के अनुसार अगर आप महसूस करें कि आपको नज़र लगी है तो ४१ बार सूरह कलम (नं ६८) आयात ५१ और ५२ की तिलावत करके अपने सीने पर दम करें। (तिबे नबवी सफहा १२७)

وَاِنْ يَّكَادُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ بِاَبْصَارِهِمْ
لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُوْلُوْنَ اِنَّهٗ لَمَجْنُوْنٌ ۘ
وَمَا هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ۧ

"व इंयकादुल्लज़ीना क-फ-रू लयुज़ लिकू-नका बि-अब्सारिहिम लम्मा समिउज़ ज़िक्रा व यकूलूना इन्नहू ल-मज-नून। वमा हुवा इल्ला ज़िक्रुल-लिल-आ-ल-मीन।"

अर्थः- "और काफिर जब (यह) नसीहत (की किताब) सुनते हैं तो यूं लगते हैं कि तुमको अपनी निगाहों से फिसला देंगे और कहते हैं ये तो दीवाना है और (लोगो) यह (कुरआ़न) दुनिया वालों के लिए नसीहत है।"
(सूरह कलम आयत ५१-५२)

मुक्कमल फायदे के लिए मैं कभी कभी इसे १०० बार पढ़ता हूँ।

- अगर आप समझते हैं कि आप की नज़रे बद (बुरी नज़र) से आप के बच्चों और अच्छी चीज़ों पर बुरा असर पड़ रहा हैं। तो निम्नलिखित आयत की तिलावत करें ताकि वह आपकी बुरी नज़र से सुरक्षित रहें।
(तिब्बे नबवी सफहा नं. १२७)

अल्लाहुम्मा बारिक अलैह اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلَيْهِ

यानी "ऐ खुदा! इसपर अपना फ़ज़्ल कर।"

सुबह ताज़ा और ताकतवर कैसे बेदार हों (जागृत हों)?

- अगर आप दिन भर की शारीरिक मेहनत से थक जाते हैं और सुबह कमज़ोरी, सुस्ती महसूस करते हैं तो रात में सोते वक़्त वजू करें और निम्नलिखित तस्बीह का पठन करें।

अल्लाहु अक्बर اَللّٰهُ اَكْبَرُ

यानी अल्लाह तआ़ला तमाम दोषों से पाक है। (३३ बार)

सुब्हानल्लाह سُبْحَانَ اللّٰهِ

यानी तमाम तारीफें अल्लाह तआ़ला के लिए ही हैं। (३३ बार)

अल्हम्दु लिल्लाह اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ

यानी अल्लाह तआ़ला महान है। (३४ बार)

और पूरे शरीर पर दम करें। सुबह आप बिल्कुल तरो ताज़ा बेदार होंगे। यह तस्बिहे फातिमा कहलाती है।

हज़रत अली (रज़ि.) के अनुसार हज़रत फातिमा (रज़ि.) दिन में चक्की पीसने और कुंए से अपने कंधे पर पानी लाने से बेहद थक जाती थीं। इसलिए आपने अपने पिता हज़रत मुहम्मद (स.) से एक गुलाम मांगा, लैकिन गुलाम देने के बजाए हज़रत मुहम्मद (स.) ने हज़रत फातिमा (रज़ि.) को यह तस्बीह सिखायीं। (मुत्तफिक अलैह हदीसे नबवी ६७)

मैं (लेखक) ज़ाती तौर पर इसपर अमल करता हूँ और मुझे बहुत फायदा होता है।

चुस्त रहने के वैद्यकिय उपाय :-

- अगर आप फज़्र की इबादत और ऊपर दिए गए वजीफें के पठन के बाद भी खुद को थका हुआ, निराश और सुस्त महसूस करें और गैर मुतहरिक (असक्रिय) रहें तो फिर हो सकता है की आपमें कुछ शारीरिक कमज़ोरियां हों।
- निम्नलिखित पांच कारणों से इन्सान थकावट महसूस करता है।

१) शरीर में वीटामिन बी कॉम्पलेक्स की कमी:

इसकी कमी को दूर करने के लिए वीटामिन बी कॉम्पलेक्स की एक गोली रात को खाने के बाद दस दिन तक लें।

२) असंतुलित आहार :

अगर आहार आपके शरीर के अनुसार और संतुलित नहीं है तब भी आप असक्रिय रहेंगे। सुबह एक सेब खाऐं। एक केला और पांच खजूरें दोपहर के खाने के साथ में खाएं और रात के खाने के साथ दो चमचे शहद लें, ताकि ताकत हासिल हो।

३) लोह (Iron) *(हिमोग्लोबीन) की कमी :*

इसकी कमी की वजह से इन्सान जल्द थक जाता है। बहोत सोता है और आम तौर पर कमज़ोरी महसूस करता है। इसलिए लगातार सेब, गाजर, टमाटर, शल्जम, शकरकंद, सब्जी इस्तेमाल करें और अपने फॅमिली डॉक्टर से सलाह लें।

४) निराशा (Depression) :

अगर लम्बे समय तक आपकी सोच नकारात्मक रहेगी तो आप (Depression) का शिकार हो जाएंगे। इसके इलाज के लिए कुरआने करीम की इस आयत को उसका अर्थ समझते हुऐ बार-बार पढ़ें।

“जो व्यक्ति अल्लाह से डरता है खुदा उसके लिए (हर मुश्किल से) छुटकारे का रास्ता पैदा कर देता है, और उसको ऐसी जगह से रोज़ी देता है जहाँ वहम और गुमान भी नहीं होता।” (सूरह तलाक आयत २ और ३)

इस आयत का अर्थ अपनी मातृभाषा में दौहराएं और उसपर पुख्ता अकीदा/श्रद्धा रखें। कुछ दिनों में आपको शांति मिलेगी और आपकी सोच सकारात्मक हो जाऐगी और निराशा (Depression) खत्म हो जाएगी।

५) आरामदायी जिंदगी:

सुस्त और काहिल रहने की एक वजह आरामदायी जिंदगी है। हज़रत मुहम्मद (स.) ने अपने सहाबा कराम (रज़ि.) को ऐशो आराम से बचने और मुजाहिदाना (परिश्रम वाली) जिंदगी गुज़ारने का हुक्म दिया था। (इस किताब का बाब “दौलत से रूहानी खसारा” विस्तृत जानकारी के लिए पढ़ें) इसलिए सुबह सवेरे बेदार हों। कई मील तक पैदल चलें या दौड़ लगाएं। अपने बुजुर्गों और हमदर्दों से सलाह मश्वरा करने के बाद कुछ ऐसा तिजारत या कारोबार शुरू करें जो मुश्किल हो और साथ ही वह दुनिया और आखिरत के लिए बहोत फायदेमंद हो।

- Auto suggestion की मश्क (अभ्यास) करें ताकि जिंदगी में कामयाब होने की तीव्र इच्छा पैदा हो।
- हज और उमराह करें ताकि आपकी खुश्हाली में इजाफा हो। अन्य शहरों की व्यवसायिक प्रदर्शनी (Trade Exhibition) में शरीक हों जिससे आपके ज्ञान में बढ़ोतरी होगी। इसी तरह अपने खुश्हाल रिश्तेदारों से उनके शहरो में मुलाकात करें जिनसे आप व्यापार के गुण सीख सकें। या आप उनसे सबक लेकर प्रेरित (Motivate) हो जाएं और आप भी उनकी तरह खुश्हाल होने की कोशिश करें। अगर आप इबादत से रूहानी तंदुरूस्ती और उर्जा हासिल करें, और व्यायाम, दवा इलाज से स्वास्थ्य हासिल करें तो इन्शा अल्लाह सारा दिन आप चुस्त और तंदुरूस्त रहेंगे और लगातार अपने कर्तव्यों को अंजाम देते रहेंगे।

एक कारआमद सलाहः ज़मज़म का पानी एक वैद्यकीय चमत्कार है। हदीस शरीफ के अनुसार इसे पीते हुए जो दुआ मांगेंगे वह कुबूल होगी। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) के अनुसार हज़रत मुहम्मद (स.) ने हमें यह हिदायत फरमायी की ज़मज़म का पानी पीते वक़्त यह दुआ करें।

اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَسۡئَلُکَ عِلۡماً نَّافِعاً، وَّرِزۡقًاوَّاسِعًا وَّ شِفَاءً مِّنۡ کُلِّ دَاءٍ.

अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका इल्मन नाफिअंव व रिज़्कंव वासिअंव व शिफाअम मिन कुल्लि दाइन।

अर्थः- “ऐ खुदा! मुझे फायदेमंद ज्ञान प्रदान कर, मुझे खुश्हाली से सम्मानित कर और मुझे तमाम बीमारियों से सुरक्षित रख।”

(तिब्बे नबवी सफहा नं. ६७ हसन हुसैन)

इस अमल और वज़िफे से आपकी सेहत और तमाम माली समस्याएं ज़रूर दूर हो सकती हैं। मगर शर्त यह है कि पूरे यकिन के साथ इस अमल को करें।

▼▼▼▼▼▼▼

निअमतों की कद्र करें।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिदद्दीका (रजी.) फरमाती है, ताज्दारे मदीना (स.) अपने हुज्रें में तशरीफ लाऐ, रोटी का टूकड़ा पड़ा हुआ देखा, उसे लेकर साफ किया और फिर खा लिया और फरमाया “आएशा (रजी.) अच्छी चीज़ का ऐहतराम किया करो कि यह चीज़ (यानी रोटी) जिस किसी कौम से भागी है, लौट कर नहीं आई।”(सनन इब्ने माजा)

५३. दंगों से बचने का एक ही रास्ता

इस्राईल हज़रत याकूब (अ.स.) का नाम था, उन की नसल (वंश) को ''बनी इस्राईल'' कहा जाता है। हज़तज यूसुफ (अ.स.) के ज़माने में बनी इस्राईल की बड़ी संख्या मिस्र (Egypt) जा कर आबाद हो गई थी। यह सारे एक ईश्वर को मानने वाले मुसलमान थे। ईश्वर ने उन्हें दुनिया के सारे लोगों पर फज़ीलत (वर्चस्व) दी थी, और ईश्वर का वादा उन से यह था कि तुम मेरी आज्ञापालन करो तो मैं तुम्हें दुनिया की बादशाही दूंगा। लैकिन अगर रूगरदानी (Neglect) किया तो मेरा अज़ाब (प्रकोप) कड़ा होगा।

जब उन्हों ने ईश्वर के आदेशों को नज़रअंदाज़ किया तो ईश्वर ने भी उन्हें कड़ी परिक्षा में डाल दिया। उन की संख्या ६ लाख थी और ३०० साल तक वह अत्याचार की चक्की में पिस्ते रहे।

उन की परिस्थिती आप कुरआन की इस आयत से समझ सकते हैः

''(मिस्र के लोग तो) तुम्हारे लड़कों को मार डालते थे और तुम्हारी लड़कियों को जीवित रहने देते थे और इस स्थिति में तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी बड़ी आज़माइश थी।'' (सूरह बकरा, आयत ४९)

जब ईश्वर ने बनी इस्राईल पर दया करने और अत्याचार से मुक्ति दिलाने का फैसला किया तो हज़रत मूसा (अ.स.) को पैदा किया। हज़रत मूसा (अ.स.) पैगम्बरी का पद संभालने के बाद फिरऔन को दीन की दावत लम्बे समय तक देते रहे। मगर फिरऔन ने ना सत्य धर्म को कुबूल किया और ना बनी इस्राई पर अपना अत्याचार कुछ कम किया।

हज़रत मूसा (अ.स.) के इस वाकअे को बयान करने का उद्देश्य आप के सामने कुछ तथ्य बयान करना है, जिसे आप याद रखें। वह तथ्य निम्नलिखित हैंः

१. बनी इस्राईल मुसलमान थे। इन में नेक भी थे और बद भी। मगर अत्याचार की चक्की में सभी पिस्ते रहे।

२. हज़रत मूसा (अ.स.) की पैगम्बरी की घाषणा के बाद भी बनी इस्राईल पर अत्याचार होता रहा। इसका सबूत कुरआन की निम्नलिखित आयत हैः

''उसकी क़ौम के लोगों ने कहा, ''तेरे आने से पहले भी हम सताए जाते थे और अब तेरे आने पर भी सताए जा रहे हैं।'' उसने जवाब दिया, ''क़रीब है वह समय कि तुम्हारा रब तुम्हारे दुश्मन को तबाह कर दे और तुमको ज़मीन में अधिकारी (ख़लीफ़ा) बनाए, फिर देखे कि तुम कैसे कर्म करते हो।'' (सूरह आराफ, आयत १२९)

३. हज़रत मूसा और जादूगरों के दरमियान मुकाबले के दिन जब जादूगरों ने इस्लाम स्वीकार किया तो फिरऔन ने सारे जादूगरों को तड़पा तड़पा के मारा। मगर निहत्थे और देखने में असहाय्य हज़रत मूसा (अ.स.) और उन के भाई को कोई कष्ट नहीं पहुंचाया।

४. जब फिरऔन और उस की कौम को इस्लाम की दावत दे दी गई और उन्हों ने हठधर्मी की तो उन पर हल्के प्रकोप आए। उस के बाद हज़रत मूसा (अ.स.) की दुआ से वह प्रकोप हटा लिए गए। उन की हठधर्मी और वादे से मुकरने के कारण फिर जूं, मेंडक और खून की बरसात के प्रकोप आए। और हज़रत मूसा (अ.स.) की दुआ पर प्रकोप फिर हटा लिया गया। इस तरह कई बार हुआ। जब फिरऔन और उस की कौम पर दावत की हुज्जत पूरी हो गई, तब कहीं जा कर फिरऔन और उस की कौम पर नष्ट कर देने वाला प्रकोप आया और मुसलमान बचा लिए गए।

इन चार वास्तविक्ताओं को याद रखिए। अब हम यह जानने की कोशिश करेंगे कि मुसलमानों पर अत्याचार क्यूं होते हैं?

मुसलमान मज़लूम और अपमानित क्यूं हैं?

- हज़रत हुज़ैफा (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, ''सौगंध है उस पवित्र हस्ती की जिस के हाथ में मेरी प्राण है, तुम ज़रूर नेकी का आदेश देने और बुराई से मना करने का कर्तव्य अंजाम देना वरना बहुत जल्द अल्लाह तुम पर अपना प्रकोप उतारेगा। फिर अगर तुम अल्लाह से दुआ भी करोगे तो तुम्हारी दुआ कुबूल नहीं की जाएगी।'' (तिर्मिज़ी)

- पवित्र कुरआन में है कि,

''सच यह है कि अल्लाह किसी क़ौम की हालत को नहीं बदलता जब तक कि वह ख़ुद अपने गुणों को नहीं बदल देती। और जब अल्लाह किसी क़ौम की शामत लाने का फ़ैसला कर ले तो फिर वह किसी के टाले नहीं टल सकती, न अल्लाह के मुकाबले में ऐसी क़ौम का कोई समर्थक और सहायक हो सकता है।'' (सूरह रअद, आयत ११)

- हज़रत अबूदरदा (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, अल्लाह तआला फरमाता है कि मै ही अल्लाह हूँ। मेरे सिवा कोई पूजने लायक और मालिक नहीं। मैं शासकों का मालक हूँ और बादशाहों का बादशाह हूँ। संसार के बादशाहों के दिल मेरे हाथ में हैं। (और मेरा कानून यह है कि) जब मेरे बंदे मेरी आज्ञापालन करते हैं तो मैं उन के शासकों के दिलों को मुहब्बत और शफक्कत के साथ उन बंदों की ओर ध्यान आकर्षित कर देता हैं। और जब बंदे मेरी अवज्ञा (नाफरमानी) का रास्ता इख्तियार कर लेते हैं तो मैं उन के शासकों के दिलों को क्रोध और प्रकोप के साथ उन बंदों की ओर मोड़ देता हूँ, और फिर वह उन को सख्त कष्ट पहूंचाते हैं। इसलिए तुम मेरे सामने रोओ और गिड़गिड़ाओ ताकि मैं तुम्हारे लिए काफी हो जाऊं शासकों के प्रकोप से मुक्ति देने के लिए।
(हुल्यतुल औलिया लि अबी नईम, मुआरिफूल हदीस, जिल्द ७, पेज नं. २४६)

एक मुत्तफिक अलैह हदीस है कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, तुम लोग हू-बहू पिछली कौमों (उम्मतों) की तरह हो जाओगे। सहाबा (अनुयाइयों) ने पूछा, पिछली उम्मतों का अर्थ क्या यहूदी और नसरानी (ईसाई) हैं? आप (स.) फरमाया, और कौन?

- अल्लाह तआला कुरआन में फरमाता है:"तुम न उठोगे (पैगम्बर के आदेश के अनुसार धर्म की रक्षा के लिए) तो अल्लाह तुम्हें दर्दनाक सज़ा देगा, और तुम्हारी जगह किसी और गिरोह को उठाएगा (लाएगा), और तुम अल्लाह का कुछ भी न बिगाड़ सकोगे, उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।" (सूरह तौबा आयत ३९)

- मुस्लिम कौम अपने बुरे कर्मों के कारण संसार में अपमानता और बदनामी के प्रकोप से ग्रस्त है। इस कौम ने ईश्वरी आदेशों और हज़रत मुहम्मद (स.) की शिक्षाओं को भुला दिया है। इसलिए अपमानता और मुसीबत इस पर थोप दी गई है। और अल्लाह की मर्ज़ी के बगैर ना कोई इन की मदद कर सकता है और ना इन को तरक्की दे सकता है, ना इन को खुश्हाल कर सकता है और ना इन्हें दुनिया में सम्मानित स्थान दिला सकता है। इसलिए अगर मुस्लिम कौम तरक्की करना चाहती है तो पहले उसे अपने कर्म दुरूस्त करने होंगे। हज़रत मुहम्मद (स.) के निदेशों पर अमल करना होगा और अल्लाह तआला को खुश करना होगा। अगर अल्लाह चाहेगा तो ही इस कौम की हालत दुरूस्त होगी।

- मुसलमानों की एक बड़ी संख्या नेक है तो वह क्यूं अत्याचार-पीड़ित है? और क्यूं अत्याचारियों पर ईश्वर का प्रकोप नहीं आता?

- हज़रत उमर (रज़ि.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "जब अल्लाह तआला किसी कौम पर अपना अज़ाब भेजता है तो वह अज़ाब हर उस व्यक्ति को अपनी पकड़ में ले लेता है जो उस कौम में होता है। और फिर (आखिरत में) लोगों को उन के कर्मों के अनुसार उठाया जाएगा।" (बुखारी, मुस्लिम)

  अर्थात जब किसी कौम पर अज़ाब आता है तो जो नेक लोग हैं उन पर भी अज़ाब आएगा, मगर कयामत के दिन उन के कर्मों का अच्छा बदला मिलेगा।

- अत्याचार करने वाली कौम पर ईश्वर का अज़ाब ज़रूर आता है, मगर कुछ हुज्जत (Condition) पूरी होने के बाद। और सब से महत्वपूर्ण हुज्जत यह है कि उन को सत्य धर्म की दावत दी जाए। और अगर वह ना मानें और अपने अत्याचार पर अड़े रहे तो ही ईश्वर का अज़ाब आएगा, वरना हक़ की दावत मिलने से पहले वह अत्याचारियों में में नहीं गिने जाएंगे। बल्कि ईश्वर के यहाँ उन की गिनती गाफिल (बेखबर) लोगों में होगी।

  अल्लाह तआला कुरआन करीम में फरमाता है:

  "अगर हम उसके (पैगम्बर के) आने से पहले इनको किसी अज़ाब से तबाह कर देते तो फिर यही लोग कहते कि ऐ हमारे रब, तूने हमारे पास कोई रसूल क्यों न बेजा कि अपमानित और तिरस्कृत होने से पहले ही हम तेरी आयतों का अनुपालन कर लेते?" (सूरह ताहा, आयत १३४)

  तो जब तक मुसलमानों की तरफ से दावत की हुज्जत पूरी ना होगी, अत्याचारियों पर ईश्वर का अज़ाब नहीं आएगा, चाहे वह मुसलमानों पर ना-हक अत्याचार ही क्यूं ना करते हों।

नेक लोग क्या करें?

- अल्लाह तआला की सुन्नत (तरीका) के मुताबिक जब तक दावत की हुज्जत पूरी ना होगी, अत्याचारी कौम पर अज़ाब नहीं आएगा। और मुसलमान कौम पर जो अज़ाब आएगा (अत्याचार होगा) तो इस में नेक और बूरे सब पिसे जाऐंगे। तो नेक लोग क्या करें? क्यूंकि सारी कौमों तक सत्य धर्म की दावत कोई आसान काम नहीं है कि कुछ दिनों में पूरा हो जाए। इस काम को हज़रत नूह (अ.स.) ने कई सौ साल किया। हज़रत मुहम्मद (स.) ने भी २३ साल किया। जो यह काम फुल टाइम करते थे, हम तो इसे पार्ट-टाइम भी नहीं करते। तो यह दावत की हुज्जत कब पूरी होगी? और नेक लोग अत्याचार की चक्की से कैसे सुरक्षित रहें।

दाई और दाई की मदद करने वाले अत्याचार से सुरक्षित रहेंगे।

- अल्लाह तआला का यह उसूल है कि जब वह किसी कौम की तरफ अज़ाब भेजता है तो उस में नेक और बूरे सब को पीस देता है। फिर कयामत में हर एक को उन के कर्मों के अनुसार उठाएगा। मगर अल्लाह तआला की यह सुन्नत भी है कि वह इस दुनिया में दाई (सत्य धर्म की दावत देने वाला) और दाई की मदद करने वाले तमाम लोगों को हर मुसीबत से सुरक्षित रखता है।

- इस सुन्नत का सुबूत आपको निम्नलिखित आयतों से मिल जाएगा:

- "ऐ पैग़म्बर, जो कुछ तुम्हारे रब की ओर से तुमपर अवतरित हुआ है वह लोगों तक पहुँचा दो। अगर तुमने ऐसा न किया तो उसकी पैग़म्बरी का हक़ अदा न किया। अल्लाह तुमको लोगों की बुराई (उन की तरफ से तकलीफ पहुंचने) से बचानेवाला है।" (सूरह माइदा, आयत ६७)

- दाई जब तक (दावत की हुज्जत पूरी होने तक) इन्कार करने वाली कौम के दरमियान होता है, उस वक्त तक उस पूरी बस्ती पर अज़ाब को रोके रखा जाता है।

  इस सिलसिले में कुरआन करीम की कुछ आयतें इस तरह हैं:

- "उस समय तो अल्लाह उनपर अज़ाब उतारनेवाला न था जबकि तू (हज़रत मुहम्मद (स.) उनके बीच मौजूद था" (सूरह अन्फाल, आयत ३३)

- "फिर जब हमारा आदेश आ गया तो हमने अपनी दयालुता से हूद को और उन लोगों को जो उसके साथ ईमान लाए थे मुक्त किया और एक भारी अज़ाब से उन्हें बचा लिया।" (सूरह हूद, आयत ५८)

- आख़िरकार जब हमारे फ़ैसले का समय आ गया तो हमने अपने दयालुता से सालेह को और उन लोगों को जो उसके साथ ईमान लाए थे बचा लिया और उस दिन की रुसवाई से उनको सुरक्षित रखा। (सूरह हूद, आयत ६६)

- "आख़िरकार जब हमारे फ़ैसले का समय आ गया तो हमने अपनी दयालुता से शुऐब और उसके साथी ईमानवालों को बचा लिया और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया था उनको एक सख़्त धमाके ने ऐसा पकड़ा कि वे अपनी बस्तियों में अचेत और निष्क्रिय पड़े के पड़े रह गए, मानो वे कभी वहाँ रहे-बसे ही न थे।" (सूरह हूद, आयत ९४-९५)

- ''इनसे कहो, ''अच्छा इनतिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इनतिज़ार करता हूँ।'' फिर (जब ऐसा समय आता है तो) हम अपने रसूलों को और उन लोगों को बचा लिया करते हैं जो ईमान लाए हों। हमारा यही तरीक़ा है। हमपर यह हक़ है कि ईमानवालों को बचा लें।''

  (सूरह यूनुस, आयत १०२-१०३)

- हज़रत मूसा के वाकअे में भी हम ने देखा कि फिरऔन ने तमाम जादूगरों को कत्ल कर दिया मगर हज़रत मूसा (अ.स.) को छोड़ दिया। जबकि होना तो यह चाहिए था कि फिरऔन हज़रत मूसा (अ.स.) को ही सब से पहले अपनी तमाम मुसीबतों की जड़ समझ कर नुक्सान पहुंचाता। मगर उस ने हज़रत मूसा (अ.स.) को छुआ तक नहीं। क्यूंकि हज़रत मूसा (अ.स.) असहाय्य ना थे। बल्कि इस सृष्टि का निर्माणकर्ता उन की रक्षा कर रहा था।

- जब सूरह लहब उतरी तो अबू लहब की पत्नी हज़रत मुहम्मद (स.) को मारने के लिए हाथ में पत्थर ले कर उन की तलाश में निकली। आप (स) काबा की छाया में हज़रत अबू बक्र (रज़ि) के साथ बैठे हुए थे कि वह भी आ पहुंची। उसे देख कर हज़रत अबू बक्र (रज़ि) घबरा गए। मगर हज़रत मुहम्मद (स.) ने उन्हें दिलासा दिया और कहा कि अल्लाह तआला मेरी रक्षा करेगा। वह करीब आइ मगर हज़रत मुहम्मद (स.) उस के सामने मौजूद होने पर भी वह उन्हें ना देख सकी और चली गई।

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने हिजरत (मक्का से मदीना स्थानांतरण) की रात में भी ४० हथ्यार बंद व्यक्तियों के बीच से गुज़र गए। मगर वह आप (स.) को ना देख सके। इस तरह की दरजनों घटनाऐं है जब अल्लाह तआला ने दीन के दाइयों की सुरक्षा गैब से की है।

  तो यह अल्लाह की सुन्नत है कि अल्लाह तआला दाई और दाई की मदद करने वालों को हर अज़ाब और मुसीबत से सुरक्षित रखता है। और इतना ही नहीं बल्कि दाई जिस बस्ती में दावत का काम कर रहा होता है अल्लाह तआला उस बस्ती पर से अपना अज़ाब भी रोके रखता है।

- जो कुछ मैं ने लिखा वह सब कुरआन और हदीस में पढ़ कर लिखा। कोई कह सकता है कि यह तो पुरानी बातें हैं। आज की वास्तविक्ता इस से विभिन्न है। ऐसा नहीं है। आज के ज़माने में भी दाई और उस की बस्ती दंगों और खून खराबा से सुरक्षित रहती है। इस का एक उदाहरण निम्नलिखित है:

- २००२ के गुजरात दंगे एक प्रकार से मुसलमानों की नस्ल कुशी (नरसंहार) थे। एम्नेस्टी इंटरनॅशनल के अनुसार यह योजनाबद्ध और प्रबंधित था। इस दंगे में जहाँ पुलिस सिर्फ दर्शक थी और कत्ल व खून का नंगा नाच खेला जा रहा था। मुसलमानों के कुछ इलाके जहाँ तबलीग का काम बड़े पैमाने पर होता है या जिस गांव में लगभग सभी लोग तबलीग से जुड़े हैं। इस गांव की तरफ किसी ने नज़र उठा कर भी नहीं देखा। हमारे दोस्तों के कुछ गांव के नाम इस प्रकार हैं: हैदरपूरा, अमरपूरा, डेल डोल, काकूसी जो कि गुजरात के पटन ज़िला में हैं।

  तो दंगों की तबाह कारियों से बचने का वाहिद रास्ता यह है कि हम दीन की दावत के काम में पूरे खुलूस के साथ जुड़ जाऐं।

दावत का काम सिर्फ दंगों से बचने के लिए करें या कोई और कारण है?

कुरआन करीम में इरशाद है:

''तुमसे पहले बहुत-सी क़ौमों की ओर हमने रसूल भेजे और उन क़ौमों को मुसीबतों और दुखों में डाला ताकि वे नम्रता के साथ हमारे सामने झुक जाएँ।'' (सूरह अन्आम, आयत ४२)

- मुसलमानों को जो तकलीफें पहुंचती हैं इस का उद्देश्य सिर्फ शिक्षा देना ही नहीं होता है बल्कि इस कौम को खुदा के आदेशों की तरफ आकर्षिक करना और उन्हें अपनी ज़िम्मेदारियां याद दिलाना भी होता है।

मुसलमान कौम की क्या ज़िम्मेदारियां हैं?

हज़रत मुहम्मद (स.) आखरी नबी हैं। अब कोई नबी नहीं आएगा। मगर नबुवत वाला दावती काम तो कयामत तक चलता रहेगा। और इस काम को इस मुस्लिम कौम को ही करना है।

नबी करीम (स.) ने फरमाया, ''अगर एक आयत भी किसी (मुसलमान तक) पहुंची हो तो वह उसे दूसरों तक पहुंचा दे।''

नबी करीम (स.) ने (हज्जतुल विदा के मौके पर) खुत्बे में फरमाया, कि ''जो यहाँ मौजूद हैं वह मेरी बातें गैर मौजूद तक पहुंचा दें।''

सहाबा कराम (रज़ि.) इसे बहुत अच्छी तरह से अंजाम दे रहे थे। इस लिए अल्लाह ने उन की प्रशंसा कुरआन करीम में इन शब्दों में की है:

''अब संसार में वह उत्तम गिरोह तुम हो जिसे इनसानों के मार्गदर्शन और सुधार के लिए मैदान में लाया गया है। तुम नेकी का आदेश देते हो, बुराई से रोकते हो।'' (सूरह आले इम्रान, आयत ११०)

तो दीन की तबलीग तो हमारा कर्तव्य है। इसे हमें दंगों से बचने के लिए नहीं बल्कि अपना कर्तव्य पद समझ कर करना है। आज के ज़माने में जैसे किसी स्टोर में एक सामान खरीदने पर एक मुफ्त मिलता है, उसी तरह अपने दावती कर्तव्य के अदा करने पर अल्लाह की सुरक्षा तो इस के साथ मुफ्त मिलती है।

अल्लाह तआला हम सब को उस के आदेशों को समझने और उस पर अमल करने की तौफीक (शक्ति) प्रदान करे। आमीन

दावत का काम कैसे करें?

१. नबी करीम (स.) ने फरमाया, ''हम पैगम्बरों के समुदाय को अल्लाह ने यह आदेश दिया है कि हम लोगों के मानसिक स्तर के अनुसार उन से बातचीत करें।'' (जवामेउल कलाम)

२. हज़रत शिद्दाद (रज़ि) बिन औकस कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, ''अल्लाह तआला ने हर काम को अच्छे तरीके पर करने का आदेश दिया है।'' (मुस्लिम, बा-हवाला ज़ादे सफर पेज नं. ३४, हदीसे नबवी हदीस नं. ३६५)

३.हज़रत मुहम्मद (स.) ने इरशाद फरमाया, ''जब किसी कौम का इज़्ज़तदार व्यक्ति तुम्हारे पास आए तो उस की इज़्ज़त करो।'' (जवामेउल कलाम)

४.हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, ''मेरी उम्मत के उलमा की इज़्ज़त करो क्यूंकि वह धरती के सितारे (मार्गदशन के लिए) हैं।'' (जवामेउल कलाम)

५.हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, ''मनुष्य का सौंदर्य उस की बात-चरित्र में छिपा हुआ है।'' (जवामेउल कलाम)

६.हज़रत अबू दरदा (रज़ि) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, ''सुनो! क्या मैं तुम्हें नमाज़, रोज़ा और दान से अधिक महत्वपूर्ण वस्तू न बताऊं?'' लोगों ने कहा ज़रूर बताइए। हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, ''आपसी सहमती सब से बेहतर है, क्यूंकि आपस की असहमती दीन (धर्म) को काटने वाली चीज़ है, अर्थात जैसे उस्तुरे से बाल एकदम साफ हो जाते हैं। ऐसे ही आपस की लड़ाई से दीन नष्ट हो जाता है।'' (तिर्मिज़ी)

७.हज़रत हारिस अश्अरी (रज़ि) कहते हैं, हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, ''मैं तुम्हें पांच चीज़ों का आदेश देता हूं। संघटन का, आज्ञापालन का, हिजरत (स्थानांतरण) का, और अल्लाह के रास्ते में जिहाद (संघर्ष) का।''

इस हदीस में हज़रत मुहम्मद (स.) अपनी उम्मत को निम्नलिखित पांच चीज़ों का आदेश देते हैं:

१. दल बनों, सामुदायीक जीवन व्यतित करों।
२. तुम्हारे सामुदायीक मामलात का जो ज़िम्मेदार हो उस की बात गौर से सुनो।
३. उस की आज्ञापालन करो।
४. अगर परिस्थितियाँ, निवास का स्थान, शासन की नीतियाँ वगैरा एक दीनदार व्यक्ति के लिए उचित ना हों तो उचित स्थान पर स्थानांतरण की कोशिश करें।
५. जिहाद अर्थात परिश्रम। अपनी और तमाम मुसलमानों के जीवन में १०० प्रतिशत धर्म लाने की कोशिश करो। इसी प्रकार इस ज़माने के सारे लोग हज़रत मुहम्मद (स.) के उम्मती हैं। इन तक भी इस्लाम का पैगाम पहूंचाने की कोशिश करो। (मिश्कात, मुस्नद अहमद, तिर्मिज़ी, ज़ादे राह हदीस नं. १८८)

ऊपर बयान की गई तमाम हदीसें बहू मुल्य और मार्गदर्शक हैं। इन पर ध्यान दें, अमल करें, और किसी समुह अथवा नेतृत्व के अधीन दावत का काम करें ताकि दावत का काम प्रभावकारी तरीके से हो और आप भी सुरक्षित रहें।

- कुरआन करीम की एक आयत का अर्थ है:

''ऐ नबी, कहो, ''ऐ किताबवालो, आओ एक ऐसी बात की ओर जो हमारे और तुम्हारे बीच समान है। यह कि हम अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी न करें, उसके साथ किसी को साझी न ठहराएँ, और हममें से कोई अल्लाह के सिवा किसी को अपना रब न बना ले।'' इस दावत (आमंत्रण) को स्वीकार करने से अगर वे मुँह मोड़ें तो साफ़ कह दो कि गवाह रहो, हम तो मुसलिम (केवल अल्लाह की बन्दगी और आज्ञापालन करनेवाले) हैं।''
(सूरह आले इम्रान, आयत ६४)

मैं ने ''पवित्र वेद और इस्लाम धर्म'' इस पुस्तक में इस दृष्टिकोण के अनुसार तथ्यों को जमा करने की कोशिश की है जो इस्लाम और हिंदू धर्म में एक जैसे हैं। जैसे कि:

खुदा सिर्फ एक है इस वास्तविक्ता के साथ वेद, पुरान और हिंदू धर्म की अन्य किताबों में पवित्र काबा का उल्लेख है, हज़रत नूह (अ.) और उनके बाढ़ का उल्लेख है, हज़रत आदम (अ.) के जन्म का उल्लेख है। हज़रत इब्राहीम (अ.) और उनकी कुरबानी का उल्लेख है। नबी करीम (स.) के बारे में भविष्यवाणियां हैं। और कुरआनी आयात से मिलते जुलते कई श्लोक हैं जिन्हें हिंदू भाई नहीं जानते और ना पंडित उन्हें बताते हैं। अगर हम हिंदू भाइयों को यह मिलती जुलती बातें बताएं तो उन को आश्चर्य होता है, और इस्लाम से उन का द्वेष कम हो जाता है।

यह किताब और बहुत सारी किताबें हमारी वेबसाइट www.freeeducation.co.in पर उपलब्ध है। इन्हें मुफ्त में डाउन-लोड कर के C.D. में कॉपी कर के लोगों में बांट सकते हैं।

अल्लाह तआला हम सब को अपने दीन की समझ दे और इस के प्रचार के लिए कुबूल फरमाए। आमीन

▼▼▼▼▼▼▼

(पेज १४५ से आगे... कुछ कुरआनी आयतें जो ...?

وَاَعُوْذُبِکَ مَنْ غَلَبَةِ الدَّیْنِ وَ قَهْرِ الرِّجَالِ

४. ''व अऊजु बिका मिन ग़-ल-बतित दैनि व क़ह-रिर्रिजाल''
''कर्ज़ के बोझ से और इस से कि लोग मुझपर कहर ढाएं।''

इबादत से गाफिल ना हों:

- अल्लाह तआ़ाला ने अपने आखरी पैगंबर हज़रत मुहम्मद (स.) के द्वारा तमाम इन्सानों को आगाह किया है कि, "ऐ मेरे बंदे! अगर तू मेरी इबादत में व्यस्त रहेगा तो मैं तुझे आराम से खुशहाल रखूंगा और तेरे दिल को सखावत (Generocity) से भर दूंगा। लैकिन अगर तू मेरी इबादत से गाफिल (बेपरवाह) रहा तो मैं ना ही तेरे हाथ व्यस्तता से कभी खाली करूंगा और ना कभी तेरी मोहताजी और मुफ्लिसी (गरीबी) दूर करूंगा।" (इब्ने माजा)

अगर इबादत से गफलत ने आपको अज़ाब में मुब्तला किया है तो पहले अपनी सुधारणा करें, तभी आपकी परेशानी दूर होगी।

खौफ (भय) पर किस तरह काबू पाएं?

- हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, "अगर तूम खौफ और परेशानी महसूस करो तो निम्नलिखित आयत की तिलावत करो:"

اَعُوْذُبِکَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّمَّآتِ مِنْ غَضَبِهٖ ط وَشَرِّعِبَادِهٖ ط
وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّیٰطَانِ وَاَنْ یَّحْضُرُوْنِ ط

अर्थ:-मैं अल्लाह के अस्माएं हुस्ना (अच्छे नामों) की पनाह लेता हूँ, उसके गज़ब (प्रकोप) से पनाह मांगता हूँ बंदो के शर (बुराई) से पनाह मांगता हूँ, शैतान के वसवसों (बहकावों) से पनाह मांगता हूँ। (मैं अल्लाह से पनाह मांगता हूँ।) कि शर से (बुराई से) सुरक्षित रहूँ, बचा रहूँ।
(मिश्कात जिल्द १ सफा २१७, इब्ने सिना सफा २१३, तिरमिज़ी, जिल्द २, सफहा १९१, हिसने हसीन सफहा २१५)

▼▼▼▼▼▼▼

क्यू. एस. खान का परिचय

लेखक कमरूदद्दीन के दादा एक किसान थे। बलरामपूर शहर (उत्तर प्रदेश) के करीब उनकी खेतीबाड़ी है। सन १९४७ में जब देश का बटवारा हुआ तो उत्तर प्रदेश राज्य में उर्दू भाषा की शिक्षा बंद कर दी गयी। कमरूददीन के पिता शमसुद्दीन चूंकि उर्दू माध्यम से पढ़ रहे थे और एकदम से हिंदी माध्यम उन्हें बहुत कठिन लगा। इसलिए वह बचपने में ही पढ़ाई छोड़कर रोज़गार की तलाश में मुंबई आ गए और यहीं Glaxo कंपनी में नौकरी कर ली।

कमरूददीन का जन्म ११ सितंबर १९६१ में मुंबई के वरली इलाके में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा उन्होंने सरकारी स्कूल में प्राप्त की। फिर अंजूमन इस्लाम की शाखा अहमद सेलर हायस्कूल से एस.एस.सी पास किया। फिर 'के.सी. कॉलेज (चर्चगेट)' से बारहवीं पास किया और बी.ई. (मेकनिकल) सांगली के वालचंद कॉलेज से १९८३ में First Class with distinction से पास किया।

इंजिनीयरिंग की शिक्षा पूरी करने और तकरीबन ४ साल नौकरी करने के बाद कमरूददीन ने अपना एक छोटा वर्कशॉप शुरू किया। और आज सन २०१२ में उनकी कम्पनी की हायड्रॉलिक मशीन बनाने वाली अच्छी कंपनीयों में गणना होती है।

कमरूददीन को इल्मी और दीनी विरासत मौलाना परवेज़ इस्लाही साहब से मिली। जो कि उर्दू, अरबी और फारसी के माहिर और बहुत ही नेक इन्सान थे। उन्होंने कई किताबें लिखी हैं जिसमें "मखदूम माहमी" बहुत प्रसिद्ध है।

कमरूद्दीन की तरक्की की वजह उनके माता-पिता की दुआ़ और उनकी तरफ से दी जाने वाली अच्छी तरबियत (प्रशिक्षण) और अल्लाह की कृपा मानते हैं। कमरूददीन के पिता तहज्जुद गूजार इंतेहाई नेक और अल्लाह से डरने वाले इन्सान थे। कुरआ़न और हदीस की शिक्षा चूंकि उन्होंने लेखक को बचपन में ही दे दी थी, इसलिए जवानी में जब भी कमरूददीन पर कठिन वक़्त पड़ा तो मदद् के लिए उन्हें दुनिया के बदले अल्लाह तआ़ला ही याद आए। और बेशक समस्याओं का समाधान सिर्फ उसी एक द्वार से होता है।

कमरूद्दीन को किताबें पढ़ने का अल्लाह तआ़ला ने बहुत शौक दिया था। इसीलिए पहले तो उन्होंने खुद बहुत सारी किताबें पढ़ीं और फिर उसी ज्ञान को लोगों तक पहुंचाने के लिए आसान भाषा में खुद किताबें लिखकर प्रकाशित कीं। उनकी कुछ प्रसिद्ध किताबें हैं:

- Low of Success for both the world. यह किताब पहली बार अमेरिका में छपी। उसके बाद इस किताब के कई संस्करण हिंदुस्तान में भी प्रकाशित हुए। उसमें व्यापार में सफलता के नियम और गैर-मुस्लिमों के लिए इस्लाम की जानकारी है।
- कारोबारी महाज़ (मोर्चा) पर कमरूद्दीन की कम्पनी तो बहुत छोटी है मगर अल्लाह तआ़ला ने कृपा किया है कि मशीनें अच्छी बनाते हैं। मशीनों की डिज़ाइन कमरूद्दीन की खुद की है। और यह उनके लिए सौभाग्य की बात है कि सरकार की कुछ कम्पनीयां भी जब मशीन खरीदने के लिए टेंडर निकालती हैं तो कमरूददीन के द्वारा डिज़ाइन की गई तीन मशीन की तरह खरीदना चाहती हैं। वह तीन मशीनें है;

१) Hose Crimping Machine

२) Angle Cutting Machine

३) Angle Notching Machine

कमरूद्दीन इसे भी अपना सौभाग्य और अल्लाह की कृपा समझते हैं इस वक़्त दुनिया की सबसे ऊंची इमारत यानी दुबई की "बुर्ज खलीफा" उसकी बुनियाद भी कमरूद्दीन के द्वारा बनाए गए २५०० टन के तीन जॅक्स (Jacks) से हुई है जो उन्होंने 'मिडल ईस्ट फाउंडेशन' ग्रुप के लिए बनाया था।

कमरूद्दीन ने जिन इस्लामी नियमों पर चलकर कामयाबी प्राप्त किया है वह उन्होंने इस किताब में एकत्रित कर दिया है। अपने ५० वर्षिय जीवनकाल में ठोकरें खा-खा कर तर्जुबा (प्रयोग) करते-करते उन्हें जो परिणाम प्राप्त हुए हैं वह आपके हाथ में एक किताब के रूप में हैं। अगर आप इसपर अमल करें तो जो तरक्की उन्हें ५० साल की उम्र में मिली है आप उसे ३० साल की उम्र में या उससे जल्दी प्राप्त कर सकते हैं।

'हिम्मते मर्दां मददे खुदा'

हिम्मत कीजिए और कठोर परिश्रम शुरू कर दीजिए। इन्शा अल्लाह आप ज़रूर कामयाब होंगे। अल्लाह तआ़ला तमाम उम्मते मुस्लिमा को दुनिया और आखिरत में बहुत बहुत कामयाब बनाए। आमीन.

नोटः

१.क्यू. एस. खान की मशीनों के बारे में आप वेबसाइट www.hydraulicpresses.in से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

२. इंजिनीयरिंग कॉलेज और कारोबार में चूंकि कमरूद्दीन का नाम क्यु.एस.खान (कमरूद्दीन शमसुद्दीन खान) लिखा गया और पूकारा गया है, इसलिए वह इसी नाम से जाने जाते हैं यानी क्यु. एस.खान.

आखरी लफ्ज़ः

अगर आप इस किताब से कोई फायदा उठाऐं तो महरबानी करके इस किताब के लेखक क्यु.एस.खान को अपनी दुआ़ओं में ज़रूर याद करें और अल्लाह तआ़ला से दुआ़ फरमाऐं कि लेखक सच्ची आस्था (अकीदे) और ईमान के साथ जिंदा रहें और उसी ईमान पर उसे मौत आए।

अल्लाह तआ़ला, पैगंबरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद (स.), आप के अहले बैत, सहाबा कराम (रजी.) और दुनिया के तमाम अहले ईमान पर अपना फ़ज़्ल फरमाए।

अल्लाह सबसे बड़ा है और तमाम तारीफें उसी के लिए हैं, अल्लाह हमें उसके आदेशों को समझने की बुद्धि दे और खुलूस से उनपर अमल करने का जज़्बा और तौफीक अता फरमाऐं। आमीन.

क्यू. एस. खान और उन की कुछ महत्त्वपूर्ण किताबों का परिचय

- **सफरे हज की मुश्किलात और उनका मुम्किन हलः-**

(उर्दू, अंग्रेजी, हिंदी, गुजराती, बंगाली)

हज एक महान इबादत है। मगर चूंकि इसे जिंदगी भर में एक बार अदा करना होता है इसलिए लोग उसके बारे में ज़्यादा जानने और सीखने की कोशिश नहीं करते और जब हज का मौका करीब आ जाता है तो लोग अपनी कारोबारी या रोजमर्राह की व्यस्तता में से हज का तरीका सीखने के लिए मुश्किल ही से वक़्त निकाल पाते हैं।

इस किताब के लेखक क्यु.एस.खान सन २००४ में अपनी हज यात्रा के दौरान इनहीं कठिनाइयों से गुजरे। अपनी हज यात्रा से वापसी के बाद उन्होंने ''सफरे हज की मुश्किलात और उनका मुम्किन हल'' के शिर्षक से एक किताब हाजीयों की आसानी के लिए लिखी और प्रकाशित की है। जो अपनी अछूता सादा लेखन स्वरूप, हकीकत पर आधारित और प्रॅक्टीकल होने की वजह से जनता में बेहद लोकप्रिय है। हर साल हज के मौके पर तकरिबन ६ हजार प्रतियां (पुस्तकें) हाजियों (हज यात्रियों) में बांटी जाती हैं। इस किताब का हिंदी, अंग्रेजी, गुजराती और बंगाली भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

- **पवित्र वेद और इस्लाम धर्मः**

(अंग्रेजी, हिंदी, मराठी, गुजराती)

यहूदी अपने आप को सबसे बरतर समझते हैं और वह नहीं चाहते हैं कि कोई गैर-यहूदी, यहूदी धर्म को अेख्तियार करे। ईसाइ अपने धर्म को सबसे ज़्यादा सही मानते हैं और पूरे मन से अपने धर्म को फैलाने की कोशिश करते हैं और उनकी इसी कोशिश का परिणाम है कि आज दुनिया में ईसाइ सबसे ज़्यादा हैं।

हिंदु भाई प्राकृतिक तौर पर बुद्धिमान हैं। मगर उनकी आत्माएं प्यासी हैं। वह हक की तलाश में हैं। मगर हक तक पहुंचना उनके लिए मुश्किल है। इस परिस्थिती को सामने रखते हुए यह किताब लिखी गई है। इस्लाम से दूरी या अज्ञानता कम करने के लिए इस किताब में पहले क़ुरआ़न और वेदों का परिचय कराया गया है। फिर ऐसे इस्लामी विषय और तथ्य बयान किए गए हैं जो हिंदु धर्म की किताबों में भी हैं। जैसे काबा का जिक्र, हज़रत इब्राहीम (अ.स) की क़ुर्बानी का जिक्र, हज़रत नूह (अ.स.) के तूफान का जिक्र, हज़रत मुहम्मद (स.) के आगमन से संबंधित भविष्यवाणियां वगैरा। फिर बहुत आसान और सरल शब्दों में इस्लाम की शिक्षा को पेश किया गया है।

इस किताब की कीमत सिर्फ २५ रूपया है और इस किताब के लेखक क्यु.एस.खान ने इस किताब और अपनी दूसरी किसी भी किताब का कोई कॉपीराईट नहीं रखा है। इसलिए खरीदकर या छपवाकर इस किताब को ज़्यादा से ज़्यादा गैर-मुस्लिम भाईयों में वितरित करने की कोशिश करें। ताकि दावत के दायित्व का कुछ तो हक अदा हो सके।

- **Design and Manufacturing of Hydraulic Presses**

इन दिनों ज़्यादा तर मशिनें हायड्रॉलिक सिस्टम पर चलती हैं। हिंदुस्तान में अभी इंडस्ट्रियल हायड्रॉलिक टैक्नोलॉजी अपरिचित है। इसकी वजह यह है की देश के इंजिनीयरींग कॉलेजों में इंडस्ट्रियल हायड्रॉलिक पर कोई खास अभ्यासक्रम मौजूद नहीं है। इस किताब के लेखक क्यु.एस. खान सन १९८७ से हायड्रॉलिक मशीनों की डिज़ाइन और उत्पादन के मैदान में हैं। इस मैदान में उन्हें २४ साल का पूराना अनुभव है। हायड्रॉलिक्स के विषय पर अपने अनुभव की रौशनी में कई किताबें लिखी हैं। यह किताबें Design and Maintenance इंजीनीयर और इंजिनीयरिंग के छात्र दोनों के लिए लाभदायी हैं।

- **Law of Success for both the world**

Law of Success for both the world. यह किताब पहली बार अमेरिका में छपी। इसके बाद इस किताब के कई संस्करण हिंदुस्तान में भी प्रकाशित हुए। उसमें व्यापार में सफलता के नियम और गैर-मुस्लिमों के लिए इस्लाम की जानकारी है।

(यह किताब मराठी ज़बान में छप चुकी है और उर्दू, हिंन्दी में अनुवाद का काम जारी है।)

जैसे इन्सान शरीर और रूह/आत्मा से बना है, अगर रूह निकल जाए तो शरीर किसी काम का नहीं रहता। इसी तरह खुश्हाली अल्लाह की रहमत (कृपा) के साथ दौलत का नाम है। अगर अल्लाह की रहमत हटा ली जाए तो वही दौलत परिक्षा और मुसीबत का कारण बनती है। इस किताब में कामयाबी अल्लाह की रहमत के साथ हासिल करने का तरिका बताया गया है और साथ में गैर-मुस्लिमों को इस्लाम और दूसरे धर्मों की जानकारी भी दी गई है।

हज़रत मुहम्मद (स.) ने हज्जतुल विदा (आखरी हज) के मौके पर फरमाया था : ''जो हाज़िर है वह मेरी बात जो नहीं हाज़िर हैं उन तक पहुंचा दें, चाहे वह एक आयत ही क्यूं न हो। जिस मुसलमान तक हज़रत मुहम्मद (स.) की शिक्षा पहुंची है उसपर यह फर्ज़ बनता है कि वह आप (स.) की शिक्षा को उन तक पहुंचाएं जिन तक यह इस्लाम की शिक्षा नहीं पहुंची हो। कयामत के दिन गैर-मुस्लिम खुदा के दरबार में हमारा दामन पकड़ेंगे की "ऐ अल्लाह! यह सब जानते थे इन्होंने वह दावत हमें नहीं दी। इसलिए हमारे साथ आप को ना मानने की सज़ा इन को भी दे।" तो आप क्या जबाब देंगे? और यह दावा वह लोग करेंगे जिनसे आपका रोज़ मिलना-जुलना होता है। गैर-मुस्लिम से आपने दोस्ती की, कारोबार किया, रोजाना घंटो बातें करते रहे लैकिन सत्य की दावत आप कभी न दे सके। तो कयामत में आप अपनी सफाई कैसे पेश करेंगे।

व्यक्तिगत तौर से इस्लाम के बारे में लोगों को ना बताने के कई कारण हैं जैसे;

१. हम खुद सच्चे मुसलमान नहीं हैं। जब हम खुद इस्लाम पर पूरी तरह अमल नहीं करते तो दूसरों को किस मुंह से इस्लाम की दावत दें।

२. हमें इस्लाम का पूरा ज्ञान नहीं है, और ना हम यह जानते हैं कि इस्लाम की दावत कैसे दी जाती है।

३. मुसलमानों की छवि बहोत खराब है। गैर मुस्लिम इस्लाम को मुसलमानों की जिंदगी से जोड़ता है। यानी जब मुसलमान इतने गए गुजरे हैं तो उनका धर्म भी ऐसा ही होगा। हम मुसलमानों को इस बात का ज्ञान है और एहसासे कमतरी (Inferior Complex) भी है, इसलिए हम ना खुद को सच्चा पक्का मुसलमान सिद्ध करने की कोशिश करते हैं और ना खुलकर इस्लाम के बारे में किसी को कुछ बताते हैं।

इस समस्या को हल करने के लिए यह किताब लिखी गई है। लेखक ने यूरोप और अमेरिका के सबसे बेहतरीन और सुप्रसिद्ध (Best Seller) बिज़नेस मॅनेजमेंट की किताबों का अध्ययन किया है और उनका नीचोड़ इस किताब में ३०० पन्नों में जमा कर दिया। और आखिर के १०० पन्नों में यह बात समझाने की कोशिश की गई है कि ईमानदारी और ईश्वर को माने बगैर कामयाबी संभव नहीं है। दुनिया के पांच मश्हूर धर्म की किताबों से इस बात को सिद्ध करने की कोशिश की है।

इस किताब में बिजनेस मॅनेजमेंट की शिक्षा के साथ इस्लाम की के बारे में जानकारी भी है।

यह किताब आम लोगों के लिए लिखी गई है इसलिए इसमें वेद और बायबल के श्लोक का अक्सर जिक्र है। और इस बात की कोशिश की गई है कि सच्चाई का पैगाम भी मॅनेजमेंट की शिक्षा के साथ लोगों को मिले।

अगर आप कयामत में गैर-मुस्लिम दोस्तों से अपना दामन छुड़ाना चाहते है तो इस एक किताब को बिजनेस मॅनेजमेंट की बेहतरीन किताब कहकर तोहफा दे दीजिए और शांति की सांस लीजिए। (किताब की कीमत १०० रूपया है।)

- क्या हर माह चांद देखना ज़रूरी है? (उर्दू, अंग्रेजी, अरबी)

जिस तरह सूरज के निकलने और डूबने का एक निर्धारित टाइम टेबल है। उसी तरह चांद के निकलने और डूबने का एक निर्धारित टाइम टेबल है। नए चांद के दिन चांद सारा दिन आसमान में सूरज के पीछे चलता रहता है। और सूरज के डूबन के कुछ समय बाद वह भी डूब जाता है। मगर चूंकि उफक (आकाश के किनारे) पर सूरज डूबने के बाद कुछ रौशनी कम हो जाती है इसलिए चांद डूबन के पहले नज़र आता है।

अगर हम अपने जाती मुशाहिदे से इस बात का पता लगाएं कि चांद सूरज से कितनी देर बाद डूबेगा तो डूबने से पहले नज़र आएगा, तो चांद देखने की एक बड़ी समस्या हल हो सकती है। क्यूंकि चांद और सूरज अपने निकलने और डूबने के वक़्त से ना एक सेकंड पहले डूबते हैं ना बाद में। यानी उनका टाईम टेबल एकदम परफेक्ट है। इस तरह हम सिर्फ टाईम टेबल से ही कह सकते हैं कि किस तारीख को चांद ज़रूर नज़र आएगा।

इसी नज़रिए और फलसफे (Philosophy) को क्यु.एस.खान ने अपनी इस किताब में स्पष्ट किया है। (इस किताब की कीमत २५ रूपया है।)

- Holy Quran in Roman Urdu

आम तौर पर उर्दू माध्यम के स्कूलों का स्तर ऊंचा नहीं होता है। इसलिए खुशहाल लोग अपने बच्चों को इंग्लिश माध्यम से ही पढ़ाने की कोशिश करते हैं। ऐसे बच्चों की तादाद हररोज़ बढ़ती जा रही है। यह बच्चे उर्दू को अच्छी तरह समझते हैं मगर पढ़ नहीं सकते। दीनी ज्ञान का सारा खज़ाना अरबी, फारसी और उर्दू में ही है। जिससे यह बच्चे कभी फायदा नहीं उठा सकेंगे। यह कौम का बड़ा नुक्सान है।

क्यु.एस.खान ने ऐसे बच्चों के लिए रोमन उर्दु में कुरआ़न करीम प्रकाशित किया है। जिसमें शब्द उर्दू के हैं और लिखावट अंग्रेजी की, जैसे "आप" को "Aap" लिखा गया है। इस कुरआ़न में अनुवाद मौलाना जूनागढ़ी साहब का है, और तफसीर (स्पष्टिकरण व व्याख्या) मौलाना फतेह मौहम्मद जालंधरी साहब की है। आप एक ऐसा कुरआ़न खरीदकर करीब की मस्जिद में रख दें ताकि लोगों को इस बात का ज्ञान हो कि इस तरह का कुरआ़न करीम मौजूद है, जिससे अंग्रेजी मीडियम के बच्चे भी फायदा उठा सकते हैं। अगर आप किसीके ज्ञान हासिल करने का ज़रिया बनें तो जब तक वह लोग दीन पर अमल करेंगे तो आपको भी सवाब मिलता रहेगा। इस कुरआ़न की प्रिंटींग पर ११० रूपया खर्च आता है।

(यह सारी किताबें फिरदौस किताब घर, मुंबई में उपलब्ध हैं। जिनका पता सफहा नंबर.....पर है।)

अपील

हज़रत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, ''वह मुसलमान नहीं जिसे मुसलमानों की फिक्र न हो।'' (कनज़ुल आमाल, तरगीब व तरहीब)

सच्चर कमीटी की रिपोर्ट के अनुसार, आम मुसलमानों की माली हालत समाज के निचले वर्ग से भी खराब है। आम मुसलमानों की ज़िंदगी में खुश्हाली लाने के लिए यह किताब मुसलमानों में मुफ्त तकसीम की जा रही है। हमारी आप से गुज़ारिश है कि आप भी इस नेक काम में हिस्सा लें। अगर अल्लाह तआला ने आप को माल व दौलत दिया है तो आप भी इस किताब को खरीद कर मुसलमानों में तकसीम करें।

मुस्लिम स्कूलों के वह बच्चे जो दसवीं क्लास में पढ़ते हैं अगर उन बच्चों को यह किताब मुफ्त तकसीम की जाए तो इन्शा अल्लाह बहुत अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे। इसलिए अपने दोस्त अहबाब की एक संघटन बनाऐं और हर साल यह किताबें अपने आसपास के स्कूलों के बच्चों में मुफ्त तकसीम करते रहें और दूर दराज़ के दोस्तों को ई-मेल के द्वारा इस किताब की सॉफ्ट कॉपी भेजते रहें और उन से भी कहें कि दूसरों तक पहुंचाया करें। इस किताब को आप खुद भी छाप सकते हैं। हम इस काम में आप की पूरी मदद करेंगे। छपाई लागत पर यह किताब आप हम से भी खरीद सकते हैं।

यह किताब उर्दू, हिंदी और अंग्रेज़ी में प्रकाशित हो चुकी है, और बहुत जल्द मराठी में भी प्रकाशित होगी। (इस किताब का कोई कॉपी-राइट नहीं है।)

हमारा पता :-

तनवीर पब्लिकेशन, ए/१३, राम रहीम उद्योग नगर, एल.बी.एस. मार्ग,
सोनापूर, भांडूप (पश्चिम), मुम्बई ४०००७८.
मोबाइलः ९३२००६४०२६,
ई-मेलः hydelect@vsnl.com / hydelect@mtnl.net.in

Books written by Mr. Q.S. Khan

Name of Books with their links to download (free of cost)

	Management Books	Book Type
1.	**Law of Success for both the worlds** http://www.scribd.com/doc/37987436/Law-of-Success-for-both-the-Worlds-English	Printed & E-Book
2.	**Yashachi Gurukilli** (Marathi translation by Sushil S. Limay) http://www.scribd.com/doc/19486457/Yashachi-GurukilliComplete-Marathi	Printed & E-Book
3.	**Safalta ke Sutra** (Hindi Translation by Dr. Vimla Malhotra) http://www.scribd.com/doc/47173217/Safalta-Ke-Sutra-Hindi	E-Book
4.	**How to proper Islamic way** Vol. 1:- http://www.scribd.com/doc/37932859/How-to-prosper-Islamic-Way-Vol-1 Vol. 2:- http://www.scribd.com/doc/46098862/How-to-Prosper-Islamic-Way-Vol-2.	Printed & E-Book
5.	**Qaanoone Taraqqi (Hindi)** http://www.scribd.com/doc/118927827/Qaanoone-Taraqqi-Hindi	Printed & E-Book
6.	**Qaanoone Taraqqi (Urdu)** http://www.scribd.com/doc/119056699/Qaanoone-Taraqqi-Urdu	Printed & E-Book
	Engineering E-Books:	
7.	**Vol.1-Introduction to Hydraulic Presses and press body.** http://www.scribd.com/doc/17599574/Volume1-Introduction-to-Hydraulic-Presses	E-Book
8.	**Vol.2-Design and Manufacturing of Hydraulic cylinders.** http://www.scribd.com/doc/17375627/Volume2-Design-and-Manufacturing-of-Hydraulic-Cylinders	E-Book
9.	**Vol.3-Study of Hydraulic Valves, Pumps and Accumulators.** http://www.scribd.com/doc/17527393/Volume3-Study-of-Hydraulic-Valves-Pumps-and-Accumulators	E-Book
10.	**Vol.4-Study of Hydraulic Accessories** http://www.scribd.com/doc/17599472/Volume4-Study-to-Hydraulic-Accessories	E-Book
11.	**Vol.5-Study of Hydraulic Circuit** http://www.scribd.com/doc/61740687/Vol-5-Study-of-Hydraulic-Circuits	E-Book
12.	**Vol.6-Study of Hydraulic Seals, Fluid Conductor, and Hydraulic Oil.** http://www.scribd.com/doc/17742753/Volume6-Hydraulic-Seals-Fluid-Conductor-and-Hydraulic-Oil	E-Book
13.	**Vol.7-Essential knowledge required for Design and Manufacturing of Hydraulic Presses.** http://www.scribd.com/doc/18996385/Volume7-Essential-Knowledge-Required-for-Design-and-Manufacturing-of-Hydraulic-Presses	E-Book
	Religious Books:	
14.	**Hajj. Journey Problems and their easy Solutions.** http://www.scribd.com/doc/8966044/Hajj-Guide-Book-English-PDF	Printed & E-Book
15.	**Safar-e-Haj ki Mushkilat aor unka mumkin Hal (Urdu)** http://www.scribd.com/doc/7949973/Hajj-Guide-Book-Urdu	Printed & E-Book
16.	**Safar-e-Haj ki Mushkilat aor unka mumkin Hal (Hindi)** Transliteration by Khalid Shaikh http://www.scribd.com/doc/15223840/Hajj-Guide-Book-Hindi	Printed & E-Book
17.	**Safar-e-Haj ki Mushkilat aor unka mumkin Hal (Gujarati)** Transliteration by Jamal Qureshi http://www.scribd.com/doc/8965793/Hajj-Guide-Book-Gujarati	E-Book
18.	**Safar-e-Haj ki Mushkilat aor unka mumkin Hal (Bengali)** Translated by Shaikh Qasim http://www.scribd.com/doc/8997495/Hajj-Guide-Book-Bengali	Printed & E-Book
19.	**Teachings of Vedas and Quran** http://www.scribd.com/doc/18753559/Teachings-of-Vedas-and-Quran	Printed & E-Book
20.	**Pavitra Ved aur Islam Dharm (Hindi)** http://www.scribd.com/doc/48562793/Pavitra-Ved-Aur-Islam-Dharam	Printed & E-Book
21.	**Pavitra Ved ane Islam Dharm (Gujarati)** http://www.scribd.com/doc/92062989/Pavitra-Ved-ane-Islam-Dharm-Gujarati	Printed & E-Book
22.	**Pavitra Ved aani Islam Dharm (Marathi)** http://www.scribd.com/doc/92062861/Pavitra-Ved-Aani-Islam-Dharm-Marathi	Printed & E-Book
23.	**Kya har Mah Chand dekhna Zaroori hai? (Urdu)** http://www.scribd.com/doc/40483163/Kya-Har-Maah-Chaand-Dekhna-Zaroori-Hai	Printed & E-Book
24.	**Holy Quran in Roman Urdu** http://www.scribd.com/doc/31660372/Holy-Quran-in-Roman-Urdu-Surah-Baqara-The-Cow	Printed & E-Book
25.	**Who is Agni? Prophet or Parmeshwar? (English)** http://www.scribd.com/doc/65762146/Who-is-Agni-Prophet-or-Parmeshwar	E-Book

1. E-books could be downloaded free of cost from www.scribd.com or www.freeeducation.co.in
2. Books “Law of success for both the worlds” and “Yashachi Gurukilli” are available all over India in cross world book stores at cost of Rs. 150/- and Rs. 140/- respectively.
3. Outside India “Law of success for both the worlds” could be purchased online from amazone.com at 28 U.S Dollar.
4. All the seven volumes of engineering book will be printed as single handbook with title, "Design and manufacturing of hydraulic press" and will cost Rs. 2000/- only
5. Visit **www.freeeducation.co.in** to read and free download many more books.